मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद – १

पहला संस्करण १

साढ़े तीन रुपये

दिसंबर, १९५२

प्रकाशकका निवेदन

गांधीजीकी अक्षर-देहका अेक बड़ा और महत्त्वपूर्ण भाग अुनके पत्र हैं। ये अुन्होंने कितनी तरहके कितने वर्षोंके कितनी वयके देश देशान्तरके लोगोंको और विषयों पर लिखे हैं, जिसकी गिनती नहीं है। और जिन सबमें अुस महापुरुषके महान और अुन्नत जीवनके कितने अधिक विरल पहलू व्यक्त हुअे छिपे पड़े हैं! गांधीजीके जीवन चरित्रकी दृष्टिसे भी ये पत्र अेक बड़ा संदर्भ-साहित्य माने जायंगे।

पाठक जानते हैं कि गांधीजीने अपनी प्रकाशित-अप्रकाशित सभी रचनाअें वसीयत करके नवजीवन ट्रस्टको अर्पण कर दी हैं और अुनके सर्वाधिकार अिसे सौंप दिये हैं। जिसलिअे जिस विशाल पत्र-साहित्यको प्रकाशित करनेकी ओर भी ट्रस्टको ध्यान देना है। भाअी श्री प्यारेलालजीको गांधीजीके जीवन-चरित्रका जो काम सौंपा गया है अुसके लिअे भी यह साहित्य जितना हो सके प्राप्त कर लेना चाहिये।

जिन सब बातोंका विचार करके नवजीवन ट्रस्टने पू बापूजीके जानेके बाद थोड़े ही समयमें तय किया था कि अुनके जितने भी पत्र मिल सकें अुन्हें अुचित रूपमें प्रकाशित किया जाय। अुसके अनुसार अेक सार्वजनिक अपील निकालकर पत्रोंकी मांग की गअी थी और गांधीजीके पत्र जिन जिनके पास हों अुन सबको सूचित कर दिया गया था कि अगर वे अपने नाम आये हुअे बापूजीके पत्र हमें सौंपेंगे तो अुनकी गोपनीयता रखकर अुनकी नकलें कर ली जायंगी। और न चाहेंगे तो पत्र अुन्हें लौटा दिये जायंगे। बापूजीके पत्र किसीके पास होना अेक दुर्लभ स्मृतिचिह्न है। जिन पत्रोंको अपने पास रखनेका अुन्हें हक है।

जिस सूचनाके अनुसार कितने ही भाअी-बहनोंने अपने पत्र नवजीवनको भेजे हैं। अुनकी नकलें करके जिन जिनके पत्र थे अुनके

पास छोड़ा दिये गये है। और जिन पत्रोंमें से फुटकर सामग्रीके रूपमें कुछ 'हरिजन' और 'विवाद अने साहित्य'[1] में छापे गये है। जिसके सिवाय कुछ पत्र अब तक ग्रंथरूपमें भी प्रकाशित किये गये हैं, जैसे श्री मीराबहनके नाम लिखे पत्रोंका संग्रह[2] आश्रमकी बहनोंके नाम लिखे पत्रोंका संग्रह।[3] साथ ही बहनोंके नाम लिखे पत्रोंके सिवाय दूसरे अेक-दो संग्रहोंका काम भी काकासाहब कालेलकरके हाथमें सौंपा गया है।

जिस पुस्तकमें जो पत्रसमूह प्रगट हो रहा है, वह अपने ढंगका अनोखा है। ये पत्र गांधीजीने सरदार वल्लभभाजी पटेलको लिखे थे। श्री मणिबहन पटेल और श्री नरहरि परीखने मिलकर जिनका संपादन किया है। दोनोंने अपने प्रास्ताविक निवेदनमें जिस बारेमें जो कुछ कहा है अुसे पाठक देखेंगे ही। अुससे मालूम होगा कि यह पत्रव्यवहार ता० ८–७–२१ से लगाकर २९–१२–'४७ तक पूरी अेक पीढ़ीके समयका है। और यह भी जैसे दो महान पुरुषोंके बीच हुआ है जिन्होंने भारतके जितिहासका निर्माण करनेमें बड़ा महत्त्वपूर्ण भाग लिया है।

जिसके सिवाय गांधीजी द्वारा श्री मणिबहन तथा श्री डाह्याभाजी पटेलको लिखे हुअे पत्रोंका संग्रह भी है। वह बादमें अलग ग्रंथके रूपमें दिया जायगा।

जैसा 'बापुके पत्र—१ आश्रमकी बहनोंको' नामक पत्र-ग्रंथके निवेदनमें बताया गया था पत्र-साहित्यकी जिस मालाको अेक सामान्य

---

[1] गुजराती मासिक।

[2] यह संग्रह 'बापुके पत्र मीराके नाम' शीर्षकसे छपा है। कीमत ४-०-० डाकखर्च ०-१३-०।

[3] यह संग्रह 'बापुके पत्र — १ आश्रमकी बहनोंको' नामसे छपा है। कीमत १ ४ डाकखर्च ०-४-०। दोनों संग्रह नवजीवन प्रकाशन मंदिरमें छपे हैं।

जीव शीर्षक 'बापूके पत्र' दिया गया है और अुसके भागोंके रूपमें अलग-अलग ग्रंथ रहेंगे। तदनुसार सरदार वल्लभभाअीके नाम ग्रंथको 'बापूके पत्र — २' के रूपमें दिया जा रहा है।

अैसा ही अेक और कीमती संग्रह भी बिड़लाके साथ हुअे गांधीजीके पत्रव्यवहारका है जिसे प्रकाशित करनेकी अिजाजत नवजीवन ट्रस्टने अुन्हें दी है अुसका गुजराती अनुवाद ट्रस्ट प्रकाशित करेगा। यह ग्रंथ अभी तैयार हो रहा है। आशा है यह भी यथासंभव शीघ्र ही जनताको मिल जायगा।

यह पुस्तक प्रकाशित हो रही है, अिस बहाने मैं जनतासे फिर प्रार्थना करनेका अवसर लेता हूं कि जिनके पास बापूके पत्र हों वे हमारे पास भेजनेकी व्यवस्था करें। आशा है यह पुस्तक सबके लिअे बोधप्रद सिद्ध होगी और जिन-जिनके पास गांधीजीके पत्र होंगे अुन्हें भेजनेकी प्रेरणा देगी।

यह पुस्तक तैयार करनेमें मदद देनेवाले सभी लोगोंका मैं ट्रस्टकी तरफसे आभार मानता हूं।

२१-५ ५२

पुनश्च — श्री मणिबहनने अपने वक्तव्यमें बापू और बापूजी अैसे दो शब्दप्रयोग किये हैं। बापू सरदार पटेलके लिअे और बापूजी गांधीजीके लिअे समझना चाहिये।

अिन पत्रोंके बारेमें

१ जनवरी १९४८ को पू० बापूजी अचानक सबको छोड़कर चले गये। अिस प्रकार देशके अनाथ बन जानेसे मेरी तरह जनताको भी पूज्य बापूजीकी रचनाओंकी भूख रहती ही होगी। मुझे लगा कि जनताकी अिस भूखको तृप्त करनेके नवजीवन द्वारा शुरू किये गये काममें भरसक मदद देना मेरा धर्म है। मुझे विचार आया कि पूज्य बापूके नाम लिखे पू० बापूजीके पत्र जनताके सामने रखे जा सकें तो अुनसे अुसको बहुत कुछ जानने-सीखनेको मिलेगा और वे मार्गदर्शनका काम करेंगे। भाओी जीवणजी पूज्य बापूको देखने व अुनसे मिलने जब मसूरी-देहरादून आये तब मैंने अुनसे अिस बारेमें बात की। मेरा यह विचार अुन्हें पसन्द आया।

जबसे मैंने बापूके साथ सतत चौबीसों घंटे रहना शुरू किया तबसे घर तो रहा ही नहीं। या तो जेल या सफर या किसीके यहां मेहमान। १९१ से १९४६ तक अिसी तरहका जीवन रहा। अैसी परिस्थिति होने पर भी १९२१ से १ ४७ तकके जो पत्र संभालकर रख जा सके हैं अुन्हें पाठकोंके सामने रखनेका संकल्प अीश्वरकी कृपासे अिस प्रकार पूरा हो रहा है। अिस संकल्पको मूर्तरूप देनेमें अेक लम्बा अरसा बीत गया। परंतु मैं बिस्तरमें पड़ी हुअी थी। जिसे मैं अच्छा कह सकूं, वैसा अेक भी दिन सितम्बर १९५ तक मेरे पास नहीं था। यहांसे जानेके बाद भी किसी न किसी कारणसे सवा वर्षका लम्बा समय और निकल गया।

अिन पत्रोंको प्रकाशित कर सकनेका सच्चा श्रेय श्री नरहरिभाअीको है। मैंने तो भरसक जानकारी अिकट्ठी कर देनेकी ही कोशिश की है। अिसमें जो कमी रह गयी हो वह मेरे अज्ञानके कारण है। मैंने नरहरिभाअीसे अपने नाम लिखे प्रकाशित करनेका

बहुत कहा मगर अुनका आखिर तक यही आग्रह रहा कि यह संग्रह मेरे नामसे प्रकाशित हो और वे जिसमें सहायता करेंगे। अुनकी तन्दुरुस्ती ठीक न होते हुअे भी अुन्होंने पूज्य पिताजीके जीवन चरित्रका दूसरा भाग लिखनेके कामसे समय निकालकर घंटों जिस कार्यमें जो सहायता दी और रास्ता बताया अुसके बिना जिसका पूरा होना संभव नहीं था।

भाओ मूलशंकरके अुत्साहपूर्ण सहयोगका भी जिस संकल्पको मूर्तरूप देनेमें बड़ा हाथ है। सुबहसे रात तक अपने रोजमर्राके कामोंके बावजूद किसी भी तरह समय निकालकर अुन्होंने कोओ तीन ही महीनोंमें लगन भक्ति और सावधानीसे सब पत्रोंकी नकल कर दी। जिसके लिखे मैं यहां अुनका आभार न मानूं, तो कृतघ्नताकी दोषी ठहरूं।

जिस पत्रसंग्रहके प्रकाशनसे पू॰ बापूजीके वचनोंकी पाठकोंकी भूख थोड़ी बहुत भी तृप्त हुअी जिससे अुन्हें अपने जीवनकी कुछ भी गुत्थियां सुलझानेका मार्ग मिला तो मुझे सन्तोष होगा।

७-९-५२ मणिबहन वल्लभभाओ पटेल

प्रस्तावना

मणिबहनने सरदारके नाम लिखे बापूजीके पत्रोंको सावधानीसे संभालकर और जरूरी टिप्पणियोंके साथ संपादित करके पाठकोंके लिअे अुपलब्ध बनाया अिसके लिअे हम अुनके ऋणी हैं।

अब तक बापूजीके बहुतसे पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। अुनमें से अिन पत्रोंकी विशेषता यह है कि वे अैसे बहादुर योद्धा और वफादार साथीके नाम लिखे गये हैं, जिसकी विवेकशक्ति और व्यवहार-कुशलता पर बापूजीको बड़ा विश्वास था।

गुजरातीमें पत्र-साहित्य बहुत थोड़ा प्रकाशित हुआ है। पत्रलेखन अेक कला है और बहुत अुपयोगी कला है। गुजरातीमें और भी कअी अच्छे पत्रलेखक होंगे। मेरी जानकारीमें स्व० महादेवभाअीने अिस कलाका सुन्दर विकास किया था। कितने ही मनुष्योंके निजी परिचयमें आनेसे पहले महादेवभाअीने अपने पत्रोंसे अुनके हृदयमें स्थान प्राप्त कर लिया था। श्री काकासाहबके हाथमें भी यह कला है। वे अपना शिक्षणकार्य जैसे प्रत्यक्ष बातचीत द्वारा करते हैं वैसे ही पत्रों द्वारा भी करते हैं। परंतु पत्रलेखकोंमें बापूजीकी बराबरी करनेवाला शायद ही कोअी मिलेगा। अुन्होंने अपने पत्रों द्वारा कितनों ही को जीवनमें प्रेरणा दी है, कितनों ही की शंकाओंका समाधान किया है, जिनकी युक्तियां सूक्ष्मगामी हैं और कितने ही परेशान और दुःखी लोगोंको आश्वासन दिया है। अुनसे प्रेरणा और मदद चाहनेवालोंकी मंडली जितनी ज्यादा विस्तृत थी कि रोज तीन चार घंटे और कभी-कभी तो अिससे भी अधिक समय पत्र लिखनेमें लगाने पर भी वे अपना सारा पत्रव्यवहार नहीं निपटा पाते थे। अिसलिअे अुन्हें काफी विवेकसे काम लेना पड़ता था। कुछ पत्र खुद जवाब देनेके लिअे रखकर बाकीके जिन्हें यह लिख देना आदि सूचनायें देकर मंत्रियोंको सौंप देते थे। ज्यों-ज्यों अुनका पत्रव्यवहार

बढ़ता गया त्यों-त्यों मंत्री लोग बहुतसे पत्रोंके तो अुनके सामने पेश किये बिना ही जवाब दे दिया करते थे। अितने पर भी खुद बापूजीके जवाब देनेके लिअे अितने अधिक पत्र रह जाते थे कि बहुत संक्षिप्त अुत्तर देने पर ही वे अुन्हें निपटा सकते थे। अपनी बात बहुत संक्षेपमें कह डालनेकी कला बापूजीने खूब साध ली थी। अुनके अत्यंत अर्थपूर्ण पत्र संक्षिप्तताके अुत्तम नमूने हैं।

पत्र-साहित्यका खास लक्षण यह है कि अुसमें अेक व्यक्तिको जो कहना होता है अुसे वह सीधा दूसरे व्यक्तिसे कहता है। दोनों अेक-दूसरेके स्वभाव विचारों और भावनाओंसे काफी परिचित होते हैं। दोनों अेक दूसरेके दिलको पहचानते हैं। मनुष्य जब भाषण देता है या लेख लिखता है तब अुसकी नजरके सामने अेक बड़ा श्रोतावर्ग या पाठक समुदाय होता है। अिसलिअे अुसका वक्तव्य या लेख सर्व सामान्य स्वरूपका होता है। पत्रमें यह वस्तु विशेष अेकाग्रता धारण करती है। अुसकी अपील व्यक्तिगत होती है। यही पत्र-साहित्यकी खास विशेषता है।

सरदार पटेल पहले पहल बापूजीके संपर्कमें आये राजनैतिक कार्यके सिलसिलेमें। गांधीजीके हिन्दुस्तानमें आनेसे पहले प्रार्थना-पत्रोंकी राजनीतिका बोलबाला था। बापूजीने अुसमें सीधी लड़ाअी लड़नेका तत्त्व दाखिल किया। सरदार खास तौर पर अिसीसे बापूकी तरफ आकर्षित हुअे। खेड़ा जिलेके सत्याग्रहमें वे बापूजीके विशेष परिचयमें आये। और अुसीमें बापूजीने अुनका तेज परख लिया। देखते-देखते अुन्होंने बापूजीका अितना विश्वास संपादन कर लिया कि राजनैतिक मामलोंमें कोअी भी महत्त्वपूर्ण कदम बापूजी अुनसे सलाह-मशविरा किये बिना न अुठाते। और बापूजीकी राजनीति संकुचित या अेकांगी तो थी ही नहीं। सत्य खोजनेकी अुनकी धार्मिक वृत्ति ही अुन्हें राजनीतिमें खींच लाअी थी। अिस कारण गांधीजीकी राजनीति जीवनव्यापी थी। देशकी

ाथा धार्मिक कुमति परिवार और समाज-सुधार आदिके बहुतसे ल कुनकी राजनीतिमें ओतप्रोत हो जाते थे। जिस समयमें सरकार ी दिलचस्पी लेते थे। फिर भी कुनकी विशेष रुचि तो राजनैतिक ामलोंमें ही थी। यही कुनका विशेष क्षेत्र था। गांधीजीका सरदारके ाथ जो संबंध था कुसका निरूपण महादेवभाओीकी डायरी— ाग १ पृष्ठ ६ के निम्नलिखित संवादसे मिलता है

" (बापूने) सेम्युअल होरको लिखा हुआ पत्र मुझे (महादेवभाओीको) पढ़नेको दिया। मैंने पढ़ लिया। मुझे पूछा कैसा लगता है?

मैंने कहा मुझे सारी दलील खूब जमती है। राजनीतिके बारेमें तो मुझे पहला ही बार यह खयाल हुआ है कि किसी दिन बापूका प्रकोप कैसा रूप धारण करे तो आश्चर्य नहीं। अिसमें वल्लभभाओीको क्या आपत्ति है? अुन्हें तो यह खयाल होगा कि आप कैसा कदम अुठायें तो कांग्रेसके अध्यक्षकी हैसियतसे वे अिसमें कैसे सम्मति दे सकते हैं?

बापूजी कहने लगे नहीं यह सवाल तो अुनके मनमें नहीं अुठा। सवाल यह है कि साथीके नाते सम्मति कैसे दें? परंतु मैंने यह कल्पना नहीं की कि वल्लभभाओीने धार्मिक दृष्टिसे विचार किया है। अुन्होंने तो राजनैतिक दृष्टिसे ही विचार किया और यह ठीक भी है। मेरा और वल्लभ भाओीका संबंध भी धार्मिक नहीं कहा जा सकता। वल्लभ भाओीकी कठिनाओी तो यह है कि अिसका अनर्थ होगा। वे लोग (सरकार) कहेंगे कि यह गांधी तो कैसा ही आदमी है, पागल हो गया है, अुसे पागलपन करने दो। जनताको भी आघात पहुँचेगा। और कैसे अनभ्यस्तोंका गलत अनुकरण होनेका डर भी बहुत बड़ा है। परंतु भले कैसा हो। मैं

पागल माना जाअूं और मर जाअूं तो अिसमें बुरा क्या है? तब तो अगर मुझे बनावटी महात्मापन मिला होगा तो वह खतम हो जायगा। यह अच्छा ही है। "

*　　　　　*　　　　　*

"वल्लभभाओी बोले — मेरी तो अब भी ना है। परंतु आपको जैसा ठीक लगे वैसा कीजिये।"

मैं अिस चर्चामें नहीं पड़ूंगा कि बापूजीके साथ सरदारका संबंध धार्मिक कहा जा सकता है या नहीं। परंतु अनका संबंध परिवारके अंतरंग व्यक्ति जैसा तो था ही। यरवडा जेलमें ता. ८-५-३३ को बापूजीने आत्मशुद्धि और समाजशुद्धिके लिये २१ दिनके अुपवास शुरू किये और अुसी दिन शामको अुन्हें छोड़ दिया गया। बाहर निकलनेके बाद अुन्होंने जो बयान दिया अुसमें सरदारके बारेमें प्रगट किये गये अुद्गारोंसे अुनके संबंधका हूबहू वर्णन मिलता है

"जेलमें सरदार वल्लभभाओीके साथ रहनेका अवसर मिला यह मेरा बड़ा सौभाग्य था। अुनकी अद्वितीय शूरवीरता और ज्वलंत देशभक्तिका तो मुझे पता था परंतु जिन सोलह महीनोंमें अुनके साथ रहनेका जो सौभाग्य मुझे मिला अुस तरह मैं अुनके साथ कभी नहीं रहा था। अुन्होंने मुझे जिस तरह प्रेमसे परिप्लावित किया अुससे मुझे अपनी प्यारी मांकी याद आ जाती थी। अुनमें अैसे माताके गुण होंगे यह तो मैं जानता ही न था। मुझे जरा भी कुछ हो जाता तो वे बिस्तरसे अुठ जाते थे। मेरी सुविधाकी छोटीसे छोटी चीजके लिये वे खुद चिन्ता रखते थे। "

अिस प्रेमके कारण ही हम अिन पत्रोंमें देखते हैं कि वे बापूजीके चाचीजी से भाभी और अन्तमें चि. (चिरंजीवी) बन गये थे। यद्यपि अिन पत्रोंमें ज्यादातर पत्र राजनैतिक कामकाजसे संबंध रखने वाले हैं, फिर भी अुनमें बापूजीका भी अुनके प्रति अैसा ही प्रेम

और अैसी ही चिन्ता हम देख सकते हैं। साथ ही लगभग तीस वर्षके लम्बे अर्सेके अितने गहरे सम्बन्ध और अितनी विविध हलचलोंमें साथी रहने पर भी बापूजीको सरदारके नाम अपेक्षाकृत थोड़े ही पत्र लिखनेका मौका आया है। यह सच है कि जहां तक सम्भव होता बापूजीसे पूछे बिना अुनसे सलाह-मशविरा किये बिना सरदार शायद ही कोअी काम शुरू करते थे। जब पूछ सकनेकी स्थिति न होती तब सरदार अिस बातकी बड़ी चिन्ता रखते कि मेरे कामके बारेमें बापूजीका क्या खयाल होगा। मगर अुन्हें पत्र द्वारा सलाह-मशविरा करनेकी आदत नहीं थी। रूबरू मिलकर ही वे जो पूछना होता बापूजीसे पूछ लेते थे। अनिवार्य होने पर ही वे पत्र द्वारा सलाह लेते थे। साथ ही लंबी चर्चा करनेकी भी अुन्हें आदत नहीं थी। मतलबकी बात वे अिशारेमें समझ लेते और तफसील अपने आप पूरी कर लेते थे।

सरदार बापूजीकी हां-में-हां मिलानेवाले या अंधे अनुयायी कहलाते थे। अनुयायी वे जरूर थे मगर किस हद तक अंधे अनुयायी थे यह अेक प्रश्न है। राजाजीने अेक मौके पर कहा है "दूसरे लोग बापूजीके अंध अनुयायी होंगे मगर सरदार तो हरगिज नहीं थे। वे हमेशा बापूजीकी दृष्टिसे देखनेका प्रयत्न जरूर करते थे परंतु यह बात नहीं थी कि अुनकी अपनी दृष्टि थी ही नहीं। फिर भी बापूजीकी ही नजरसे देखनेकी खातिर वे जान-बूझकर अपनी आंखों पर पट्टी बांध लेते थे।" और हमेशा आंखों पर पट्टी ही बांधकर रखते थे अैसी बात भी नहीं थी। सन् १९४ में कांग्रेसके सामने यह प्रश्न खड़ा हुआ था कि अुस समय हो रहे विश्वयुद्धमें मित्रराज्योंकी मदद की जाय या नहीं। प्रश्न यह था कि कांग्रेसकी सत्य और अहिंसाकी नीति है, अिसलिअे मदद किस तरह दी जाय? कांग्रेस कार्यसमितिके अधिकांश सदस्योंका जिनमें सरदार भी थे कहना यह था कि कांग्रेसकी सत्य और अहिंसाकी नीति स्वराज्य प्राप्तिके लिअे है। परंतु देश पर बाहरसे हमला हो तब अिस नीतिसे चिपटे रहनेके लिअे कांग्रेस बंधी हुअी

नहीं है। यह भी नहीं कहा जा सकता कि देश जिसके लिये तैयार है। और कांग्रेस लोगोंका प्रतिनिधित्व करनेवाली संस्था है, जिसलिये बाहरी आक्रमणसे लोगोंकी रक्षा करनेमें मदद देनेकी अुसकी जिम्मेदारी है। असे अवसर पर वह अपनी अहिंसाकी नीति छोड़ सकती है और अुसे छोड़ना चाहिये। जिसलिये सरकार द्वारा कांग्रेसकी कुछ शर्तें स्वीकार करनेकी सूरतमें कांग्रेस युद्ध प्रयत्नोंमें मित्रराष्ट्रोंको मदद देनेके लिये तैयार हो गयी थी। लेकिन बापूजीके लिये तो अहिंसा अेक नीति नहीं बल्कि धर्म था। साथ ही नीतिके रूपमें भी जब अुसके अधूरे आचरणसे ही देशको जितना काम हुआ था अुसे क्यों छोड़ देना चाहिये? जिसलिये जब कांग्रेस कार्यसमिति और महासमितिने यह प्रस्ताव पास किया कि हमारी शर्तें मान ली जायं तो युद्धमें मदद की जाय तब बापूजीने कांग्रेसके सदस्य न होने पर भी अुसे सलाह-मशविरा और नेतृत्व देनेका जो काम करते थे अुससे मुक्त होनेकी मांग की। कांग्रेसने दुःख और भारी हृदयके साथ अुसे मंजूर किया। सरदारके लिये यह अवसर बड़े धर्मसंकटका था। जो आज तक बापूजीके दाहिने हाथ माने जाते थे अुनका यह बापूजीसे अलग होनेका अवसर था। अुन्होंने अपनी सारी स्थिति गुजरात प्रान्तीय समितिके सामने ता. १९-७-'४ के अपने भाषणमें स्पष्ट की है:

> बापूजीने यह सवाल रखा कि मुझे अपना प्रयोग करनेकी पूरी स्वतंत्रता और गुंजाअिश होनी चाहिये। हमने कहा कि आपकी तरह तेजीसे जितने वेगसे हम आपके पीछे नहीं चल सकें तो हमें आप पर भार नहीं बनना चाहिये।
>
> आज हमें यह निर्णय करना है कि हमें स्वतंत्रता मिल जाय पूरी सत्ता मिल जाय तो क्या हम सेनाके बिना काम चला सकेंगे? अगर हम यह कहें कि हमारे पास हुकूमत आ जायगी तो हम सेनाको बिखेर देंगे तब तो अंग्रेज कभी हमें सत्ता नहीं

देंगे। ज्यादातर मुसलमान असके खिलाफ हैं। कांग्रेसके बाहरके मुसलमान तो हिंसा पर ही कायम हैं। अहिंसाको कोई समयके लिअे बड़े क्षेत्रमें ले जाना मुल्तवी करना पड़े तो अुसका यह अर्थ नहीं कि स्वराज्यकी लड़ाओके लिअे कांग्रेसकी अहिंसाकी प्रतिज्ञामें परिवर्तन करना है। परन्तु मैं आपके साथ किसी तरहकी बहस करके आपके विचार नहीं बदलना चाहता और अहिंसामें आपकी श्रद्धाको भी कम नहीं करना चाहता।"

"बाहरके लोग अब तक मुझे बापूका अंधा अनुयायी कहते थे। मैं कहता था कि वैसा हो सकूं तो मुझे गर्व होगा परंतु देखता हूं कि मैं वैसा नहीं हूं। मैं तो आज भी बापूसे कहता हूं कि आप हमारा नेतृत्व करें, तो हम आपके पीछे-पीछे चलेंगे। परंतु वे कहते हैं कि आंखें खोलकर अपनी बुद्धिके अनुसार चलो।

हम भी बरसों बरसाद करके मुश्के साथ चले हैं। अब यहां तक टेढ़े-तीरछे आ गये हैं तो अब अन्तमें क्यों अलग हों? मगर यह तो अकल्पित स्थिति आ खड़ी हुई है। यह असंभव है कि अुसका असर देश पर न पड़े। १ १२ देश तो बिन दो-तीन सप्ताहमें खतम हो गये।

"कार्यसमितिका प्रस्ताव आठ पंक्तियोंका है। अुसमें न सरकारकी आलोचना है और न लोगोंकी या और किसीकी। अुसमें लच्छेदार भाषा भी नहीं है। अुस प्रस्तावका अर्थ यह है कि हिन्दुस्तान भी स्वतंत्र और बिग्लैण्ड भी स्वतंत्र ऐसा हो तो हम मदद देंगे।

"अगर आपका यह खयाल हो कि बापूजी जो कहते हैं वही ठीक है तो वैसा ही प्रस्ताव पास कीजिये और अुस पर अमल कीजिये। बादमें अुन्हें धोखा न दिया जाय। किसीको बिस डरसे विचार नहीं करना चाहिये कि बिससे बापूजीको

बफादारीका सवाल है। आपका यह खयाल हो कि वे जिस प्रकारकी अहिंसाके बारेमें कहते हैं अुसी प्रकारकी अहिंसाका पालन करना है तो आप वैसा प्रस्ताव पास कीजिये न परंतु बापूजी हमसे अभी बफादारी नहीं चाहते। हमारी शक्ति कितनी है यह हमें अुनसे साफ-साफ कह देना चाहिये। जो चीज कांग्रेसके अन्दर नहीं है, अुसके लिये है कहनेसे काम नहीं चलेगा। अुससे नुकसान होगा।

"जो कायर है अुसे अहिंसा क्या सिखाअूं? अुसके पास मैं जो हल्की चीज रखता हूं अुसे वह समझ सकता है। अुसके सामने भारी वस्तु रखूं, तो वह घबरा जायगा। अिसलिये अुसे साधारण आदमीके रास्ते ल्या दें तो वह कम सकता है। बादमें आगे बढ़ जायगा।

अब तक हमने अहिंसाके प्रयोग किये यह ठीक किया। मगर लोगोंमें जो कायरता है — वे जहां खड़े हैं अुससे आगे नहीं बढ़ सकते — अुसका क्या किया जाय? जहांके तहां खड़े रहनेका यह समय नहीं है। हमारे सामने चुनाव करनेका समय आ गया है।

"आपमें से जो केवल रचनात्मक काममें लगे हुये हैं और हर हालतमें अहिंसा पर कायम रहना चाहते हैं, अुनके सिर पर हमसे ज्यादा जिम्मेदारी है। आपका यह खयाल हो कि कांग्रेस गलत रास्ते पर जा रही है, तो आपको निःसंकोच अुसका भार अुठा लेना चाहिये। मैं तो जरूर वह भार आपको सौंप दूंगा।

अब यह देखें कि अिस वस्तुका बापूजीने किस ढंगसे विचार किया था। मेरी कौमी नहीं सुनता शीर्षकसे ता १४-७-'४ के हरिजनबन्धु में लिखे अपने लेखमें वे कहते हैं

भले ही जिस समय सरकार और मैं अलग-अलग मार्गों पर जाते दिखायी देते हों परंतु क्या हमारे हृदय थोड़े ही अलग हो जाते हैं ? मैं मुझे अलग होनेसे रोक सकता था। परंतु अैसा करना मुझे ठीक नहीं लगा। अगर नये मालूम होनेवाले क्षेत्रमें अहिंसाका प्रयोग सफल कर दिखानेकी मुझमें शक्ति होगी तो मेरी श्रद्धा टिकी रहेगी। जनताके बारेमें मेरी राय सही होगी तो राजाजी और सरदार पहलेकी तरह ही मेरे पक्षमें हाथ अुठायेंगे।

* * *

"कांग्रेस कार्यसमितिने माना कि भीतरी झगड़ोंमें तो अहिंसासे काम लेना अब भी संभव है परन्तु बाहरसे चढ़कर आनेवाले शत्रुके विरुद्ध अहिंसासे लड़नेकी शक्ति हिन्दुस्तानमें नहीं है। जिस अविश्वाससे मुझे दुःख होता है। मैं नहीं मानता कि हिन्दुस्तानके करोड़ों निःशस्त्र लोग जिस व्यापक क्षेत्रमें अहिंसाका प्रयोग सफल नहीं कर सकते। जिनके नाम कांग्रेसके रजिस्टरमें हैं वे सरकार जैसे विचलित श्रद्धावाले सरदारको अपना विश्वास बताकर आश्वासन दे सकते हैं कि अहिंसा ही हिन्दुस्तानके अनुकूल अेकमात्र हथियार है।

"जिसलिअे मैं आशा रखता हूं कि प्रत्येक गुजराती स्त्री-पुरुष अहिंसासे चिपटे रहकर सरदारको विश्वास दिलायेगा कि वह कभी हिंसक बलका प्रयोग नहीं करेगा। और हिंसक बलका प्रयोग करनेसे जीत होनेकी आशा हो तो भी वह असे छोड़ देगा और कभी अहिंसक बलका त्याग नहीं करेगा। हम भूलें करते-करते ही भूलें न करना सीखेंगे। जितनी बार गिरेंगे अुतनी ही बार अुठेंगे।

हरिजनबंधु के अुसी अंकमें 'दिल्लीका प्रस्ताव' शीर्षक लेखमें बापूजीने कहा

१

बम्बअी
शुक्रवार
८ जुलाअी १९२१

भाअीश्री वल्लभभाअी

मैं सोमवारको सुबह वहां आअूंगा और अुसी दिन वापस जाअूंगा। राजनैतिक मंडलको क्या करना चाहिये अिस बारेमें भाअी अिन्दुलाल[1] को पत्र लिखा है। अुसे देख लें। मुझे आशा है कि असहयोगका निश्चय किया जायगा। कौंसिलोंका सर्वथा बहिष्कार ही हमारा आधार है।

भाअी मावळंकर[2] वगैराको खबर दे दें।

मोहनदासके वन्देमातरम्

भाअीश्री वल्लभभाअी पटेल
बैरिस्टर,
भद्र अहमदाबाद

---

१ श्री अिन्दुलाल याज्ञिक। गुजरात प्रांतीय समितिकी स्थापनाके समय अुसके मंत्री। बादमें कांग्रेससे अलग हो गये।

२ श्री गणेश वासुदेव मावळंकर। अहमदाबादके सुप्रसिद्ध वकील और गुजरात प्रान्तीय समितिके मंत्री १९२९-२१। १९३७ में कांग्रेस विधान-सभाओंमें गयी तब बम्बअी विधान-सभाके अध्यक्ष और आजकल भारतीय संसदके अध्यक्ष।

"भास किम्बा हुवा प्रस्ताव तैयार करनवाके राजाजी थे। अपनी भूमिका सही होनेके बारेमें जितना निश्चांक मैं था मुतने ही निश्चांक वे अपनी भूमिकाके सही होनेके बारेमें थे। मुनके बाग्रह साहस और युद्ध निरभिमानके आगे साथी हार गये और मुनके समर्थनमें शरीक हो गये। मुनकी बड़ीसे बड़ी जीत तो सरदारको अपने पक्षमें कर लेना है। अगर मैं राजाजीको रोकना चाहता तो वे अपना प्रस्ताव पेश करनेका विचार भी न करते। परंतु मैं अपने लिये जितनी मुक्तता और आत्मविश्वासका दावा करता हूं मुतनी ही मुक्तता और आत्मविश्वास मैं अपने साथियोंके बारेमें भी स्वीकार करता हूं।"

ता १-८'४ को सरदारको लिखे अपने पत्रमें वे कहते हैं

आप बीमार पड़ते रहते हैं यह ठीक नहीं। कुछ आराम लीजिये। परेशान क्यों होते हैं? आप जो करते हैं मुसे मैं ठीक ही मानता हूं क्योंकि आखिर तो मनुष्य अपनी प्रेरणा या शक्तिके अनुसार ही चल सकता है। भूल होती हो तो यह भी करनेसे ही सुधर सकती है न?

मुझे बिलकुल शक नहीं है। राजनीति भी मेरे ही मार्ग पर है। परन्तु यह बात अभी नहीं।

परन्तु सरकारने कांग्रेसके प्रस्तावका कोजी जवाब नहीं दिया जिसलिये युद्धमें मदद देनेका सवाल ही नहीं रहा। कांग्रेस फिर बापूजीके पास गओ और मुनकी सूचनानुसार मुसने व्यक्तिगत सविनयभंगका मार्ग अपनाया।

१९४७ में जब कांग्रेसने देशके बंटवारेकी और पाकिस्तानकी बात मान ली तब फिर सरदार बापूजीसे अलग विचारमें चले। बापूजीने खुद ही ता १९ ४ ४७ के पत्रमें सरदारको लिखा है मैं यह भी देखता हूं कि हमारे बीच विचार करनेमें भेद होता ही रहता है।

मिलने पर भी सरदारको बापूजीका विश्वास अन्त तक प्राप्त होता रहा।

जैसे बापूजी सरदारको चिरंजीवी लिखते थे वैसे ही सरदार भी अुन्हें हमेशा चिरंजीव मानते थे। बापूजीके देहान्तके बाद मुझे लिखे पत्रमें सरदार लिखते हैं :

> "हमारे सिरसे छत्र अुठ गया है। अुनकी छायामें हमें आश्रय मिलता था। अब यहां रहना अच्छा नहीं लगता। हमारे सिर पर बहुत बोझ आ पड़ा है। कैसे अुठा सकेंगे यह भगवान जाने। अीश्वर करे सो सही।"

बापूजी कभी मौतकी बात करते तो सरदार विनोदमें कहते 'स्वराज्य लिये बिना कहां जाना है? और बादमें तो आपको अकेले कौन जाने देगा? मैं भी तो साथ ही हूं न।' सरदार अक्षरशः बापूजीके साथ नहीं जा सके। बापूजीके चले जानेके बाद लगभग तीन वर्ष जिये परन्तु अुन्हें जीवनमें कोअी रस नहीं रह गया था। देशके सामने बड़े विकट प्रश्न अुपस्थित हैं जब तक अीश्वर जिलाये तब तक अुन्हें हल करनेके भरसक सभी प्रयत्न कर लेने हैं — अिसी कर्तव्यबुद्धि अथवा धर्मबुद्धिसे वे जीते थे।

बापूजीके साथ सरदारके सम्बन्धकी यहां टूटी-फूटी कल्पना दी गयी है। अुनके पत्रोंके विषयमें तो खास तौर पर क्या कहूं? यही कामना है कि पाठकोंको अुनसे जीवनप्रद स्फूर्ति और प्रेरणा मिले।

नरहरि परीख

बापूके पत्र — २

सरदार वल्लभभाआीके नाम

[८-७-२१ से २-१२-'४७ तक]

२

शुक्रवार

भाओश्री वल्लभभाओ

भाओ गिडवानी[2] से खूब बात हुओ। वे परेशान हैं। काका[3] और आश्रमवासियोंके खिलाफ कुछ शिकायत है। आप सबको जमा करके निपटारा कर दें। काकाकी तरफसे कैसे परेशानी होगी यह समझमें नहीं आता। काकाने अिस बार तो कोओ बातचीत नहीं की। सारा असन्तोष मिट जाय तो अच्छा।

अनसूयाबहन[4] की मांगका निपटारा कर डालें। उनके पास जाअिये और जो रकम चाहिये उसका चेक दे दीजिये।

विठ्ठलभाओ[5] के साथ फिरसे खूब बातें हुओ यह मणिबहन[6] या डाह्याभाओ[7] से कहिये। मैं मानता हूं कि विठ्ठलभाओ अब चरखेका महत्त्व कुछ अधिक समझते हैं। मुझे यह जरूर लगता है कि उनका सही क्षेत्र कौंसिल है। वे लोगोंमें पैठकर, उनमें ओतप्रोत होकर सेवा नहीं कर सकते। औसा नहीं कि वे सेवा नहीं करना

---

१ यह पत्र १९२१ में लिखा गया मालूम होता है।

२ स्व श्री असुदमल टेकचंद गिडवानी। गुजरात विद्यापीठके आचार्य १९२ से १९२१ तक।

३ दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर — आश्रमवासी।

४ अनसूयाबहन साराभाओ। अहमदाबादके मजदूर आन्दोलनकी संस्थापिका और मजदूर-संघकी अध्यक्षा। मजदूर-संघकी तरफसे चलनेवाली पाठशालाओंके लिओ मदद देनेकी बात मालूम होती है।

५ स्व माननीय विठ्ठलभाओ पटेल। पूज्य बापूके बड़े भाओ।

६–७ मेरी और मेरे भाओ।

चाहते। परन्तु जिस चीजको मुन्होंने अपनेमें बढ़ाया नहीं है। कौंसिलमें जाकर काम करनेकी योग्यताको बढ़ाया है। मेरे खयालसे दोनोंके लिये अलग-अलग गुण चाहियें। बम्बअीमें विट्ठलभाअीकी कोठरी लिया करता हूं सो तो मैंने देखा ही नहीं।

मोहनदासके वन्देमातरम्

भाअीश्री वल्लभभाअी पटेल
बैरिस्टर
भद्र अहमदाबाद

२

(ता १-८-२१)
सिलहट, मंगलवार

भाअीश्री वल्लभभाअी

आपका पत्र मिला। मैंने आज जो तार दिया है अुसकी नकल भी भेजता हूं। हममें जोर हो तो मैं तो नहीं कहूंगा कि वे' बन

१ जो तारीख ( ) जैसे कोष्टकमें दी गअी है वह डाककी मोहरकी तारीख है।

२ जिसके बादका पत्र देखिये।

३ प्रिन्स ऑफ वेल्स। जिस पत्रमें अुनके बहिष्कार सम्बन्धी सूचनायें हैं। वे नवम्बर मासमें हिन्दुस्तान देखने आये थे। कांग्रेसने अुनका बहिष्कार करनेका निश्चय किया था। १७ नवम्बरको जब वे बम्बअी बन्दरगाह पर अुतरे, तब बम्बअीमें दंगा-फसाद हुअे थे। अुस सम्बन्धमें गांधीजीने अुपवास किये थे। जिन बड़े शहरोंमें वे गये वहीं अुनका सख्त बहिष्कार हुआ था। कुछ शहरोंमें लाठी-प्रहार भी हुआ था।

तक अहमदाबादमें रहें तब तक ही हड़ताल रखी जाय और गरीब लोगोंको जो सामान चाहिये अुसके मिल सकनेका बन्दोबस्त किया जाय। जिसका परिणाम मार्शल लॉ (फौजी कानून) हो सकता है। अुसे हम बरदाश्त करें और मर जायं। परन्तु अैसा लगता है कि जितना तो हमसे नहीं हो सकेगा। जितनी शक्ति हममें नहीं आयी है। जिसलिये जितना हो सके अुतना हम करें। यह बता दें कि हम अुनके साथका सम्बन्ध किस तरह बन्द कर सकते हैं। म्युनिसिपैलिटी जितना सम्बन्ध तोड़ सके अुतना तोड़े। अुन्हें कोअी सलाम न करे। जो विद्यार्थी सरकारी पाठशालाओंमें पढ़ते हैं, वे भी अुनके पाठशालामें आने पर न अुठें। हममें जोर हो तो अुनके दफ्तर पर पहरा लगाकर लोगोंको जानेसे रोका जा सकता है। जिसके अलावा भी हमारी नापसन्दगी सभ्यतापूर्वक बतानेके बहुतसे रास्ते सूझ जायेंगे। अुन्हें अपनाकर हमें अपनी स्थिति प्रगट करनी चाहिये। मेरी सलाह है कि अुनके बहिष्कारका सारा कार्यक्रम हम आजसे ही घोषित कर दें और लोगोंको भी शान्ति किन्तु दृढ़तासे काम लेनेकी तालीम दें। वे प्रिन्स ऑफ वेल्सके नाते अहमदाबादमें स्वागत न लिया सकें जितना करनेकी हममें ताकत होनी चाहिये।

जिससे ज्यादा यहां बैठा हुआ मैं नहीं कह सकता। जितना जरूर कहूंगा कि अुससे बाहर कुछ न करें। यह जरूरी है कि हम पीठ न दिखायें। हमारे बहिष्कारका आग्रह रखनेसे अशान्ति होनेकी सम्भावना हो तो भी मेरी सूचनाओंका अमल मुल्तवी रखें।

आपने स्वागत-समितिका अध्यक्ष-पद[1] स्वीकार किया सो ठीक ही हुआ। जहां सेवाको ही धर्म माना है वहां अैसी सम्मानकी अुपाधियां भी हमें गिरा नहीं सकतीं।

मोहनदासके वन्देमातरम्

[1] अहमदाबादमें होनेवाली कांग्रेसकी।

४

सिलहट
आसाम
१०-८-'२१

आदरणीय वल्लभभाअीकी सेवामें

आज आपको अिस प्रकार तार दिया है

"Event coming, have Gujarat day's hartal, labourers joining after leave. Wednesday Thursday Chitagong. Saturday Barisal. Sunday and after Calcutta."

कल सवेरे खास ट्रेनमें सिलचरसे यहाँ पहुँचे। आज शामको ४ बजे यहाँसे रवाना होकर चटगाँव जायेंगे। सिलचरके लोग बिलकुल तालीम पाये हुअे नहीं मालूम होते। काम करनेवालोंका भी पूरा अभाव दिखाअी देता है। अभी हड़तालवाले प्रदेशमें सफर करना बाकी है। कलकत्ता कब पहुँचेंगे यह निश्चित नहीं कहा जा सकता यद्यपि ४ तारीखकी शामको पहुँचनेकी आशा है।

---

१ अगर (प्रिन्स ऑफ वेल्स) आवें तो सारे गुजरातमें अेक दिनकी हड़ताल (रखी जाय)। मजदूर छुट्टी लेकर शामिल हों। बुधवार-गुरुवार चटगाँव शनिवार बारीसाल रविवार और बादके दिन कलकत्ता।

२ आसामके चायके बगीचोंमें मजदूरोंकी रोजीकी दरोंमें की भारी कमीके कारण मजदूर चायके बगीचे छोड़कर जाने लगे थे। बगीचोंके गोरे मालिक मजदूरोंको जानेसे रोकते थे। अिस सिलसिलेमें वहां बड़ी गड़बड़ पैदा हुअी थी। अुसी हड़तालका यहां उल्लेख है।

यहां मारवाड़ी व्यापारियोंके हस्ताक्षर[1] थोड़े बहुत हुए जरूर हैं। परन्तु अिनमें से कितनों पर आधार रखा जा सकता है यह तो आगे चलकर ही पता चलेगा।

अलीभाअियों को पकड़नेकी बातें चल रही हैं यह तो आपने देखा ही होगा।

विनीत
जमनालाल

भाअीश्री वल्लभभाअी पटेल
बैरिस्टर
मु. अहमदाबाद

५

(५ सितम्बर, १९२१)
सोमवार
१४८, रसा रोड
कलकत्ता

भाअीश्री वल्लभभाअी

आपका पत्र मिला। मैं दर्शकों[4] के बारेमें यंग अिंडिया[5] में लिखूंगा।

---

१ विदेशी कपड़ेके बहिष्कारके लिये।

२ स्व. मौलाना शौकतअली और स्व. मौलाना मोहम्मदअली।

३ स्व. मगनलाल खुशालचन्द गांधी। गांधीजीके भतीजे। दक्षिण अफ्रीकामें फिनिक्समें अुनके साथ थे।

४ अुस साल अहमदाबादमें होनेवाली कांग्रेसके दर्शक। देखिये यंग अिंडिया २९ सितम्बर, १९२१।

५ यंग अिंडिया गांधीजीका अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र।

मेरा भी तो वहां आनेके लिये तड़प ही रहा है। मगर मद्रास छुट्टी नहीं मिल सकती। मद्राससे राजगोपालाचार्य का तार आया है कि भुसका तार मिलनेके बाद ही मैं मद्राससे रवाना होभु। १२ तारीख तक मुझे यहां काम भी है।

बंगालमें स्वदेशीका काम ठीक चला है। चरखे जरूर अच्छे चले हैं मगर सूतका वजन रखने और खादी पर ध्यान देनेका काम कम हुआ है।

जैसा लगता है कि जिस महीनेके लिये कानून-भंग रुक सके तो अच्छा। नेताओंकी शर्तोंके अनुसार भी जितना धरना दिया जा सके भुतना जल्दी दिया जाय। जब हम कानून तोड़ें तब जान हथेली पर लेकर ही तोड़ें यह ज्यादा ठीक लगता है। अक बार हमारी मंडलीके साथ मेरी चर्चा हो जाय तो मुझे ज्यादा पता चलेगा। फिलहाल स्वदेशी पर — बहिष्कार और खादी भुत्पत्ति जिन दोनों अंगों पर — खूब ध्यान दिया जाय तो अच्छा।

मापक पत्र परसे मान लेता हूं कि आजकल वहां (विद्यापीठमें) कोभी झगड़ा नहीं चलता।

अपनी तबीयत सम्भाले। दिसम्बर तक बहुत काम करना है। हिन्दुस्तानका चेहरा तो जरूर बदलेगा। मिट्टी होगा या निखार यह तो भीश्वरके हाथ है या हमारे।

१ चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य। तामिलनाडके पार्टीनेता मुख्य मंत्री। १९३७ में कांग्रेसने प्रान्तमें मंत्रिमंडल बनाये तब मद्रास प्रान्तके प्रधान मंत्री। १९४६-४७ की अन्तरिम केन्द्रीय सरकारमें भुद्योग और रसद-मंत्री। १९४७-४८ में पश्चिमी बंगालके गवर्नर। १९४८ में प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल। जुलाभी १९५० से अक्तूबर १९५१ तक केन्द्रीय सरकारके गृहमंत्री। आजकल मद्रास राज्यके मुख्य मंत्री।

वाअिसरॉयके भाषण परसे मेरा मोह तो और भी कम हो गया है। युवराज[1] अगर राजनैतिक कामसे नहीं आ रहे हैं तो किस लिये आ रहे हैं और किसके खर्चसे? परन्तु अिसका हमें अभी विचार ही नहीं करना है।

मोहनदासके वन्देमातरम्

भाअीश्री वल्लभभाअी पटेल
बैरिस्टर,
भद्र अहमदाबाद

६

(१९ सितम्बर, १९२४)
भा. व. १

भाअीश्री वल्लभभाअी

मेरा निश्चय तो अिस पत्रके पहुंचनेसे पहले ही आप जान लेंगे। आप सिद्ध हैं अिसलिये घबरायें नहीं। अपना सौंपा हुआ सब काम ज्यादा जोरोंसे करते रहिये। किसीको घबराने न दें। मैं अुपवास[2] पूरा करना चाहता हूं। मुझे डर है कि मणिबहन खूब घबरायेगी। अुसे समझाअिये। मैं अलग पत्र नहीं लिख रहा हूं।

बापू

भाअीश्री वल्लभभाअी पटेल
बैरिस्टर
भद्र अहमदाबाद

---

१ प्रिन्स ऑफ वेल्स।

२ हिन्दू-मुस्लिम अेकताके लिये ता. १७-९-२४ से ता. ७-१०-२४ तक दिल्लीमें गांधीजी द्वारा किये गये २१ दिनके अुपवास।

७

२१ सितम्बर, १९२५
शनिवार

भाओ वल्लभभाओ

२ तारीखको बम्बओ पहुंचूंगा। २१ को आप भी कच्छ जा ही रहे हैं न? अिसलिअे आप तो २ को ही बम्बओ पहुंच जायंगे। मणिबहनके बारेमें देवधर[1] का तार आया है। वह अुसके पास भेजा है। दिसम्बरमें अुनीस लेनेको कहते हैं। डाह्याभाओ[2] को मिलमें तो हम न रखें। और बिड़ला[3] के यहां रखनेमें ज्यादातर मिलका ही काम रहनेकी संभावना है। अिस बारेमें अधिक बात मिलेंगे तब करेंगे। *जमनालालजी[4] के साथ मैं अिसका विचार कर रहा हूं।*

बापूके आशीर्वाद

शेष बातें लिखनेका मुझे समय नहीं मिलता।

भाओ वल्लभभाओ पटेल
बैरिस्टर,
भद्र, अहमदाबाद

---

१ भारत सेवक समाजवाले श्री देवधर। वे पूनाके सेवासदनकी देखभाल करते थे। गांधीजीने मुझे सेवासदनमें रखनेका अिन्तजाम किया था। तदनुसार मैं वहां १ मास रही थी।

२ कांग्रेसने खादीको अपनाया था अिसलिअे असहयोगी होनेके नाते डाह्याभाओको कपड़ेकी मिलमें रखना ठीक नहीं लगा।

३ श्री घनश्यामदास बिड़ला। प्रसिद्ध अुद्योगपति। बापूके भक्त। हरिजन सेवक संघ स्थापित हुआ तबसे अुसके अध्यक्ष। अुस समय केन्द्रीय विधान-सभाके सदस्य।

४ स्व. जमनालाल बजाज। मध्यप्रदेशमें गांधीजीके मुख्य साथी। चरखा संघके अध्यक्ष। कांग्रेसके खजांची १९२१-४०।

८

(२१ जनवरी १९२७)
रविवार रेलमें

भाईश्री वल्लभभाई

भाई अमृतलाल ठक्कर[1] शायद काठियावाड़ राजनैतिक परिषद्[2] के अध्यक्ष बननेसे इनकार करेंगे। राजनीतिके बारेमें कुछ भी कहे बिना राजनैतिक परिषद् नाम ही मुझे अटपटा लगता है। मेरे खयालसे देशी राज्योंकी परिषदोंमें राजनीतिको अभी कोई स्थान नहीं है। वहांके लोगोंने मिलकर काम करना सीखा ही नहीं। इसलिये मुझे तो वहांका मध्यबिन्दु चरखा ही लगता है। अगर अमृतलाल इनकार करें, तो आप अध्यक्ष बन जायेंगे न? मैंने मान लिया है कि आपके विचार मेरे विचारोंसे मिलते हैं। परन्तु यदि इस मामलेमें आपके विचार मुझसे भिन्न हों तो आप जरूर इनकार कर सकते हैं। कामका बोझ सिर पर आ पड़नेके डरसे इनकार न करें। इसे तो हम तुच्छ लेंगे। जवाबमें मुझे तार दीजिये। यह पत्र आपको गुरुवार मिलेगा। इसका जवाब आप Jamooee (Bihar) भेजें। वहां हम दिनमें कुछ समय ठहरेंगे। वैसे कुछ दिन १ पाव निपटाने हैं। शुक्रवारके दिन आरा रहेंगे। रविवारको पटना पहुंचेंगे। सोमवारकी रातको पटना छोड़ेंगे और मंगलवारको कलकत्ता होकर भोंपिया जायेंगे। बुधवारको भोंपियामें।

---

१ स्व० श्री अमृतलाल वि० ठक्कर (ठक्करबापा)। भारत सेवक समाजके सदस्य। हरिजन सेवक संघके बरसों तक मंत्री। कस्तूरबा स्मारक निधिके ट्रस्टी और मंत्री। गांधी स्मारक निधिके एक ट्रस्टी।

२ १९२८ में पोरबन्दरमें हुआ चौथा अधिवेशन।

मणिलाल[1] कहते थे कि मणिबहनका भीतर ही भीतर विवाह करनेका विचार है। मैंने खूब जाँच कर ली है। अभी तो यही निश्चय है कि वह विवाह नहीं करेगी। हम अुसे प्रोत्साहन दें। आप अुसकी चिन्ता छोड़ ही दीजिये। अुसकी चिन्ता मैं कर ही रहा हूँ और आगे भी करूँगा। अुसे कराची भेजनेकी तजवीजमें हूँ। वहाँ जानेको वह राजी है। वहाँकी आबहवा अुसे अनुकूल आयेगी और वह अच्छा काम कर सकेगी।

और सब बात तो महादेव या देवदास[2] लिखें तो लिखें। मेरी तबीयत ठीक रहती है।

बापू

श्रीयुत वल्लभभाई पटेल
कचरापट्टी[4] के अध्यक्ष महोदय
खमासा गेट अहमदाबाद

---

१ स्व. मणिलाल कोठारी। बहुत वर्ष तक गुजरात प्रान्तीय समितिके मंत्री थे।

२ स्व. महादेव हरिभाई देसाई। बापूजीके मंत्री। १५ अगस्त १९४२ को आगाखां महलके कारावासमें हृदयकी गति बन्द हो जानेसे अचानक अुनका अवसान हो गया।

३ पूज्य बापूजीके सबसे छोटे पुत्र।

४ यानी म्युनिसिपैलिटी।

९

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
३ ६ २८

भाअीश्री ५ वल्लभभाअी

अिसके साथ गवर्नर[1] को लिखे जानेवाले जवाबका मसौदा भेज रहा हूँ। लड़ाई ठीक चल रही है। अीश्वर आपको दीर्घायु करे। मेरी जरूरत पड़े तब लिखिये या तार दीजिये। आपको पकड़नेकी बातें आती ही रहती हैं। पकड़े गये तो कुछ आराम मिल जायगा। और न पकड़े गये तो हार माननेकी तो हमें सौगंध ही है।

बापू

वल्लभभाअी पटेल
स्वराज्य आश्रम
बारडोली

---

१ अुस समयके बम्बअीके गवर्नर सर लेस्ली विल्सन।

२ १९२८ के बारडोली सत्याग्रहके समझौतेके सम्बन्धमें जो बातचीत चल रही थी अुसके सिलसिलेमें।

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
२४-७-२८

भाजीश्री वल्लभभाजी

मेरे खयालसे तो हमें गवर्नरके भाषणका अत्यंत संक्षिप्त भुत्तर देना चाहिये। भुसमें लोगोंको भ्रममें डालनेका भारी प्रयत्न किया गया है। अैसी चीजका लम्बा जवाब देकर हम नुकसान भुठायेंगे यह समझ कर छोटा ही जवाब भेजता हूं। यंग िअंडिया में कल लेख[1] लिखा। भाषण परसे भुसे सुधारनेकी िअच्छा नहीं हुओ और अधिक लिखनेका विचार भी छोड दिया। आप वहां जो कुछ कहें, भुतना ही अभी काफी समझ लें। अगले सप्ताह तो फिर है ही। मगर अेक विचार आज मनमें रह रहकर भुठा करता है। मैं १४ दिन बडे नाजुक हैं। िअसलिये हमारी तरफसे अेक भी शब्द अैसा न निकले जिससे समझौता होना ही हो तो भुसमें कोभी विघ्न आवे। िअसलिये मैं मानता हूं कि अगर फिलहाल वहां आपको कोभी काम न हो तो थोडे दिन यहां आकर रह जािअये या आपको ठीक लगे और आप चाहें तो मैं वहां आकर डेरा डालूं। आपको गिरफ्तार किये बिना तो अब काम चलेगा ही नहीं िअसलिये शायद मेरा पहलेसे ही वहां आकर बैठ जाना आवश्यक हो। िअन दोनोंमें से अेक भी कदम भुठाना जरूरी है या नहीं िअसका निश्चय सब बातोंकी जांच करके आपको ही करना है। िअसमें जिम्मेदार मैं नहीं आप हैं क्योंकि वहांकी वस्तुस्थिति मैं नहीं समझ सकता।

बापू

वल्लभभाजी पटेल
स्वराज्य आश्रम
बारडोली

---

१ देखिये यंग िअंडिया भाग १ अंक १ ता २६-७-२८।

११

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
११-७-२८

भाओश्री ५ वल्लभभाओ

आपका पत्र मिल गया। आज तो मुझे बुलानेके तारकी आशा रखी थी। मैंने अपनी सब तैयारी कर ली थी।

भाओ नरीमान[1] और हरिभाओ[2] यहां आ रहे हैं, जिसलिये अभी ज्यादा नहीं लिखता। हमारा रास्ता तो सीधा है। पटवारीको नहीं छोड़ेंगे जमीन नहीं छोड़ेंगे। जांच-समितिकी जांच पूरी होनी चाहिये। अुस पर अंकुश रखा जाय तो वह हमें बरदाश्त नहीं होगा। अगर आपको ठीक लगे तो के[3] और गेनिस[4] पहले ही पढ़ें। मुझे क्या आना चाहिये जिसके बारेमें तार दें।

---

१ स्व. खुरशेद नरीमान। अुस समय बम्बओ विधान-सभाके सदस्य। ये कभी वर्ष तक बम्बओ प्रांतीय समितिके अध्यक्ष रहे। बम्बओ कारपोरेशनके अध्यक्ष (मेयर) भी रह चुके थे।

२ स्व. दीवान बहादुर हरिलाल देसाओभाओ देसाओ। अुस समय बम्बओ सरकारकी कार्यकारिणी कौंसिलके सदस्य। अुनके हाथमें स्थानीय स्वराज्यका विभाग था।

३–४ दोनों अंग्रेज आओ. सी. अेस. अधिकारी। बारडोली जांच-समितिके सिलसिलेमें नियुक्त किये जानेवाले अधिकारियोंकी हैसियतसे अुनके नाम लिये जा रहे थे। बादमें मि. मेक्सवेल और मि. ब्रूमफील्ड नियुक्त किये गये।

मणिबहन मिल गयी। बहुत सूख गयी है[1]। मुझे अच्छी तरह भेज दिया है। अभी तो शहरमें ही रहेगी। पांच तारीखको आनेकी बातें कर रही है।

भाअी नरीमान और हरिभाअी मिल गये हैं। आपको विधान सभाके सदस्य बीचमें पड़कर सार्वजनिक रूपसे बुलायें तो अुनके आमंत्रण पर आना मुझे शिष्ट प्रतीत होता है। धर्म तो वही है जो हमने बनायी है।

बापू

१२

लंदन
२१ १ ३१

भाअी वल्लभभाअी

पत्र लिखनेका समय ही नहीं रहता। आज भी फेडरल कमेटी में बैठा लिख रहा हूं। आपको नाकका अिलाज करा ही लेना चाहिये। यहां मेरा सब काम परिषद् के बाहर ही होता है। मैं मानता हूं कि आज जिसका अुपयोग थोड़ा होगा परन्तु बादमें खूब होगा। यहांसे छूट लेकर आनेकी आशा कम ही है। परन्तु मार खाकर नहीं आअूंगा। बहुतसे जिम्मेदार आदमियोंसे मिल रहा हूं।

---

१ बारडोली लगानबन्दीकी लड़ाईके समय वहांके रानीपरज प्रदेशके बोलण नामक गांवमें कुछ काम करनेके लिये रखा गया था। वहां अुसे पीलिया हो गया, जिसलिये काम छुड़ाकर अिलाजके लिये अहमदाबाद भेज दिया गया था।

२ १९३१ की गोलमेज परिषद्में यह विचार हो रहा था कि हिन्दुस्तानका विधान संघीय (फेडरल) ढंगका होना चाहिये। अुसके लिये नियुक्त कमेटी।

३ गोलमेज परिषद्।

संभव है नवम्बरके मध्यमें परिषद्का काम पूरा हो जाय। लगभग सारे यूरोपसे निमंत्रण मिले हैं। अिन देशोंमें जानेकी हार्दिक अिच्छा है। जानेसे लाभ ही होगा। सबसे मिलकर आपके निर्णयोंका तार दें। अगर सफरकी जरूरत समझें तो मुझे अेक महीना अधिक लगेगा यह मान लें। अिसलिअे मैं वहां जनवरीमें ही पहुंच सकूंगा। (अितना लिखनेके बाद मैं कुर्सी पर ही ऊंघने लगा। आप देख सकते हैं कि कलम नहीं चल रही है।) अगर अितना वक्त दे सकें तो दे दें। वहां तो आपको जो करना हो कीजिये। जवाहरलाल[1]ने तारका जवाब तो आपने देख ही लिया होगा। वहां कुछ भी हो मेरा यह निश्चित मत है कि वहां जब किसी भी प्रश्न पर आपको कुछ लेना जरूरी लगे तब जरूर कह दें। वहांके स्थानीय प्रश्नोंके बारेमें अभी यहां कुछ भी हो सकेगा अैसा मुझे नहीं दीखता। सोचा था कि बंगालके नजरबन्दोंके लिये कुछ हो सकेगा मगर मुझे अैसा अवसर ही नहीं मिला। चुनाव[2] के बाद कुछ हो जाय तो कह नहीं सकता।

मैं देख रहा हूं कि गुजरातमें सत्ताधीश अुलटा ही काम कर रहे हैं। अिन सब फैसलोंके खिलाफ जरूर लड़ें। रासके बारेमें जो पत्र आया है अुसे मैं कुतूहलसे भरा हुआ मानता हूं।[3] अंतमें तो हम अिन सबसे निपट ही लेंगे।

अब तो माना जायगा कि मैंने बहुत लिख डाला।

बापू

सरदार वल्लभभाअी पटेल
श्रीराम मेन्शन
सेण्डहर्स्ट रोड बम्बअी

---

१ पं. जवाहरलाल नेहरू। आजकल भारतके प्रधान मंत्री।
२ ब्रिटिश पार्लियामेंटका चुनाव।
३ जप्त हुअी जमीनें वापस देनेके बारेमें।

१३

(तार)

बारडोली (हिन्दुस्तान)

सरदार वल्लभभाई,

संगठनके जुल्मों (और) दूसरी बातोंसे मुझे घबराहट होती है। यहां लाचारीका अनुभव कर रहा हूं। फिर भी लगता है कि यहां हाजिर रहना मेरे लिअे आवश्यक है। बादमें पूनाकी यात्राको भी आवश्यक मानता हूं। निश्चित तारीखसे पहले देश पहुंचना संभव नहीं है। मार्फत अपनी राय भेजें।

बापू

३१-१ -३१

१४

पर्णकुटी
पूना
९-५ ३३

सरदारजी

रात अच्छी बीती है। बरसात यहां हवा और सर्दी बहुत ज्यादा नहीं लगती। बिलकुल गुफामें ही सोया था। बाप अन्दर बड़ा

---

१ गांधीजीने हरिजन आन्दोलनके सिलसिलेमें ८ मअी १९३३ को आत्मशुद्धिके लिअे २१ दिनके अुपवास शुरू किये थे। अुसी दिन अुन्हें सरकारने छोड़ दिया था। दूसरे दिन अुन्होंने लेडी विठ्ठलदास ठाकरसीके बंगलेमें जिसका नाम पर्णकुटी है यह पत्र लिखा था। यहां बापूजी २१ दिनके अुपवासके समय और बादमें कुछ समय रहे थे। अिसके बाद भी कभी बार यहां ठहरे थे।

है। यो अेक दिन काम करना पड़ेगा। फिर काम भी न करनेका निश्चय है। अभी तो कोअी खास कमजोरी नहीं लगती।

फिक्र बिलकुल न करें।

आपसे मैंने माताका प्यार अनुभव किया।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी
यरवडा जेल
पूना

१५

पर्णकुटी
पूना
रविवार[1]
चार बजे मौनम

भाअी वल्लभभाअी

आपको पिछला पत्र लिखनेके बाद तुरन्त ही हाथसे पत्र लिखना बन्द करना पड़ा था। मैंने देखा कि मुझमें जरूरी शक्ति नहीं आअी थी। अब शक्ति आ गअी है या नहीं यह आजमानेको भी कर रहा हूं। यह आजमाअिश तो आपको पत्र लिखकर ही की जा सकती है न?

डॉक्टरोंकी रिपोर्ट और सुहृदसे घबराअिये नहीं। होअिहि वही जो राम रचि राखा। मैंने माना था कि तीन सप्ताहमें चलने फिरने लगूंगा। मगर यह खयाल गलत निकला। फिर भी चिन्ताका कोअी कारण ही नहीं। विलंब हो रहा है इतनी ही बात है। सच पूछें तो चौसठ वर्षकी अुम्रमें दूसरा हो भी क्या सकता है? यह निश्चित समझिये कि मैं सकुशल हूं। प्रेमलीलाबहन[2] के प्रेम सागरमें नहा रहा हूं। अुनके घरको मैंने धर्मशाला बना दिया है।

---

१ यह पत्र जुलाअी १९३३ का लिखा होना चाहिये।

२ लेडी प्रेमलीलाबहन ठाकरसी।

जोशी[1] से कहिये कि रमा[2] के ऑपरेशनकी बात अभी मैंने लिखकर मुल्तवी करा दी है। डॉ० पटेल[3] ने ही बरसात घिरे और ठंडक हो जाय तब तक ठहरनेको कहा है। वैसे कर डालनेका आग्रह जुन्हींका है और वे हिम्मतके साथ कहते हैं कि जिसमें कोजी खतरा नहीं और यह आवश्यक है। व्यर्थकाम चिन्ता न करें। यह बात जेल जानेके लिये भी मेरे ध्यानसे बाहर नहीं रही।

जितना लिखा है परंतु थकावट नहीं लगती। फिर भी मीठे पेड़की जड़ नहीं खुदवाबूंगा और आज जिसके सिवाय और पत्र नहीं लिखूंगा।

प्रभावती[4] यहां आ गयी है यह तो आपको लिखा जा चुका होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
यरवडा जेल
पूना

पर भी जुन्हें जैसी चाहिये वैसी सुविधा मिलनेमें धक्का ही है, यह सब सोचकर बापूने ऑपरेशन करानेसे जिनकार कर दिया और यह सोचकर कि सरकारको जब जरूरत महसूस होगी तब वह खुद ही जो कुछ करना होगा करायेगी सरकार पर जिम्मेदारी डाल दी। बादमें जुनमें ऑपरेशन नहीं कराया गया।

१–२ साबरमती आश्रमके श्री छगनलाल जोशी। जुनकी पत्नी रमाबहनका ऑपरेशन करानेकी बापू बहुत चिन्ता रखते थे।

३ बम्बजीके प्रसिद्ध डॉक्टर एम० पी० टी० पटेल।

४ प्रभावतीबहन बिहारके सुप्रसिद्ध नेता स्व० बाबू व्रजकिशोरकी पुत्री और श्री जयप्रकाशकी पत्नी।

अीश्वर जैसे रखेगा वैसे रहेंगे। हमें तो अेक-अेक कदम सूझ कर चलना है। अिसलिअे चिन्ता किस बातकी? जैसे अिस बार यह नहीं लगता कि मार्ग कसौटीसे सूझ जायगा। मैं कह सकता हूं कि यरवडा मंदिरमें तो मैं आपकी माला जपता था। अिस वियोगके बारेमें सोचा ही नहीं था। रोज अनेक अवसरों पर हम आपको बहुत याद करते थे। आपके हुक्मोंका अभाव खटकता था।

कच्छीसे कच्छी बोतलमें[1] देखकर भेजी थी। मैं सही-सलामत पहुंची

महादेवभाअीको अुनके ठहरनेकी जगहसे पकड़ लिया गया और २-८-३३ को यरवडा जेलमें लाया गया। पहली अगस्तको पू. बापूको यरवडा जेलसे नासिक जेलमें ले जाया गया। यरवडा पहुंचकर बापूजीने बापूको न देखा तो अुन्हें भारी चोट लगी। बापूजी और महादेवभाअीको अेक दिनके लिअे पैरोल पर छोड़कर पैरोलका भंग करनेके लिअे अेक सालकी सजा दी गयी। पहले हरिजन आन्दोलनके सिलसिलेमें यरवडासे हरिजन पत्र चलाने और मुलाकातें करनेकी अुन्हें छूट थी। परंतु अब वे सजा पाये हुअे कैदी थे अिसलिअे कभी पाबन्दियां जैसी लगा दी गयीं जिनका पालन करके हरिजन आन्दोलन नहीं चलाया जा सकता था। अिसलिअे १६ अगस्तको बापूजीने काफी सुविधायें न मिलने तकके लिअे अुपवास शुरू कर दिया। २० को अुन्हें सासून अस्पताल ले जाया गया और २३ को वहांसे छोड़ दिया गया। यह पत्र अुसके दूसरे दिन पर्णकुटी से लिखा हुआ है। यरवडा मंदिरमें तो मैं आपकी माला जपता था ये शब्द बापूको बापूजीसे अलग कर दिये जानेके सबबमें हैं। भर्तृहरि नाटककी अेक लकीर याद करके और बापूको स्मरण करके बापूजी यरवडा जेलमें अक्सर बोल उठते थे अे रे जखम जोगे नहीं मटे. (जोगी बन जानेसे दिलका घाव नहीं मिटता।)

१ यरवडा जेलमें पूज्य बापूजी और पूज्य बापू जब साथ थे अुन दिनों बहुत मेहनतकी जमा हुअी खाली बोतलोंमें से।

हरी नारंगीका रस भी पिया है। अिसलिये शक्ति काफी है। डॉक्टर गिल्डर[1] और डॉक्टर पटेल[2] शरीरकी परीक्षा कर गये हैं। मुझमें कोअी दोष नहीं मिला अिसलिये मेरे बारेमें जरा भी चिन्ता न करें। आपकी नाकका क्या हुआ? मुझको क्या हालत है? जो कुछ लिखा जा सके लिखिये। अभी थोड़े दिन तो पर्णकुटीमें ही हूं बादमें कुछ दिन बम्बअी रहनेका विचार है। आगेकी राम जाने।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
नासिक

१७

पूनासे बम्बअी जाते हुअे रेलमें
१५ ९ ३३

भाअी वल्लभभाअी

आपका पत्र रेलमें मिला और यह जवाब अिसी समय रेलमें लिख रहा हूं। बम्बअी[3] जा रहा हूं। बुधवारको अहमदाबाद जाअूंगा। गुरुवारको दो क्रियायें करनी हैं। यह तो आपने पढ़ा ही होगा। २३ तारीखको वर्धा पहुंचनेकी आशा है। अिसके आगेका निश्चय वहां होगा।

---

१ बंबअीके हृदय-रोगके निष्णात डॉक्टर अेम डी डी गिल्डर। १९५२के आम चुनावोंके पहले बम्बअी सरकारके स्वास्थ्य-मंत्री।

२ स्व डॉक्टर पी टी पटेल।

३ सेठ मानेकलाल जेठाभाअी पुस्तकालयके मकानके शिलान्यासकी क्रिया और सर चिनुभाअी माधवलालकी मूर्तिकी अुद्घाटन-क्रिया।

ला गया था। कोअी चिंताकी बात नहीं। अेण्ड्रूज[1] शान्तिके लिअे दो दिन पूना रह सके। देवदासका शरीर बहुत सूख गया है। अुन्हें तबीयतके बारेमें पत्र लिखें। शास्त्री[2] फिर अच्छे होकर पूना आ गये हैं। बहुत करके अंबाशंकर मेरे साथ सौदा करेंगे। अुनका शरीर ही जिसमें बाधक है। मथुरादास तो साथ है ही। वे यहाँ आयेंगे या नहीं यह तय नहीं है। बहुत संभव है यहाँ तक आयेंगे। मीराबहन साथ ही हैं। वे अच्छी रहती हैं। प्रभावती भी यहीं तो साथ ही है। महादेवका लम्बा पत्र आया था। अुन्हें ठीक कह सकते हैं। पढ़ते हैं और कातते हैं। पन्नालाल[3] पूना थे। अब बम्बजी जायेंगे। काका भी दो-तीन दिनमें बम्बजी जायेंगे। बा अच्छी है। दांत ठीक करा लिये। संस्कृतकी पढ़ाअी चल रही है? किसी भी प्रकारकी चिन्ता न करें। मणिको छूटने पर आपसे मिलनेके बाद मैं जहाँ रहूँ वहाँ मुझसे मिल जानेके लिअे लिखा है। कमला नेहरू[4] को हृदयकी बीमारी रहती है। वे भवालीमें हैं।

साथ मिले तो क्या और न मिले तो क्या? जिसे भगवानका साथका भान है अुसे और किसीके साथकी जरूरत ही क्यों हो?

---

१ स्व० दीनबंधु सी० अेफ० अेण्ड्रूज। वे अीसाअी मिशनरी थे। दिल्लीके सेण्ट स्टीफन्स कॉलेजके प्रोफेसर थे। बापूजी तथा कविवर टागोरसे परिचय होनेके बाद मिशन छोड़ दिया था। हिन्दुस्तानके गरीबोंकी अुन्होंने खूब सेवा की है।

२ अंग्रेजी हरिजन साप्ताहिकका शुरूमें संपादन करनेवाले अेक सज्जन।

३ श्री पन्नालाल झवेरी। अेक पुराने आश्रमवासी।

४ पं० जवाहरलालकी पत्नी। २८-२-३६ को स्विट्जरलैण्डके लोसाँ स्थान पर अुनका देहान्त हुआ।

५ नासिक जेलमें पू० बापूको पहले अकेला रखा था जिसलिये साथीके बारेमें सरकारको लिखा था।

वर्धा
२४ १ ३३

भाअी वल्लभभाअी

आपका १ तारीखका पत्र बम्बअीमें मिला और २१ का आज वर्धामें मौन लेनेके बाद।

*　　　　*　　　　*

खादीके बारेमें समझा। कुछ समय तो काम चलना चाहिये।

मेरे साथ था मीराबहन, चांदशंकर, प्रभुदास[1] गांधी, आनंदी निर्मला (महादेवकी) शारदा (चिमनलालकी) और प्रभावती है। बालकिसन भी है। ये मंगलवारको अपने घर जायेंगे। रास्तेमें राधा[2] और संतोक[3] मिली थीं। राधा अभी तो बहुत अच्छी है। वह आपकी पड़ोसिन है। मुझे लिखें। लीलावती देवलालीके सेनेटोरियममें है।

यहां है। जमनालालजीकी जीनमें मुझे लगाया है। ५ रु. वेतन तय किया है। काम अच्छा है। अगर स्थिरचित्त रहेगा तो आगे बढ़ेगा। जमनालालजीको संतोष देता दीखता है। नीला नागिनी[4] और अमला[5] का

---

१ बापूजीके भतीजे छगनलाल गांधीके पुत्र। दक्षिण अफ्रीकामें फिनिक्ससे बापूजीके साथ थे।

२ बापूजीके भतीजे स्व. मगनलाल गांधीकी पुत्री।

३ स्व. मगनलाल गांधीकी पत्नी।

४ अेक अमरीकी स्त्री। बड़ी चरित्रहीन मालूम हुअी। जिसके बारेमें देखिये महादेवभाअीकी डायरी भाग — ३।

५ अेक जर्मन यहूदी महिला — मिस मार्गरेट स्पीगल।

काम कठिन है। नागिनी बिल्कुल है। वमला मूर्ख है। मुझे कुछ भी नहीं आता। दोनों यहां काफी भारस्वरूप लगती हैं। उनका भार हलका हो ऐसी कोशिश करूंगा। डंकन[1] और मेरी बार का काम अच्छी तरह चल रहा है। मेहनती है। प्रामाणिक है। नरहरिके बच्चे — वनमाला और मोहन — बीमार होनेके कारण कठलाल गये हैं। मैं अहमदाबादमें उनसे मिला था। पुरस्कारको पानेवाले थे। अमीना[3] के बच्चे बहुत हिलमिल गये हैं। वे छुट्टीके दिन लाल बंगले में बितायेंगे। सिरिमस[5] बीमार था। अब अच्छा हो गया है। अस्पतालमें था। रमा जोशीसे मिला। वह अच्छी थी। शरीर तो सुन्दर बन रहा है। हाथ काफी ऊंचा उठा सकती है। जिस दिन मम्मी छोड़ा उसी दिन भाग आयी।

---

१ डंकन ग्रीनलीस। ऑक्सफर्डके ग्रेज्युएट। १९३१ में हरिजन कार्यमें लगे हुवे थे।

२ अंग्रेज मिशनरी महिला। वे १९११ में बापूजीसे विलायतमें मिली थीं। १९१२ में हिन्दुस्तान आयीं। कभी-कभी आश्रममें आकर रहती थीं। मध्यप्रदेशमें थौड़ी नामक गांवमें रचनात्मक काम करनेके लिये बस गयीं। अभी दक्षिण अफ्रीकामें हैं। उन्होंने अंग्रेजीमें 'बापू' नामक पू॰ बापूजीके संस्मरणोंकी पुस्तक लिखी है, जो बम्बईके बिन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउसकी तरफसे प्रकाशित हुवी है।

३ बापूजीके दक्षिण अफ्रीकाके साथी और हिन्दुस्तानमें आकर साबरमती आश्रममें रहनेवाले स्व॰ विमामसाहब अब्दुल कादिर बावाजीरकी पुत्री।

४ साबरमती आश्रमके पास बापूजीके मित्र रंगूनवाले स्व॰ डॉ॰ प्राणजीवनदास मेहताका बनाया हुआ बंगला। उसका रंग लाल होनेसे आश्रममें वह लाल बंगलेके नामसे मशहूर था।

५ मीका नायिमीका पांच वर्षका पुत्र।

अधिक समय मेरे ही पास रही। अेल्विन[1] को देखने गया वहां भी साथ ले गया था। आपसे मिलकर व दोस्तों और आश्रमोंका मिलाप कराकर अपने पास आनेकी सलाह मैंने दी है। कुमाजी अभी बम्बअीमें है। मथुरादास भी वहीं है। वह काफी थक गये हैं। अुन्होंने जिम्मेदारी अच्छी तरह संभाल ली थी। शास्त्री (हरिजन) का अच्छा हाथ है। चांदवडकर सारा गुजराती मसाला मेरे साथ रहकर ही भेजेंगे। पृथुराज[2] को कालीकटमें ही ठहरनेको लिख दिया है। विष्णु[3] भावनगरमें है। सब ठीक चल रहा है। जयप्रकाश[4] अपने पिताके पास गया होगा। मैं बम्बअीसे चला तब तक वहीं था। मुझसे मिलता था। प्रभावतीसे रोज मिलता था। अपने अूपरका आरोप तो मैं जानता ही हूं। मगर क्या करें? अब तो कुछ शान्त हुआ है। बंगालकी बात ध्यानमें है। देखूंगा। जमनालाल अभी पहाड़ पर नहीं जायेंगे। दस दिन हो जाते हैं। लटकाअूंगा तो सही। अभी अुनकी तबीयत ठीक रहती है।

जानकी वगैरा लड़कियां और कुरैशी[6] के बच्चे अनसूयाबहनके हरिजन छात्रावासमें हैं। मेरे खयालसे हमें यही शोभा देता है। वहां वे बड़े

---

१ वेरियर अेल्विन। ऑक्सफर्डके ग्रेज्युअेट। हमारे देशकी आदिम जातियोंके विषयमें अुन्होंने बड़ी पुस्तकें लिखी हैं।

२ आश्रमके श्री लक्ष्मीदास आसरके पुत्र।

३ आश्रमका अेक विद्यार्थी।

४ श्री जयप्रकाशनारायण। आजकल समाजवादी नेता।

५ मिदनापुरके अेक क्रांतिकारीने अंग्रेज अफसरकी हत्या कर दी थी। जिसलिये वहां सरकारकी तरफसे कहर बरसाया गया था। अुसीका यहां अुल्लेख है।

६ श्री गुलाम रसूल कुरैशी। अेक आश्रमवासी। इमाम साहबके जमाअी।

सुखी है। नारणदास के पुरुषोत्तम[2]ने जीवनलाल[3]के भाजी हरखचंद की लड़कीसे सगाई की है। यह रिश्ता अेक ही जातिमें कहलायेगा अिसलिये मुझे पसन्द नहीं आया। परंतु कहा जाता है कि लड़की अच्छी है अिसलिये नारणदासने भी स्वीकृति दे दी। जमना राजकोटमें है। कनु[6] भी वहीं है। जमनादासकी पाठशालामें जितना पढ़ा जा सकता है अुतना पढ़ता है। महादेवका बाबू वलसाड़में अपनी मौसीके पास है। दिवालीके बाद आनन्दीके पास आनेको लिखता है। राजेन्द्रबाबू[7] के समाचार हर तीसरे दिन मिलते रहते हैं। अुनका स्वास्थ्य अच्छी तरह सुधर रहा है। कमी नहीं है। अुसको आश्रम आनेकी बात थी। लेकिन ज्यादा सोचकर देवदासने अिसमें परिवर्तन करा दिया है। अभी तय नहीं हुआ कि क्या किया जाय। प्रभुदासका भी अभी ठिकाना नहीं बैठा। अिसीलिये मेरे साथ आया है। को साधु ही गये ही समझ लीजिये। अुन्हें असन्तोष ही बना रहता है।

आपका गीताका अध्ययन पूरा हो जाय तो भी संस्कृतका अध्ययन काफी बढ़ा हुआ माना जायगा।

---

१ श्री नारणदास खुशालचंद गांधी। पू. बापूजीके भतीजे। अुस समय आश्रमके व्यवस्थापक।

२ श्री नारणदास गांधीके पुत्र।

३ श्री जीवनलाल मोतीचंद शाह।

४ सौराष्ट्रके धारवाड़ जिलेके बावनापीपल तबक।

५ श्री नारणदास गांधीकी पत्नी।

६ श्री नारणदास गांधीका पुत्र।

७ डॉ. राजेन्द्रप्रसाद। बिहारके मुख्य नेता। १९१७ में हुअे चम्पारनके नील सत्याग्रहके वक्तसे बापूजीके साथ हुअे। १९३४, ३९ और ४७ में कांग्रेसके अध्यक्ष। १९४७ में संविधान-सभाके अध्यक्ष। अिस समय भारतके राष्ट्रपति।

आश्रमकी गोशाला कांकरियामें है। टाकिटस[1] चला रहे हैं। शंकरलाल[2] की देखरेख है। ठीक चलती है। जवाहरलालकी कृष्णाकुमारी[3] का विवाह बहुत करके कस्तूरभाभी की बहनके लड़केके साथ जो अभी-अभी विलायतसे बैरिस्टर होकर आया है, होगा। मैं कस्तूरभाभी[4] तथा अुनकी बहन और लड़केसे मिल चुका हूं। मूल पसन्द विन दोनोंकी ही है। वे बम्बईमें राजके यहां दो-तीन बार मिले थे। स्वरूपरानी[5] ने स्वीकार कर लिया है। थोड़े ही समयमें विवाह हो जायगा। अगर विवाह हो गया तो स्वरूपरानी परसे यह बोझ काफी अुतर गया माना जायगा।

मेरा स्वास्थ्य ठीक रहता है। रक्तका दबाव यहां रहता है या नहीं यह नहीं कहा जा सकता। यहां कोई डॉक्टर नहीं है। जरूरत भी नहीं है। अभी तो आधा सेर दूध लेता हूं। दो बार भाजी लेता हूं। भाजीमें लौकी तुरई वगैरा आती है। जब यहां आया तब वजन ९९ पौंड हो गया था। थोड़े दिन बाद फिर ले देखूंगा। बा अच्छी है। मीरा भी। जमनालालजीकी कमला विनधा महेताके आरोग्य भवनमें थी। कुछ फायदा हुआ है। मेरे साथ यहां आयी है। कमलनयन[6] भी यहीं है। अभी वकीलकी पाठशाला[7] गरमीके कारण बन्द है। अब यह पाठशाला विलेपारले जायगी।

---

१ आश्रमकी गोशालाके अुस समयके व्यवस्थापक।

२ शंकरलाल घेलाभाओी बैंकर। पहले होमरूल लीगके मंत्री। बादमें बरसों तक चरखा संघके मंत्री। अहमदाबाद मजदूर संघके अेक संस्थापक।

३ जवाहरलालजीकी छोटी बहन।

४ सेठ कस्तूरभाओी लालभाओी। अहमदाबादके अेक मिल-मालिक।

५ पंडित जवाहरलालकी माताजी।

६ स्व. जमनालाल बजाजके पुत्र।

७ अेक पारसी सज्जनकी तरफसे चलनेवाली पाठशाला।

मेरा कार्यक्रम १५ अक्तूबर तक तो यहीं आराम करनेका है।

आश्रम पर सरकारने कब्जा नहीं किया, अिसलिये अुसका स्थायी अुपयोग हरिजनकार्यके तौर पर कर डालनेका अिरादा है। जमनालालको विचार पसन्द आया है। अहमदाबादके मित्रों — रणछोड़भाअी वगैराको भी अच्छा लगा है। अुसमें हरिजन बस्ती, धर्मालय, हरिजन छात्रालय और हरिजन सेवक संघका दफ्तर रखनेका विचार है। यह जमीन और मकान अखिल भारत हरिजन सेवक संघको सौंप देनेका विचार है। अिस बारेमें कुछ कहना हो तो लिखिये। अब तो बहुत हो गया न?

बापूके आशीर्वाद

१६

वर्धा
१-९-३३

भाअी वल्लभभाअी

आपका २९ तारीखका पत्र मिल गया।

मणिका पत्र कल आया। अुसकी तिल्ली बढ़ गयी मालूम होती है। अिसलिये अुसका अिलाज भी करा रही है। अिस कारण यहां पहुंचनेमें कुछ समय लगेगा। आश्रमको हरिजनकार्यके रूपमें चलानेके लिये दूदाभाअी, पूंजाभाअी[1] और भगवानजी[2] तो हैं ही। तीनों बड़े प्रामाणिक, मेहनती और कुशल हैं। पहले दोको कुछ देना नहीं पड़ता।

1 दोनों आश्रमके पड़ोसी। बापूजीने आश्रम छोड़ दिया अुस समय वे मकानोंकी चौकसी देखभाल करते थे।

2 अेक आश्रमवासी।

रामदासका मन ठिकाने आ जायगा। चिन्ताकी बात नहीं।

जानकीदेवीकी तबीयत ठीक रहती है। पृथुराज कालीकटमें है। मिन्नुके पत्र मावलंकरसे आते हैं।

आप सकुशल होंगे। चंदूभाई[1] मौज करते होंगे। संभव है जल्दी थोड़े समयमें मद्रास चली जाय।

बापूके आशीर्वाद

२०

वर्धा
३-१०-३३

भाई वल्लभभाई

आपका पत्र मिला।

* * *

आश्रमके बारेमें आप मेरा पत्र अखबारोंमें देखेंगे। जरूरत मालूम हुई तो तोतारामजी[2] को भेजूंगा। परीक्षितलाल[3] भी वहीं रहेंगे। अड़चन नहीं होगी।

मणिको ठीक हिसाब करा कर ही आनेको लिखा है।

का काम तो यों ही चलेगा। कुत्तेकी पूंछको पत्थरसे बांधनेकी बात है। कृष्णा नेहरूके बारेमें तो आपने पढ़ा ही होगा।

अब दूसरे काममें लगना है, जिसलिये आज जितना ही बस होगा। जमनालालजी पासमें बैठे हैं। वे कहते हैं कि मेरे लिये चिन्ता न करें। जरूरत मालूम हुई तो पहाड़ पर चला जाऊंगा। वजन १९ तक तो चला गया है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ डॉ. चन्दूलाल देसाई। वे नासिक जेलमें बापूके साथ थे।
२ अेक आश्रमवासी।
३ गुजरात हरिजन सेवक संघके मंत्री।

लक्ष्मीदास[1] से जिस बारेमें मिल सकें तो मिलकर पूछिये। मैं उन्हें लिख रहा हूं।

* * *

मणिको मैंने लिखा ही है। कदाचित् मृदु के साथ भी न पहुंचे।

जमनालाल आज निजी कामसे २१ दिनके लिये बम्बई जा रहे हैं।

संभव है मेरी यात्रा ८ नवम्बरको शुरू हो। साथमें ठक्करबापा, चंद्रशंकर, मीरा, नायर और रामनारायण चौधरी[3] के रहनेकी संभावना है। आपको और मनुभाईको

बापूके आशीर्वाद

२२

वर्धा

२१-१-४१

भाई वल्लभभाई

आपका पत्र मिला था। आपकी इच्छा पर अमल कर रहा हूं। धर्म बाधक नहीं होगा। मैं चाहता हूं कि आप चिन्ता छोड़ दें। आपके पास प्रेमलीलाबहनकी दूरबीनसे भी ज्यादा जोरदार दूरबीन होनी

---

१ श्री लक्ष्मीदास आसर। सेवाग्रामवासी। जिस समय गांधी-स्मारक-निधिके मंत्री।

२ श्री मृदुलाबहन साराभाई।

३ अजमेरके निवासी और हिन्दीके लेखक।

४ पूज्य बापूने पूज्य बाबूजीको आराम लेनेको लिखा था। उसी बातका जिक्र है।

चाहिये। मुझसे तो रामी पहाड़ जैसा दिखाअी देगा। भूलो[1] यह याद है न।

बुधवारको प्रभुदासकी शादी हो गयी। मुझे मनपसन्द कन्या मिली है और मुझीके पुरुषार्थसे मिली है। लड़की २४ वर्षकी है। बिलकुल सीधी शादी है। अुत्तरकी होनेके कारण अुसे न बिन्दीकी जरूरत है न चूड़ियोंकी। शादीके वक्त भी हाथमें चूड़ियां नहीं थीं। अब जानकी[2] बहनने कांचकी चूड़ियां पहना दी हैं। काफी पढ़ी-लिखी है। काम समझती है।

महादेवका लम्बा पत्र (बेलगाव जेलसे) मेरे नाम आया है। बड़ा काम्य ही रखकर भेज दिया है। साथमें अुसके अुद्धरण आपके लिये भेजता हूं।

ब्रजकिशन दिल्ली जाकर बीमार हो गये थे। बा तैयारी (जेल जानेकी) कर रही है। किशोरलाल और गोमती[3] परसों चले गये। आनंदी, बच्चू, अम्बा’ भी गये। किशोरलालभाअी अकोला गये। आनंदी लक्ष्मीदाससे मिलनेके लिये अुतरनेवाली थी। लक्ष्मीदासका पत्र अभी तक नहीं आया। विवाह करें तो भी आश्रमकी सब सुविधायें तो अुनको होंगी ही।

आपका वजन कितना रहता है? क्या खाते हैं? दूध-दही कितना लेते हैं? कुछ भेजूं? मांगे बिना मां भी नहीं देती। और वह भी मेरे जैसी मां! फिर पूछना ही क्या? अब सुबहकी प्रार्थनामें जानेका वक्त हो गया। बिमलिये बस।

बापूके आशीर्वाद

---

१ भूलो होना चाहिये। यह पत्र १ ३ में लोया गया था।
२ स्व. जमनालाल बजाजकी पत्नी।
३ श्री किशोरलाल मशरूवालाकी पत्नी।
४ स्व. महादेवभाअीकी बहन निर्मला।
५ आश्रमके श्री चिमनलालकी पुत्री शारदा।

वर्धा,
२७-१०-३९

भाओीश्री वल्लभभाओी

मणि मृदु, मृदुके काका और बाबा[1] को आये तीन दिन हो गये। बाबा अिस बार मुझसे हिल गया है। अुसका शरीर भी अच्छा है। मेरे साथ जापानी साधु[2] का ढोल बजाता है। जापानी साधु तो अेक रत्न है। बड़ा शुद्ध मन, हंसमुख और विनयी है। हिन्दी सीख रहा है। चरखा-तकली चलाता है। सब नियमोंका सूक्ष्म रूपसे पालन करता है। दोनों बहनों[3] को अभी घंटेका समय दिया है। आज सवेरे लगभग दो घंटे दिये हैं। अभी ११॥ बजे दूसरा समय देनेवाला हूं। दोनों घोड़े पर चढ़कर आयी हैं और विमानसे जानेवाली हैं। *अिसलिअे आज डाकगाड़ीसे वापस जानेका नोटिस दिया* है। मणिके पैरको बिजलीकी जरूरत मालूम होती है। मृदुको कुछ बहनोंकी देखभाल करनी है। दोनोंका मेल बढ़िया बैठा है।

*　　　*　　　*

---

१ श्री डाह्याभाओीका पुत्र।

२ बापूजीके साथ रहनेवाले जापानी साधु। ये अेक ढोल बजाकर 'नम्यो हो रेंगे क्यो' मंत्र बोलते थे। जब जापानके विरुद्ध युद्ध घोषित हुआ और अुन्हें सेवाग्राम आश्रमसे पकड़कर ले गये तब अुन्होंने बापूजीसे प्रार्थना की थी कि मेरे मंत्रका पाठ जारी रहे तो अच्छा। अिस पर बापूजीने यह मंत्र आश्रमकी प्रार्थनामें शामिल कर दिया।

३ मणि और मृदुलाबहन।

पट्टाभि[1] आ पहुँचे हैं। मैं तो अुनसे मुश्किलसे १ मिनट मिला हूँगा। वे अचानक आ गये थे। जमनालालजी शायद ही किसीको बहुत समय लेने देते हैं। (अहमदाबादके) मिल-मजदूरोंके प्रतिनिधियोंको भी तीन बारमें कुल मिलाकर १॥ घंटा लेने दिया। अुनका पहरा जबरदस्त है।

विट्ठलभाअीके चले जानेका दुःख तो हुआ। वे गये अिससे सांसारिक कष्टोंसे अुन्हें मुक्ति मिल गअी। हम तो सोचते ही थे कि अुनकी मृत्यु विदेशमें होगी। अुनकी सेवा अच्छी ही हुअी दीखती है। मालूम होता है सुभाषने[3] हद कर दी। हर जगहसे अुनकी अनन्य सेवाकी प्रशंसा आती रहती है। मैंने अुन्हें पत्र लिखा है। आप भी लिखें। मेरा पत्र मृत्युके समाचारसे पहले गया।

स्वामी[4] अभी कुछ समय यहीं रहेंगे। ठक्करबापा मालिनीको लेकर वृन्दावन गये हैं। अुनकी दयाका पार नहीं है। अिस स्त्रीका दिमाग फिर गया है। यहां अुसका चालचलन जरा भी खराब नहीं रहा। पागल-सी हो चुकी थी। अभी भी अमलामें भटकती मालूम होती है। आश्रममें तो आराम रह सका। ममता तो आजकल खूब काम करती है। रमण देहातमें समाविष्ट है। मेरी बात अभी यहीं है।

---

१ डॉ. पट्टाभि सीतारामैया। आंध्रके अेक मुख्य कांग्रेसी नेता। १९४८ में कांग्रेसके अध्यक्ष बने थे। अुन्होंने दो भागोंमें कांग्रेसका अितिहास लिखा है। आजकल मध्यप्रदेशके राज्यपाल हैं।

२ अुनका देहान्त २२-१०-३३ को विएनामें हुआ।

३ स्व. नेताजी सुभाषचन्द्र बोस।

४ स्वामी आनन्द। पू. बापूजीके निकटके साथी। नवजीवनके शुरूके युगमें अुन्होंने खूब काम किया था। अुसके विकासमें अुनका बड़ा हाथ रहा है।

बीमार थी अब अच्छी हो गयी है। विनोबा गांवोंमें खूब हरिजन सेवा कर रहे हैं।

आनंदीके साथ मणि चली गयी। बाबला[3] भी चला गया है।

देवदासके पत्र आते रहते हैं। डॉ. दत्ता मुझसे मिल आये। मुरलीधर कुछ बीमार हुआ दीखता है। मुझसे मिलनेके लिये भी डॉ. दत्ताको लिखा है। मेरी मालाकी चिन्ता न करें। मैं संभलकर रहूंगा। राजाजी चाहते हैं कि मुझे पहले दक्षिणमें यात्रा करनी चाहिये। आनंदी लक्ष्मीदाससे मिल आयी। वह विवाह न करनेके मामलेमें दृढ़ है। चंदुलालको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

२४

वर्धा

२८-१-३३

भाई वल्लभभाई

आज सुभाषका तार आया है कि विट्ठलभाईकी लाश ९ तारीखको बम्बई पहुंचेगी और आपको दाह-क्रिया करनी है। मैंने प्रेसके मारफत जवाब दिया है कि मैं नहीं मानता कि वल्लभभाई छूटनेकी मांग करेंगे। अिसलिये यह क्रिया आपके बिना होनी चाहिये। डाह्याभाईको यह क्रिया करनी चाहिये। आपसे राय लेनेका समय

---

१ आचार्य विनोबा भावे। आश्रमवासी। १९४ में हमारे राष्ट्रकी सम्मतिके बिना हिन्दुस्तानको विश्वयुद्धमें शामिल कर देनेके विरुद्ध व्यक्तिगत सविनय कानून भंग शुरू किया गया अुस वक्त बापूजीने अिन्हें प्रथम सत्याग्रही चुननेका सम्मान प्रदान किया था।

२ श्री लक्ष्मीदास आसरकी सबसे छोटी लड़की।

३ स्व. महादेवभाईका पुत्र नारायण।

४ श्री दादाभाई नौरोजीकी पौत्री।

है। आपके विचारोंके रूपमें मैं कुछ भी प्रकाशित करूं अैसा मैं हूं

है। मैं जिस स्थितिमें हूं अुस स्थितिमें बाहर आनेकी मांग करना न मुझे शोभा देगा और न देशको। अैसे अवसरका लाभ अुठाकर सरकार पर मुझे छोड़ने या बाहर जानेके लिअे अनुचित दबाव डालना सत्याग्रहीको हरगिज शोभा नहीं देता। अिसलिअे यह विचार बिलकुल छोड़ दीजिये और जो कहते हों अुन्हें समझाअिये। मेरे विचार अखबारोंमें नहीं दिये जा सकते क्योंकि मैं कैदी हूं और कैदीके नाते मेरी मर्यादाको समझना चाहिये। मुझे कुछ भी प्रकाशित करना हो तो अुसके लिअे सरकारकी अनुमति चाहिये।

अिस आशयका अुत्तर कल भेजा था और आज आपका पत्र आया। हम अेकमत हैं फिर क्या चिन्ता है? भीम तो चाहे जो कहेंगे।

अग्नि-संस्कार करनेके बारेमें डाह्याभाई या मेरे दूसरे भतीजे जो बम्बईमें हैं, विचार करके अुचित होगा सो करेंगे।

सुभाषका तार मेरे पास आया था। अुसमें सब मार्सेल्ससे जहाज पर चढ़ा देनेकी बात ही थी। और कोअी बात नहीं थी। मैंने दुबारा आभार माननेवाला पत्र लिखा है। तार नहीं दिया।

मेरे नाम देश-विदेशसे तार आते रहते हैं। अैसा लगता है कि अुनका जवाब देना ही पड़ेगा। अैसे मामलोंमें मुझे बिलकुल अनुभव नहीं है। यह भी पता नहीं कि किसे दिया जाय और किसे न दिया जाय। मगर जैसा सूझेगा वैसा करूंगा।

काकाकी तबीयत ठीक है, यह जानकर आनंद हुआ। यही होगा यह मुझे पता नहीं था। मैं लिख नहीं सकता अिसलिअे क्या करूं? अैसे मुझे लगता है कि अुसे समझाया जा सकता है। वह हठ पकड़ ले तो न माने यह बात जरूर है। परंतु अुसमें दीर्घ

ही नहीं। आपके 'नाम आये हुअे तारोंके बारेमें मेजर[1] से कहकर अब मेरे नाम जो पत्र लिखें अुसमें अेक पंक्ति लिखिये — "जिन लोगोंने हमदर्दीके तार और पत्र भेजे हैं, अुन्हें मेरी तरफसे अखबारों द्वारा धन्यवाद दीजिये। अगर अिसे वे पास न कर सकें तो आअी जी पी से पुछवा लें और आपको अिजाजत मिल जाय तो हम छपवा देंगे।

हैं और शूरवीर समझदार हो सकते हैं। कायर और ढीले आदमी समझदार हों तो भी मुझे अुनसे प्रेम नहीं होता क्योंकि वे मंझधारमें नाव डुबानेवाले होते हैं।

काकाको कितने दिन बाद धमात्मा पड़ना? शरीर अभी ठीक ही हुआ था कि यह आफत आ पड़ी।

का पत्र कल आया था। मैंने अुन्हें और पंड्याजी[2] को हिरण्यगर्भकी मात्रा[3] दी थी। दवाका असर अच्छा हुआ दीखता है। यात्राकी (जेल जानेकी) तैयारी कर रहे हैं। कोअी दस दिन बाद रवाना होनेवाले हैं। मेरे आशीर्वाद मांगे हैं। भेज दिये हैं।

आपका कोअी कार्यक्रम तय हो जाने पर लिख भेजिये।

बंगालमें जाना हो तो कब जाना होगा यह लिखिये।

मैंने देवचरको पत्र लिखा था। वह मिला या नहीं अिसका पता ठक्कर द्वारा लगवाअिये।

राजेन्द्रबाबू कैसे अटक गये दीखते हैं?

दोनोंको प्रणाम।

आपके सेवक
घनश्यामदासका दण्डवत प्रणाम

---

१ अुस समय नासिक जेलके सुपरिन्टेन्डेन्ट।
२ स्व॰ मोहनलाल कामेश्वर पंड्या। खेड़ा जिलेके कार्यकर्ता।
३ अेरवडा जेलमें पहुंच जानेकी सूचना।

नरीमान कल यहां आये थे। अुन्होंने काफी समय लिया और मैंने दिया। बारोमां ने वैसे दिया। परन्तु जिस समय तो कितनी ही कोशिश करें, कुछ हाथ लगनेवाला नहीं।

आज दीनबन्धु[2] आ रहे हैं। खूब घूमे हैं अिसलिअे मुझसे काफी समय चाहेंगे और मुझे समय देना ही पड़ेगा।

काकाके अुपवास कल पूरे होंगे। आनंदमें हैं। अुपवास जैसा खास कुछ मालूम नहीं हुआ। काकाके शरीरमें मेरी तरह दाह नहीं है। वे खूब पानी पी सकते हैं। नमक डालें तो भी सोडा डालें तो भी ठंडा हो तो भी और गरम हो तो भी। यह शक्ति अीश्वर मुझे दे दे तो भणसाली[3] को भी अिस युगमें हरानेका अुत्साह आ जाय। फिर अुनकी तरह पागलपन आये तो भले ही आ जाय। टाटकी लंगोटी मोटी रस्सीके कंदोरे पर लटकाता है। आटा पानीमें मिलाकर फांकता है और भ्रमण करता है। कभी-कभी कार्ड लिखकर दर्शन देता है और लिखता है कि सच्चा अनुभव तो अिसी समय प्राप्त हो रहा है।

अुपवासके दिनोंमें थोड़ासा लिखवानेका काम किया है। प्रभुदास अवैतनिक मंत्रीके पद पर विराजमान है और काकाके सामने गीतापाठ वगैरा भी करता है। प्रभुदास अुनका पट्ट शिष्य है अिसलिअे

१ स्व. जमनालालजी। वे पू. बापूजीके स्वास्थ्यकी रक्षाके लिअे सख्त पहरा देते थे।

२ स्व. सी. अेफ. अेण्ड्रूज।

३ असहयोग आन्दोलनमें अेम. अे. की पढ़ाअी छोड़कर आश्रममें आये थे। विद्यापीठमें और यंग अिंडिया में कुछ समय काम किया था। बादमें अुन्हें आध्यात्मिक रंग लगा। अुस सिलसिलेमें कोअी तीन बार अुन्होंने लम्बे-लम्बे अुपवास किये। अुन्होंने दिगम्बरका मार्ग ग्रहण किया है।

हो जाय तो आश्चर्य नहीं। ८ तारीखको यहांसे प्रस्थान करना है। फिर दो-तीन दिनके लिये वर्धा तहसीलके दौरेके लिये जाना पड़ेगा। देवदासको आपके पत्रके बारेमें लिखूंगा। राजेन्द्रबाबूको वापस अस्पतालमें ले गये हैं। मेरे खयालसे अब तो अुन्हें नहीं रखेंगे।

बापूके आशीर्वाद

२६

भाईश्री वल्लभभाई

आपका पत्र आज मिला। विट्ठलभाई-स्मारक-समितिके बारेमें आपने वहांसे जितना जाना अुतना यहांसे मैंने भी जाना। अभी क्या आपकी अकेलेकी ही जरूरी है?

का पुनस्करण स्वामीने पढ़ सुनाया। नहीं तो शायद यह साहित्य पढ़े बिना रह जाता। सीधी बात तो यों कहिये न कि आप पास नहीं हैं। यह जितना आपको खटकता है अुतना ही मुझे भी खटकता है। अिसलिये मैं अेकलव्यका अनुकरण कर रहा हूं। अुसे द्रोणाचार्यने बाहर छोड़ दिया अिसलिये अुसने अुनकी मूर्ति सामने रखकर बाणविद्या सीख ली। मुझे धनुर्धारी नहीं बनना है। आपको बाण चलाना नहीं आता। बाणको छोड़कर आपने अुसका हल बना लिया है। मुझे भी हल तो चलाना ही है।

मैं रोज पार्थेश्वर चिन्तामणि बनाता हूं और अुनसे पूछ लेता हूं। अुनसे सही जवाब ही मिलता होगा यह तो कैसे कहा जा सकता है? परन्तु मैं अिस बातका हमेशा ध्यान रखता हूं कि अमुक परिस्थितिमें आप क्या करना चाहेंगे या करेंगे।

बाकी जानेकी तैयारी हो रही है। चार्ली भाओी[1] ११ तारीखको रवाना हो रहे हैं। यहांसे कल चले गये। वे सब जगह घूमे अुनसे मिले परन्तु रहे जहांके तहां।

---

१ सी० एफ० अेण्ड्रूज।

विट्ठलभाओकी 'अंतिम अिच्छा'[1] के बारेमें जो बातें कही जाती हैं अुनके लिये तो क्या कहा जाय ? अुनके बारेमें जैसे आपको शक है, वैसे ही मुझे भी है ।

मेरा काम मंगलवारसे शुरू हुआ । सभी जगह मनुष्योंकी भीड़ अुमड़ पड़ती है । अस्पृश्यताकी बातें कहनेमें कोअी दिक्कत नहीं जान पड़ता । वर्धाके पास अेक सुन्दर मन्दिर खोला । नागपुरमें जितनी भीड़ जमा हुअी अितनी कभी नहीं देखी गअी । मेरी आवाजने धोखा नहीं दिया । यह भी नहीं कहा जा सकता कि थकावट मालूम हुअी । १८ या १९ पौंड वजन लेकर निकला हूं । अितना भी अच्छा हुआ मानता हूं । मध्यप्रदेशका दौरा पूरा करके दिल्ली जाना है और वहांसे सीधे दक्षिणमें । राजाजी कहते हैं कि दक्षिणमें पहले दौरा करनेकी जरूरत है । सनातनियोंका सारा विरोध वहींसे शुरू होता है । शनिवारको वापस वर्धा जाना है । वर्धा तहसीलका काम पूरा नहीं हुआ है । अिस बीच जवाहरलाल वगैरा मुझसे मिल जायेंगे । अन्सारी[2] आ गये हैं । अिसलिये शायद वे भी आयें । मेरे साथ मीरा, चन्द्रशंकर, नायर, रामनाथ (दिल्लीके सस्ता साहित्यवाले)

---

१ स्व. विट्ठलभाओके बारेमें कहा जाता था कि अुन्होंने वसीयत करके अपने पासके अेक लाखसे अधिक रुपये स्व. सुभाषबाबूको विदेशमें प्रचारके लिये अपनी अिच्छानुसार खर्च करनेको दिये थे । बादमें बम्बअी हाअीकोर्टमें अिसका मामला चला था । अदालतने यह फैसला दिया था कि वसीयत सही हो तो भी कानूनके अनुसार अुसकी सूचनायें अमलमें नहीं लाअी जा सकतीं और तमाम रुपया अुनके वारिसोंको मिलना चाहिये । पू. बापूजीने तमाम कुटुंबियोंको समझाकर यह रुपया कांग्रेसको देशकार्यके लिये दिलवा दिया था ।

२ दिल्लीके सुप्रसिद्ध स्व. डॉ. अन्सारी । राष्ट्रीय मुस्लिम नेता । १९२७ में कांग्रेसके अध्यक्ष ।

नागपुरके विद्यार्थियोंके सम्मेलनमें अंडे फेंके जानेकी बात टाअिम्स से जानी। मैंने तो होलमें कुछ भी नहीं देखा। खलबली मची हो अैसा भी नहीं देखा। होलमें किसीने कुछ देखा हो यह भी नहीं जानता। जितना होनेकी बात चंद्रशंकरने बताअी। अेक अंडा गिरा था। अुन्हींके लिये फेंका गया था या अुनके पास बैठे हुअे भूतपूर्व अध्यक्षके लिये या मेरे लिये यह कोअी नहीं जानता। बात यह है कि राअीका पर्वत बना दिया गया है। विद्यार्थियोंके प्रेमका पार नहीं था। अुन्होंने रु ७ की तो थैली भेंट की। यही बात यू पी के लिये समझिये।

अन्सारी रविवारको मिले। स्वास्थ्य कुछ ठीक है। विठ्ठल-भाअीसे मिलनेकी अिच्छा होते हुअे भी न मिल सके। अन्तिम समयमें तो वे बहुत अशान्त हो गये थे। अन्सारीको कोअी खास बात नहीं कहनी थी। यह कहा जा सकता है कि मिलनेके खातिर ही मिलने आये थे। राजघरानेके बीमारोंको देखने गये हैं। अुसी रात गये। मेरा तो मौन था। आगे तक शुरू नहीं हुआ था। अभी तक सफरमें कोअी दिक्कत नहीं हुअी। अब खाने और मोटरमें बैठनेका समय हो गया अिसलिये आज जितना ही। बा और स्वामी कल अलग चल दिये। बा अकोला होकर अहमदाबाद जायगी। राजकोटमें रामी[1] की लड़की बीमार है अिसलिये मनु[1] वहां गअी है। आप तो वर्धा ही लिखिये।

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

१ बापूजीके बड़े लड़के स्व हरिलालकी पुत्रियां।

३०

अिटारसी
१-१२-३३

भाअीश्री वल्लभभाअी

अिटारसीकी धर्मशालामें सबेरे ३। बजे यह पत्र लिख रहा हूं। मीराबहन मुंह धोने गयी है। फिर प्रार्थना होगी। अुसके बाद तुरन्त करेलीकी रेल पकड़नी है और वहांसे अनन्तपुर जाना है। अनन्तपुरमें छोटालाल[1] काम करता है। कल बैतूल रहे। वहांसे रेलमें अिटारसी आकर और सभा करके धर्मशालामें सोये।

आपका पत्र मिल गया। टािअम्स ऑफ अिंडिया में जो कुछ चल रहा है, अुससे हम कहां तक निपटेंगे? फिर भी मुझे जो कुछ सूझता है, करता रहता हूं। अभी तो अखबार कम ही पढ़नेको मिलते हैं। मुझे तो अैसा महसूस होता है कि हरिजनोंका काम हरि देखते रहते हैं। जो शक्ति हर जगह लाखों आदमियोंको खींच लाती है, वही शक्ति झूठको भी मिटायेगी। हम गफलतमें न रहें तो बस है।

मैं तो जानता ही हूं कि आपकी आत्मा मेरे चारों ओर घूमती ही रहती है। वह क्या मेरी रक्षा नहीं करती होगी? आपमें माका प्रेम भरा है, जिसका दर्शन क्या मैंने यरवदामें प्रतिक्षण नहीं किया? यह गुण आपके पत्रोंमें जहां-तहां टपकता रहता है। और यह गुण सर्वव्यापी है यह भी मैंने देखा है। अिसलिये आप वहां बैठे हुये चारोंओरसे सबको देखते ही रहते हैं।

---

१ श्री छोटालाल गोविन्दजी। वे अनन्तपुरमें खादीका काम करते थे।

मेरी चिन्ता न करें। जो कुछ हो रहा है, अुसकी भी चिन्ता न करें। यह काम भगवानका है। बिगड़ी कौन सुधारे नाथ बिगड़ी कौन सुधारे।"

अब हम रेलमें हैं। अपनी नाकके लिये जो कुछ करना जरूरी होगा आप करेंगे ही अैसा मैं मान लेता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

२१

जबलपुर,
४-१२-३३

भाअीश्री वल्लभभाअी

कल रातको जबलपुर पहुँचे। अब ६॥ बजे हैं। आपका पत्र कल कटनीमें मिला। जबलपुरका काम देख आया। सब काम पक्का है और अिसलिये धीमा भी है। जेठालाल जबरदस्त कार्यकर्ता है।

गोरधनभाअी[1] मेरे व्यवहारसे बहुत नाखुश हैं। अुन्हें सन्तुष्ट करनेका प्रयत्न तो कर ही रहा हूँ। अुनका विचार विदेशोंमें रुपया खर्च करनेका है। मैंने अैसा करनेसे मना किया है। वसीयतनामेके बारेमें अभी तक मुझे नहीं पूछा है। पूछेंगे तो आप जो लिख रहे हैं वह सहज ही याद रखूँगा। सब कुछ अजीब तो लगता ही है। परन्तु जैसा सुनते हैं वैसा ही हुआ भी हो तो मुझे

---

१ श्री गोरधनभाअी अीश्वरभाअी पटेल। ये विठ्ठलभाअीसे मिलनेको रवाना हुअे थे परन्तु अुनसे भेंट नहीं हो सकी थी। फिर विठ्ठलभाअीका शव लेकर आये। ये विठ्ठलभाअीकी वसीयतके अेक्जीक्यूटर थे।

आश्चर्य नहीं होगा। जो होगा सामने आ जायगा। आज बड़े लोगों[1]के आनेकी संभावना है। अैसा दीखता है कि कल सब मिलेंगे। हम सबके रहनेका अलग-अलग अिन्तजाम होगा। सुशीला आ रही है। शायद अन्सारी भी आयें।

व्रजकृष्ण मृत्युशय्या पर पड़ा है। अुपवासमें अुसने अनन्य भावसे मेरी सेवा की थी यह तो आप जानते ही हैं। अुसके समाचार मंगाता रहता हूं। सेवा-शुश्रूषा हो रही है। डॉ. अन्सारीका तार आया है कि शायद वह बच जायगा।

महादेवको साथी मिलनेकी बात तो आप ही से मालूम हुई। (छगनलाल) जोशी मजेमें है। आपकी खबर यहां आनेके बाद कल ही मिली। अच्छा हुआ।

हरिजनसेवाका काम अच्छी तरह चल रहा है। अभी तक तो सब ठीक ही चल रहा माना जायगा।

आप दोनोंको बापूके आशीर्वाद

---

१ पंडित मालवीयजी डॉ. बिधानचन्द्र राय और श्री भूलाभाई देसाई।

२ बेलगांव जेलमें महादेवभाईके साथ गिरधारी कृपलानीके रखे जानेकी खबर मैंने बापूको बेलगाव जेलसे मासिक पत्रमें लिखी थी और अुन्होंने पूज्य बापूजीको दी थी।

३२

जबलपुर,
७-१२-३३

भाओश्री वल्लभभाओ

मोहनलालजीका अेक ही बड़ा लम्बा पत्र आया था। उसे मैं क्यों संभालकर रखता? उसमें मेरे दोषोंका ही दर्शन कराया गया था और विट्ठलभाओके गुणोंका। उसका मैंने बहुत प्रेमपूर्ण उत्तर दिया था। उसकी पहुंच नहीं आयी। मेरे पास रखे हुओ रुपयों के बारेमें तो मुझे धमकी कहलवाया था। उसके बारेमें मैंने मथुरादासस कहा। उसका उपयोग विदेशमें हरगिज नहीं हो सकता। आपने देखा होगा कि अब उन्होंने मुझसे सार्वजनिक अपील की है। जो होगा ईश्वरी चोट होगा। मैं उनसे निपट लेनेकी आशा रखता हूं। आप निश्चिन्त रहें।

बाकी पत्र लिखा करूंगा। अिस बार जाना मुझे कठिन तो लगा ही है। परन्तु ईश्वर लाज रखेगा। ठक्कर बापाने आपका पत्र मुझे दिखाया था। उनका जरा भी कसूर नहीं। मुझ बचानेके लिअे वे अथक प्रयत्न करते हैं। सबका फरमाअिशवालोंको मेरे पास आने ही नहीं देते। बहुत लड़ते हैं। लेकिन कुछ तो टलना ही नहीं। अनुभवसे सुधार भी होते ही रहते हैं। अिस बारेमें भी चिन्ता न करें। हरि करे सो होय।

प्यारेलाल बीमार हो गये थे। अब कुछ ठीक है। कल्याणजी बम्बईमें हैं। बाकी लिखिये।

१ स्व. विट्ठलभाओ जब बड़ी विधान-सभाके अध्यक्ष थे तब अपने वेतनका लगभग आधा भाग हर महीने वे पू. बापूजीके पास अिच्छानुसार खर्च करनेको भेजते थे। उसी रकमका उल्लेख है।

जीवराज[1] काफी सूख गये हैं। माथेरानके रगबी होटलमें हैं।

मथुरादास मीटिंगमें आया था। अब भी साथ है। दिल्ली तक रहेगा। वह भी काफी दुबला हो गया है। अुसकी पीठ दुखती है। बहुत घूम-फिर नहीं सकता। आराम से तो शक्ति आ जाय। मीटिंगमें बातें करके ही अुठ गया कहा जायगा। मौलाना साहब[2] और डॉक्टर (राय) मुझसे विनय कर रहे थे कि अब मैं आग्रह छोड़ दूं। मैंने धर्मसंकट बताया तो चुप हो गये। बहुत बारीकीसे बातें हुअी। अैसा नहीं लगा कि नरीमानको कुछ समझ आयी हो। मैंने कहा अेक लिखे विदर अिंडिया दूसरा लिखे विदर कांग्रेस। तब मैं अगर लिखूं कि विदर नरीमान तो ज्यादती तो नहीं मानी जायगी न? जवाहर तो जवाहर ही है। जमनालालजीका लिखना ही क्या? अुन्होंने वजन बढ़ाया है। शरीर ठीक कहा जा सकता है। विलायतमें काफी लाभ हुआ। परंतु अुनके कान भी आपकी नाककी तरह कष्ट दिया ही करते हैं। अेक नकटे, दूसरे बहरे! दुखड़ा किसके आगे रोयें? परंतु अब विशेषज्ञसे फायदा हो तो बताअिये। नेती (हठयोगकी नाककी अेक क्रिया) करनेकी सोच रहे हैं यह मुझे पसन्द है। परंतु सिखायेगा कौन? मैं जिसका विशारद माना जाअूंगा। क्या मुझे विशारद समझकर नहीं बुलाया जा सकता? नेती अच्छी तरह करना न आये तो नाकसे थोड़ा खून आने लगता है। पहले सलीका अुपयोग किया जाता है। आप यह हरगिज न करें। बारीक कपड़ा ही काफी है। धीरे-धीरे करनेसे नुकसान नहीं होता। कृष्णदास[3] महादेव और

---

१ डॉ. जीवराज मेहता। अुस समय बीजापुर जेलसे छूटकर आये थे। आजकल बम्बअी राज्यके अर्थ-मंत्री हैं।

२ मौलाना अबुलकलाम आजाद। १९३९ से १९४६ तक कांग्रेसके अध्यक्ष। अब भारत सरकारके शिक्षा-मंत्री।

३ श्री कृष्णदास। Seven Months with Mahatma Gandhi के लेखक। किसी समय बापूजीके मंत्रि-मंडलमें थे।

देवदासको मैंने ही सिखायी थी। देवदासको खून आता था। जिसका कारण अलग था। जिसलिये छोड़ देनी पड़ी थी। जमनालालके साथ जानकीबहन आयी थीं। दोनों रातको चले गये।

महादेवके पास गिरधारी[1] गया यह तो आपसे ही मालूम हुआ। सुरेन्द्र[2] और बरजोरजी[3] वर्धामें हैं। अब दोनों ठीक हैं। माधवजी[4] अभी छूटे हैं। मुझसे मिलने आये हैं। आज कराची जायेंगे। उनकी तबीयत ठीक है। चंद्रशंकर अपने कार्यको सुशोभित कर रहे हैं। काका और स्वामी चार-पांच दिनके लिये माथेरान गये हैं।

मैं १ तारीखको दिल्ली पहुंचूंगा।

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

६२

सीतानगर,
२५-१२-३४

भाई वल्लभभाई

आपने मेरे पत्रकी बाट देखी मैं आपके पत्रकी देख रहा था। मैं जिस भ्रममें रहा कि मेरे पत्रका जवाब आना बाकी है। जितनी तेजीसे माया हो रही है कि तारीख और वार वगैराका स्मरण ही नहीं रहता। किसे क्या लिखा था यह भी याद नहीं रहता। साठवां साल चल रहा है, यह कारण तो हो ही सकता है।

---

१ आचार्य कृपलानीके भतीजे। साबरमती आश्रमके पुराने विद्यार्थी।

२ अेक आश्रमवासी।

३ सूरत जिलेके देहातमें शराबबन्दीका काम करनेवाला अेक पारसी युवक।

४ बापूजीके साथ दांडीकूचमें सम्मिलित हुअे ८ सत्याग्रहियोंमें से अेक।

तीन बजेके बारेमें आपको चंद्रशंकरने यों ही डरा दिया है। मैं जिस तरह न अुठूं तो घबरा जाअूं। आपका आग्रह तो मुझे जल्दी सुलानेका रखना चाहिये। यह नियम आजकल जरूर टूट गया है। फिर भी सब डॉक्टरोंकी राय है कि शरीर अभी तक तो अच्छा ही रहा है। पत्र भी जितने आप सोचते हैं अुतने नहीं लिखता। जिनके बिना काम न चले अुतने ही लिखता हूं। आप पास बैठे हों तो आप ही कहें कि जितने तो लिख ही डालिये! यह कहा जा सकता है कि आपको छोड़कर भाग आने[1] की शिकायत सही है। जिसका अुपाय भी हो ही जायगा न? मेरे बारेमें बिलकुल चिन्ता छोड़ दीजिये। मैं शरीरकी मर्यादाके बाहर नहीं जाता। आप देखें तो मान लेंगे कि मैं अुसकी अच्छी तरहसे रक्षा कर रहा हूं। या सच पूछा जाय तो यों कहूं कि औश्वर अुसका जतन अच्छी तरह कर रहा है। मगर मैं विरुद्ध हो जाअूं, तो बेचारा औश्वर क्या करे? मैं अुसमें डूब गया होअूंगा तभी तो वह मुझे महासंकटोंसे बचाता होगा। मद्रासमें रोज कुचले जानेका डर रहता था फिर भी बच गया। यह किसी मनुष्यकी कारीगरी नहीं थी। औश्वरकी अिच्छा ही अैसी थी। पांच घंटेके नियमका तो ज्यादातर कागज पर ही पालन होता है।

बाकी हर हफ्ते मेरा पत्र जायगा ही। अभी तक अेक भी हफ्ता खाली नहीं जाने दिया। बाकी रक्षा औश्वर करेगा। अुसको बचानेवाला और हो भी कौन सकता है? मणिके बारेमें दरअसल कोअी चिन्ता करनेकी बात नहीं है।

कानजीभाअी[2] को तुरंत तार दिया था। अुनका जवाब तारसे और पत्रमें आ गया था। मैंने खूब जवाब भी भेजा है और लिखा है कि मेरी खातिर जितनी दूर न आवें। परंतु अुन्हें जरूरी मालूम हो तो

१ पू. बापूको जेलमें छोड़कर चले आने जिसका अुल्लेख है।

२ श्री कनैयालाल देसाअी। अुस समय सूरत जिला कांग्रेस समितिके अध्यक्ष। अब गुजरात प्रान्तीय कांग्रेस समितिके अध्यक्ष।

जरूर आ जायें। तिथियाँ भी भेज दी हैं। आपको लिखना भूल गया। अुनका पत्र सुन्दर था।

राजाजीसे मिलना मुश्किल मानता हूँ। हाँ चि० लक्ष्मी मद्रासमें मिली थी। अुसे छठा महीना चल रहा है। अिसलिअे अब फिर नहीं सकती। अुसका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। राजाजी अपनी देखरेखमें प्रसूति कराना चाहते हैं। देवदास भी मद्रास पहुँचेगा। लक्ष्मी मजेमें थी। राजाजी ६ फरवरीको छूटेंगे।

की गाड़ी यों ही चल रही है। अुसे अपने आपसे ही संतोष नहीं है। को फिर गर्भ रह गया है। अिसका अुसे दुःख है। अपने आपको वशमें नहीं रख सकता और फिर परेशान होता है। मैंने अच्छी तरह आश्वासन दे दिया है। परंतु कुल मिलाकर जहाँ है वहाँ ठीक ही है।

मिसेस अेरिस्टार्की[1] के पत्र प्रति सप्ताह बिला नागा आते रहते हैं। रुपये भी भेजती रहती है। अुसकी ममताका पार नहीं है। अब वह त्रिवेदी[2] के मनु[3] की मदद कर रही है। मैंने मिस्डाको लिखा

---

१ पू० बापूजीके लेखोंसे प्रभावित होनेवाली अेक युरोपियन महिला। जब पू० बापूजी गोलमेज परिषद्से लौटे, तब स्विट्ज़र्लैण्डमें अुनसे आकर मिली थीं। वे पू० बापूजीके साथ पत्रव्यवहार रखती थीं।

२ पूनाके अेग्रीकल्चरल कालेजके स्व० प्रो० जयशंकर पीताम्बर त्रिवेदी। अपने बढ़िया गुणोंसे वे बापूजीके कुटुंबी बन गये थे। पूनामें अुनके आतिथ्यका स्वाद बहुतसे गुजरातियोंने चखा है।

३ अुनका लड़का। डाक्टरी पढ़नेके लिअे जर्मनी गया था। अुसका अुल्लेख है।

है कि मुझे अपना धर्म समझायें। मणिलाल[1] और सोराबजी[2] कह रहे हैं। यह झगड़ा वहांकी राजनीतिका है। जिसमें मैं किसीको रास्ता नहीं बता सकता। परंतु मणिलालको लिखा है कि मुझे जो सही लगे सो करें। विनय न छोड़ें। व्यक्तियोंके झगड़ेमें न पड़ें। मैं मानता हूं कि यह झगड़ा निपट जायगा।

गोरधनभाई विठ्ठलभाईके दानके बारेमें लिखते रहते हैं। यह सब पढ़ा नहीं है। मौका देखकर हिसाब दे दूंगा और चुप बैठ जाऊंगा। सुभाषका बड़ा मीठा पत्र आया था। वह अखबारोंमें भेजा था। छपा ही होगा।

यात्रा ठीक चल रही है। कहीं भी क्लेश नहीं। अभी तक दक्षिणमें फसादी लोग देखनेमें नहीं आये। भविष्यको ईश्वर जानता है। लोगोंकी भीड़का पार नहीं। आज सीतानगरमें हैं। परम शांति है। यह देहाती गांव है। आज तो मौन है। कल भी नहीं रहूंगा। दो दिन स्थिरताके न होते तो यात्रामें टिकना मुश्किल हो जाता।

मद्रासमें कुछ समयके लिये शास्त्री[3] से मिला था। मित्रताकी ही मुलाकात थी। मुन्शी[4] और लीलावती[5] मद्रासमें मिले थे। मुन्शीका

---

१ बापूजीके दूसरे पुत्र। ये दक्षिण अफ्रीकामें बहुत वर्षोंसे इंडियन ओपीनियन के सम्पादक हैं।

२ दक्षिण अफ्रीकाके बापूजीके निकटके साथी पारसी रुस्तमजीके पुत्र।

३ स्व. श्रीनिवास शास्त्री। गोखलेजीके बाद भारत सेवक समाजके अध्यक्ष।

४ श्री कन्हैयालाल मुन्शी। बम्बईके प्रसिद्ध वकील। १९३७ से १९३९ तक बम्बई प्रान्तके गृहमंत्री। आम चुनावोंके पहले कुछ समयके लिये केन्द्रीय सरकारके कृषि और अन्न-मंत्री रहे। आजकल उत्तर प्रदेशके गवर्नर हैं।

५. श्री कन्हैयालाल मुन्शीकी पत्नी। १९५२ के आम चुनावोंके पहले बम्बई विधान-सभाकी सदस्या।

स्वास्थ्य अच्छा मालूम हुआ। मूलाभाओी[1] का तार आया था। अुन्हें पूरी तरह तो आराम नहीं हुआ।

काका और सुरेन्द्र मशरूवाला गुजरातमें हैं।

किशोरलाल अभी तक अच्छे नहीं हुवे। स्वामी आनंदजी और जमनालीके बीचमें हैं। अुनके समाचार तो आपके पास आते ही होंगे।

मेरे साथ किसन है यह तो आपको लिख चुका हूं न? बहुत अच्छी युवती है। प्रेमा[2] की सहेली फिर क्या पूछना?

सबको बापूके आशीर्वाद

३४

कुन्नूर (सांध)
२-१-३४

भाओी वल्लभभाओी

आज अब १२ हो गये हैं। कातुन करके आपका स्मरण कर रहा हूं। जिस तरह अुठनेसे ही शान्ति रहती है। दिनमें तो सोआूंगा ही। बाबाका दिन भी सफरमें बीतता है। आप चिन्ता बिलकुल न करें। मेरा शरीर अच्छा ही रहता है।

अपना कोओी हाल आप नहीं लिखते जिसलिये ख्याल होता है कि कहीं कुछ छिपा रहे हैं। अैसा न कीजिये।

---

१ स्व मूलाभाओी बीमनजी देसाओी। अम्बबीके मजदूर लेडरमेट। १९३५ से बड़ी विधान-सभामें कांग्रेस दलके नेता। ५ मओी १९४६ को रातके अेक बजे अुनका देहावसान हुआ।

२ साबरमती सत्याग्रह आश्रमकी पाठशालाके पुराने विद्यार्थी।

३ श्री प्रेमाबहन कंटक। अेक आश्रमवासी। अब महाराष्ट्रमें कस्तूरबा स्मारक निधिकी अेजेंट।

बाकी हर सप्ताह पत्र आता ही है और आगे भी आयगा। अुसकी अिच्छानुसार प्रवचन (गीता पर) भेजता हूं जैसे यरवडा मंदिरसे भेजा करता था।

महादेव अब अेक ही पत्र लिख सकता है और अेक ही पा सकता है। अेकमें अनेकका समावेश करनेकी कोशिश करता है। जीवणजी[1] के मारफत पत्र प्राप्त करेगा। काफी परीक्षा हो रही है। अिसमें भी अेम. अे. हो जायगा। गीताके अनुवादमें डूबा रहता है।

किशोरलालका हाल तो आप जानते ही हैं। वे बुखारको अभी तक छोड़ते ही नहीं। अब अुन्होंने नाथ[2] स्वामी और गोमतीकी कमेटी बना दी है। ये तीनों कहेंगे अुसीके अनुसार चलेंगे।

बाका पत्र कल आया। अुसकी नकलें ओमने की हैं। अेक आपको भेजता हूं। ओम बड़ी चंचल लड़की है। अुसमें झट सीख लेनेका अुत्साह है। शुद्ध है, अिसलिये बढ़ती जा रही है। किसनका शरीर गिर गया है नहीं तो वह भी खूब काम करनेवाली है। दोनों काफी सीधी सादी हैं। दोनों खूब घुल-मिल गयी हैं।

कल राधाकान्त मालवीय[3] आये। वे झूंसी अर्थमें खूब सुरक्षित रखनेकी योजना लाये हैं और मेरी मदद चाहते हैं। अैसे अुद्योगमें मेरी मदद चाहनेका अर्थ है रेंटको बिछौना। विलायत वगैरा जाकर अनुभव ले आये हैं, यह तो आप जानते होंगे।

मलकानी[4] खूब मेहनत कर रहे हैं। ठक्करबापाकी जगह अच्छी तरह संभाल रहे हैं। स्टाफ सारा पूर्ण सन्तोष देनेवाला है। अभी तक तो काम अच्छी तरह चल रहा है।

---

१ नवजीवन ट्रस्टके व्यवस्थापक ट्रस्टी।

२ श्री केदारनाथजी। श्री किशोरलाल मशरूवालाके गुरु।

३ स्व. पं. मदनमोहन मालवीयजीके पुत्र।

४ गुजरात विद्यापीठके अेक अध्यापक। बादमें अेक प्रमुख हरिजन कार्यकर्ता। अब निर्वासितोंका काम कर रहे हैं।

अपना सच्चा स्वरूप दिखाने लगे हैं।   पर काफी काबू पा लिया है। अब बहनोंका हिस्सा नहीं देना चाहते। तीनको दिया हुआ मुख्तारनामा रद्द करके नया अपने ही नाम करा लिया है। मैंने अुलहना दिया तो अुसका अुलटा हुआ जवाब दिया। अब मैंने नानालाल[1] को लिखा है। कुछ होता दीखता नहीं है।

आनंदी बाबला बचु, मोहन वनमाला अम्बु और अमीनाके बच्चे अच्छी प्रगति कर रहे हैं। रामनारायण पाठक[2] हर सप्ताह तीन घंटे देते हैं। जमनादास (गांधी) दुबला-पतला रहा करता है। परेशान भी जान पड़ता है। संतोकको मांके गुजर जानेकी बात तो आपको लिख चुका हूं न? प्रभुदास अपनी ससुरालके आसपास कहीं खादीके काममें लग जायगा। अल्मोड़ामें रहनेसे खर्च बहुत बढ़ जानेकी संभावना है।

जिस तरह आज कौटुम्बिक बजट पास आया सो बताकर समाप्त करता हूं। मणिको पत्र तो लिखता हूं परंतु अुसके हाल महादेव जैसे तो नहीं होंगे? आप जानते हो तो लिखिये।

दोनोंको मा सबको

बापूके आशीर्वाद

---

१ श्री नानालाल कालिदास जसाणी। राजकोट निवासी। रंगूनके अेक बड़े व्यापारी। पू. बापूजीके मित्र।

२ अुस समय गूजरात विद्यापीठके अध्यापक। प्रसिद्ध गुजराती विद्वान।

३५

बंगलोर,
८ १ १४

भाभी वल्लभभाभी

बाका पत्र लिखकर आपका पत्र लिखने बैठा हूं। अब शामके चार बजेसे अूपर हो गये हैं। मौनवार है। आज बंगलोरमें हैं। कल मजदूरोंके वेतन काटनेकी (अहमदाबादकी) मिलोंकी मांगके बारेमें पंचायत है। अुसके लिअे शंकरलाल (बेंकर) गुलजारीलाल[1] वगैरा आ गये हैं। मिल-मालिक कल आयेंगे। पांच घंटे देनेको कहा है। कल रातको अहमदाबादकी ओर चल देंगे।

कामका बोझ तो लगातार रहता ही है। फिर भी शरीर ठीक रहता है। कल सुब्बाराव शरीरकी जांच कर गये और खुश हुअे। खूनका दबाव १५५ १   निकला। यह बहुत अच्छा माना जाता है। अभी तक यह खयाल है कि ठक्करबापा १९ तारीखको कालीकटमें मिलेंगे।

यहां (मैसूर) स्टेटके मकानमें हूं। यहां पहले था नहीं। लोगोंका अुत्साह अच्छा है। दीवान मिल गये। आपको बहुत याद कर रहे थे। सलाम कहलवाया है। खूब प्रेम दिखाते हैं।

का पत्र आया था। अुसने मोटर बेच डालना चाहा। फिर ठक्करबापाका तार आया कि वह बेच देनेको तैयार है। जिसलिअे मैंने जिजाजत दे दी। मैं कुछ समझा तो नहीं। वैसे मामलोंमें मेरा

---

१ श्री गुलजारीलाल नंदा। अहमदाबाद मजदूर-संघके मंत्री। कुछ समय बम्बई राज्यके श्रम-मंत्री। अभी केन्द्रीय सरकारके राष्ट्रीय योजना तथा कुदरती साधन-सम्पत्ति विभागके मंत्री और राष्ट्रीय योजना-समितिके अुपाध्यक्ष।

२ बंगलोरके अेक प्रसिद्ध डॉक्टर।

सारा आधार सिर्फ आप पर रहता है। अिसलिअे मैं तो अेकधार अुस अेकलव्यकी तरह करता हूं। अेकलव्य द्रोणाचार्यकी मिट्टीकी मूर्ति बनाकर और मूर्तिसे ज्ञान प्राप्त करके धनुर्विद्यामें अर्जुनके बराबर हो गया। मैं आपकी मानसिक प्रतिमा बना लेता हूं और अुसे पूजता हूं। अिसमें आप मंजूरी देनेको ही कहेंगे अैसा मानकर मैंने मंजूरीका तार भेज दिया।

कुंवरजी[1] की पत्नीकी मृत्युसे नेपोलियन[2] को काफी चोट पहुंची है। मेरे आश्वासनके पत्रके जवाबमें अुसने जो मीठा पत्र लिखा है, अुस परसे अैसा लगता है । अुसे फिर पत्र लिखा है।   असंतुष्ट है, अैसा अुसके पत्रसे दिखाओ देता है। मैंने पूछा है कि क्या दुःख है?

मुन्नी बंबअीसे अब गयी है। जीवराजका तो देखा ही होगा।

डॉ. विधान[3] मृत्युके मुंहमें से लौटे हैं, अैसा कह सकते हैं। अुन्हें तार दिया था। अुसके जवाबमें वे लिखते हैं कि अेक छुरी टूट गयी है। १५-२० दिन तो लगातार बिस्तर पर रहना पड़ेगा।

मामा[4] का पत्र आया है। अुसमें आपके पत्रका अुल्लेख है। हरिजनोंके बारेमें अलग खाता और अलग चन्दा करनेसे अब काम नहीं चलेगा। रुपया भी कोओ नहीं देगा। अिसलिअे नवसारी गोधरा वगैरा जहां-जहां काम चलता था अुस सबका बजट पास कराकर अुतनी रकम हरिजन सेवक संघसे लेनेका निश्चय किया है। अुन-अुन संस्थाओंका

---

१ १९२१ से १९४१ तक बारडोली तहसीलके अेक प्रमुख कार्यकर्ता।

२ श्री कुंवरजीके अेक लड़केका प्यारका नाम।

३ डॉ. विधानचन्द्र रॉय। कलकत्तेके सुप्रसिद्ध डॉक्टर। बापूजीके अुपवासोंके समय वे अुनकी सेवामें रहते थे। आजकल पश्चिम बंगाल राज्यके मुख्य मंत्री।

४ मामासाहब फड़के। अेक आश्रमवासी। गोधरा हरिजन आश्रमके संचालक।

स्वामित्व नहीं बदलेगा। सिर्फ अुन्हें अुचित सहायता मिलती रहेगी और वे हरिजन सेवक संघकी देखरेखमें चलेंगी। अुनकी स्वतंत्र हस्ती जैसीकी तैसी कायम रहेगी। मामा अभी तो किसी काममें स्वेच्छासे लगे रहेंगे। मैं किसीको भी रास्ता बतानेसे अिनकार करता हूं। मेरा मन ही नेतृत्व करनेसे अिनकार करता है। जिस हरिजन संघके बारेमें कुछ पूछना या जानना हो तो मुझे लिखिये। मुझे पता नहीं चलता कि क्या लिखूं। परंतु आप जरासा विचार कर देंगे तो सारी आवश्यक जानकारी दे दूंगा यानी भेज दूंगा। अैसा डर बिलकुल न रखिये कि मैं खूब अुपाय तैयार करने बैठ जाअूंगा। हाथ दिमाग और समय बचाकर काम कर रहा हूं।

देवदास जल्दी छूट गया है। अुसका तार आया था। मुझसे मिलकर तो जायगा ही। तार अहमदाबादसे था। बहुत करके आजसे मिलने आयगा।

मणिलाल-सुशीला के पत्र आते रहते हैं। अुनका काम ठीक चलता है। केशू भी अच्छी तरह जम गया है। रामदास व्याकुल है। वह शांति पा ही नहीं सकता।

अैसा मान सकते हैं कि किशोरलाल अब ठीक होते जा रहे हैं। बालकृष्ण बच गया। अब थोड़ा चलता फिरता भी है।

जमनालालकी सर्दी वगैरा कम हुअी है। शंकरलाल मानते हैं कि अुनका शरीर अच्छा तो हरगिज नहीं कहा जा सकता। वजन २ पौंडके आसपास कम हुआ है।

ओम और किसन मजेमें हैं। मीराबहनका तो कहना ही क्या?

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

---

१ श्री मणिलाल गांधीकी पत्नी। दक्षिण अफ्रीकासे आनेवाले पत्रोंका अुल्लेख है।

३६

१५।१।३४

भाअी वल्लभभाअी,

अभी शामके चार बजे हैं। सोमवार है। कालीकटमें 'नारायण पुरुषोत्तम'[1] के बंगलेमें बैठा हूँ। देवदास और लक्ष्मी आज आ गये। कल ठक्करबापा और शंकरलाल आयेंगे। कल दोपहरको यहाँसे चल जामोरिन[2] से मिलना। पाँच बजे त्रिचूरके लिये निकल पड़ना।

लक्ष्मी दिल्ली जाय या मद्रासमें प्रसूति कराअी जाय यह प्रश्न है। ये दो दिनमें राजाजीसे मिलेंगे। बादमें अंतिम निर्णय करेंगे। देवदासको दिल्ली जानेकी जिजाजत मिल गअी है। फिर भी अनुभव लेनेके लिये यह छ मास शायद मद्रासमें बितायेगा। दोनों विचार कर रहे हैं। लक्ष्मी देवदासकी गैरमौजूदगीमें प्रसूति नहीं चाहती। राजाजी अपनी अनुपस्थितिमें नहीं चाहते। जिस तरह समस्यामें समस्या पैदा हो जाती है। जीवनकी सफलता तो अैसे छोटे दिखाअी देनेवाले मसले भी सीधे ढंगसे हल करनेमें ही है न?

शंकरलालको मैंने खादीके बारेमें थोड़ी बात कर जानेको खास तौर पर बुलाया है। मैं देखता हूँ कि हमारे विभागमें शायद अनावश्यक खर्च होता है। मैंने जो कुछ देखा है वह अुनके सामने

---

१ कालीकटके अेक कांग्रेसी।

२ जामोरिन — कोझीकोड (कालीकट) के अेक बड़े जमींदारकी आदरसूचक पदवी। मलयालम शब्द सामूतिरि का अपभ्रंश। दंतकथा यह है कि नवीं सदीमें मलाबारके राजाने अपनी जमीनका बंटवारा किया तब अुनने जामोरिनको जितनी जमीन दी जितनीमें वहाँके तल्ली मंदिरके मुर्गेकी आवाज सुनाअी देती।

रखना है। अैसा महसूस होता है कि अेक प्रान्तकी खादी दूसरे प्रान्तमें भेजनेका बोझ अब तो बिलकुल छोड़ना चाहिये। अन्तमें मेरा मन अनंतपुरकी पद्धतिकी तरफ झुक रहा है। शावजी भी ठीक लगती है। कृष्णदास (पांपी) और जाजूजी मुस्तैद हैं और अेक दूसरेकी खूब पूर्ति करते हैं।

कृष्णदास खूब चमक रहा है। केशू शांत है। रामदासका दिल अस्थिर है। वह भी किसी दिन ठिकाने आ जायगा।

देवदास बासे मिल आया। बा की बहादुरीकी बड़ी तारीफ करता है। बाको सताया तो जा रहा है। अैसा न हो तब तक मजा कैसे आवे?

गुरुवायुर हो आया। वहां कुछ भी नहीं है। परंतु यह कहा जा सकता है कि धर्माभिमान संघने मुतरके पहलवानोंको काले झंडे फहराने और थोड़ी मार खानेको भेज दिया था। दो जनोंने प्लेट फार्म पर कब्जा कर लिया था। अेक भाऔीके पैर पकड़ लिये। अिस पर नौजवानोंने अुन्हें अुतर जानेको कहा। गुत्थमगुत्था हुआी। अिन पहलवानों पर भी कुछ मार पड़ी। मैं शकुनरूप मगर स्वभावके अनुसार बरताव कर दिखाया। अिन दोनोंको मैंने अश्वासन भेज दिया और क्षमा शुरू कर दी। पूरी की। मनुष्योंकी अुपस्थिति होती ही रहती है। चप्पलें और नोट मिलते ही रहते हैं। अन्नपूर्णा जैसी अेक कौमुदी प्रगट हुआी है। अुसने अपने तमाम गहने दे दिये। जिसका राम रक्षक है अुसे कौन मार सकता है? अिसलिये वह रखेगा वैसा रहूंगा वह कहेगा वैसा करूंगा वह नचायेगा वैसा नाचूंगा।

बंगलोरमें अमरीकी दो महिलायें — मां-बेटी मिलीं। दोनों भिक्षामें बड़ी कुशल हैं। सादगीसे रहती हैं। अभी तो सर्वस्व

---

१ श्री श्रीकृष्णदास जाजू। श्री शंकरलाल बैंकरके बाद कभी वर्षों तक अखिल भारत चरखा संघके मंत्री रहे।

गोरधनभाईको आखिर शान्त नहीं कर सका। परंतु अब वे मुझे कुछ लिखते नहीं। मैंने उनके प्रति भी जो धर्म था उसका पालन किया है। विट्ठलभाईकी तरफसे आये हुए रुपयोंका हिसाब मैंने मंगवाया है और पत्रव्यवहार भी मंगवाया है। वह मिल जाय तो उसे प्रकाशित करनेकी आवश्यकता जरूर मानता हूं।

मुझ जिसे तब भले वर्षा ही पत्र लिखे। परंतु आपको ही सब कुछ लिखा करे और वह पत्र मुझे मिल जाय तो भी मुझे पूरा संतोष रहेगा। आप ही जिस बारेमें मुझे रास्ता दिखाइये। बाकी हाल तो आप लिखेंगे ही। लक्ष्मीका हाल मैं आपको लिख चुका हूं। मृदुलाको और नंदूबहन[1] को पत्र लिख रहा हूं। ब्रजकृष्णको देखभाल देख आया। यह अच्छा है। जी गया। आरामकी जरूरत है और वह ले रहा है।

रामजी ६ फरवरीको जबरन छूट जायेंगे।

किसी भी कारणसे मन विचारमें न रहे यह सीख लेनेकी जरूरत है। जिसके लिये या तो गीता कंठस्थ कर ली जाय संस्कृत सीखी जाय या रामधुन जुस्टी जुस्टी रटी जाय।

मुझे तो चिन्ता करनेकी फुरसत ही नहीं मिलती जिसलिये चिन्ता न करनेकी सलाह देनेकी जरूरत नहीं रह जाती।

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

---

१ स्व. विजयागौरी कानूगा। अहमदाबादके प्रसिद्ध स्व. डॉ. कानूगाकी पत्नी। पू. बापूने १९१५ में अपना अहमदाबादका मकाम उठा दिया उसके बाद जब वे अहमदाबाद आते तब डॉ. कानूगाके यहीं ठहरते।

पृथुराज थोड़े दिनके लिये मेरे साथ घूम रहा है। कालीकटसे साथ हुआ है। अब वह बेलावहन[1] से मिलने जायगा। वैसे असका स्वास्थ्य अच्छा हो गया है। चंद्रशंकरको मदद दे रहा है। अन्हें अधिकसे अधिक मददकी जरूरत है।

त्रावणकोरमें कोओ विशेष नहीं देखनेमें आया। भीड़ अितनी ही थी। (त्रावणकोरके) राजाने खूब अदासीनता दिखाओ। सी पी[2] मिले ही नहीं। देवधर मिशेलममें हैं। कोआपरेटिव सोसायटी सम्बन्धी जांच कर रहे हैं। शरीर दुबला तो जरूर है परन्तु काम दे रहा है अिसलिये मुझे सन्तोष है। केळप्पन[3] बहुत करके अेक अीसाओ महिलासे शादी करेगा। अिसलिये हरिजन सेवक संघके साथ असका सम्बन्ध खतम हो जायगा। महिला अच्छी है। अिस सम्बन्धका विचार ८ वर्ष पुराना लगता है। अिसमें कोओ मैल नहीं है। परन्तु असके विचारोंका संघके साथ मेल नहीं बैठ सकेगा।

बाका पत्र मिल गया। असमें कोओ खास बात तो नहीं है फिर भी नकल करा सका तो भेज दूंगा। मणिका पत्र भेजा सो तो मिला ही होगा।

वहां आज सब छूट गओ होगी। सबको पत्र लिखे हैं। किशोरलाल अभी तक बिस्तरेमें ही है। जमनालाल अपना काम जोरोंसे चला रहे हैं। सुरेन्द्रको अभी तो असमें लगा दिया है।

जर्मनीका अेक बूरो नामक नवयुवक दक्षिण आफ्रीकासे आया हुआ है। वह आजकल मेरे साथ सफर कर रहा है। वह हिन्दू धर्म

---

१ श्री लक्ष्मीदास आसरकी पत्नी।

२ सर सी पी रामस्वामी। अस वक्त त्रावणकोर राज्यके दीवान।

३ मलाबारके अेक कार्यकर्ता। गुरुवायुरका मंदिर हरिजनोंके लिये खुलवानेको अपवास करनेवाले थे। अिसके लिये देखिये महादेवभाओकी डायरी भाग २।

सम्वाददाता कहलाता है। अुस बेचारेके १ [illegible] द टूट गये। ठक्कर बापा अुस पर मुग्ध हो गये हैं। वह चौकीदार और हज्जामका काम खुशीसे करता है। खूब मजबूत है। थकता ही नहीं। चंचल है और अच्छा पढ़ा-लिखा है। विचित्र मेहमान बन गया है।

सिरियसको पुलिस ले गयी है। शायद नागिनी भी रवाना हो गयी होगी।

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

३८

कुनूर,
१०-२-'३४

भाओ वल्लभभाओ

आपका पत्र अिस बार अभी तक नहीं मिला। मिल जायगा। अिस समय कुनूरमें धूपमें बैठकर दो बजे यह लिख रहा हूं। हरिजन के लेख पूरे किये। फिर भोजन किया। तामिलनाडका कार्यक्रम पूरा किया और फिर नींद ली। अब लिखने बैठा हूं।

अभी तो बिहार मेरा काफी समय ले रहा है। बिहारमें जैसा कहर टूटा वह तो आपने देख लिया। राजेन्द्रबाबूके तार लगभग रोज मिलते हैं। अुनकी अिच्छानुसार काम किये जा रहा हूं। मेरे वहां जानेकी अभी जरूरत नहीं है। आश्रमके जो लोग छूट गये हैं अुन्हें बुलाया है। मैंने तार दे दिया है। जितने जा सकेंगे जायंगे। मुझे जवाब नहीं मिला कि कौन कौन जा सकेंगे। हरेक सभामें बिहारकी बात तो कहता ही रहता हूं। कुछ चंदा और जेवर पाता भी हूं। अिस वक्त मदद तो काफी मिलती दीखती है। यह देखना है कि अुसका अुपयोग किस तरह होता है।

अमतुस्सलाम यहाँ आ पहुँची है। यह तो साथ ही लौट जानेको तैयार थी। परन्तु अभी मैंने कुनूरसे रवाना होनेके दिन तक मुझे रोक लिया है। ६ तारीखको मेरे साथ मुतरेमी और गुजरात जाकर अपने काममें जुट जायगी। गंगाबहन[2] वगैरा आराम ले रही हैं।

सेवाग्राम अगले महीनेके आखिरमें या मार्चके आरंभमें जाना होगा। बीचमें बिहारका बुलावा आ जाय तो मुल्तवी भी करना पड़े। सेवाग्राम जाना हुआ ही तो महादेव और मणिके मिलनेकी मियाजत मंगा लूंगा।

कामजीभाई आजकल आने चाहियें। शांतिकुमार[3]ने पहुँची गांठका ऑपरेशन कराया था। अब वह ठीक है। शंकरलाल जीके बारेमें मिल गये। अब बम्बईमें मिल्कवालोंमें पड़े हैं। यहाँ डॉ राजन[4] और मार्तण्डराव साथ हैं। मार्तण्डरावके बंगलेमें हम ठहरे हैं। किशोरलालने अभी बिस्तर नहीं छोड़ा है। स्वामीको बिहार आनेके लिये तार दे दिया है।

पृथुराज चन्द्रशंकरको मदद दे रहा है। लीलाबहन आसर और मणिको लेकर लक्ष्मीदासके पास बड़ौदा गयी है। उन्होंने (जेलमें) २५ पौंड वजन खो दिया। बावला और दुर्गा बलसाड गये हैं।

१ आश्रमवासी मुसलमान महिला। नोआखालीमें जिन्होंने अच्छा काम किया था। आजकल दिल्लीके आसपास निर्वासितोंमें काम कर रही हैं।

२ श्री गंगाबहन वैद्य। आश्रमवासी। बरछोली बोचासण वल्लभ विद्यालयमें काम कर रही हैं।

३ श्री शांतिकुमार नरोत्तम मोरारजी। सिंधिया स्टीम नेविगेशनके एजेन्ट।

४ मद्रासके प्रसिद्ध डॉक्टर। मद्रास राज्यके भेद मंत्री थे।

अमीना बच्चोंको लेकर प्यारेअली[1] के पास जायगी । मणि परीख[2] बच्चोंको लेकर अभी तो अठवाल गअी हुअी है । बादमें नरहरिसे मिलने जायगी । फिर जो हो जाय सो ठीक । प्रेमा पहुंच गअी है। लीलावती[3] बीमार है । लेकिन हठ करके गअी मालूम होती है ।

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

३९

कुनूर
७ १४

भाअी वल्लभभाअी

यह पत्र सुबह दातुन करनेके बाद शुरू कर रहा हूं ।   के पतेके बारेमें आपको लिखा है । ओमकी मार्फत यह आपको मिल गया होगा । कानजीभाअी आनेवाले थे लेकिन बिहारके कारण रुक गये हैं । परन्तु मिलने आनेकी अुनकी अिच्छा तो है ही । अैसा ही मुन्नाभाअीका है ।

श्री अरविन्द[4] से मिलनेका प्रयत्न करना (वहां रहनेवाले) गुजरातियोंके खातिर आवश्यक था। अुनका अिनकार शिष्टतापूर्ण था।

---

१ बम्बअीके अेक गांधीभक्त खोजा व्यापारी ।

२ श्री नरहरिभाअीकी पत्नी ।

३ श्री लीलावती आसर । आश्रमवासी बहन ।

४ श्री अरविन्द घोष । आधुनिक भारतके महान योगी । १८९६ में बड़ौदा कॉलेजमें प्रोफेसर थे । १९ ६ में कॉलेज छोड़कर बंग भंगकी हलचलमें शामिल हुअे । १९ ८ में मुजफ्फरपुर बम केसमें पकड़े गये लेकिन निर्दोष छूटे । अुस समयसे अध्यात्म मार्गकी ओर मुड़े । १९१ में पांडीचेरी जाकर वहां आश्रमकी स्थापना की । और तबसे दिसम्बर १९५ को अवसान हुआ तब तक पांडीचेरी आश्रममें ही रहे ।

वैसा लिखा है कि किसीसे नहीं मिलते। रिचमंड मदर[1]का कोई जवाब ही नहीं है। अब तो मेरा मुख शहरमें जाना ही बन्द हो गया है। मुझे यह येक तरहसे अच्छा लगा। फिर भी जमनाशंकर और ठक्करबापाको वहां भेजनेका विचार रखता हूं। जितना देखा जा सके देख आवें। मदर को मदर कहनेमें हमारा क्या बिगड़ता है? जिसे जो पदवी मिली हो उसे उसी नामसे बुलानेकी विनय तो गोलमेजमें भी रखी जाती थी। आप शायद कहेंगे कि गोलमेजका अनुकरण करें, तब तो हमारी आफत हो जाय। कहनेका मतलब यह है कि गोलमेजको भी यह विनय रखनी पड़ी थी।

रायजीभाभीके आनेका कारण आप लिखते हैं नहीं था। अब तो यहां   भी पहुंच गया है और हमारा हरिलाल[2] भी हो आया जैसा रामदास बता रहा है। जिसके कभी लड़के-बच्चे हों उसे मां भी तो चाहिये न?

मेरे जमालसे पामोरिनके बारेमें तो मैं लिख चुका हूं। वे अत्यंत सादगीसे रहते हैं। आडंबर नहीं है। महल नामका ही है। साज-सामान कुछ नहीं। बहुत विनयसे पेश आये। अपने लड़केसे भेंट कराई। नारियलका पानी पिलाया। आते वक्त हाथमें फल रखवा दिये। बातें केवल शिष्टाचारकी ही कीं जिसलिये बहुत चुप हुये। वृद्धावस्था है। कहते थे अब बहुत याद नहीं रहता। भले आदमी हैं। मिल आया यह अच्छा हुआ।

कुनूर बड़ा रमणीय स्थान है। अगर मकान मिल जाय तो खाना-पीना सस्ता है। जिस ऋतुमें ठंड अच्छी पड़ती है। अत्यधिक नहीं। यहांके पहाड़ी लोगोंमें हमारे सेवक अच्छा काम कर रहे हैं।

---

१ मैडम पॉल रिशार। ये भी अरविन्दके साथ साधनामें जुटीं तबसे आश्रमकी व्यवस्थाका सूत्रसंचालन संभाल रही हैं। आश्रममें ये भी माताजीके नामसे पहचानी जाती हैं। उनका हिन्दी नाम मीरा है।

२ स्व. हरिलाल गांधी। गांधीजीके बड़े पुत्र।

अुनका निर्णय था। मिसलिअे मैंने सूचित किया है कि अगर मास आठ दिनका आराम हो तो कुनूरमें हो जिससे पहाड़ी लोगोंमें काम हो और जिन पत्रोंका जवाब नहीं दे पाया हूं वे निपट जायं। यहां नागेश्वररावके बंगलेमें हूं। मेरा कमरा मोटर-घरके अूपर है। छोटासा परन्तु बढ़िया कमरा है। मोटर-घर रहने लायक है। कमरा साफ है। यहां आना यह अच्छा हुआ। रोज पहाड़ी लोग आते हैं। अूटीमें यहां और पास ही कोटगिरिका पहाड़ है। यहां जितनी जबरदस्त सभायें हुईं वैसी पहले कभी नहीं हुई थीं। हरिजनोंके डेपुटेशन मिले। हरिजनोंका ही अेक सुन्दर मठ देखा। पहाड़ी लोग शराब बहुत पीते हैं। सेवक ठीक काम कर रहे हैं। राजाजी कल मिलेंगे।

बिहारको अच्छी सहायता मिल रही है। दूर जगहसे लोग रुपये-रुपये भेजते रहते हैं। आश्रमके पंडितजी पारनेरकर, राघवजीभाई बाल वगैरा गये हैं। स्वामी और

---

१ स्व० पंडित नारायण मोरेश्वर खरे। संगीतशास्त्री। आश्रमवासी।

२ अेक आश्रमवासी। अुस समय आश्रममें डेरी चलाते थे।

३ राघवजीभाई नाथाभाई पटेल। आश्रमवासी। अब खेड़ा जिलेके भलाड़ा गांवमें ग्रामसुधारका काम करते हैं।

४ काका कालेलकरके छोटे पुत्र।

५ अुस समय पू० बापूने स्वामी आनन्दको बिहार सम्बन्धी अपने विचार बताते हुअे लम्बा पत्र लिखा था।

ट्रेन पर
नासिक रोड
१-२-३४

प्रिय स्वामी आनंद,

तुम्हें तो बेरहम मानना पड़ा। काकाभाअी मिलने आये तब पता चला। मुझे तुम्हारा नासिकसे (विक्टा सेनेटोरियमसे) लिखा

हो। अुसमें जराभी भूख लेनेकी शक्ति होती है। यह आपकी कनी पुरानी मोतीमें से बन सकती है। अुसीके साथ प्राणायामकी जरूरत है। नेती और प्राणायाम नाकको साफ रखते ही हैं। आपका कब्ज मिट गया यह बहुत अच्छा हुआ। खुराकमें जो फेरबदल किया है, वह अवश्य लाभदायक होगा।

केलप्पनने जान-बूझकर अपने सम्बन्धकी बात नहीं छिपायी। जिसमें मुझे कुछ अयोग्य लगा ही नहीं। मुझे भी सेल्फ रिस्पेक्ट[1] और जातपांत तोड़क[2] का स्पर्श तो हुआ ही था। अिसीमें कोअी दोष निकालने लायक बात भी नहीं है। केलप्पन दुष्ट नहीं भोला है और जिद्दी तो है ही। मद्रासका कारोबार राजाजीको सौंपनेकी अिच्छा है। अभी पूरा निश्चय नहीं किया है। कदाचित् रामचन्द्रन्‌को सौंपा जाय।

बुआजीके लिये आपने अच्छी युक्ति सोची दीखती है। भले वे वहां ही रहें। क्या आप समझते हैं कि बियाजीके लिये कुछ बाकी रहा है? परन्तु अैसी कोअी बात नहीं है। सर चिमनलाल[3] की बाबत में बहुत लोग जाते नहीं दीखते। अुनका खाना बहुतोंको पसन्द नहीं आता जिसमें वे बेचारे क्या करें?

बंगाल जानेकी बात अभी अधरमें लटक रही है। अंतमें जो हो जाय सो सही।

म्युरियल (लेस्टर) का मेरे नाम तार आया था। मुझे कोयम्बतूरके पास मिलने आनेके लिये कहा है। थोड़े दिन साथ सफर करनेका सुझाव दिया है। अमृतलाल सेठ[4]ने मुझे जिन दिनों

---

१ अिस नामकी संस्था।

२ जातपात तोड़क मंडल।

३ स्व. सर चिमनलाल सेतलवाड। बम्बअीके प्रसिद्ध वकील। नरम दलके नेता। दावत मानी अुनके वैद्य।

४ किसी समय जन्मभूमि के सम्पादक।

जोशी[1] भी गये हैं। मथुरादास बाबू बाबू कर रहे हैं। दूसरे लोग तैयार हैं। अुन्हें रोक लिया है। राजेन्द्रबाबू कहेंगे वैसा करेंगे।

दूसरा पत्र लिखनेके बाद अेक भी पत्र नहीं मिला। दादाभाभी कहते हैं कि तुमने जानेसे पहले लम्बा पत्र लिखा था। मुझे तो वह पत्र मिला ही नहीं। मणिबहनने तुम्हें वे पांच पुस्तकें सिल्कटी जिल्द बंधवाकर भेजनेको लिखा था। अुनका क्या हुआ कुछ पता नहीं चला। अब तो तुम्हें पत्र लिखने या पढ़नेकी भी फुरसत नहीं होगी। परन्तु वहांके समाचार जाननेकी भी व्याकुल हो रहा है। मुझे तो कई बार पहले पहल जेल अच्छी लगी हो तो बिहारका हाल सुनकर और अुसके बाद आज तक मैं बेचैन हूं। काम हो रहा है रुपया जमा हो रहा है मगर मेरा मन जरा भी नहीं मानता। जिस समय फिर अच्छी तरह हमारा सिक्का जमानेका मौका था। मेरा खयाल है कि हमारा जैसा अुपयोग होना चाहिये वैसा हम न कर सके। मगर क्या करूं? लाचार हो गया हूं। राजेन्द्र बाबू तो बेचारे किसीको कटुवचन कहनेवाले नहीं हैं। वहांके लोग बड़े भोले और अतिशय नरम हैं। अुनमें कुशलता थोड़ी है। परन्तु बापूने तुम सबको भेजा और जवाहर वहां पहुंच गये तो सारा मुल्क बल अुठे, अैसा वातावरण क्यों न किया? सभी बातें छोड़ कर बिहार पर सारी शक्ति लगानी चाहिये थी। केवल बापूको अपने रास्ते जानेकी छुट्टी दे देनी चाहिये थी। और सब कुछ ताकमें रखकर अेक ही बात और अेक ही काम का वातावरण हो जाता तो बहुत कुछ हो सकता था। परन्तु मुझे तो अैसा लग रहा है कि "नाथ बिन बिगड़ी कौन सुधारे?" क्या करूं मजबूर हो गया हूं। अपने विचार और कामकाज बतानेका अवकाश मिले तो मुझे लिखते रहना। जाननेकी बड़ी चिन्ता है। सरकारका तंत्र रेलकी टूटी गाड़ीकी तरह

१ गांधी सेवा संघके मंत्री।

मेरी बात भी तुम्हीं पर छोड़ी है। अब जीमें आये सो करें। मेरी अपनी जिम्मा कर्णाटक और गुजरातकी यात्रा पूरी करके यहां आनेकी है। जिसका अर्थ यह है कि २ मार्चके आसपास यहां पहुंचूंगा। अभी जगह चंदा कर रहा हूं। जिस बार मेरा सारा परिश्रम गांवोंके पैसे देनेवालोंके साथ हो रहा है। कुछ मध्यमवर्गके भी हैं। ये बेचारे यथाशक्ति देते हैं। मगर गरीब लोगोंकी अुदारताका पार नहीं। रोज पहाड़ी रास्तें आकर अुनके पास जो होता है दे जाते हैं। आश्रमका रामचन्द्रन् अभी मेरे साथ है। आप अुसे पहचानते हैं न? विद्वान है। अुत्तम है। गंगाधररावका स्वास्थ्य काफी गिर गया है। मगर स्वयं वीर पुरुष है, जिसलिअे अस्वस्थतामें काम संभाल रखा है। बीचमें मावेराम जाकर आराम ले आते हैं।

पेरिन[1] और जमनाबहन[2] का हाल तो सुना ही होगा। प्रेमा और लीलावती (आसर) छूटते ही चली गयी। लीलावती तो हठीली है।

चलता है। अभी तक लोग दबे हुअे मुर्दे नहीं निकाल रहे हैं! तुम यहां कहां रहोगे? कौन कौन हो? यह सब और अन्दरकी तरफसे होनेवाली हलचलका कुछ वर्णन देना। राजेन्द्रबाबूके क्या हालचाल हैं? अुनका स्वास्थ्य कैसा है? प्रोफेसर यहां आ पहुंचे हैं वे क्या करते हैं? अुनसे कहना कि मुझे अपने कुछ न कुछ समाचार भेजें। हमारे (गुजरातके) बाढ़-संकटके दिन याद आ रहे हैं। परन्तु वह बहुत ही छोटा-सा संकट था जब कि यह समुद्रको हिलानेकी बात है। बापू ९ तारीखको बेलगाम आयेंगे। अुनसे महादेव व मणिबेन मिलनेकी जिजाजत मांगी है। राजाजीमार्फत छटकर यहां आया है। अुस मार्गका पत्र दे देना।

वल्लभभाईके वन्देमातरम्

१ स्व. दादाभाई नौरोजीकी पोती।

२ पेरिनबहनके साथ काम करनेवाली बहन।

शायद नहीं मरेगी। अमतुस्सलाम यहां है। बीमार पड़ी है। जिसकी अच्छयारी बनीसी है। अमतलाको अभी तो हरिजन सेवाके लिये साबरमती भेजता हूं। देखता हूं वहां क्या करती है।

आश्रम भी हरिजन सेवक संघको दे दिया है। गोशाला वापस हरिजन आश्रममें ले जानेका विचार है। जिससे हरिजनोंको तालीम मिलेगी और गोशाला अधिक सुरक्षित रहेगी।

बाके पत्रकी नकल साथमें है। जिसमें से मणिको मेरी तरफसे जो लिखा जा सके लिख दें। मुझसे और महादेवसे मिलनेकी जिजाजत मांगती है। तार दिया है। जवाब आजकलमें आना चाहिये। वहां ९ मार्चको आजूबा। के बारेमें मुझे भी समाचार मिले हैं। मणिसे कहिये कि मृदुलाका लम्बा सचित है। मुझे दर्द अभी तक सता रहा है। वह रोज मुझे याद करती है। मार्चमें छूट जानेकी आशा रखती है। दूसरी कौनसी पुस्तकें चाहियें तो मंगवानेको लिखती है। दुर्गा मणि परीख बेनाबहन नरीमानके पत्रोंके जवाब आ गये हैं। थोड़ी थकावट मिटानेके बाद ठिकाने लग जानेकी (जेल जानेकी) आशा रखती है।

अब्बाससाहब[1] की ८१ वीं सालगिरह अच्छी तरह मनायी गयी दीखती है। काकाने अच्छा परिश्रम किया। बुढ़े बहुत खुश हुये हैं। कल्याणजी उनकी जीवनरेखा लिख रहे हैं। उसके सिल-सिलेमें हमारे सब विद्वान उनके यहां गये और भूले हुये संस्मरण ताजे कराये।

मेथीका प्रयोग आप कर रहे हैं यह मुझे बहुत पसन्द आया है। शायद पुराने कपड़ेकी हाथसे बनायी हुयी बत्ती ज्यादा उपयोगी

१ स्व अब्बास तैयबजी। बड़ौदा हाओीकोर्टके जज। असहयोग आन्दोलनके प्रारम्भसे राष्ट्रीय कार्यमें पड़ गये थे।

२ श्री कल्याणजी वि मेहता। अेक गांधीवादी कार्यकर्ता। भूतपूर्व सूरत जिला स्कूलबोर्डके अध्यक्ष।

हो। अुसमें बरतनी चूस लेनेकी शक्ति होती है। यह आपकी फटी पुरानी धोतीमें से बन सकती है। अुसीके साथ प्राणायामकी जरूरत है। नेती और प्राणायाम नाकको साफ रखते ही हैं। आपका कब्ज मिट गया यह बहुत अच्छा हुआ। खुराकमें जो परिवर्तन किया है, वह अवश्य लाभदायक होगा।

केलप्पनने जान-बूझकर अपने सम्बन्धकी बात नहीं छिपायी। अिसमें अुसे कुछ अयोग्य लगा ही नहीं। मुझे भी सेल्फ रिस्पेक्ट[1] और जातपांत तोड़क[2] का स्पर्श तो हुआ ही था। अिसीमें कोअी दोष निकालने लायक बात भी नहीं है। केलप्पन दुष्ट नहीं भोला है और जिद्दी तो है ही। मलाबारका कारोबार राजाजीको सौंपनेकी तजवीज है। अभी पूरा निश्चय नहीं किया है। कदाचित् रामचन्द्रन्‌को सौंपा जाय।

कुमारीके लिये आपने अच्छी युक्ति सोची दीखती है। भले वे जहां हैं वहीं रहें। क्या आप समझते हैं कि विवाहप्रथाके लिये कुछ बाकी रहा है? परन्तु असी कोअी बात नहीं है। सर चिमनलाल[3] की दावत में बहुत लोग जाते नहीं दीखते। अुनका खाना बहुतोंको पसन्द नहीं आता अिसमें वे बिचारे क्या करें?

बंगाल जानेकी बात अभी अधरमें लटक रही है। अंजाम जो हो जाय सो सही।

म्यूरियल (लेस्टर) का मेरे नाम तार आया था। अुसे कोअम्बतूरके पास मिलने आनेके लिये कहा है। थोड़े दिन साथ सफर करनेका सुझाव दिया है। अमृतलाल सेठ[4]ने मुझे अिन दिनों

---

१ अिस नामकी संस्था।

२ जातपात तोड़क मंडल।

३ स्व. सर चिमनलाल सीतलवाड। बम्बअीके प्रसिद्ध वकील। नरम दलके नेता। दावत यानी अुनके भोज।

४ किसी समय जन्मभूमि के सम्पादक।

कोओी पत्र नहीं लिखा। मेरे लिये भी अल्टीमेटम था। भले ही पृथ्वीके गर्भमें हो वह बाहर निकले। मनुष्यका शरीर भी तो पृथ्वीका टुकड़ा ही है?

आप दोनोंको बापूके आशीर्वाद

ठंडमें तो अिस बार सभी जगह हद कर दी है। कहीं जाड़ा तो कहीं बेमौसमकी बरसात। भूकम्पके साथ अिन सब बातोंका सीधा सम्बन्ध मालूम होता है।

४०

पुदुपाल्यम्
११-२-३४

भाओी वल्लभभाओी

यह रातबीका आसन है। मंगलवारकी सुबह है। कोओी ५ आदमी भर गये हैं। परन्तु सबका काम चल जाता है। आबु अैसी है कि अड़चन नहीं मालूम होती।

म्युरियल लेस्टर और अुसकी सहेली कोयम्बतूरसे साथ हो गयी हैं। वे कल बंगालके गवर्नरसे मिलने वापस गयीं। अिसमें प्रेरणा मेरी थी। विषय केवल मिदनापुर[1] का था। मैं यह नहीं मानता कि अिससे कुछ नतीजा निकलेगा परन्तु अितना करना हमारा धर्म था। वे यहां रविवारको लौटेंगी।

अमतुस्सलाम रोगशय्या पर है। मेरे सामने ही लेटी है। अुसका हृदय सोना और शरीर पीतल है।

---

[1] मिदनापुरमें अेक क्रांतिकारीने अेक अंग्रेज अफसरकी हत्या की थी अिसलिये वहां सरकारकी तरफसे कहर बरसाया गया था। अुसी सिलसिलेमें गवर्नरसे मिलने गयी थीं।

कविवर[1]का आक्रमण तो आपने देखा होगा। अुसका अुत्तर हरिजन के मारफत दे रहा हूँ। अुन्होंने बादमें सुधार तो किया ही है। वे अुतावलीमें भूल डालते हैं और फिर सुधारते हैं। अैसा होता ही रहता है।

भणसालीने मुह सिलवा लिया है। पानीमें आटा घोलकर नली द्वारा चूसता है। कहता है अेक वर्षसे होंठ सिलवा लिये थे। यह भी लिखता है कि बहुत शांत है। लंगोटी या कच्छी पहननेका विचार है। काठियावाड़में बालके पास है।

छगनलाल (जोशी) का पत्र आया है। सुन्दर है। अुसने अच्छा अध्ययन कर लिया है। मानसिक स्थिति भी अच्छी है। शरीर ठीक है। दूध वगैरा भी ठीक मिलता रहता है। छूटनेका समय निकट आता जा रहा है।

अमलाको साबरमती जाने दिया है। अभी तो खुश है।

बालजी[2] यहां आये हैं। शरीर ठीक ही है। स्वामीके मित्र हिम्मतलाल वीरा आये हैं। अुनका शरीर अच्छा नहीं हुआ। अिसलिअे अैसा नहीं लगता कि यहां रह सकें। मथुरादास थोड़े दिनके लिअे आया है। कोअी खास बात नहीं है।

रवीन्द्रबाबूकी तरफसे मुझे बुलावा आया है। अिसलिअे कहीं न कहींसे अमुक रकम जोड़कर जाना पड़ेगा। मैंने तार दिया है।

---

१ विश्वविख्यात कवि रवीन्द्रनाथ टागोर। बंगालमें कलकत्तेके पास स्थित शान्तिनिकेतनके संस्थापक। वे अपनी तमाम रचनायें पहले अपनी मातृभाषा बंगलामें ही लिखते थे। अिनकी गीतांजलि पुस्तक पर अुन्हें नोबल पुरस्कार मिला था। ७ अगस्त १९४१ को अुनका देहान्त हुआ।

२ श्री बालजी गोविन्दजी देसाअी। अेक आश्रमवासी। यंग अिंडिया के अेक सहायक।

अुनके तारकी बाट देख रहा हूं। अैसा बता दिया है कि २४ तारीखसे पहले तो हरगिज रवाना नहीं हो सकता।

बाका पत्र साथमें है।

देवदास दिल्लीमें आनंदमें है। पृथुराजका हाल ठीक है। काम कर रहा है।

लक्ष्मीदास अब पटना चले गये होंगे। औरोंको भेजनेका अभी विचार नहीं है।

अभी ही बालका पत्र मिला। आश्रमकी टोली खूब काममें लग गयी है। पूरा अुत्साह दे रही दीखती है। बाल और रामजीभाअी दोनों स्टोर संभालते हैं। पारनेरकर और सोमण[1] पटनामें हैं। मगनभाअी[2] प्रकाशन-विभागमें हैं।

बाकी पत्रोंकी नकल साथमें है।

आज अितनेसे सन्तोष कीजिये।

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

यहींसे कुसुमका पत्र आया है। वह अपने भाभीके लिये अपीलका ही आभी। अुसके नाम प्यारेलालका लम्बा पत्र आया है। परन्तु हाल सब मेरे ही जाननेका है। जिसमें गीता अित्यादिकी और अुसके अध्ययनकी बातें हैं। जरूरी बात तो भूल ही रहा था। अभी सरकारी जवाब आया है कि मणि और महादेवसे मिलना नहीं हो सकता।

बापू

---

१ श्री रामचन्द्र सोमण। विद्यापीठके शिक्षक। अब नवजीवनमें काम कर रहे हैं।

२ श्री मगनभाअी प्रभुदास देसाअी। अेक आश्रमवासी। अब विद्यापीठके महामात्र और हरिजनसेवक तथा हरिजनबन्धु के सह-संपादक।

४१

मद्रास कोडम्बाकम
१९ २ ३४

भाअी वल्लभभाअी

मौनवार है। शामकी प्रार्थनाकी तैयारी हो रही है। लोगोंकी मंडली घेरकर बैठी है। अुसमें म्युरियल लेस्टर भी है। आज मद्रासके गरीब मुहल्लेमें हैं। गणेशम को अेक नअी जगह मिली है। यहां धर्मशाला वगैरा बनेंगे। दवाखाना तो है ही। पचासकी मकान या धर्मशाला जैसा लेकिन अभी तो खंडहर है। चारों तरफ बरामदा है और बीचमें चौक है। अुसमें दो चार पेड़ हैं। पानी भी अभी तो कूअेसे भरकर लाते हैं।

लेस्टर बंगाल हो आयी। लाट साहबने तीन घंटेका समय दिया। खाना भी खिलाया। बड़ी शिष्टता दिखाअी। अनुचित व्यवहार सहन न करनेका निश्चय प्रगट किया परन्तु नतीजा कुछ नहीं।

मुझे अब बिहारकी तैयारी करनी है। कर्नाटकको निपटाकर तुरन्त जाना पड़ेगा अैसा लगता है। जो हो जाय सो सही।

कल क्रिश्चियन आश्रममें रहे। वहां हमारे परिचित डॉ. पेटन रहते हैं। अुनके अफसर पचुधासन् हिन्दुस्तानी हैं। भले आदमी हैं। कुमारप्पा के मित्र हैं। जगह बढ़िया है। गिरजाघर बनाया

---

१ मद्रासके अेक पुस्तक प्रकाशक।

२ श्री जे. सी. कुमारप्पा। ये १९२९ में गांधीजीके साथ हुअे। अुससे पहले बम्बअीमें चार्टर्ड अकाअुन्टेन्ट और ऑडीटरका काम करते थे। अर्थशास्त्रके अच्छे ज्ञाता हैं। ग्रामअुद्योग संघकी स्थापनाके समयसे अुसके मंत्री थे। आजकल अस्वस्थ हैं।

है जिसमें खूब पैसा खर्च किया है। अीसाअी सम्प्रदायको भारतीय भाषा पहनाया है यह कहा जाय तो हर्ज नहीं।

दुर्गा और मणि पनीक महादेवसे मिल आअीं। मेरे पास अभी तक अुनका पत्र नहीं आया है।

नानीबहन झवेरी[1] का अहमदाबादमें रक्तप्रवाहके लिअे ऑपरेशन कराया है। ताराबहन मोदी[1] भी अहमदाबादमें ही है। रोगसे पीड़ित है।

बिहारके बारेमें आपका पत्र मिल गया। आपका लिखना ठीक ही है। मैं जाअूंगा तब प्रयत्न तो जरूर करूंगा। कल कृपलानीके आनेकी सम्भावना है।

कुसुमका पत्र अुसके भाभीके सम्बन्धमें जिसके साथ है। हृदय द्रावक है। कुसुम अपनी मर्यादा खूब जानती है। अुसके बाहर वह कभी नहीं जाती। काकाके विषयमें ध्यान किया होगा। अुनकी मेहनत सफल जरूर हुअी। अब वो वर्षका आराम लेंगे। जवाहरलालके बारेमें भी ऐसा होगा।

श्रीनिवास शास्त्री बहुत बीमार हैं। अस्पतालमें हैं। मथुरादासको अुनके पास भेजा था। कल देखना है कि मैं क्या कर सकूंगा। पत्रोंका ढेर पड़ा है। अभी तक हरिजन के लिअे अेक सतर भी नहीं लिखी। अीश्वर जो करायेगा सो करूंगा।

गुजरातके पानीने मैं सोचता था अुससे कहीं अधिक नुकसान किया दीखता है। परन्तु जिस समय किसानकी सुननेवाला कौन है?

पांडीचेरी हो आया। वहां कोअी न मिला। माताजीका तो सवाल ही नहीं आया। परन्तु गोविन्दभाअी दूसरे मुकाम पर आ गये थे। अुन्होंने सारा अितिहास कहा। आश्रम पर देखरेख रहती है,

---

१ आश्रमकी बहनें।

२ ये भाअी पहले साबरमती आश्रममें रहे और बादमें श्री अरविन्दके यहां पांडीचेरी चले गये।

जिसलिये मुझे यहां आने देनेमें भी खतरा माना जाता है। यहां पचास की सदी गुजराती हैं। गोविन्दभाजी भी आश्रममें थे। यहांका कार्यक्रम यह है सवेरे पांच बजे अुठते हैं। प्रत्येक साधककी अलग कोठरी होती है। लगभग १५ साधक हैं। वेदाके सभी स्थानोंसे आते हैं। अुनमें दिलीप[1] और कमलादेवी[2] के पति हिरेन चट्टोपाध्याय भी हैं। लगभग चालीस मकान किरायेसे ले रखे हैं। भोजन आश्रमके जैसा है। श्री अरविन्द वर्षमें तीन ही बार बाहर आते हैं। वे और माताजी बिलकुल नहीं बोलते। श्री अरविन्द सुबह ३।। से ४।। बजे तक आराम कुर्सी पर लेट कर रहते हैं। परन्तु नींद बिलकुल नहीं लेते। साधकोंको रोज अुनके पास डायरी भेजनी पड़ती है। वे प्रश्न पूछ सकते हैं। अुन्हें रोज चार चार भी अरविन्द और माताजीकी तरफसे जवाब डाक मिलती है। वे रोज २ पत्र लिखते हैं। किसीके अूपर पड़े नहीं रहते। श्री अरविन्द अगणित भाषायें जानते हैं। साधकोंको अन्तःकरणका स्वच्छ करते हैं। हिरेन चट्टोपाध्यायने शराब वगैरा छोड़ दी है। आश्रममें शराब-मांस त्याज्य है। यह सब वर्णन गोविन्दभाजीने दिया है। मुझे परीक्षा होनेको गोविन्दभाजी आमंत्रित करते हैं। जितना तो काफी है न?

दोनोंको बापूके आशीर्वाद

तुलसी मेहर[3] का कार्ड आया है। वह सही-सलामत है। और दोनों हाथ नहीं लिखा।

१ श्री दिलीपकुमार राय। सुविख्यात मधुर गायक।

२ श्री कमलादेवी चट्टोपाध्याय। एक प्रमुख समाजवादी।

३ एक आश्रमवासी। नेपालके निवासी। आश्रमसे नेपाल जाकर वहां रचनात्मक काम कर रहे हैं।

२७-२ ३४

भाओी वल्लभभाओी

यह पत्र मंगलवारको रुमावती स्टीमरमें लिख रहा हूं। कुन्दापुरसे कारवार जा रहे हैं। बम्बईकर घर गये हैं। बालजी साथ हैं अिसलिये अुन्हें भेजनेमें कोओी दिक्कत नहीं थी। मुझे हैदराबादसे तारीखको रवाना होकर ११ तारीखको पटना पहुंचना है। तुरन्त बीच जाना है। फिर भी वहां पहुंचना आवश्यक प्रतीत होता है। अिससे पहले जाना कठिन है। कर्नाटकमें सब तैयारी हो चुकी थी और बिहारसे कर्नाटक वापस आना मुश्किल था। अम्बालाल[1] और मृदुला मिल गये। प्रेमवश मिलने ही आये थे। अंबालाल और सरलादेवी[2] विलायत जा रहे हैं। भारती और सुहृद[3] जब तक वहां हैं तब तक अुन्हें चैन नहीं पड़ता। अेक तरफ सभी बच्चोंको पूरी स्वतंत्रता और दूसरी ओर बेहद प्रेम। दोनों मुझे अद्भुत चमत्कारी जान पड़े।

प्रोफेसर[4] के बारेमें बात भी मैं लिख चुका हूं। अुन्हें भी कोओी खास बात नहीं कहनी थी।

---

१ सेठ अंबालाल साराभाओी।

२ सेठ अंबालाल साराभाओीकी पत्नी। जिस समय कस्तूरबा स्मारक निधिकी गुजरातकी अेजेंट।

३ अिनकी पुत्री और अिनका सब पुत्र।

४ आचार्य कृपलानी।

मेस्टर लंका गयी हैं। मेमाबा हेरिसन[1] २ मार्चको लंदनसे चलकर यहां आयेगी।

लक्ष्मीदास आठ दिनसे मेन्टरिक (बहुरीके बुखार)से पीड़ित हैं। अुनका तार कल स्वामीकी तरफसे आया। मैंने रोज तार मंगवाया है। पुरुषराज मेरे पास ही हैं। अभी तो अुसने जानेकी मांग नहीं की है। मैंने अुसे छुट्टी दे ही रखी है। वेलाबहन जोरोंसे अुसका मिन्तजार करती होगी। स्वामी कहते हैं कि बीमारकी सेवा-शुश्रूषा अच्छी तरह हो रही है।

बाका पत्र साथमें है और मथुरादासीका कार्ड आपके लिये रख छोड़ा है। हाल तो आपको लिख ही चुका हूं।

टाअिम्स 'में आपने मेरे बारेमें देखा होगा। सब नहरसे भरा है। मैंने कोअी मजाक किया हो तो वह भी मेरा विश्वास माना जाता है! अुस सेल्फ रिस्पेक्ट वालेके साथ विनोद न करूं तो और क्या करूं? मगर अुसका भी अनर्थ! अैसी बातोंसे कैसे निपटा जाय? यह तो खुली बात हुअी। अंदर-अंदर तो बहुत ही जहर अुड़ेला जाता रहा है। अुसका क्या अुत्तर दिया जाय? सत्यके सामने यह झूठ टिक नहीं सकता। किसी श्रद्धा पर चल रहा हूं। यह श्रद्धा अभी तक कभी बेकार साबित नहीं हुअी।

छगनलाल (जोशी) १ तारीखको छूट रहा है। मुझे पत्र लिखा है। प्यारेअलाल[2] बर्मामें है। मालूम होता है छगनलालका अध्ययन

---

१ अेनेकर संप्रदायकी शान्तिप्रिय अंग्रेज महिला। श्री सी अेफ अेण्ड्रूजकी मित्र। १९३१में पू बापूजी गोलमेज परिषदमें लंदन गये थे तब अुनकी सहायकके रूपमें काम करती थी। तबसे अेक तरफ पू बापूजी और कांग्रेस और दूसरी तरफ ब्रिटिश अधिकारियों तथा राजनीतिज्ञोंके बीच सम्पर्क जोड़नेका काम करती रहीं।

२ स्व महादेवभाअी थे तब तक सहायक मंत्रीके रूपमें बापूजीका काम करते थे। बादमें मुख्य मंत्री।

अच्छा कर लिया है। मराठी पर भी अधिकार कर लिया है। और साहित्य भी काफी पढ़ा दीखता है। अुसकी अिच्छा हो तो बेलगाममें मिल जानेको लिख दिया है। कानजीभाओी तो आखिर नहीं आये।

ठक्करबापा बिटारसीसे अलग हो जायेंगे। मुझे अभी तो पटना जानेकी आवश्यकता नहीं है। अभी तक नहीं सूझा है कि प्यारेलाल क्या करे। मूल वस्तु तो है ही। परन्तु यह वातावरण सबको गहरे विचारमें डालनेवाला है।

देवदासका पत्र नहीं आया।

रामजी आश्रमसे अलग हो गये। अमतुस्सलाम अभी तिरुचनगोडूमें होगी। आश्रम छोड़नेके बाद कोअी पत्र नहीं आया। आज रातको कारवार पहुँचूंगा। वहां कोअी पत्र मिले तो आश्चर्य नहीं।

जमनालाल पटना जानेवाले थे परन्तु खांसीके कारण रुक गये।

बाबाभाओीका पत्र अभी मेरे नाम नहीं आया। भविष्यमें लिखें तो लिखिये कि मेरा प्रयत्न किस तरह विफल हुआ। दो दिन बेलगाम रहने पर भी अुससे या महादेवसे मिलना न हो यह मुझे कितना खटकेगा? मगर किया क्या जाय?

गोसाओीको पहले अलग रखा था लेकिन अब हरिजन आश्रममें मिला देना है। अुसका अलग ट्रस्ट बना देनेका निश्चय किया है।

छूट गये हैं। अुन पर जो जुर्माना था सो अदा कर दिया है। अैसी बीमी बात होती है। अुनका स्वास्थ्य गिर गया था।

मीराबहन अब आपके अस्पतालमें नहीं है यह तो आपको मालूम हुआ ही होगा। अब वे बम्बओीमें अलग मकान लेकर रहती

१ मिसेज माजरम। कुमारप्पाके कारण बापूजीके परिचयमें आओी थीं।

२ अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटीका वाडीलाल साराभाओी अस्पताल।

है। अपनी लड़कियों पर अधिकार कर लिया है। और अब उनके पति पर बच्चोंके खर्चके लिये दावेकी बात चल रही है। संभव है बच्चोंका खर्च तो मिल जायगा।

मंगलोरमें कमलादेवीके लड़केसे और उसकी मांसे मिला। लड़केने यू. पी. की पोशाक पहन रखी थी। सदाशिवरावकी मा और साससे मिल आया। कमलादेवीकी मा और मजका मेरे पास आये थे। सदाशिवराव पर मुकदमा चल रहा है। आज आखिरी तारीख थी। कारवारमें पता चलेगा। वक्त मिलेगा तो इसकी खबर दूंगा।

आप दोनोंको बापूके आशीर्वाद

४६

रोडवेल[1]
८ ३ १४

भाभी सन्तोकभाभी

आपका पत्र अभी तक नहीं आया। यह पत्र प्रार्थनाके पहले शुरू किया है। बेलगाम कल छोड़ा। यह स्थान छोटा-सा गांव है मगर रोचक है।

इस बार पत्र पेंसिलसे लिख रहा हूं, क्योंकि बेलगाममें दादा भाभी, चंदूभाभी, दुर्गा, जीवनजी वगैरा आये थे। दादाभाभी अच्छे मिले। दुर्गा, जीवनजी और बाबला महादेवसे। वह कह सकते हैं कि मणि और महादेव तन्दुरुस्त हैं। महादेव अपने काममें मशगूल है। चंदूभाभीने सब खूब खूब किया है। लक्ष्मीभाभी अभी तक नहीं

---

१ बेलगामसे ९ मील पर है।

२ नासिक जेलमें पू. बापूके पास थे। वहांसे छूटकर पू. बापूजीसे मिलने गये तब उन्होंने पू. बापूके सब समाचार दिये थे।

जाये। अपनी माकी सम्भाल रखें। मेंती करते रहें। मेंती मुलायम कपड़ेकी ही ठीक समझें।

चेस्टर दिल्ली गयी है। हेरिसन १९ तारीखको जा रही है। बाका पत्र साथमें है। बाका भाभी सख्त बीमारीसे गुजरा। लक्ष्मीदास सममुख है। ताराबहन मोदी काफी बीमार है। मुसके गलेमें गांठ हो कर फूट गयी है। दांतने भारी दुःख दिया। अभी तक दे रहा है। किशोरलालको अभी तक बुखार आता है।

मैं ११ तारीखको पटना पहुंचूंगा। ठक्करबापा और मुनका जमायत दिल्ली जायगा। पटना जाकर जैसा लगा कि हरिजन जाना हो सकती है तो ठक्कर बापाको बुला लूंगा।

लीलावती (आसर) काफी बीमार हो गयी है। प्रेमा साथ है जिससे चिन्ता नहीं है। अमतुस्सलाम अभी तक बीमार तो है ही। जयकृष्ण ठीक होता जा रहा है। यह तो आप जानते ही होंगे कि अहमदाबादमें बच्चोंका रोग फूट निकला है। आप जितनेसे सन्तोष करें। अब लोगोंसे मिलनेका समय हो गया।

बापूके आशीर्वाद

४४

पटना

१४।३।३४

भाई वल्लभभाई

बेलगांवका पत्र मिल गया होगा। यह ठेठ गुरुवारको डाकमें पड़ा।

यह पत्र बुधवारको सबेरे शुरू कर रहा हूं। अभी चार नहीं बजे। बाका पत्र पूरा किया और जिसे हाथमें लिया है। पटना रविवार रातको पहुंचा। आज ६ बजे मोतीहारीके लिये चल देना है। कलका दिन साथियोंसे बातें करनेमें बिताया। पैसा अच्छा मिल रहा है। मगर

तामिल हिन्दी बंगाली समझते नाचते गाते। मां-बापने अुनको अैसे प्रकारकी तालीम दी थी।

अब आज ज्यादा नहीं लिखा जाता। आंखें काफी थक गअी हैं। अभी प्रार्थनाका समय हो जायगा। सोया तो जा ही नहीं सकता।

आपका पत्र अिस बार भी नहीं आया। मैं लिखता रहूंगा।

बापूके आशीर्वाद

४५

२१-३-३४

भाभी वल्लभभाभी

आपके पत्रकी अभी तो आशा ही कैसे रखूं? आज बुधवारका सवेरा है। ९ बजे हैं। पासमें बिहार कमेटीकी बैठक हो रही है। मुझे किसी भी समय बुला सकते हैं। अभी नहीं लिखूं तो आज यह पत्र पूरा नहीं होगा। सब कुछ ठीक चल रहा मालूम होता है। प्रस्ताव तो आपने अखबारोंमें देखे ही होंगे। मौलाना मालवीयजी डॉ॰ बिधान वगैरा थे। जमनालालजीको तो बिहारमें रोक लिया है। अैसा न करें तो हो सकता है कि मुझीको रह जाना पड़े। मेरी अिच्छा हो सके अुतनी हरिजन-यात्रा कर लेनेकी है। राजाजी बीमार हो गये हैं। दमा है। अप्रैलके आरम्भमें दिल्ली जायेंगे। अन्सारीको अुनके बिना शांति नहीं मिलती। चरखा संघकी बैठक यहां होनेवाली है अिसलिअे यहां होकर जायेंगे। मैं यहांसे ७ तारीखको रवाना होकर आसाम जाअूंगा। वहां दो हफ्ते लगेंगे। फिर वापस यहीं आअूंगा। थोड़े दिन बिताकर अुत्कल जाअूंगा। अुसके बाद फिर यहीं। बादका अभी तय नहीं है। परन्तु थोड़े-थोड़े दिन सभी प्रान्तोंको दे देनेकी अिच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

४६

मुजफ्फरपुर,
२१।१।३४

भाभी अमतुस्सलाम

आप नाराज न हों। यह पत्र आपको २॥ बजे सवेरे लिख रहा हूं। अलार्म १ बजेका लगाया था। लेकिन १२ बजेके पहले ही जग गया और मैं उठ बैठा। दातुन करके लिखने बैठा और थोड़ा लिखनेके बाद घड़ी पर निगाह पड़ी तो देखा १२ बजे हैं। काम इतना बढ़ गया है कि सोनेकी हिम्मत न हुई। इसलिये सोचा जितना हो सके कर डालूं। हरिजन का काम लगभग पूरा करके अब आपका पत्र लिख रहा हूं। फिर बापूको लिखूंगा। बाका पत्र अब बादमें भेजूंगा। उसकी नकल करानी है।

आपने इस बार बहुत प्रतीक्षा कराओी। अब तो लिखती रहेंगी न? हेरिसन बहुत जबरदस्त स्त्री है। ऐसी ही लेस्टर है। हेरिसन अधिक प्रौढ़ है। उसकी निर्मलता और नम्रताका पार नहीं। लेस्टर जरा बीमार हो गयी है। इसलिये पटनामें है। हेरिसन मेरे साथ है। हम मुजफ्फरपुरमें हैं। सुबह बेतिया जायेंगे। यहां आश्रमके लोग हैं। प्यारेलाल मेरे साथ है। थोड़े ही समय रहेगा। देखता हूं। बालजी और हिम्मतलाल लेस्टरकी सेवामें हैं। कल छपरामें थे। डॉ महमूद[1] के यहां ठहरे थे। सुन्दर हुवे मकान तो सभी जगह है। डॉ महमूद कलेक्टरके साथ मिलकर भूकंप-निवारणका काफी काम

१ डॉ सैयद महमूद। बिहारके एक मुस्लिम नेता। कभी वर्ष तक भारत पार्लमेंटके सदस्य रहे। १९४६–५१ तक बिहार राज्यके ओक मंत्री। आजकल भारतीय संसदके सदस्य।

कर रहे हैं। संकट-निवारण विभागके मुख्य अधिकारीसे मैं मिला हूं। आप (गुजरातके बाढ़-संकटमें) जो कर सके थे वह तो हरगिज नहीं होगा। फिर भी कोशिश जरूर करेंगे। जो कुछ खर्च होगा वह ठीक जगह पर होगा।

जमनालाल अभी यहीं रहेंगे। लक्ष्मीदासके बारेमें कह सकते हैं कि वे अच्छे हो गये। वे भी यहीं खादी-अुत्पादनमें लगेंगे। दूसरोंको भी जमनालाल अुसमें लगा देंगे। भूलाभाभी मुझसे मिल लिये। किसी मुकदमेके लिये यहां आये थे। वहांसे मिलने आये थे। थोड़ी ही बातें हो सकीं।

लगता है कि मणिको (येरवडा जेलमें) काफी तपाया जा रहा है। जैसा ही सही। अुसकी रक्षा अीश्वर करेगा। या मणीमें छूटेगी।

गुजरात तो गुलामीमें जाना होगा। जटाशंकर तीसरी चौथी तारीखको जायेंगे। मेरी या बाहरकी कोअी चिन्ता न कीजिये। हम अीश्वरको बुद्धिके खिलौनेके रूपमें नहीं मानते। वह सच्चा है। वही सच्चा है। अुसका ध्यान धरकर चलते हैं। अिसलिये अुसकी अिच्छाके अनुसार वह हमें चलाये और हम चलें। जिस तरह आपको भी शामिल कर लूं तो अिसमें अतिशयोक्ति तो नहीं है न?

कोअी साथी मिला?[1]

अब अधिक नहीं लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

---

१ डॉ. चन्दूलाल देसाअी सजा पूरी होने पर छूट गये थे। अिसलिये अुनकी जगह कोअी दूसरा साथी मिला या नहीं यह बापूने पूछा है।

समझमें न आये तो चिन्ता न करें। मुझे शंका नहीं कि अधिक विचार करने पर आपको यह ठीक ही प्रतीत होगा।

विट्ठलभाईका वसीयतनामा पढ़ गया हूं। उसमें सब बातें नियमानुसार मालूम होती हैं। मेरा रुख तो यह है कि बोसके जितने हों उतने रुपये वह भले ही ले जायं। आपका साथी कौन?
आज यह काफी है।

अधिक लिखनेकी ख्वाहिश रखता हूं।

बापूके आशीर्वाद

४८

११-४-३४

भाई वल्लभभाई

आज उपवासका दिन[1] है। और हम तेजपुरसे गौहाटी जानेवाले जहाजके डेक पर हैं। एक किनारे टक्करवाला दूसरे किनारे ओस और आसपास हमारी मंडली है। सामने पाखाना है। बहुत गंदगी नहीं है। यहां तो बरसातका मौसम शुरू हो गया है। परन्तु कल खूब वर्षा थी जिससे आज उमस है। जिससे डेकका सफर खास

---

[1] रौलट कानूनके विरुद्ध सत्याग्रह करनेके लिये ६ अप्रैलका दिन विरोध-दिनके तौर पर चुना गया था। और उस दिन २४ घंटेका उपवास शुरू गया और प्रार्थनाका कार्यक्रम रखा गया था। उस दिनसे शुरू होनेवाले सप्ताहमें देशके सभी स्थानोंमें दंगे हुए। १३ अप्रैलको अमृतसरमें जलियांवाला बागमें सैनिक अफसरोंने ओक सभा पर गोलियां चलाकर सैकड़ों निर्दोष मनुष्योंको खत्म कर दिया। जिस सप्ताहमें राष्ट्रमें अपूर्व जागृति हुई। उसकी यादमें ६ से १३ अप्रैल तक राष्ट्रीय सप्ताह मनानेकी प्रथा शुरू हो गयी। ६ और १३ तारीखको चौबीस घंटेके उपवास रखे जाते थे। उसी सिलसिलेमें यह उपवास है।

है। अिस वक्त सुबहके नौ बजे हैं। १२ के लगभग घाटी पहुँचेंगे। वहां मीराबहन आ गअी होंगी। वह बीमार हो गअी थी। अिसलिअे अुसे पटनामें रखकर हम आगे बढ़ गये थे। मेरा शरीर अच्छा है। जितना चाहिये अुतना आराम ले ही लेता हूं। बुतेसे बाहर नहीं जाता। डॉक्टरोंकी सभी बातें सुनें तब तो आटसे अुतना ही न हो।

अहमदाबादमें मजदूर-मालिकोंके बीच जो झगड़ा हो रहा है, अुसमें मुझे मालिकोंका दोष ज्यादा दिखाअी देता है। मालिक खुद ही मंजूर करते हैं। अिस बार कस्तूरभाअी[1] ने जो भाग लिया है, अुसमें अुनकी शोभा नहीं रही। मालिकोंका प्रस्ताव जितना बेहूदा था कि मुझे लगा कि कुछ न कुछ मिलना ही चाहिये। मैंने कस्तूरभाअीको मीठा अुलहना दिया। अिस प्रस्तावके पीछे धमकीके सिवाय कुछ था ही नहीं। परन्तु बारह बरसकी मेहनतसे बनाया हुआ मकान[2] टूट जानेका डर था। मेरे पत्रका असर हुआ। यों कहिये कि मालिकोंमें ही फूट पड़ गअी। अिसलिअे चिमनभाअी[3] और साकरलाल आये। कस्तूरभाअी जिनेवा जानेकी तैयारीमें थे अिसलिअे नहीं आये। मैंने सूचित किया कि सबूतके बिना मजदूरोंका वेतन हरगिज नहीं घटाया जा सकता। परन्तु मैंने सुझाया कि अगर वे गओके साथ वेतनको जोड़ देंगे और कमसे कम वेतन मुकर्रर करनेको तैयार हो जायं तो जिससे जो राहत अुन्हें मिल सकती हो वह मैं देनेको तैयार रहूंगा। यह बात तो अुन्हें पसन्द आअी परन्तु अुन्होंने कहा कि अिस पर अमल करानेमें दूसरे मालिकोंकी तरफसे कठिनाअी होगी। यह तो है ही। अब देखता हूं क्या हो सकता है।

---

१ अहमदाबादके अेक मिल-मालिक।

२ अहमदाबादमें मजदूरों और मालिकोंके बीच पैदा होनेवाले झगड़े पंचायत द्वारा तय करानेकी प्रथा।

३ अहमदाबादके मिल-मालिक।

मेरा निर्णय तो आपने देखा होगा। आपकी राय जाननेकी अुत्सुकता रहती है। मैंने तो मान लिया है कि मेरे दोनों फैसले आप अिशारेमें समझ लेंगे। दोनों ठीक ही हैं अिस बारेमें मुझे बिलकुल शक नहीं। अब सत्याग्रहको कहीं भी आंच आनेका डर नहीं रहा। और विधान-सभाओंमें जानेवाले पक्षकी बेकारी टल गयी। यह बहुत खटकती थी। भले ही वे जायं। यदि स्वच्छता रखी जाय तो वहां भी कुछ न कुछ काम तो होगा ही।

देवदास दिल्लीमें आराम कर रहा है। लक्ष्मीके दिन पूरे हो गये हैं। जब तक राजाजी वहां हैं और लक्ष्मी मुक्त नहीं हो जाती तब तक तो वहीं रहेगा।

बड़े लोग मुझसे फिर अवश्य मिलेंगे। आपको हरिजन नहीं मिलता यह आश्चर्यकी बात है। जांच कर रहा हूं।

नाकका काम नाजुक तो है ही परन्तु सुधारना चाहिये। वह कैसे सुधरे, यह तो क्या कहा जा सकता है? अिसका विचार अन्तमें तो आपको ही करना पड़ेगा क्योंकि मुझे अैसा मालूम हुआ है कि डॉक्टर भी अिसमें लाचार हो जाते हैं। बीमार ही कोअी न कोअी रास्ता ढूंढ निकालता है तो काम बन जाता है। मेरा विश्वास है कि प्राणायाम और कुछ आसनोंका असर जरूर होना चाहिये। मैं मानता हूं कि प्राणायाममें बाहरकी हवा दुगुनी या अुससे ज्यादा मात्रामें अुतने ही समयमें भी जानेके कारण अुस भागको जो ऑक्सिजन मिलता है अुसका असर हुअे बिना रह ही नहीं सकता। प्राणायामकी सारी क्रिया करके आप विचारेंगे तो आपको भी पता चलेगा कि अुन क्रियाका नाकके साथ निकट सम्बन्ध है। जरा असर पहुंचे तो कोअी बात ही नहीं। अिसलिये जो असर होगा अच्छा ही होगा। प्राणायाम स्वच्छ हवामें ही करना चाहिये। अिसलिये मैदानमें किया जाय तो अच्छा। आपका सोनेका

प्रबन्ध किस तरह होता है यह मैंने कभी नहीं पूछा। परन्तु मैं मान लेता हूं कि आपकी कोठरी खुली ही रहती होगी।

डाह्याभाईने मणिका पत्र भेजा था। बहादुरीसे मग्न होने पर भी दयाजनक अवस्था है। जमीनभाभी'से मैं मिला हूं। तुम्हें कितना समय बिताना है?

बापूके आशीर्वाद

४९

जोरहाट, आसाम
१८ ४ ३४

भाई वल्लभभाई

प्रार्थनाका वक्त होने आया है। जोरहाटमें हूं। पक्षी चहचहा रहे हैं। यहां सबेरा जल्दी होता है। ५ बजे तो उजाला हो जाता है।

बाके पत्रकी नकल इसके साथ है।

अब तो सब कुछ आपकी समझमें आ गया होगा। मैं देखता हूं कि मेरे निर्णयका असर अच्छा ही हो रहा है। निर्णय करनेके बाद देखता हूं कि मुलतवी होना जरूरी ही था। जिसमें न जल्दबाजी हुई और न देर ही। ठीक समय पर हुआ मानता हूं। परन्तु परिणामके बारेमें क्या सोचें? गीताका अध्ययन करना और परिणामका विचार करना ये दोनों बातें कैसे हो सकती हैं? परिणाम जो होना हो सो हो। अच्छा दीखनेवाला खराब हो सकता है और बुरा दीखनेवाला अच्छा हो सकता है। तब कैसे जानें? विपदो नैव विपद भी रोज पाठ है।

सब रांचीमें जमा होंगे। वहां जैसा सूझेगा वैसा रास्ता बताऊंगा। मेरा खयाल है कि धारासभावालोंको पूरी छूट देना

---

१ डा. चन्दूभाईके छूटनेके बाद बापूको लिखे गये भाभी।

हमारा धर्म है। जो लोग मनसे रोज धारासभामें बैठते हैं, वे शरीरसे भी वहां बैठें जिसीमें मजा भी है। तभी मुसके गुण-दोषोंकी जांच हो सकती है। रोज मनसे पलेभी जानेवाला मुसे जाकर देख ले यही अच्छा है न? बहुत करके मथुरादास भी जायेगा। पेरिन वगैरा भी जायेंगी। वहां ४ दिन रहना होगा। आशा है कि राजाजी भी जायेंगे। मालूम होता है राजाजीको सब कुछ बड़ा अच्छा लग रहा है। जिसी तरह मथुरादासको। राजेन्द्रबाबूका तो पूछो ही कैसा है। प्यारेलाल अभी मुनके पास है।

जिनेवासे पीअर सिरेसोल जो बहुत परोपकारी मनुष्य हैं आ रहे हैं। यह कहा जा सकता है कि जहां भूकम्प जैसी घटना हो जाय वहां पहुंचकर मदद देना ही मुनका काम है। खूब कुशल जिन्जीनियर हैं। वह बिहारकी मदद करनेके लिओ २५ तारीखको बम्बई पहुंचेंगे। मथुरादास मुन्हें लेकर रांची जायेगा या रवाना करेगा। हिगिन बोटम[1] भी आ गये हैं। मुन्होंने भी मदद देनेको कहा है। हेरिसन और लेस्टर पटनामें मिल जायेंगी। फिर देखूंगा कि क्या कर सकी हैं। दोनों कलकत्ते गयी थीं। मेहनत करनेवाली तो खूब हैं। निर्मल हैं, बहादुर हैं। परन्तु मुनकी आवाज तूतीकी आवाज है।

बाल (कालेलकर) अभी मेरे साथ है। काका (सिव) हैदराबादमें (जेलमें) काफी आनन्दमें हैं। खूब किताबें जिकट्ठी कर रहे हैं। महादेव तो जिसमें डूबा हुआ है ही। अब काका डूबेंगे।

ओबेदुल्ला[2] के बारेमें मैंने अदृश्य रूपमें काफी मेहनत की है। मैं मानता हूं कि मुसका फल निकल रहा है। शायद बच जायगा।

---

१ अलाहाबादमें खेती-बाड़ीका आदर्श फार्म चलाते थे।

२ डॉ. खानसाहबके दूसरे पुत्र। मुनके स्वास्थ्यके अनुकूल न पड़नेवाली जगह (मुल्तान जेल)में रखनेके कारण मुन्होंने मुपवास शुरू कर दिये थे। ७८ दिनके मुपवासके बाद सरकारने मुन्हें सियालकोट जेलमें भेजा था।

अहमदाबादमें आंखोंका रोग काफी फैल गया है। कोअी कहते हैं जिसका कारण सिनेमा है। हो तो आश्चर्य नहीं। देखनेवाले कहते हैं कि सिनेमाका दबाव मस्तिष्क और आंखों पर बहुत पड़ता है।

मणिशंकर गये तो बीमार हो गये। जल्दबाजी करके लौट आये। फिर बीमार पड़ गये जिसलिये चले गये हैं। यह देखा गया कि सफर अुनसे बरदाश्त नहीं हो सकता।

कमला नेहरू और स्वरूपरानी जिलाज कराने कलकत्ता गयी हैं। बंगालकी यात्रा करनेका भी निश्चय हुआ है।

बापूके आशीर्वाद

५०

मुजफ्फरपुर,
२१-४-३४

भाई वल्लभभाई

आपके दो पत्र मिले। अभी कातना करके लिखने बैठा हूं। १४ हुअे हैं। जिसे तो झुठनेमें शुमार मानेंगे न? मुजफ्फरपुरमें गोशालेपुरीमें हैं। कल रातको १॥ बजे आसामसे आये। गोशालेके पाससे अेक छोटा-सा अुपनगर गोशाले संस्थावाले वाजपेयीजीने बसाया है। आज मौन खुलनेके बाद अुसका अुद्घाटन करना है। राजेन्द्रबाबू मुझे कल कटिहारमें मिले थे।

बाबूजी जरा बीमार हो गये थे जिसलिये आकर तुरन्त सो जानेके बजाय डॉक्टरको बुलवाया। जिससे १२ बजे बाद सोना हुआ।

मेरी चिन्ता न कीजिये। शरीरको खूब संभाल रहा हूं। नींद किसी न किसी तरह पूरी कर लेता हूं।

नारणदास गांधी (जेलमें से) निकलनेके बाद काफी बीमार हो गये हैं। तबीयत खूब टूटी है। मगर अब ठीक हैं। रांचीमें मिलेंगे।

आप परेशान हैं यह आश्चर्यकी बात है। मैंने तो सबसे कहा था कि आपको यह कदम समझनेमें देर ही नहीं लगेगी। परन्तु आपके पत्र आपका दुःख बता रहे हैं। बाहर रहनेवालोंमें किसीको आप जैसी हालत हुई नहीं लगती। जवाहरके बारेमें अैसा जरूर खयाल था परन्तु अुनके बारेमें यह मान रखा था कि वह थोड़ी ही देरमें समझ लेंगे। मेरा यह खयाल कि जेलमें बैठे हुअे बाहरकी बात नहीं समझ सकते क्या आपके लिअे भी सही साबित हो रहा है? या मैं ही सही रास्तेसे बिलकुल भटक गया हूं? मुझे अभी तक अैसा कुछ नहीं लगता। लिया हुआ निर्णय ठीक है, यह दीयेकी तरह साफ दिखाअी देता है। पूनामें ही मुझे यह बात क्यों न सूझी यह कहना भी व्यर्थ है। अुस वक्त यह सूझने जैसी बात नहीं थी। वक्त पर ही जो बात सूझती है वही शोभा देती है। पूनाके समय पूनाकी बात ठीक थी और अिस वक्त यही मुनासिब है। जुलाअीके कहनेका हर्ष या शोक बिलकुल नहीं हो सकता। अगर हमने यह निर्णय न लिया होता तो अपार हानि होती।

मुश्किल तो जरूर है। लेकिन अब भी नदी मझधारसे बाहर न थी। अुसे पार कर गये। अिस कदमसे जनता अूपर अुठी है यह और अुठेगी। किसानोंको बचाव दिया जा सकता है। देखें। बचाव नहीं दिया जाता अगर मैं भी हार गया होता। अिसमें अहंकार हो सकता है अैसा आपको तो स्वप्नमें भी खयाल नहीं होगा। सब दलीलें करीब नाड आपत नहीं की जा सकती अिसलिअे जितना ही काफी समझता हूं। धीरजका फल मीठा होता है। धीरज रखें। सब अच्छा ही होगा।

स्वराज दलके पुनर्जीवित होनेके बारेमें तो साफ समझमें आने जैसी बात है। अुसके पुनर्जीवित होनेकी अत्यन्त आवश्यकता थी।

ऐसा लगा कि जो इस कदर ठोकरें खाने पर भी टिका हुआ है अुसके लिये कांग्रेसमें स्थान होना ही चाहिये। मैं मानता हूं कि यह बात केवल किसी वक्तके लिये नहीं परन्तु हमेशाके लिये सही है। अिसमें भी मुश्किलें हैं। स्वार्थ भी है। अनुभवकी कमी भी है। जो कहिये सो है। फिर भी जो है, अुसे मिटाया नहीं जा सकता। अुसमें सुधार हो सकते हैं। अुस पर अंकुश रखा जा सकता है। अिससे अधिक या कम कुछ नहीं हो सकता। यह कहनेमें भी हर्ज नहीं कि मैंने हिम्मत बंधाकर स्वराज दलवालोंको खड़ा किया है। अुनकी अिच्छा थी परन्तु हिम्मत नहीं हो रही थी। पूनामें मैंने जो सुझाया था वह अब फलने लगा है। कांग्रेसको धारासभाओंसे सर्वथा अलिप्त रख सके होते तो दूसरी बात थी। परन्तु वह तो जबरदस्ती करने जैसी बात होती। “धन”[1] के दर्शन आपने ही पहले पहल कराये। अिसमें तो ऐसी ही बातें आयेंगी न? अिसमें थोड़ा बहुत सत्य है जरूर। बेचारी लेस्टर! वह और अेगाथा कल पटनामें मिलेंगी। अुन दोनोंको तो यह निर्णय बहुत ही पसन्द आया। अपनी शक्तिके अनुसार वे खूब मेहनत कर रही हैं। परन्तु आज अुनकी आवाज कौन सुनता है? अितने पर भी वे अितना सब समझ लेती हैं, यही बहुत है। दोनों निर्मल हैं बहादुर हैं। स्विट्झर्लैंडसे सेरेसोल आ रहे हैं। वे होशियार अिन्जीनियर हैं। बिहारकी मददके लिये आ रहे हैं। शान्तिप्रेमी हैं। मैं अुनसे वीलनेवमें मिला था। भला आदमी है। मगर अुनका शरीर टिका रहा तो बहुत कुछ कर सकेंगे। देखें क्या करते हैं।

फूलचन्द बापूजी के स्वर्गवासका तार मुझे कल ही मिला। अेक बड़ा सेवक चला गया। यह मौत बहुत भारी मानी जायगी।

---

१ अुन दिनों बम्बअीसे निकलनेवाला अेक अंग्रेजी अखबार।

२ स्व. फूलचन्द बापूजी शाह। नडियादके निवासी। गुजरातके अेक बहुत पुराने राष्ट्रीय कार्यकर्ता।

आपकी टिप्पणी नरसिंहभाओी[1] ने लिखी है। आपको पसन्द आयेगी। नरसिंहभाओी लिखते हैं कि वे रातको बिना किसी रोगके महानिद्रामें सो गये। आखिरी दिन तक काममें जुटे रहे। कुछ भी नहीं हुआ था। तब फिर कोओी अुनके पास क्यों रहने लगा? रातको ही घड़ी बन्द हो गयी। जमनाशंकर पंड्या तारसे पूछते हैं कि किसलिये क्या किया जाय? जिस वक्त स्मारककी तो बात ही क्या? आपको कुछ सुझाना है?

ठक्करबापा बाबासे[2] मिलने गये थे। संकट-निवारणके पैसेके मामलेमें । बाबा आनन्दमें हैं। अुनका शरीर खूब अच्छा बन रहा है। अुन्हें खास जल्दी नहीं है। भले ही न हो। यह भी ठीक ही है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ स्व॰ नरसिंहभाओी ओीश्वरभाओी पटेल। वे अपने सार्वजनिक जीवनके शुरूमें कुछ समयके लिये बम-आन्दोलनमें शरीक हो गये थे। फिर पूर्व अफ्रीका और शान्तिनिकेतनमें रह आनेके बाद आश्रममें बस गये। गांधीजीकी प्रवृत्तियोंमें भाग लेते और पाटीदार मासिक निकालते थे।

२ अेक गुजराती विद्वान। नडियादके निवासी।

३ श्री गणेश वासुदेव मावळंकर।

५१

रांची
१-८-'१४

भाअी वल्लभभाअी

आपके दो पत्र मिले। मनसे आपका दुःख नहीं मिटाया जा सकता। समय ही अुसको मिटा सकेगा। जिस तरह जेलके सुख नहीं भोगे जाते। मुश्किलोंसे भागकर भी क्या करेंगे? कहां जायेंगे? दिया हुआ हथियार छीना नहीं गया है। अुसकी अुपयोगिता सिद्ध करनेके लिअे अुसका अुपयोग मुल्तवी कर दिया गया है। यह अनुभवसे ही सिद्ध किया जा सकता है। जो जियेगा सो देखेगा।

जमनालाल, कानजीभाअी, छोटूभाअी और रविशंकर[3] आ गये हैं। मृदुला भी है। गोशीबहन[4] और पेरिनबहन भी हैं। परन्तु सारा

---

१ सामूहिक और व्यक्तिगत सविनय भंग मुल्तवी करके पूज्य बापूजीने सत्याग्रहको अपने तक ही मर्यादित कर डाला। अिसलिअे वस्तुतः तो लड़ाअी बन्द ही कर दी गयी। पू. बापूको यह पसन्द नहीं आया था अुसीका दुःख।

२ स्व. छोटूभाअी पुराणी। गुजरातके बहुत पुराने राष्ट्रीय कार्यकर्ता। गुजरातमें व्यायाम आन्दोलनके मूल प्रवर्तक।

३ श्री रविशंकर व्यास। पू. बापूजीके शब्दोंमें पुराने जोगी। अुन्होंने अपने सार्वजनिक जीवनका आरम्भ खेड़ा जिलेकी पाटण-वाड़िया और बारैया जातियोंके सुधारसे किया। बारैयोंके गुरु कहलाते हैं। आजकल तो जहां-जहां संकट आ पड़ता है वहीं पहुंचकर पर-दुःख-भंजक बन जाते हैं। वे बहादुर, निडर और अत्यन्त बने हुअे सत्याग्रही हैं। सारे गुजरातमें महाराजके नामसे प्रसिद्ध हैं।

४ स्व. दादाभाअी नौरोजीकी पोती।

वर्णन देनेका समय नहीं है। यह तो आपको थोड़ी-बहुत सान्त्वना देनेके लिये ही है। आपके पास दूसरे पत्र आते ही रहते हैं अिसलिये आज थोड़ा लिखूँ तो हर्ज नहीं। बेलाबहन यहाँ है। कान्ति[1] और नारणदास यहाँ हैं। नारणदास अभी दुबले हो गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

५२

साखी गोपाल
१०-५-३४

भाअी वल्लभभाअी

आज रातको अेक बजे बिलकुल ताजा अुठ बैठा हूँ। अिससे चौंकिये नहीं, नाराज न होअिये और चिन्तामें भी न पड़िये। यह तो औश्वरकी महिमा है। अेक गाँवमें जमीन पर घासके गद्दे पर लेटा हुआ हूँ। पासमें मीरा वगैरा सो रही हैं। दूसरे सिरे पर ठक्कर बापा वगैरा हैं। अिस गाँवका नाम चन्दनपुर है। पैदल यात्राका आज तीसरा दिन है। पुरीसे १ मील दूर है। शायद ८ हों। कल सवेरे पुरीसे कूच किया। जैसे आपने दांडी-कूचकी रचना की थी अुसी तरह ठक्करबापाने अिसकी की है।

पुरीमें मैं खूब व्याकुल हुआ। रेल और मोटरसे थक गया। अपना दुःख बापा और दूसरे साथियोंके सामने रखा। सबको मेरी मुश्किलकी जरूरत तो महसूस हुअी मगर चौंक अुठे। बादमें शान्त हुअे। पुरीमें ही निश्चय किया और अमल भी वहीं किया। पुरीकी सभामें पैदल गया। सनातनियोंका जोश अुतरा हुआ जान पड़ा और नारे भी कम हो गये। कल सवेरे प्रयाण किया तब किसीको खबर नहीं पहुँची थी। परन्तु जहाँ पहला मुकाम हुआ वहाँ जैसे दिन चढ़ता गया वैसे लोग बढ़ने लगे। शामको चन्दनपुर आते-आते तो

१ साबरमती सत्याग्रह आश्रमका विद्यार्थी।

रास्ता लोगोंसे खचाखच भर गया और जाते ही धना हुआ। अुसमें मनुष्य अुमड़ पड़े। चारों तरफसे ग्राम थे। हम गांवके किनारे तम्बूमें पड़े हैं। मेरे लिये पर्णकुटी जैसा दिखावा किया गया है परन्तु यह दिखावा ही है। साथमें तो जो लोग थे वे ही हैं। अुनमें हरखचन्द जीवराम[1] और पुरुषाजी[2] शामिल हो गये हैं। यहाँके नेता तो हैं ही। अुनमें गोपबन्धु चौधरी[3] की पत्नी भी हैं और आश्रममें रही हुई सोभागमणि है। अुड़ीसाकी यात्रा किस तरह होगी। दूसरे प्रान्तोंसे मैंने प्रार्थना तो अवश्य की है कि मुझे जिस तरह बाकीका सफर पूरा करने दें। और यदि पैदल यात्रा करूं तब तो अलग-अलग प्रान्तोंमें ले जानेका आग्रह भी लोग छोड़ देंगे। अैसा हुआ तो यह सारी यात्रा यहीं पूरी कर लूंगा। हां यह जरूर सोचना होगा कि बरसात शुरू हो जाने पर क्या हो सकेगा। परंतु अुस वक्त अगर पैदल न चला जा सके तो मुझे अेक जगह बैठ जाना पसन्द होगा। देखूंगा क्या होता है। सब साथी पटनामें मिलेंगे। वहां ज्यादा पता लगेगा। जितना अुन्हें समझा सकूंगा अुतना करूंगा। मैं मानता हूं कि यह सारा कदम समझनेमें तो आपको कठिनाई नहीं हुई होगी। आप जानते हैं कि मेरे किसी भी कदमके लिये आपका समर्थन मिलता है, तो मुझे अच्छा लगता है। लेकिन मुझे खुश करनेके लिये समर्थन भेज दें यह भी अच्छा नहीं लगेगा।

---

१ स्व. जीवराम कोठारी। कच्छके निवासी। अपनी लगभग १ लाख रुपयेकी संपत्ति पू. बापूजीको देकर अुड़ीसाके हरिजनोंकी सेवा करने अुड़ीसामें जा बसे और वहीं अुनका देहान्त हुआ।

२ स्व. जीवराम कोठारीके साथ काम करनेवाली बहन। आजकल अुड़ीसामें काम कर रही हैं।

३ अुड़ीसाके प्रमुख कार्यकर्ता।

रांचीसे रवाना होते समय मोटरकी भारी दुर्घटना हो गयी यह तो आपने जान लिया होगा। "मेने राम राखे तेने कुण चाखे? यह मीरा भक्तका पद है। कैसा अनुभव-वचन है!

आतंकवादियोंको कौन समझाये? सरकारको कौन समझाये? देखिये न दार्जिलिंगमें कैसा पागलपन किया!

साथकी गीताप्रवेशिका आपको नहीं भेजी?

बापूके आशीर्वाद

५३

चम्पीपुरहाट (अुत्कल)
२१-५ ३४

भाअी वल्लभभाअी

आपका पत्र परसों मिला। अिस समय ३ बजे हैं। आश्रममें सब सो रहे हैं। कल (सोमवारको) यहाँ पहुँचे। समाजवादी दलका भला मसानी साथ है। आज वापस बम्बई जायगा। अेमाका भी साथ है। चार-पाँच दिनमें जायगी। लेस्टोक भाअी साथ होंगे। २४ दिन रहेंगे। म्युरियल भी आयेगी। ९ दिन रह जायगी। दूसरे यहाँके जो लोग साथ हैं अुनके नाम नहीं दे रहा हूँ। यह यात्रा १२ तारीखको बालासुरमें पूरी होगी। अिसके बाद पैदल चलना छोड़ कर प्रत्येक प्रान्तको थोड़े-थोड़े दिन देना तय किया है। वह अेक स्थान पर बैठकर करना है। १४ तारीखको बम्बई पहुँचना है। वहाँसे १७ को पूना और २१ को अहमदाबाद। वहाँसे सिन्ध। वहाँ ३ दिन रहकर ३ दिन लाहौर और वहाँसे यू. पी.। अिसीके साथ अेक प्रति रख रहा हूँ। अिसमें फेरबदल होना संभव है। सब प्रान्तोंके आदमियोंको पटनामें अिकट्ठा किया था। अुनका खयाल था कि मुझे अुनके प्रान्तोंमें तो जाना ही चाहिये। अन्तमें यह निर्णय किया कि यहाँ आकर थोड़े

दिन अेक जगह बैठ जाअू। ये महीने बरसातके होंगे अिसलिये पैदल चलना मुश्किल हो सकता है। पटनाका हाल तो आपने पढ़ लिया। जो हुआ सो ठीक ही हुआ समझिये। लोगोंकी यही अिच्छा थी। केवल मेरे वहां रहनेकी प्रतीक्षा की जा रही थी। परन्तु आरंभ होते ही झगड़े भी शुरू हो गये हैं। कुमारी और मालवीयजीकी भलमनसाहत और सहनशीलताकी हद नहीं। डॉ॰ रायके तेज स्वभावका पार नहीं। अब देखें क्या होता है। अिसके साथ सुशीला[1] का पत्र-चित्र भेजूंगा। शायद ओम भी लिखेगी। अेमाबाअीसे लिखनेके लिये कहूंगा।

बा छूट गयी। यह आपत्ति दिल्ली होकर कहीं न कहीं शान्त हो जायगी।

बाढ़-संकट-निवारण वगैराका जो रुपया है, अुसमें से ५,   अिस प्रकारके हरिजन-संकटके लिये मैंने खर्च करना चाहा परन्तु मैंने सुना है कि आपकी आज्ञा अुसमें से कुछ भी खर्च न करनेकी है। अिसलिये अेक हजार ही मिले। दूसरे लेनेसे पहले आप ही से पूछ लेना ठीक मालूम हुआ। अिस बारेमें जो याद हो या अिच्छा हो सो लिखिये।

सुरेन्द्र वर्धामें अुपवास कर रहा है। केवल स्वास्थ्य सुधारनेके लिये। जेलके भोजनने बड़े-बड़े महारथियोंके शरीर तोड़ दिये। नारनदासकी नाकसे खून बहता था। बूढ़े जैसे होकर बाहर आये। स्वामीका फौलाद जैसा शरीर भी टूट गया। सुरेन्द्रका भी वैसा ही हुआ। निरे स्वार्थ और तेलसे काम नहीं चला। मैं देखता हूं कि दूध-दहीके बिना काम नहीं चलता। मणिलालको सुशीलाके लड़का हुआ है। मणिलालने आज तक खबर ही नहीं दी। अिस वंशवृद्धिमें मेरी तो दिलचस्पी ही

---

१ श्री सुशीला पै। आजकल कस्तूरबा स्मारक निधिकी मंत्री। अुस समय राजकोट वनिता विश्रामकी मुख्य अध्यापिका।

२ अेक आश्रमवासी।

नहीं रही। अगर कुछ है तो आन्तरिक अुद्वेग। फिर भी यह कहनेसे कि अुफानको कौन रोक सकता है या यूरोपकी पद्धति (संतति-नियमन की) ग्रहण करके चाश्लोषजने! चलो आनन्द मनायें और अुसका परिणाम रोकें की वृत्ति अपनानेसे शुद्ध ज्ञान मिल ही नहीं सकता। जब तक मृत्यु अजित है तब तक मनुष्य जो कुछ करता है सब बेकार है। अिसीलिये अीशोपनिषद्का पहला मंत्र लिखा गया। वह ध्यानमें है न? शायद आपको याद होगा कि मैं यह अुपनिषद् यहां रटता और रोज पढ़ता था। न हो और चाहें तो भेज दूंगा। अुसमें कुल अठारह मंत्र हैं। अिनमेंमें ही सारा ज्ञान भर दिया गया है। अिसमें और गीतामें भेद नहीं है। जो अिसमें बीजरूपमें है वह गीतामें सुन्दर वृक्षके रूपमें दिया गया है। अब और आगे नहीं बढ़ूंगा।

बापूके आशीर्वाद

५४

बेरीमूल (बुलन्ध)
१०-५-१८

भाअी वल्लभभाअी

अिस बार आपका पत्र अभी तक नहीं मिला यद्यपि आज बुधवार है।

नया जहाज बनते ही अुसमें दरार पड़ गयी है। चलेगा तो जरूर, मगर दरारवाला जहाज किनारे पहुंच जाय तब है। चौकसी फिर बम्बईमें १५ तारीखको मिलेगी।

राजेन्द्रबाबूके बड़े भाअी महेन्द्रबाबू काफी बीमार हैं। शायद ही बचें। वे नहीं बच सकें तो राजेन्द्रबाबू पर अेकदम भारी जिम्मेदारी आ पड़ेगी। राजेन्द्रबाबूको लिखिये।

---

१ स्व पंडित मदनमोहन मालवीय डॉ अन्सारी डॉ विधान और स्व श्री भूलाभाअी देसाअी।

सैरेसोल मेनाबा और म्युरियल १५ तारीखको रवाना हो रहे हैं। तीनोंने काफी अनुभव ले लिया। सैरेसोल फिर अक्तूबरमें लौट आयेंगे। दूसरे साथियोंको लायेंगे। बिहारका काम ठीक चल रहा है। जमनालालजी काफी देखरेख रखते हैं। वे म्युरियलको लेकर
के पास गये हैं। भरतपुर होकर वर्धा जायेंगे।

बापाकी जगह अब मकानी है। देवदास पटनामें था। काफी मोटा हो गया है। स्वास्थ्यकी दृष्टिसे विवाह और दिल्ली अुसके लिये अनुकूल सिद्ध हुये हैं।

मणि (जेलमें) काफी कड़ी कसौटीमें से गुजर रही दीखती है। डाह्याकी भी परीक्षा हो रही है। बीमार थे। अब कुछ ठीक हैं ऐसा तार आया था।

सुशीला प्रभावती और ओम पत्र लिख रही हैं, जिसलिये फुटफुट खबरें तो आपको मिल ही जायेंगी। ऐसा कह सकते हैं कि यहांकी गर्मी अहमदाबादको भी मात करनेवाली है।

बापूके आशीर्वाद

५५

परसपुर (मुलक)
७-६ ३४

भाभी वल्लभभाई

जिस बार आपका पत्र अभी तक नहीं आया। मेरे तो नियमानुसार गये ही हैं। यहां वर्षा आरंभ हो गयी जिसलिये सब कुछ बन्द हो गया। अब प्रातःकालीन प्रार्थनाका समय हो रहा है। यह लिख रहा हूं जितनेमें सतीशबाबू अपने दस आदमियोंकी टोलीके साथ मोटर स्टेशनसे तीन मील सामान अुठाकर यहां आ पहुंचे हैं। कीचड़में होकर आनेमें पौने दो घंटे लगे।

प्रार्थना हो चुकी और यह फिरसे लिख रहा हूं।

सतीशबाबू बंगालमें पैदल यात्रा कर रहे हैं। पैदल यात्राका फल बताना अभी मुश्किल है। मुझे तो पूरा सन्तोष है। और सब ठीक चलता है।

हेरिसन बम्बअी गयी है। अुससे फिर बम्बअीमें मिलूंगा। बहुत भली स्त्री है। चौबीसों घण्टे यही विचार करती रहती है। म्युरियल जमनालालजीके साथ काफी घूमी। वह भी बम्बअीमें मिलेगी।

प्रवासक्रम तो आपको भेजा ही है। विश्वास रखिये कि जो हो रहा है सो ठीक ही हो रहा है।

बापूके आशीर्वाद

५६

पर्णकुटी पूना
२७-६-३४

भाअी वल्लभभाअी

बहुत कोशिश की मगर पिछला हफ्ता खाली गया। अिस आशासे कि लिखूंगा ही अुर्मिलाके पत्र भी रोक रखे।

आज भी मुश्किलसे लिख रहा हूं। वक्त हो तो पन्नेके पन्ने भर दूं। अब तो जो दे दूं अुसीसे सन्तोष कीजिये।

बम्बूभाअीके लिये जो कुछ हो सकेगा करता ही रहूंगा। कुछ बाकी नहीं रखूंगा। गुजरातका दौरा करना आवश्यक था अिसलिये वहां जा रहा हूं। बाकी तो हरिजन-यात्रा करना ही पड़ेगा। मैंने जो निर्णय किया था तो आपने देखा ही होगा। अभी तो जो हो अुसे देखते ही रहिये। अच्छा-बुरा तो कौन जानता है? हम जो करें सो अच्छा समझकर करें, अितनी ही आशा रखी जा सकती है। मेरा विश्वास है कि सब कुछ अच्छा ही हो रहा है।

सुनता हूं कि आपका स्वास्थ्य आजकल अच्छा नहीं रहता। जो कुछ हो उसे कीजिये और स्वास्थ्य सुधारिये। डॉक्टरोंको बुलवाना जरूरी हो तो जरूर बुलवाजिये। मांगे बिना मां भी रोटी नहीं देती। आपसे जो मांगा जा सके मांग लीजिये और मामलेको ठीक कर लीजिये।

जिस बार जो प्रस्ताव पास हुआ है, वह शायद आपको तो अच्छा नहीं लगा होगा। मैं मानता हूं कि अुसका फल अच्छा ही आयेगा। बड़े भाजी[1] मिल गये। अब जो हो जाय सो सही। हमारमें जितने ज्यादा नये रंगरूट हैं कि अुनका मुकाबला करनेमें कोअी समर्थ नहीं। हम अपना भाग पूरा करके सन्तोष मानें। यहां बैठे हमें बाहरका विचार करना व्यर्थ है, अिसलिअे है। अिस सूत्र पर पूर्ण विश्वास रखकर निश्चिन्त रहिये।

सुरेन्द्रदत्त और दूसरी दोनों यहीं हैं। सुरेन्द्रदत्तने (जेलमें) काफी कष्ट सहन किया है। अब तबीयत अच्छी है। असे सरहद प्रान्तकी लौ लगी है।

परीक्षित पर मार पड़ी वह मेरे लिये जैसी वैसी बात नहीं है। जिसके खिलाफ आन्दोलन नहींके बराबर है। यह मुझे मारसे भी ज्यादा भयानक प्रतीत होता है।

बा मेरे साथ हो गभी है। ठीक है। सुखी है।

कान्ति देवदासके पास है। पढ़ता है। अुसकी आकांक्षामें महान हूं।

दिवाकृष्ण और जानकी मेरे साथ हैं। मेरा दल अब बहुत बड़ा हो गया है। सोचूंगा अुसमें क्या कमी की जा सकती है। बाबला जीवनजीके साथ है।

---

१ स्व० भारतभूषण पंडित मदनमोहन मालवीय।

२ बापूजीके बड़े पुत्र स्व० हरिलालका पुत्र।

निकम्मा साबित हुआ। अुसने फिर पहले जैसी ही भूल की है। लेकिन भूलका महत्त्व समझा हो अैसा नहीं मालूम पड़ता। अब मैंने अुसे राजकोट जानेकी सलाह दी है। नारणदास अब वहीं रहेंगे। वहां जाकर रहे और जो हो सके करे। जमनालालजीका विश्वास खो बैठा है। अैसा नहीं दीखता कि अुसने हिसाब भी ठीक रखा हो।

राधा (गांधी) प्रोफेसर कर्वेकी पाठशालामें भरती हो गयी है। मुझे तो अिसका कुछ पता नहीं था। अुसने अपने आप ही सब प्रबन्ध कर लिया। कल मिली थी। ज्यादा समय तक तो न मिल सका। यहां भी समय कम मिलता है।

स्वामी यहीं हैं। राजाजी हैं। जमनालाल कल ही बम्बअी गये। काफी बीमारी भोगकर मायूस आये हैं। मेरे साथ व्यवस्था सम्बन्धी बातें करते हैं। स्वामीको वापस बिहार जाना ही है।

मीराबहनके बारेमें तो आपने पढ़ा ही होगा। अिससे अधिक कुछ भी नहीं है। अेकाअेक अुसके मनमें आया कि मुझे दूर जाकर कुछ न कुछ करना चाहिये। मैंने हां कहा और वह चली गयी। मेरे नीचे दब गयी थी विकास रुक गया था। अब कुछ अपनी मूल स्वतंत्रता प्राप्त कर ले तो अच्छा है। दो-चार महीनेके लिअे ही गयी है। मैक्सवेल¹ से केवल साधारण कैदियोंकी हालतके बारेमें बात करने गयी थी। अपने अनुभव बतानेके लिअे।

अम्बालाल साराभाअीसे मिला था। सरलादेवीको खासा लाभ हुआ है।

बापूके लिअे लिखना बस। यह सवेरे पर्णकुटीमें लिखा। अब आमरस खाना है।

बापूके आशीर्वाद

¹ बम्बअी सरकारके तत्कालीन गृह-मंत्री।

५७

भावनगर,
२–७–३४

भाअी वल्लभभाअी

आपके पत्रोंमें पहले पहल हुअी काटछांट देखी। जिन्हें मिले अुनमें हैं।

आज तार आया है कि साबरमतीकी बहनें छूट गअी हैं। अिसलिअे मणि छूटनी चाहिये। कुछ भाअी भी वहांसे छूटे हैं। कुछ बाकी भी हैं।

मुझ पर हुअे हमले[1]के बारेमें क्या लिखूं? अैसा किसी न किसी कारण तो होना ही था। ठीक है कि हरिजन-सेवाके कारण ही हुआ। जो चीज किसी अेक कामके लिअे अिस्तेमाल की जा सकती है वह न सोचे हुअे दूसरे कामके लिअे भी अिस्तेमाल की ही जा सकती है। अीश्वरेच्छाके बिना कहीं कुछ होता है?

यह भावनगरमें लिख रहा हूं। यहांका हाल तो आप जानते ही हैं। काम करनेवाले साथ मिलकर काम नहीं कर सकते यह बड़ी दिक्कत है। पैसा तो काफी हो जायगा। १ रुपये।

दुर्गा वगैरा कल मिलने आ रही है।

---

१ ता. २५-६-'३४ की शामको पूना म्युनिसिपैलिटीकी तरफसे पू. बापूजीको मानपत्र दिया जानेवाला था। म्युनिसिपल हॉलमें पहुंचनेसे पहले हॉलके झरोखोंमें से किसीने नीचे रास्ते पर पू. बापूजीकी मोटर आअी मानकर अुस पर बम फेंका। लेकिन पू. बापूजी तो वहां अिस घटनाके दस मिनट बाद आये अिसलिअे अीश्वर कृपासे अुन्हें कोअी चोट न पहुंची। लेकिन दूसरे कुछ लोग घायल हो गये।

मैं मानता हूं कि किसानोंको कोअी नुकसान नहीं होगा। चिन्ता बिलकुल न करें।

समय बहुत कम मिलता है, अिसलिअे लम्बे पत्र नहीं लिखता। मीरेंसे लिखनेको कह रखा है।

अमतुस्सलामके बच्चेका ऑपरेशन करानेकी बात लिख चुका हूं न? अब तो अस्पतालसे निकल आयी है। मेहरअली अस्पतालमें है। आपकी तबीयत कैसी है?

बड़ा दुख भोग रहा है। अुसे दवा वगैराके लिअे खूब रुपया चाहिये! अितनी रकमका दान भी कैसे लिया जाय? निर्दय होकर आज लिख दिया है कि हर महीने सौसे ज्यादा तो हरगिज नहीं दिया जा सकता। फिर भले ही मरें या जियें। मेहरअली राजकोटमें है।

बापूके आशीर्वाद

५८

कराची
११-७-३४

भाअी वल्लभभाअी

आजकल आपको सीधे मुझे दिन पत्र नहीं लिख सकता। यह शुरू किया है ५॥ बजे सवेरेका नाश्ता करके। अितनेमें अेक पारसी महिला अपनी १५ वर्षकी लड़कीको लेकर आ गयी। वह टेनिसमें सारे भारतमें पहले नम्बर आयी है, परंतु अुसे वैराग्य हो गया है। अुसका सारा ध्यान धर्ममें है। अिसलिअे आग्रहपूर्वक मिलने आयी। हरिजनोंके लिअे दस रुपये दिये। हस्ताक्षर लेकर गयी है।

१ स्व॰ यूसुफ मेहरअली। बम्बअीके अेक समाजवादी नेता।

मेरे अुपवास[1] की खबर सुनकर दुःखी न हों। अैसा करना अनिवार्य हो गया है। लोगोंकी भारी भीड़ जमा हो जाती है। सनातनी दंगे पर अुतारू हैं। लोग अुन्हें सहन नहीं करते। असलिअे झगड़ा होता ही है। लोग कहनेसे रुकते ही नहीं। अुपवाससे ही हजारोंको सन्देश पहुंचाया जा सकता है। पहले जाते थे अुनसे भी ज्यादा संख्यामें लोग अिकट्ठा होते हैं। असलिअे अुनसे निपटना बहुत कठिन हो जाता है। सात दिन आसानीसे निकल जायेंगे। चिन्ता बिलकुल न करें। मेरा शरीर अच्छा ही है। बहुतसे बोझोंके बावजूद खूनका दबाव १५ के आसपास रहता है। यह अच्छा ही माना जायगा। वजन १ ४ है। बाकीका सफर निर्विघ्न समाप्त हो जाय तो गंगा नहाये। अगस्तका महीना अुपवास और अुपवास-निवारणमें जायगा। बादका भगवान जाने।

आपके स्वास्थ्यके बारेमें पूरी जानकारी चाहिये। डाह्याभाअीको लिख रहा हूं।

मणि[2] के छूटनेकी खबर कल मिली। महादेव[3] और प्यारेलाल लाहोरमें साथ होंगे। साथी बनेंगे। काकासाहब हैदराबादसे साथ हुअे हैं। अिस समय ये तीनों साथ हों यह ठीक ही है। नरहरि नहीं आयेंगे। स्थिर होकर बैठ सकूं तो सबसे मिल सकता हूं। अीश्वरको जो करना होगा सो करेगा।

---

१ हरिजन-यात्राके दौरानमें ता. ५-७-'३४ को पू. बापूजी जब अजमेरमें थे तब वहां अुनके सामने काले झंडे फहरानेवाले सनातनियों और सभाकी व्यवस्था रखनेवाले स्वयंसेवकोंमें मारपीट हो गयी और अुसमें सनातनियों पर मार पड़ी। अुसके प्रायश्चित्त स्वरूप पू. बापूजीने सात दिनके अुपवास करनेका संकल्प किया। हरिजन-यात्रा पूरी करनेके बाद ७ अगस्तको वर्धामें यह अुपवास शुरू किये गये थे।

२–३ दोनों बेलगांव जेलसे ता. ८-७-'३४ को छूटे।

बा की तबीयत अच्छी रहती है। मुझे चाहिये सो खुराक भुआ भेजी है। ठक्करबापा भी तो काफी देखभाल रखनेवाले हैं न?

* * *

वणीराके साथ खूब बातें कीं। अभी कोअी बात भुनके गले नहीं भुतर सकती। अभी हवामें नशेका कोअी पार नहीं। यह नशा भुतरे तभी ठिकाने आयेंगे। स्वामी वीरमणांसे अलग हो गये हैं। अब अुपनगरमें रचनात्मक कार्य करनेमें जुटेंगे।

बापूके आशीर्वाद

५९

लाहोर,
१६-७-३४

भाअी वल्लभभाअी

आपका छूटना[1] मेरी कल्पनाके बाहर था। सरकार और हम आपसमें अेक-दूसरेसे सलाह-मशविरा किये बिना जैसा सूझता है वैसा किये जा रहे हैं। यह ठीक है। दोनोंका पता लग जायगा। आप सब कुछ देख लीजिये फिर नाजीकी हैसियतसे आपकी राय मांगूंगा। अभी ही साथीके नाते जवाबदारी लिया दें। वैसे हालमें हो मिलनेकी जो आदत पड़ गयी है वह कोअी दो-चार वर्षकी जेलसे थोड़े ही मिटनेवाली है?

---

१ ता. १४-७-३४ को पू. बापूको स्वास्थ्यके कारणसे — नासूर रोग बढ़ जानेसे — नासिक जेलसे छोड़ दिया गया था।

नाटकका पूरा विकास करानेके बाद ही आयें यह मुझे पसन्द है। बनारसमें आपकी अुपस्थितिकी जरूरत तो है ही परंतु नाटक न जाने दे तो अुपस्थितिके बिना काम चला लेंगे।

के यहाँ जाना अनिवार्य था। हमारे कार्यकर्ताओंकी भी यह अिच्छा थी। मेरे जानेसे मुझे कुछ मिल नहीं पायगा। वैसे अजमेरका और दूसरे स्थानोंका वातावरण आजकल गुंडाशाहीसे भरा हुआ है। जिसकी प्रतिध्वनि यहाँ भी आपके कानोंमें पड़ेगी।

लालनाथ[1] अिन सबमें अच्छा आदमी मालूम हुआ है। वह बहादुर भी है। दिये हुअे वचनोंका अुसने पालन किया है। वैसे मेरी निन्दा तो करता ही है। वह हक तो सभीको है। अुसने यह पहली बार मार नहीं खाओ है। अुसके साथियोंने भी मार खाओ है। अुसने कभी पुलिसको शिकायत नहीं की। ये लोग ज्यादातर पुलिसका संरक्षण भी नहीं चाहते। अपने आदमियों पर वह अच्छा काबू रखता है। हमारे आदमियों पर मैंने कड़ा अंकुश न रखा होता तो वे बहुत घायल हुअे होते और हमारा काम रुक जाता। आज ही अेक आदमी लिखता है कि लालनाथके विरुद्ध लोगोंको भड़कानेमें अुसका हाथ था। वह प्रायश्चित्त चाहता है। यह आदमी हमारा बढ़िया कार्यकर्ता है। लेखक है कवि है। अब कहिये कि अुपवास करके मैंने ठीक नहीं किया? अैसे मामलेमें किससे सलाह-मशविरा करूँ? कहाँ करूँ? किसीको साँप काट ले तो जाननेवाला हकीम औरोंसे सलाह लेने बैठे या जाये तो क्या धूल कर दे? साथियोंसे पूछे बिना अैसे कदम अुठानेकी मुझे चटपटी तो नहीं लगी होगी। मगर मैं मजबूर हो जाता हूँ। निर्णय करनेसे पहले सलाह-मशविरा करनेका जमनालालजीने तार भेजा था जिसलिये अुन्हें लिखा। अुन्होंने अन्तिम निर्णय मुझ पर छोड़ा। देवदासने

---

१ हरिजन-यात्रामें पू. बापूजीके खिलाफ जगह-जगह काले झंडे दिखानेवाला अेक सनातनी।

चार अुपवास सुझाये। जयरामदास[1] ने यह कदम जरूरी माना और कहा कि किये ही जायं तो सातसे कम हरगिज नहीं। बापूने विरोध नहीं किया। चंद्रशंकर बेचारे क्या विरोध करते? काकासे विरोध हो ही नहीं सकता था। अैसे अुपवासोंके बिना यह गंभीर कार्य पूरा नहीं हो सकता। मायूसीका पार नहीं है।

लाहोरमें और अन्यत्र लोगोंकी जैसी भीड़ देखता हूं वैसी पहले कभी नहीं देखी।

अेक बात जरूर मुझे अखरती है। रेल और मोटर मुझसे छुड़वा दीजिये अेक जगह पड़ा रहने दीजिये और पैदल यात्रा करने दीजिये —यदि मैं बाहर होअूं[2] तो। अभी तक तो स्वभावतः हूं ही। बाकी राम जाने।

अेप्रिल २५ अमरतसे यहां पहुंचेंगे। स्वामीसे आपको बहुत कुछ मालूम होगा। चंद्रशंकर लिखेंगे।

कलकत्ते जा रहा हूं केवल अपनी सलामी करने।[3] परंतु डॉ. विधान रायका पत्र आया है कि मुझे बहुत करके गवर्नरसे मिलना पड़ेगा। यह काम तो भी ही। अैसाका गवर्नरने अिसके लिये बहुत दबाव डाला था। अब बात भारी हो गयी दीखती है। विषय तो केवल

---

१ श्री जयरामदास दौलतराम। सिंधके पू. बापूजीके मुख्य साथी। १९३ में कराचीमें पुलिसने अेक सभा पर गोली चलाओी थी तब अिनके पैरमें अेक गोली आरपार निकल गयी थी। १९३१ से १ ३४ तक कांग्रेसके मंत्री। १९४६ में अंतरिम सरकारके समय बिहारके गवर्नर। १ ४७ से १९५ तक केन्द्रीय सरकारके खेती और खुराक विभागके मंत्री। अुनके बादमें आसामके गवर्नर।

२ अेक साल तक हरिजन-यात्राके सिवाय दूसरे काममें न पड़ने और बाहर रहते हुअे भी अपनेको अैसी शर्तपर मर्यादित न रखनेका पू. बापूजीका संकल्प १ अगस्तको पूरा हो रहा था।

३ आसामके दौरे।

जमानेकी मुंडासाही है। मिलेंगे तब मजिक। और अब तो महादेव है, जिसलिये आपको निश्चिन्त वस्तु मिलती ही रहेगी।

मणिकी तबीयत खूब अच्छी हो जानी चाहिये। पिछ बार (जेलमें) काफी कमजोर हुई लगती है। अपनेको कृत्रिम रूपसे स्वस्थ दिखानेका प्रयत्न करती है। आज मुझे अन्य पत्र नहीं लिख रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
श्रीराम मेंशन
सेंडहर्स्ट रोड बम्बई

६०

वर्धा
१९-८ ४४

भाईश्री वल्लभभाई

आपके समाचार पहुंच गये। आपका स्वास्थ्य अच्छा हो जानेके बाद यहां आ जायं तो अच्छा रहे। २५ तारीखको सेवाग्राम जायंगे। ऐसा लगता है कि तब आप वहां हाजिर रहें तो अच्छा। मुझे जितने आरामकी जरूरत है वह तो यहां मिल ही रहा है। कोई परेशान नहीं करता। पहरेदार भी जमनालालजीकी आज्ञाओंका अच्छा पालन कर रहे हैं। आपको भी वहांसे यहां ज्यादा शान्ति मिलेगी। परन्तु यह सब तभी जब आपका बुखार बिलकुल मिट जाय और शान्ति हो जाय। आपके आनेसे मणिको तो फायदा होगा ही।

मैं समझता हूं नासिका तो अभी कुछ नहीं हो सकता। अगर यहां रहनेसे यह काम हो सकता हो, तो मैं मानता हूं कि कष्ट ऐसा

१ पू बापू ७-८ ४४ से [illegible] पीड़ित थे।

चाहिये। अुसका परिणाम तो देख लें। अभी अिसमें खतरा तो कुछ है ही नहीं। कुछ समय पड़े रहनेकी बात है सो भले ही पड़ा रहना पड़े।

कल जयप्रकाशका लंबा पत्र आया था। वह दुःखी है। अुसने बहुत पढ़ा है परंतु यह नहीं कहा जा सकता कि सब हजम कर लिया है। अनुभव तो बिलकुल नहीं है। परंतु पढ़ा हुआ औरोंको सुना सकता है अिसलिये पढ़े-लिखे लोग चौंधिया जाते हैं अिससे अुसे अुत्साहका नशा चढ़ता है और वह बार-बार झोंकता है, शरीरकी परवाह नहीं करता और धांधली मचाता है। वह यहां आनेका लिख रहा है। जो हो जाय सो सही।

कांग्रेससे मेरा निकलना तुरन्त तो होगा नहीं। मगर मैं अपने मनकी व्याकुलता आपको बताता रहता हूं। आप सब जाने नहीं देंगे तब तक कैसे जाअूंगा? परंतु मुझे तो महसूस होता ही रहता है कि मेरे सामने अिसके सिवा दूसरा कोअी मार्ग नहीं है। मालूम होता है मैं कांग्रेसकी प्रगतिको रोक रहा हूं। शासनसे चिपटे रहना लेकिन अुसमें विश्वास न रखना विश्वास रखनेवालेका अुस पर अमल न करना —यह स्थिति कितनी दयाजनक कितनी भयंकर है! अिसमें से कांग्रेसको निकालना क्या आपका धर्म नहीं है? सड़ाव मिटानेका मार्ग मुझे यहां तक तो कोअी हर्ज नहीं। परन्तु निकल जानेके सिवाय दूसरा कोअी रास्ता ही न हो तो क्या किया जाय? मेरे निकल जानेसे कांग्रेसमें दंभ घट जायगा। सच-झूठ हिंसा-अहिंसा वाली टेकको अगभागी गलमल सब चल सकता है। अगर साधारण कांग्रेसवादीकी यह सच्ची स्थिति हो तो दूसरा अनुसरण करना ही अुसके लिये ठीक है। परंतु मेरे निकले बिना यह अनुसरण होगा नहीं। मेरी निष्ठासे ये मर्यादायें नहीं हटाअी जा सकतीं। मैं यह नहीं चाहूंगा। मेरे विरोधके रहते हुअे कांग्रेस से मर्यादायें हटा दे तो वह मुझीको निकालनेके बराबर हुआ न?

नौबत यहां तक आने देना क्या ठीक होगा? ये सब विचार आपसे राजाजी बगैराने कराने हैं। यहां आ सके तो शान्तिसे चर्चा कर लेंगे।

सितम्बरमें या युद्धमें पूरी शक्ति आ जानेके बाद क्या करना है जिस पर भी हमें सोचना है। यह चर्चा तो करनी ही पड़ेगी। अवसर भी नजदीक आ गया है। जवाहरलालकी बात जितनी तेज है, अुतनी भयानक नहीं है। अुन्हें अपने दिलका गुबार निकालनेका अधिकार था सो निकाल लिया। मैं मानता हूं कि अब शान्त हो जायेंगे।

गुजरातके दुःखी किसानोंके लिये करना तो है आपका ही सोचा हुआ मगर जिस विषयमें मेरे पास कुछ बने बनाये विचार हैं।

पार्लियामेण्टरी बोर्डका तो आप चाहते थे वही हुआ यद्यपि मुस्तफी रहनेका कारण तो स्वतंत्र ही था।

अब आपके लिये बहुत लिखा माना जायगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाजी
श्रीराम मेन्शन
सैण्डहर्स्ट रोड बम्बजी

६१

वर्धा
२०-८-३९

भाअी वल्लभभाअी

आपको अेक जवाब देना पड़ गया। यह पत्रका अुत्तर मैं तुरंत दे सकता हूं परंतु वगैराका विचार हमें करना चाहिये। फिर मेरे अिस विषयमें जो विचार हैं वे पूरे आपके मनमें अुतरते हैं? मुझे तो वे ही सही मालूम होते हैं। लोगोंको छिपाना व्यर्थ है। अिसलिये वगैरा अगर हमारी तरफसे मौन चाहें तो रखा जा सकता है या हम अिस कांग्रेसकी वर्तमान नीति मानते हैं अुसके अनुसार फरमान जारी करें। या मैं अपनी जिम्मेवारी पर अपनी स्वतंत्र राय जाहिर करूं। को बुलाकर आप कुछ तय कीजिये और मुझे लिखिये। फिर कुछ तैयार करके भेजूंगा। अिस बीच को लिखता हूं कि आपके साथ पत्र-व्यवहार कर रहा हूं। बादमें विस्तृत अुत्तर मिलेगा। यह व्यर्थ आपसी मचा रहा है। मेरी राय है कि जल्दी करनेकी कोअी जरूरत नहीं है।

महादेवको प्रयागजी भेजनेकी बात समझ ली। सोच रहा हूं। मेरे पत्रके जवाबकी प्रतीक्षा करूं?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
श्रीराम मेन्शन
सेन्डहर्स्ट रोड बम्बअी

६२

वर्धा
२१-८-३४

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला। वहांकी आवश्यकतायें समझ सकता हूं। तुलना तो आप ही कर सकते हैं। यहां या वहां दोनों ही जगह हमें अेक ही किस्मका काम करना है। जहां ज्यादा जरूरत हो वहीं बसना है। अिसलिअे जो अुचित जान पड़े वही कीजिये। बम्बअीके कांग्रेस कार्यके बारेमें मेरी राय है कि जिन्होंने अुसे सिर पर लिया है, वे अपने ढंगसे अुसे पूरा करें या अधिकार छोड़ दें। छिपानेसे कब तक काम चलेगा?

कांग्रेसकी स्थितिका सवाल बड़ा है। जिसकी चर्चा तो जब मिलेंगे तभी अधिक हो सकती है। के बारेमें आप जो लिख रहे हैं वही मैं भी मानता हूं। कांग्रेसको अपनी नीति तय करनी ही पड़ेगी।

को बुलाकर बात की जाय तो निपटारा हो सकता है। का पत्र आया था। अुसे मैंने लिखा है कि सितम्बरके पहले सप्ताहमें आवे और तारीख आपसे मुकर्रर करा ले। अगर आपका आना हो ही न सके तो मैं अुससे जो जिरह करनी होगी कर लूंगा। आपको दिखाये बिना कुछ भी लिखकर नहीं दूंगा।

गुजरातके बारेमें आपकी छटपटाहटको पूरी तरह समझता हूं। जैसा ठीक लगे वैसा कीजिये। हमें जो समझना है वह भविष्यको दृष्टिके सामने रखकर समझना है।

अेण्ड्रूज आयें तब जी भरकर बातें कर लीजिये। यहां जो होगा वह लिखता लिखाता रहूंगा।

महादेव आज प्रभात जायेंगे। शनिवार तक लौट आयेंगे। पूनेसे बाहर काम करके फिर तबीयत न बिगाड़ें।

बापूके आशीर्वाद

काकाकी बात तो रह ही गयी। काकाने मेरी संमतिसे निर्णय किया। मुझे वह पसन्द आया। अिसकी तहमें अुनका दुःख नहीं केवल कर्तव्यपरायणता है। आपको लिखनेका तो मैंने ही सुझाया था। आपको अधिकार है या नहीं यह तो मैंने सोचा भी नहीं। ट्रस्टियोंसे न पूछनेके बारेमें और फिर भी पूछा है अैसा लिखनेके बारेमें काकाको भारी आघात लगा है। यह ठीक ही था।

सरदार वल्लभभाअी पटेल
श्रीराम मेन्शन
सेंडहर्स्ट रोड बम्बअी

६३

वर्धा
२२-८-३५

भाअी वल्लभभाअी

अेक प्रश्न आपको हल करना है। काकाकी अिच्छा दक्षिणमें जाकर काम करनेकी है। अिसके साथ अुनके ट्रस्टीपदसे अिस्तीफा[1] देनेका कोअी संबंध नहीं है। मैं यहां आये हुअे शिक्षकोंसे कह रहा हूं कि अुन्हें देहातमें बसना चाहिये और वहां रहकर रचनात्मक काम करके जो संगठन हो सके करना चाहिये और जो शिक्षा दी जा सके देनी चाहिये। शिक्षकोंको यह बात पसन्द आयी है, और जो

१ सभी ट्रस्टोंसे अिस्तीफा देनेका।

मुक्त हो सकें वे वैसा करनेको तैयार हो गये हैं। अुनमें काका भी आ जाते हैं। विद्यापीठके मकानोंका अुपयोग सहरकी जरूरतके अनुसार हमें करना ही है।

*　　　　*　　　　*

महादेव कल गांवको गये। आज रातको यहां पहुंचेंगे।

अेण्ड्रूजको कने मथुरादास तो शनिवार आयेंगे ही। और भी जो आ सकें अुन्हें भेज दें। हो सके तो अुन्हें अपने पास ही ठहरायें। और वे चाहें तो मुझी दिन अिधर भेज दें।

यह लिखनेके बाद आपका पत्र मिला।

स मिल लिये यह ठीक हुआ। कैदियोंके बारेमें वे और चॉनिकल फ्री प्रेस वगैरा सोरगुल तो करेंगे। डाक्में मक्खन कैसे जाय? शास्त्रियाको नटराजन से भी आनेको कहे। घनश्यामदासके तारके मुताबिक तो वे यहां आनेके लिये सोमवारको रवाना हो जायेंगे।

मैं मानता हूं कि अेण्ड्रूज दो-चार दिन तो रहेंगे ही। कदाचित् तुरंत शांतिनिकेतन जाना चाहें। आप ही अुनसे निश्चित जान लें।

अब आज अधिक नहीं लिखा जा सकता।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
श्रीराम मेन्शन
सेंडहर्स्ट रोड बम्बाी

---

१ िण्डियन सोशियल रिफॉर्मर के संपादक।

वर्धा
२१-८-३४

भाओीश्री ५ बालकृष्णभाओी

जिसके साथ ब्रजकृष्णका दिल्लीके विवाहके संबंधमें पत्र है। अुसे पढ़कर फाड़ डालिये। मैंने साफ लिख दिया है कि पूछें तो भी मैं जिस झगड़ेमें नहीं पड़ूंगा। रोज अैसी ही खबरें आती रहती हैं। सबको अपनी-अपनी पड़ी है देशकी किसीको नहीं। अैसी हालतमें कैसे किनारे पहुँचेंगे यह समझमें नहीं आता।

बंगालसे मेरे पास भी अणे[1] के विरुद्ध तार आये हैं। मैंने साफ लिख दिया है कि अुनकी निष्पक्षताके बारेमें किसीको शंका नहीं करनी चाहिये। अुन पर पूरा भरोसा रखना चाहिये।

मालवीयजीने हिन्दुस्तान टाअिम्स पर अवार्ड[2] के बारेमें नीति बदलनेका हुक्म जारी किया है। जिसलिये घनश्यामदासने त्यागपत्र भेज दिया है। त्यागपत्रमें अपना मतभेद प्रगट करनेवाली दलीलें जाहिर की हैं। अब देखना है क्या होता है। पता नहीं दोनोंको क्या सूझी है।

राजेन्द्रबाबूके तार परसे अे. पी. को अेक समाचार भिजवाया है जो आप अखबारोंमें देखेंगे। नकल होगी तो भेज देंगे। अैसी अैसी चीजें आप भी खुलासा निकाला करें तो ठीक रहे। मीराबहनने तारसे

१ श्री माधवराव अणे। १९३१ की लड़ाअीके दिनोंमें कांग्रेसके कामचलाअू अध्यक्ष। कुछ समय बिहारके गवर्नर थे।

२ ब्रिटिश प्रधानमंत्री मेकडोनल्डका साम्प्रदायिक प्रश्न पर निर्णय।

पूछा है कि यह कांग्रेस नेशनलिस्ट[1] पार्टी क्या है? मैंने अुन्हें तार दिया है कि अिसका अुत्तर तो प्रेसिडेण्टको देना चाहिये। मैं भी कुछ लिखूंगा मगर आप वल्लभभाअीको तार दीजिये। अब तार आये तो देख लें।

राजाजीका आज जो पत्र आया है वह आपके पढ़ने लायक है। पढ़कर फाड़ डाल। लिखना हो तो लिखें। मद्रास जानेकी शक्ति आ जाय और समय मिले तो हो आअिये। स्टेट्समन की कतरन मैंने नहीं देखी। हाथ लग गयी तो वह भी भेज दूंगा। वह कुछ भी लिखे। अुससे हम सबको कैसे छिपा सकते हैं? प्रफुल्ल घोष[2] आ गये हैं। वे बंगालकी महाभारतकी बात सुना रहे हैं, जो बड़ी दुखद है।

बापूके आशीर्वाद

६५

वर्धा
२८-८-३४

भाअीश्री वल्लभभाअी

काकाने विद्यापीठके संरक्षक (ट्रस्टी) पदका अधिकार छोड़ दिया। अिस सिलसिलेमें हम सबकी यह राय है कि मंडलके अध्यक्ष आप हों। हमने तो आपको बना भी दिया है। विद्यापीठमें मेरा अपना स्थान नियमानुसार क्या था अिसका मुझे कुछ भी खयाल नहीं था। अिसलिअे पूछने पर मालूम हुआ कि नियमानुसार तो मेरा स्थान कहीं भी नहीं है। परंतु व्यावहारिक दृष्टिसे मुझे कुलपति माना गया है। और मुझे जब बीचमें पड़ना हो तब पड़ने देनेका निर्णय सभी

---

१ पं. मालवीयजी द्वारा साम्प्रदायिक निर्णयके मामलेमें कांग्रेसकी स्वीकृत नीतिसे अलग होकर बनाअी हुअी अलग पार्टी।

२ बंगालके अेक प्रमुख कार्यकर्ता।

अध्यापकोंमें सुरक्षित रखा है। परंतु अिससे कोअी तंत्र थोड़े ही चल सकता है? अिसके बाकायदा अध्यक्ष तो आप ही हो सकते हैं। मुझे तो आध्यात्मिक स्थानसे ही संतोष है। अुससे ज्यादा बोझ अुठानेकी न मेरी अिच्छा है, न शक्ति ही।

मेरी सलाहसे आपकी मंजूरीकी शर्त पर दूसरा निर्णय हमने यह किया है कि हरिजन आश्रमकी व्यवस्था नरहरि अपने हाथमें ले लें। और अुन्हें जरूरत मालूम हो तो विद्यापीठके शिक्षकोंको अुनके साथ रख लिया जाय। नरहरिका और विद्यापीठकी तरफसे दूसरे जो शिक्षक वहां रखे जायं अुनका खर्च जब तक विद्यापीठके पास रुपया हो तब तक अुसमें से दिया जाय। मेरी यह राय है कि अिस वक्त हरिजन सेवक संघ पर यह बोझ न डालना ही अुचित है। क्योंकि अिस संघकी यह नीति रखी गयी है कि सवर्ण हिन्दुओंको अुसमें से कमसे कम पैसा दिया जाय। आदर्श यह है कि अुसकी ९५ फी सदी आय सीधी हरिजनोंकी जेबमें जानी चाहिये। अुस आदर्श तक पहुंचना हो तो अिस प्रकारका अुदाहरण हमें अपने घरसे ही पेश करना चाहिये। तीसरा निर्णय यह किया है — यह भी आपकी मंजूरीकी शर्त पर — कि दूसरे जो शिक्षक बाकी रह जाते हैं अुन सबको अगर वे मंजूर करें तो ग्रामसुधार और ग्रामसेवाके लिअे देहातमें फैल जाना चाहिये। वे मेरी सुझाअी हुअी योजना अथवा कल्पनाके अनुसार काम करें। यह योजना आपको नरहरि समझायेंगे। अुसकी कोअी बात आपको पसंद न आये तो अुसे निःसंकोच रद कर दें। अिस निर्णयके समय काकासाहब किशोरलालभाअी मगनभाअी सोमण और नरहरि मौजूद थे और वे अिससे सहमत हैं। नरहरिके बारेमें ठक्करबापासे भी बात कर चुका हूं। अुनके जैसे ही किसी व्यक्तिके बिना हरिजन आश्रमको चलाया नहीं जा सकता। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अिस तरह आश्रमको चलाकर हम हरिजन प्रश्नको खूब आगे बढ़ा सकेंगे। अैसा होने पर ही आश्रमका नाम सुशोभित हुआ

माना जायगा। अिसलिये यद्यपि मैं जानता हूँ कि नरहरिसे और कभी सेवायें ली जा सकती हैं फिर भी अिस समय अुनका अुत्तम अुपयोग यही है और अुन्हें खुद भी अिस काममें दिलचस्पी और पूर्ण आत्मश्रद्धा है। अिसलिये नरहरिको तो हरिजन काममें होमने ही दीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
श्रीराम मेन्शन
सेंडहर्स्ट रोड बम्बअी

६६

वर्धा
२८-८-३४

भाअीश्री वल्लभभाअी

आपका पत्र और तार मिला। तारका जवाब तारसे नहीं दे रहा हूँ क्योंकि अिसी विषय पर कल लिख चुका हूँ। अगर अुस पहले आप कुछ कह न चुके हों तो यों कहिये

I have read the proceedings of the new party formed by Pandit Malaviyaji and Shri M. S. Aney I have read telegrams and letters asking me to clarify certain points. In my opinion it is not proper to use the Congress name without the Congress authority The party may be called the National Party of Congressmen if its composition is strictly confined to Congressmen. But without the authority of the Congress duly received it cannot with propriety be called the Congress National Party especially when it is formed deliberately to propagate a policy in direct contradiction to that which is

the official policy of the Congress. The adoption of the Congress name cannot but confuse the popular mind and I would respectfully urge Panditji to reconsider the position and adopt another name for the Party which he had a perfect right to form for the education of Congressmen and others. The other point I should like to emphasize is that no one but the Congress Parliamentary Board can run elections in the name of the Congress. Lastly in the midst of the unfortunate differences between Pandit Malaviyaji and Sjt. Aney and the Working Committee I hope that all Congressmen will loyally support the policy enunciated in the resolution of the Working Committee re. the Communal Award.

(पंडित मालवीयजी और श्री अणेके बनाये हुअे नये दलकी कार्रवाओ मैंने पढ़ी है। कुछ बातें स्पष्ट करनेकी मांगवाले तार और पत्र भी मैंने पढ़े हैं। मेरी राय यह है कि कांग्रेसकी अनुमतिके बिना कांग्रेसका नाम अिस्तेमाल करना अुचित नहीं। अगर अिस दलमें केवल कांग्रेसियोंके ही शरीक हो सकनेका कड़ा नियम हो तो कांग्रेसियोंका राष्ट्रीय दल जरूर कहा जा सकता है। परंतु अिसके लिअे कांग्रेसकी बाजाब्ता मंजूरी लिये बिना अिसे कांग्रेस राष्ट्रीय दल कहना अुचित नहीं खास तौर पर अिसलिअे कि यह दल जान-बूझकर कांग्रेसकी अधिकृत नीतिसे सीधा विरोध रखनेवाली नीतिका प्रचार करनेके लिअे बनाया गया है। अिस दलके साथ कांग्रेसका नाम अिस्तेमाल करनेसे लोगोंके मनमें भ्रम पैदा हुअे बिना नहीं रह सकता। अिसलिअे मैं पंडितजीसे आदरपूर्वक विनती करता हूं कि वे स्थिति पर पुनर्विचार करें और जो दल वे बनाना चाहते हैं, अुसका दूसरा नाम रख लें। अिस बातसे मेरा अिनकार नहीं है कि कांग्रेसियों और दूसरे लोगोंकी शिक्षाके लिअे दल बनानेका अुन्हें पूरा अधिकार है। अेक दूसरी बात भी मैं आग्रहपूर्वक बताना चाहता हूं कि कांग्रेसके नाम पर चुनावोंका

सचालन करनेका काम कांग्रेसके पार्लियामेंटरी बोर्डके सिवाय और कोमी नहीं कर सकता। अन्तमें जब अेक तरफ पंडित मालवीयजी और श्री अणे तथा दूसरी ओर कांग्रेसकी कार्यसमितिके बीच मतभेद है तब मैं आशा रखता हूं कि सभी कांग्रेसी साम्प्रदायिक निर्णयके मामलेमें कार्यसमितिने अपने प्रस्तावमें जो नीति प्रतिपादित की है अुसका वफादारीके साथ समर्थन करेंगे।)

जिसमें जो फेरबदल करने हों कर लीजिये।

राजेन्द्रबाबूका पत्र विचित्र है। अुसका जवाब तो अेक ही हो सकता है। कांग्रेस पसै[1] सबंधी जिम्मेदारी हरगिज नहीं ले सकती और खानगी तौर पर अभी हम रुपया जमा कर ही नहीं सकते। यह काम मुलाभाओी वगैराका है। आप जिस बारेमें भूलाभाओीसे बात कीजिये।

मैं भाओी सी सी के बारेमें मूलाभाओीका लिख्युया।

मैं वर्किंग कमेटीकी बैठक चाहता हूं जिसलिओे बैठक भी बुलाना ही ठीक है। बंबओीमें करना हो तो वहां कीजिये और वर्धामें करना हो तो वर्धामें। मैं सितम्बरके बारेमें चाहते हैं।

राजाजी परसों या रविवारको यहां पहुंचेंगे।

पट्टाभि वगैरा यहीं हैं। वगैरा आये हैं। आज जायेंगे।

काकाके बारेमें समझ गया। जवाहरलाल पकड़े गये। महादेवका तार आया है। महादेव अुनसे मिल सके थे। वे कल आ रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
श्रीराम मेन्शन
सेंडहर्स्ट रोड बंबओी

---

[1] कांग्रेसकी तरफसे खड़े किये जानेवाले अुम्मीदवारोंके चुनावका खर्च कांग्रेस द्वारा देनेके बारेमें।

वर्धा
२५-८-१४

भाई वल्लभभाई

मेरा कलका पत्र मिल गया होगा। आज मथुराबाबू[1] आपका पत्र लाये। वे आ गये यह ठीक हुआ। मैंने साफ-साफ कहलवा दिया है कि यदि पार्लियामेन्टरी बोर्ड खर्च दे तो ही जिलेक्शन लड़ें, नहीं तो छोड़ दें। आपकी या मेरी तरफसे कोअी आशा न रखें। हां यदि बिना खर्चके लड़नेकी हिम्मत हो तो जरूर लड़ें। लेकिन यह संभव न हो तो पूरा विचार करके लड़ें। यदि कहीं रुपयेके बिना केवल प्रतिष्ठाके बल पर ही लड़ना संभव हो तो वह बिहारमें ही हो सकता है। पर जिसमें मेरा दखल नहीं है। यह सारा काम किस तरहसे होता है जिसकी भी मुझे कल्पना नहीं हो सकती। वैसे बिना खर्च या नाममात्रके खर्च पर यदि कांग्रेसके नामसे लड़ा जा सके तो जिसके जैसी शोभाकी बात और क्या हो सकती है?

आज १४ के बीच भूलाभाई आ रहे हैं अैसा तार है। महादेव आपको पहुंचाये।

यह तो मैं लिख चुका हूं न कि वर्किंग कमेटीके बारेमें मेरे पास तीन तार आये थे? मैंने तारसे जितना ही जवाब दिया है कि जिस बारेमें आपसे पूछा जाय।

आपसे आया ही न जा सके तो कोअी बात नहीं। यहाँ हाथ मिलकर मशीन चल गया। मेरी जानकारीमें जो कुछ नया आयेगा वह बताता रहूंगा।

मीराबहन बहुत काम कर रही मालूम होती है। फल तो शायद अभी कुछ भी न मिले फिर भी भूमिका तैयार (विलायतमें)

[1] श्री बाबू मथुराप्रसाद। बिहारके अेक कार्यकर्ता और राजेन्द्रबाबूके साथी।

अिस पार्टीने काम बिगाड़ा ही है। कुछ कर सके अैसा मुझे दिखाअी नहीं देता।

भूलाभाअी आ गये। मौलानाका मेरे नाम तार आया है। भले ही कमेटी वर्धामें मिले। बड़ी जगह तो है। होटलके बिना काम चला लेंगे। दो दिनसे ज्यादा तो ठहरेंगे नहीं। मुझे अवश्य ही वहाँ अधिक अनुकूल होगा। राधाकिसन[1] पर जबर भार पड़ेगा मगर अुसने तो सारी तैयारी कर ही रखी है। अभी जमनालालजीने नये मकान बनवाये हैं। अिसलिये जगह तो जितनी चाहिये अुतनी है। कहते हैं कि सारी व्यवस्था अच्छी है। अिन सबके पीछे जमनालालजीकी आत्मा जो है।

भूलाभाअी आपसे मिलकर सब कुछ तय करायेंगे। अब जैसा अनुकूल हो वैसा कीजिये। वहाँ करेंगे तब तो मिलेंगे ही।

राजाजीके साथ मेरे (कांग्रेससे) निकल जानेकी बात कर रहा हूँ। अिसीके लिये आये हुअे हैं। हो सके तो मंगलवारको सात जाना चाहते हैं।

रामदास मंगलवारको लुअिस वापस आ रहा है। लुअिसमें ठैरा है अिसलिये। आने पर अधिक पता चलेगा।

आपमें शक्ति आ रही होगी।

जवाहरलालके विषयमें महादेवने आपको सब कुछ लिख दिया है। अुनका जाना कितना अच्छा रहा! मुझे बड़ा आश्वासन मिला। बुढ़िया और कमला तो गम हुअी ही।

अितना शामको प्रार्थनाके बाद मौन लेकर घसीट डाला है। बाकी होगा तो कल लिखूँगा।

बापूके आशीर्वाद

१ स्व॰ जमनालाल बजाजके भतीजे और वर्धाके अेक मुख्य कार्यकर्ता।

पुनश्च

२७-८-३४

प्रातःकाल

अेक बात याद आ रही है। म्युनिसिपैलिटीके कामके बारेमें अब मुझे बलुभाअी[1] या और किसीको लिखना नहीं होगा। आप ही को लिखा जायगा। विद्यापीठकी पुस्तकें वापस लेनेका तय करें तो भी आश्रमकी तीससे पचास हजारकी होंगी। शायद कम या ज्यादा। जिनका कभी कोअी अुपयोग नहीं होता। अगर अेक लायब्रेरियन रखें तो शास्त्रीय पद्धतिसे पुस्तक-सूची बने पढ़नेके लिअे देनेके नियम बनाये जायें और तदनुसार वे पढ़ी जाने लगें। कुछ किया जा सके तो अच्छा।

अेण्ड्रूज और जोन्स[2] आ गये हैं। आपका पत्र मिला। अब आपसे भूलाभाअीकी भेंट होनी चाहिये। बैठक मुनीमें बम्बअीमें रखिये। महादेवसे तो आप सभी मिलिये। अेण्ड्रूज यहां है।

बापू

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बअी

१ स्व॰ बलवन्तराय ठाकुर। अुस समय अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटीके अध्यक्ष।

२ मि॰ स्टेनली जोन्स। हिन्दुस्तानके प्रति सहानुभूति रखनेवाले और बापूजीके सिद्धान्तोंका अच्छा अध्ययन करनेवाले अेक मशहूर अीसाअी अुपदेशक।

वर्धा
१ १ ४५

भाअी वल्लभभाअी

आज तो लिखनेमें मैंने हद कर दी है। कमर और पीठ अब मना कर रही हैं। परंतु अिस नियेधाज्ञाको तुरंत नहीं माना जा सकता। नरहरिका पत्र में आज ही पढ़ पाया। मेरे खयालसे अुनके साथ थोड़ा अन्याय हुआ है। अिसमें अुन पर नाराज होनेका मैं कोअी कारण नहीं देखता। वे अवजीमें अपना मामला आपके सामने पेश नहीं कर सके अिसलिअे बहुत नम्रतापूर्वक पत्रमें पेश किया है। अुसमें काकासे स्कनेका आग्रह करनेकी और जिनका अुनके साथ मेल नहीं बैठता अुनसे मेल करा देनेकी आपसे जो आशा रखी गअी है वह अधिक है। परंतु वह तो आपके सामने प्रार्थनाके रूपमें रखी गअी है। जिससे मालूम होता है अुन्हें आपके स्वभावका पूरा ज्ञान नहीं है। आपने मुझे जो पत्र लिखा अुसे आपका अन्तिम मत समझना चाहिये था। वह मत स्पष्ट और पर्याप्त है। मैंने नरहरिको लिखा है कि काकाको कोअी गुजरातमें रख ले तो अुन्हें रखनेकी आपकी तरफसे छूट है। आपका आशीर्वाद है। किशोरलाल मुझे कहते थे कि आपने अुन्हें कड़ा पत्र लिखा है। अगर मेरी दलील ठीक मालूम हो तो नरहरिको अेक मीठा पत्र लिखिये। अुनका पत्र आपको दुबारा पढ़नेकी जरूरत महसूस हो अिस खयालसे अुसे वापस भेज रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८९, वार्डन रोड
बंबअी

७०

वर्धा

भाओी वल्लभभाओी

आपका पत्र मिला। काकाका किस्सा पुराना हो गया है। लेकिन आपको तो जिसे हँसीमें ही भुला देना है। अन्तमें सब शान्त हो जायगा। मेरा ऐसा मत है कि जिसकी तहमें कोअी मैल नहीं है। मैं मामलेको शान्त कर रहा हूं और जिसमें सफल होनेकी आशा रखता हूं। जिसके पीछे गलतफहमीके सिवाय और कुछ नहीं है। काकाको जिस प्रकार जाने नहीं दूंगा। मावलंकरको मैंने पत्र लिखा है जिसकी नकल आपको भेजी है।

काकाको यहां आनेके दूसरे दिनसे ही बुखारने पकड़ा है। बुखार बड़ा तो कुछ ही नहीं। आज सुबह ९९ से ऊपर था। १०२ तक जाता है। और कुछ मालूम नहीं पड़ता। सरदी और थोड़ी खांसी है। टाअिफॉअिडका अवश्य डर है। काकाको चिट्ठी लिखिये।

ओम्[1] ठीक है लेकिन अभी बीमार जरूर है। अुन्हें भी दो लाअिन लिख दीजिये। हां 'खानसाहब'[1] अुनकी याद करते हैं।

दोनों भाअी कल अकोला चले गये। अब वहांसे अुन्हें सामगांव समीट ले गये हैं। जिसलिये आपके बजाय कल लौटेंगे।

लाला श्यामलाल[2] का पत्र देखनेके लिये भेजता हूं। दुनीचंद[3] के

---

१ सरहदके गांधी खान अब्दुल गफ्फारखांके बड़े भाअी। सरहद प्रान्तके प्रधान मंत्री थे। सरहदी गांधी अभी पाकिस्तानमें जेलमें हैं।

२ पंजाबके अेक नेता।

३ पंजाबके अेक नेता।

बारेमें कुछ जल्दबाजी हुअी जान पड़ती है। अुनका फिर तार आया है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बअी

७१

वर्धा
२०-९-'३४

भाअीश्री वल्लभभाअी

आपका पत्र मिला।

साथमें जवाबका मेरा मसौदा है। अिसमें जो फेरबदल करना हो कर लें।

यह कितना अंधेर है कि पुलीसवालोंकी फजीहत होने जैसा जवाब बोर्डकी तरफसे मिले! ठीक है कि आप जांच कर रहे हैं।

*   *   *

नरहरि संबंधी आपके अुद्गार पढ़े। आपका संताप ठीक है। परंतु अिस तबकी तहमें जान-बूझकर कुछ नहीं हुआ। केवल गलतफहमी है। यह कुछ समय बाद दूर हो जायगी। क्योंकि मेरा दृढ़ विश्वास है कि किसीका मन मैला नहीं है। मैंने तो निश्चय किया है कि काका समझ सकें तो यह वैमनस्य मिटानेकी खातिर भी अुन्हें अभी गुजरात नहीं छोड़ना चाहिये। गुजरातमें बैठकर भले ही वे सारे हिन्दुस्तानका शिक्षा-विभाग चलावें या कुछ भी करें।

आपके निकलनेकी बात ही नहीं। और मेरा मत आपके गले अुतरा हो तो अभी तो विद्यापीठकी व्यवस्था करनेका अर्थ अितना

ही है कि जैसा निर्णय हो अुसके अनुसार अलग-अलग आदमियोंको रुपये देते रहें। विद्यापीठ तो जंगम रहेगा। सब अपना नियत काम करते रहेंगे। शिक्षाके बारेमें जो भी निर्णय होंगे वे काका ही करेंगे अथवा जो शिक्षक-मण्डल होगा वह करेगा। मेरी राय यह है कि जो वहां काम जाय अुसे वहां स्वतंत्र रूपसे अपनी जिम्मेदारी संभालनी है। कोअी अपनी पसन्दके आदमीसे कुछ प्रश्न पूछना चाहे तो निजभावसे पूछ सकता है। यह मेरी कल्पना है। अिसकी मैंने काका किशोरलाल और नरहरिके साथ खूब चर्चा की है। आपको यह बात पसन्द आये तो अिसका अमल अेक पत्र लिखकर कर डालिये जिससे सब समस्या हल हो जाय। वेतनोंके बारेमें काका और नरहरिने कुछ निर्णय तो किया है। अुसमें मैंने दखल नहीं दिया। मैं चाहता हूं कि अिस अमलेका बोझ आप अपने दिमागसे बिलकुल अुतार डालें।

आपका स्वास्थ्य अच्छा रहता होगा। राजेन्द्रबाबू २१ तारीखके आसपास आने चाहियें। तब तो आप मौजूद रहेंगे ही न?

बापूके आशीर्वाद

बापूके बयान[1] में अखबारोंमें काफी भूलें रह गयी हैं। अुसे सुधार कर कल भेजूंगा। मेरे बयानसे अेक अेक प्रति वे आअी सी सी के सदस्योंको भेजी जा सकती है और नाममात्रकी कीमत पर बेची भी जा सकती है।

महादेव

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बअी

---

१ कांग्रेससे अलग हो जानेके बारेमें पू॰ बापूजीका बयान।

७२

वर्धा
२१-९-३४

भाअीश्री वल्लभभाअी

आप पर जो बोझ है, अुसमें अेक और बढ़ा रहा हूँ। साथमें यहाँके सिविल सर्जनकी सुमित्रा[1]के बारेमें राय है। अिसलिये अुसे अुसकी नानीके साथ आज ही भेजता हूँ। वे मणिभवनमें रहेंगी परंतु अुन्हें आपके पास रखना हो तो भले रखिये। सुमित्राको आंखके किसी डॉक्टरको दिखा दें और अिलाज करायें। आंखमें फूल है और टेढ़ापन तो है ही। दोनों चीजोंके अिलाजकी जरूरत है। यदि अुसे अिसके यहाँ ले जानेकी जरूरत हो तो ले जाय।

मेरे बयान पर काफी आलोचनायें हो रही दीखती हैं। मुझे निकालनेका ही वातावरण पैदा कीजिये। किसीको कातनेमें या खादी पहननेमें दिलचस्पी नहीं होगी। आपने ठीक कहा है।[2]

---

१ रामदास गांधीकी पुत्री।

२ बम्बअीमें २०-९-३४ को पूज्य बापूकी दी हुअी मुलाकातका यहाँ जिक्र है। अुसमें से नीचेका भाग 'मुंबअी समाचार' में से लिया जाता है

महात्माजीने कांग्रेससे अलग होनेके संबंधमें जो बयान दिया था अुसके बारेमें हमारे प्रतिनिधिके बुधवारकी रातको राष्ट्रपति सरदार वल्लभभाअी पटेलसे मुलाकात करने पर अुन्होंने बताया कि मैं यह चाहता हूँ कि महात्मा गांधीने कांग्रेसके संविधानमें जो बुनियादी सुधार सुझाये हैं वे बम्बअीके अधिवेशनमें मंजूर किये जायें। क्योंकि मैं अैसा मानता हूँ कि राष्ट्रीय कांग्रेस प्रस्ताव पास करे और फिर अुन पर अमल न करे यह राष्ट्रके लिअे बहुत हानिकारक हो सकता है।

वामनराव[1] को जवाब कल भेज चुका हूं। आप कल मिल गये। पूरे दो घण्टे बैठे। हमारा बयान देखा होगा। नेकीरामका तार है कि मालवीयजी २९ तारीखको आयेंगे। आनेके सामने ही मिला था। मैंने तो कह दिया कि मालवीयजीको आनेका कष्ट न दें। दोनों पक्ष हार जानेकी स्थिति देखें महसूस हुए जायें जितना समझ

महात्मा गांधी जैसे महान पुरुषको अैसे कृत्रिम दिखावेमें शामिल नहीं होना चाहिये। गांधीजीके बताये हुअे सब सुधार यदि कार्य करनेके निश्चयके साथ पास हों तो कांग्रेस स्वतन्त्रताके मार्गकी बड़ी मंजिल तय कर लेगी। परंतु कांग्रेस अैसा निश्चय करेगी जिसकी कोअी आशा नहीं है। नये ढंगको आजमाना चाहनेवालोंको अपने ढंगसे कार्य करने दिया जाये।

बहुतसे कांग्रेसियोंका वर्तमान कार्यक्रममें विश्वास नहीं रहा। कुछ लोग नया तरीका आजमा देखने और धारासभाके रास्ते जानेके लिअे आतुर हैं। अुन्हें अपना कार्यक्रम तैयार करके अपने ही ढंगसे काम करने देना राष्ट्रके लिअे हितकर साबित होगा।

अुन्हें केवल अनुभवसे ही विश्वास होगा। श्रद्धाके सामने बुद्धि और तर्ककी कीमत कम ही मानी जाती है। जिन्हें श्रद्धा न रह गअी हो वे कार्यक्रमके लिअे प्रयत्न नहीं कर सकते।

कांग्रेसके तंत्रके भारी बोझसे मुक्त हो जायें तो महात्माजी अपने कार्यक्रमके लिअे अधिक सरलतासे काम कर सकेंगे क्योंकि कांग्रेसके तंत्रमें मौलिक परिवर्तन किये बिना अुनका काम सरलतासे चलना सम्भव नहीं है। मुझे विश्वास है कि जिस सभाकी अिच्छा न हो अुस सभासे अपने सुधार स्वीकार करानेके लिअे दबाव डालनेकी गांधीजीकी

---

1 अमरावतीके वीर वामनराव जोशी। लोकमान्य तिलक महाराजके अेक प्रमुख साथी।

लें तो काफी है। चिंतामणि और कुंजरू आयें यह मैं चाहता तो जरूर हूं। दोनों बड़े कामके आदमी हैं। लेकिन यह कैसे किया जाय यह नहीं जानता। यू॰ पी॰ का हमें क्या पता चले? और तो कहीं भी अुनकी हस्ती दिखाओी नहीं देती। वे कहते हैं कि बंगालमें अुनके अुम्मीदवार चुनेंगे। फूकन के बारेमें भी आशा रखते हैं। अुत्कलकी महताबकी भी आशा रखते हैं। बहुत करके आसफअलीके विरुद्ध किसीको खड़ा नहीं करेंगे। कहते थे जरा भी दिक्कत नहीं है। अनुभवसे वे समझ सके हैं कि बहुतसे लोग प्रस्तावोंके लिये काम करनेके अिरादेके बिना ही प्रस्तावोंके हकमें राय देते हैं। महात्माजी कांग्रेसके बाहर होंगे तब कांग्रेस अधिक समर्थ बनेगी और कांग्रेसके लिये वे अधिक सहायक सिद्ध होंगे। कांग्रेसके भीतर रहनेसे वे बाधक और कांग्रेसके संगठनमें निर्बलता लानेवाले तत्त्व साबित होंगे।

सरदार वल्लभभाओीने यह भी कहा कि जिनका महात्माजीके कार्यक्रममें विश्वास हो वे कांग्रेसमें बने ही रहें। परन्तु अुसका तन्त्र चलानेकी जिम्मेदारी तो जिनका कार्यक्रम स्वीकार किया जाय अुन्हींकी मानी जायगी। और गांधीजीके कार्यक्रममें श्रद्धा रखनेवाले अपना कार्यक्रम सम्बन्धी काम कांग्रेसके विवादमें पड़े बिना करें। परन्तु कांग्रेसका कार्यक्रम कैसा होगा यह जाने बिना अभी यह नहीं कहा जा सकता कि अुस कार्यक्रमके लिये गांधीजीके अनुयायी काम करेंगे या नहीं।

१ सर सी॰ वाओी॰ चिंतामणि। नरम दलके अेक नेता। लीडर पत्रके सम्पादक।

२ पंडित हृदयनाथ कुंजरू। नरम दलके नेता। आजकल भारत सेवक समाजके अध्यक्ष।

३ स्व॰ फूकन। आसामके अेक नेता।

४ दिल्लीके राष्ट्रीय मुसलमान नेता। कुछ समय अुड़ीसाके गवर्नर रहे। आजकल स्विट्झरलैण्डमें भारतके राजदूत हैं।

कि बंगालमें बड़ी गंदगी है। दिन दहाड़े धावा करके कांग्रेसके कागजपत्र लूट ले जायं यह तो हद हो गयी। फिर भी जिन लूटी रसीदोंके लिये धावा किया गया वे तो धावा करनेवालोंके हाथ लगीं ही नहीं। कहते हैं जिस धावेमें कांग्रेसके प्रसिद्ध स्वयंसेवक थे।

काका अभी बिलकुल ज्वरमुक्त नहीं हुये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बई

७३

वर्धा
४-१०-३४

भाई वल्लभभाई

आपका पत्र कल मिला था। मुझ परसे किशोरलालको लिखनेके लिये भेज दिया था। कामका बोझ काफी रहता है। जैसे तैसे निपटानेका प्रयत्न करता हूं। अधूरा तो रोज ही रहता है। कल अणे आ गये। नेकीराम परसोंसे आये हुए हैं। मैंने तो यह दिया है कि आप और अणे मिलकर अब भी बात कर सकते हैं और मतभेद हो तो पंच कायम करें। पंचके लिये बहादुरजी[1] अथवा तेजबहादुर के नाम दिये। अणेको यह पसन्द नहीं आया। उन्होंने कहा कि आप न हो जाय तब तक नाम बदलते रहेंगे। इसलिये जो कुछ हो सकता है वह उसके बाद ही होगा। इतना आपकी जानकारीके लिये है।

---

१ बम्बईके प्रसिद्ध पारसी वकील।

२ सर तेजबहादुर सप्रू। प्रसिद्ध वकील और नरम दलके नेता।

अेक बात और। सब कहते थे — अगर चुनाव नवम्बरमें होता तो कितना अच्छा होता!" मैंने कहा — वल्लभभाअीने केवल मालवीयजीके खातिर नहीं रुकवाया। आप वल्लभभाअीको तार दें, तो वे शायद मिजाज बदल दें। मैं नहीं जानता कि यह संभव है या नहीं। मैंने तो मालवीयजीके वचनको ही नजरमें रखकर रुकवानेसे अिनकार किया है। मालवीयजी खुद मिजाज चाहें, तो हमें दूसरी तरह फरमना ही है। लेकिन अिसमें मेरा दखल नहीं हो सकता।

साथमें डॉ. गोपीचन्द[1] का पत्र भेज रहा हूं। विचारने जैसा है। मैं तो अुन्हें अितना ही लिख रहा हूं कि अुनका पत्र मैंने आपके पास भेजा है। अिस पर जरूर विचार कीजिये।

देवदासका पत्र भी भेजता हूं। अुसे पढ़कर फाड़ दीजिये। देवदास नहीं चाहता कि अुसकी कहीं चर्चा हो।

श्री प्रेस में विद्यापीठके पुस्तकालयके बारेमें क्या छपा है?

मणि सुमित्राके पास जाती होगी। डॉक्टर क्या कहते हैं लिखें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८ मार्टेन रोड
बम्बअी

१ डॉ. गोपीचन्द भार्गव। पंजाबके नेता। पूर्वी पंजाबके मुख्य मंत्री थे।

श्रीप्रकाशको वापस न लिया जाय तथा भगवानदास[1]का विरोध न हो। मेरे खयालसे यह हो सके तो करने लायक है। श्रीप्रकाश तो चिन्तामणिके लिये बैठ ही जायेंगे। भगवानदासके विरुद्ध लड़ाअी हो तो यह बड़ी जहर फैलानेवाली बात होगी। अिस बारेमें आपको तार दिया है।

दूसरा मामला अभ्यंकर[2]का है। यह तार देनेके बाद बापूजी (अणे)का साथवाला पत्र आया। अतः अिस तारके पीछे रहे विचार देकर वक्त क्यों लूं?

नरीमान और मथुरादासके बड़े-बड़े तार कांग्रेसका मुल्तवी न करनेके बारेमें आये हैं। अिसे मैं बेकार खर्च मानता हूं। मुझे जरा भी आग्रह नहीं है। मैंने तो साक्षीका काम किया। आप या मैं क्या अैसा कोअी काम करने दे सकते हैं, जिससे कांग्रेस या पार्लियामेण्टरी बोर्डको धक्का पहुंचे? और अैसे कामोंमें यहां बैठे हुअे मुझे कुछ पता भी नहीं चल सकता।

खानबन्धु बंगालमें फंस गये। अब तो अुन्हें १ तारीखको यहां पहुंचाना मुश्किल हो गया है। क्या किया जाय? मैंने पत्र तो लिखा है।

आप कहीं बीमार न हो जायें! मगर मुझे विलियम प्रिन्स ऑफ ऑरेन्ज[3] याद आता है। अीश्वरको अुससे काम लेना था, अिसलिअे चारों ओर गोलियां बरसती थीं तो भी अुनके बीच वह सुरक्षित रहा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८९ वार्डन रोड
बम्बअी

१ डॉ० भगवानदास। बनारसके विद्वान राष्ट्रीय नेता।
२ नागपुरके नेता।
३ हॉलैंडके राजा तीसरे विलियमका पिता।

भी अैसी ही बातें कर रहा हूं। पता नहीं बालभाओी क्या करेंगे। वे न आयें तो सुरेशको बुलानेकी अिच्छा है। अैसे सपने देखता हूं। वे सच्चे हों या न हों। अुनसे अपनी शान्तिका चिन्तन करता हूं। अब आपके पास अवकाश हो तो आअिये। मामला मिलाप पहले करानेकी आवश्यकता है। गुजरातके कार्यकर्ताओंमें से स्त्रियोंको किस काममें लगाऊं? रावजीभाओीने चर्चा भेजी है। मैंने लिखा है कि वे मुक्त हो जायं तो भी आपकी मंजूरी मिलने पर ही आ सकते हैं। केन्द्रके विषयमें भी सोचना है।

चुनावमें तो कमाल हो गया!

बापूके आशीर्वाद

७७

वर्धा
२० ११ ३४

भाओी वल्लभभाओी

मीराबहन बुधवारको वहां पहुंचेगी[1]। अुसका स्वागत करनेके लिओ जो अुचित हो कीजिये। अुसे रवाना तो अुसी दिन कर दीजिये। आ सकें तो साथ ही आ जाअिये। बोर्ड[2] बनानेमें हमारी समस्या अुलझ गओी है। अध्यक्ष किसे बनाया जाय यह बड़ा सवाल बन गया है। अिसपर तो चर्चा ही रहनेकी और मेरा मन अुलझा है। यह प्रधान कार्यालयकी बात है। अैसे केन्द्र तो बहुतसे चाहियें। अलग-अलग जिलोंके लिओ और अलग अलग प्रान्तोंके लिओ कदाचित् अलग-अलग

---

[1] श्री मीराबहन विलायतसे लौट रही थी, अुसका जिक्र है।
[2] अखिल भारत ग्रामोद्योग संघका बोर्ड।

तहसीलोंके लिअे भी। जिसका दारमदार अिस बात पर रहेगा कि काम किस तरह होता है। गुजरातके लिअे यह बात अिस पर निर्भर रहेगी कि आप अिसे कहां तक हजम कर सकते हैं। परंतु यह तो मिलेंगे तब।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८९, वार्डन रोड
बंबअी

७८

वर्धा
१०-१२ ३८

भाअी वल्लभभाअी

आपका पत्र बाबासाहबको भेज दें। बाकी महादेव लिखेंगे। राजेन्द्रबाबूका पत्र मिलनेके बाद मेरे पास और कोअी अुपाय नहीं था। दिल्लीसे अभी तक तार नहीं आया।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल,
८९, वार्डन रोड
बंबअी

७९

वर्धा
१२-१२-३४

भाओी वल्लभभाओी

आपका पत्र मिला। खानसाहबके लिअे नया ही बयान[1] भेजता हूं। मेरे बयानसे यही किया जा सकता है और करना भी चाहिये। अुनको पत्र लिख रहा हूं। अुसे देख लें। अिसलिअे अधिक लिखनेकी जरूरत नहीं रह जाती। अुसमें जो खेद प्रगट किया गया है अुसकी मैं तो बड़ी जरूरत मानता हूं। परंतु अिस मामलेमें और सारे बयानके बारेमें अन्तिम निर्णय आपको ही करना है। दूर बैठा हुआ मैं निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कह सकता। मेरा यह भी खयाल है कि वकील किया जाय। वह बयान पढ़कर सुना दे। दोष स्वीकार भी न करे और अुससे अिनकार भी न करे। वकील कम सजाकी मांग भी न करे, परंतु मामलेका विश्लेषण करना हो तो करे, या केवल जांच करे। साक्षियोंसे जिरह करनेकी तो बात ही नहीं रह जाती। परंतु ये सब तो मेरे विचार समझिये। सब बातोंमें निर्णय आपको ही करना है।

मेरा हाल तो देख ही रहे हैं। अेण्ड्रूज आज दिल्ली किसी कामसे गये हैं। कहते थे तब तक आगे कुछ न किया जाय। अधिक तो मथुरादास समझायेंगे। राजेन्द्रबाबूके बारेमें अभी तो और कुछ

---

१ खानसाहब अब्दुल गफ्फारखांने बम्बअीमें अेक भाषण दिया था। अुसके कारण अुन पर राजद्रोहका अभियोग लगाया गया था और अुन्हें दो वर्षकी सजा हुआी थी। अुस मुकदमेमें अदालतमें दिया जानेवाला बयान।

करनेकी बात रह नहीं जाती। घनश्यामदासका तार है कि मुझे १ तारीख तक डॉक्टर नहीं जाने देंगे। अिसलिये मेरा २ तारीखको दिल्ली पहुंचना जरूरी नहीं। भेजूं और कुछ लिखें तो दूसरी बात है। कांग्रेस कार्यसमितिकी बैठक तो अब जनवरीमें ही रखी जा सकती है।

बलवंतराय[1] की परिषद्में जाना ठीक समझें तो जाअिये। अिस मामलेमें मुझे कुछ समझ नहीं पड़ता।

अम्मंकरको मेरी तरफसे भी कहिये कि मजबूत हो जाय।

प्यारेलाल पहुंचे होंगे। और मदद चाहिये तो मांग लीजिये। स्वरूपरानी[2] के लिये प्रभावतीको रवाना किया जा सके तो कीजिये। प्यारेलाल वहां हो आयें।

बापूके आशीर्वाद

८०

वर्धा
११-१२-३४

भाई वल्लभभाई

आपका पत्र मिला। मणिलाल (गांधी) तथा   के मामला ठीक निपट गया। कर्नाटक खटकता है। परंतु जहां गंगाधरराव[3] जैसे हों वहां क्या कहा जाय? जो हो सके कीजिये।

---

१ श्री बलवंतराय मेहता। भावनगरके नेता। सौराष्ट्रमें कुछ समय तक मंत्री थे।

२ स्व. स्वरूपरानी बीमार थीं अुनकी सेवाके लिये।

३ श्री गंगाधरराव देशपांडे। कर्नाटकके नेता।

मैं तो ग्राम-उद्योग संघमें फंस गया हूं। राजाजी आ पहुंचे हैं। आज जाना चाहते हैं। परसों रातको आये थे। जमनालाल थोड़े दिनमें वहां पहुंचेंगे।

और सब कुछ महादेवसे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
८९, वार्डन रोड
बंबई।

८१

वर्धा,
१७-१२-३४

भाई वल्लभभाई

आपका पत्र मिला। खानसाहबका बयान वकीलोंको क्यों पसंद आने लगा? हमारे वकीलोंको पसंद आया हो तो बहुत समझिये। वैसे हमारे कामके लिये तो वही ठीक था। सरकारकी समझमें आ सके वैसा तो आज कहां संभव है?

दीनबन्धु आज आ रहे हैं। इसलिये पता चल जायगा कि क्या हुआ।

मेरा अनुमान है कि जमनालालजी यहांसे बुधवारको रवाना होंगे। वे आयें तब तक तो वहीं ठहरिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बई

रामदास तो अभी बंबभी जायगा। २७ या २८ तारीखको स्वामीके साथ रवाना होगा। मणिभवनमें रहेगा।

मुस्लिम भाभियोंके लिये क्षेद कैसा? हम अपने धर्मका पालन करें। सिन्ध और लाहोरकी हत्याओंके बारेमें मैंने मौलाना और

कहा कि मैं सिपाही हूं और सन्देश देना मेरा काम नहीं। परंतु ओरोंसे कहना कि मेरी सजाके विरोधमें न तो सभायें करें और न विरोध प्रगट करें। फिर भी यह सभा की गअी है और मैं अध्यक्ष बन रहा हूं यह बहुत दुःखका प्रसंग है। परंतु सभा न करनेमें भी कुछ कठिनाअियां आन पड़ीं। हमने अुन्हें आमंत्रित किया वे आये और थोड़ेसे मौलाविर्योंकी अेक सभामें गये। खानसाहब कौन है यह मैं जानता था। और मैं मौजूद होता तो अुन्हें अुस सभामें जाने ही न देता क्योंकि मै जानता था कि अुसका अुपयोग क्या है।

मे जानता हूं कि जिस समय भाषणोंकी चर्चा करनेका प्रसंग नहीं है। बम्बअीका कोअी कार्यकर्ता अुनके साथ नहीं था अैसी हालतमें अुन्हें ले जाया गया और अुन्हें विषय भी अैसा दिया गया जिसमें कहना पड़े कि अुन्हें सरहद प्रान्तमें क्यों नहीं जाने दिया जाता। जिसमें वे फंस गये और आज अुन्हें दो वर्षकी सजा हो गअी। वे कभी घबराते नहीं परंतु कुछ मिलाकर अुनके जानेसे हमें अतिशय हानि हुअी है। जिसलिये हमारे मनको दुःख होता है।

दुःख होनेका दूसरा कारण यह है कि जहां तक हो सके वहां तक कितने ही कड़े और अपमानजनक कानून भी सहन कर लेनेका कांग्रेसका जिस समय आदेश होनेके कारण अुसका आदर करना कांग्रेसियोंका फर्ज है यह मानकर कानूनभंग करके जेलमें जानेका अुनका बिलकुल जिरादा नहीं था। नहीं तो वे अपने विरुद्ध लगाअी गअी पाबन्दियोंको ही तोड़ते।

जिस प्रकार जब गिरफ्तारियां हो रही हों तब हम क्या करें और सरकारकी नीयत क्या है अैसा कुछ लोग पूछते हैं। अुनसे मैं कहूंगा

डॉ॰ अन्सारीको लिखा है। दोनोंके जवाब आ गये हैं। लिखते हैं, कुछ न कुछ करेंगे। सारा काम ही मुश्किल है। दृष्टिकोण अलग-अलग रहे हों वहां सहन ही करना पड़ेगा। हम अपने बूतेके मुताबिक कर गुजरें तो पार अुतरे समझें।

कि सरकारकी नीयत क्या है यह जानना हमारे लिये जरूरी नहीं है। परन्तु सब कार्यकर्ताओंसे यदि वे मेरी सलाह मानें तो मैं कहूंगा कि जिस समय हमें संयम रखना चाहिये। भाषण देनेका काम अुन बहुत ही थोड़े मनुष्योंके लिये रहने देना चाहिये जो यह समझ सकें कि जालमें कहां फंस जायेंगे।

कांग्रेसकी वर्तमान नीतिके अनुसार हमें फंसना नहीं चाहिये। न फंसनेका अर्थ नहीं है कि हमें खुद ही कांग्रेसके आदेशोंका भंग न करना चाहिये खानसाहबका और मेरा अपना भी आपको यही अेक सन्देश है।

खानसाहबका दूसरा सन्देश लोगोंके लिये यह है कि अगर आपका अुन पर प्रेम है, तो गांवोंके लोगोंकी सेवा कीजिये। सरकार अपने हाथों ही लोगोंमें राजद्रोह फैलानेके लिये परवाना जो करे अुतना ही काफी है। किसीको भाषण देनेकी जरूरत ही नहीं। अखिल भारत ग्राम-अुद्योग संघके संविधानमें गांधीजीने भी अुस संघको राजनैतिक विषयोंसे अलग रखनेकी जरूरत मानी है। तो हमारा फर्ज है कि हम कांग्रेसकी नीतिका आदर करें। अुस नीतिका आदर करनेकी खातिर खानसाहबने कितने कितने कष्ट अुठाये हैं!

खानसाहबको जब अुनके भाषणकी नकल दिखाई गयी तब अुन्होंने स्वीकार किया कि अिस नकलमें मुख्यतः मैंने जो भाषण दिया वह आ जाता है। और अगर अिस भाषणसे अपराध होता है, जैसा वकील कहें तो मुझे भंग करनेके लिये खेद प्रगट करना चाहिये — कांग्रेसका आदेश भंग करनेके लिये अफसोस जाहिर करना चाहिये। परन्तु यह अफसोस अिस रूपमें जाहिर करना चाहता हूं कि अुसका

मैं महांसे २८ तारीखको दिल्लीके लिये रवाना होअूंगा। दिल्लीमें अधिकसे अधिक अेक महीना लगेगा। ग्राम-अुद्योग संघकी बैठक ११ जनवरीको है। मगर दिल्ली तो आयेंमे ही। कार्यसमितिकी बैठक १५ जनवरीके आसपास हो तो अच्छा। मैं दिल्लीसे जितना जल्दी रवाना हो जाअूं अुतना अच्छा।

अम्बालालका क्या हाल है? आपकी माताका क्या हुआ?

बापूके आशीर्वाद

यह अर्थ न लगाया जाय कि मैं सजा कम करानेके हेतुसे अफसोस जाहिर कर रहा हूं।

खानसाहबको मजिस्ट्रेटने अपने अधिकारके अनुसार पूरी सजा दी है। अुस्त भाषण करनेमें खानसाहबका हेतु राजद्रोहकी भावना फैलानेका नहीं था यह बात मजिस्ट्रेटकी समझमें नहीं आयी और समझा भी कौन सकता था? सजाके संबंधमें या किसी और मामलेमें अिस समय किसीकी किसी भी प्रकारकी आलोचना करना खानसाहब नहीं चाहते। वे तो यह चाहते हैं कि अुनके पीछे बिलकुल भाषण न हों या कोअी अिस नियमका पालन करते हुअे बोलें। मगर आप खान-साहबसे प्रेम करते हों तो आपका यह कर्तव्य है कि आप अुनकी अिच्छाका आदर करें। वे बंगालके गांवोंमें जाकर रहना चाहते थे। मगर वैसा न हो सका यह खुदाकी मरजी ही है, अैसा खुशीसे साथ मानकर अीश्वरकी शरणमें सिर झुकानेवाले खानसाहब जैसे महापुरुषके सन्देशको स्वीकार कीजिये। भाषणोंका शौक कम कीजिये और गांवोंके लोगोंकी सेवा कीजिये।

अिसके बाद अध्यक्ष सरदार वल्लभभाअीने यह पूछा कि किसीको भाषण देनेकी अिच्छा है? जब किसीने अिच्छा प्रगट न की तो अुन्होंने सभा विसर्जित होनेकी घोषणा की।
(मुंबअी समाचार १७-१२ १४)

८३

वर्धा
२१ १२ ३४

भाओ वल्लभभाओ

मिल-मालिकोंके प्रस्ताव देखे होंगे। अैसिये कहीं व्यर्थ न लड़ पड़ें। कोओ मालिक सुने तो अपनी आवाज सुनाअिये। मैंने कस्तूरभाओ और चमनभाओको लिखा है।

जहां दौरा करें वहां ग्राम-अुद्योग संबंधी बातें अवश्य कीजिये। अिसके द्वारा बहुत कुछ हो सकता है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
८९, वार्डन रोड
बंबओ

८४

वर्धा,
२६ १२ ३४

भाओश्री वल्लभभाओ

आपका पत्र मिल गया।

गंगाधररावको मैंने पत्र लिखा है। जमनालालजीने अुनका पत्र मेरे पास भेजा था। मुझे अुनकी बात समझमें नहीं आओ। अिसलिये मैंने अुन्हें दिल्ली आनेको लिखा है। अिस तरह रुपया कब तक दिया जाय? और किसके आगे हाथ फैलाया जाय?

कराची-लाहोरकी हत्याके बारेमें देवदास का लेख देखा होगा। देखता हूं अब दिल्लीमें क्या हो सकता है।

---

१ स्व. सैयद अब्दुल्ला बरेलवी। बॉम्बे क्रॉनिकल के संपादक।

अेम्पृबका पत्र आया है। मुझको तो अच्छा लगा है। साथ आने चाहियें। मैं यह नहीं मानता कि अुनके अच्छा लगनेमें कोअी अर्थ है।

डॉ. खानसाहबके नाम पंजाबका भी हुक्म था। जिसकी तो अुन्हें आदत ही है। जिसलिअे अुन्होंने पूछा कि रास्तेमें पंजाबकी हद आती है अुसका क्या होगा? अतः अुन्होंने तार दिया कि हुक्ममें स्टेशनोंसे गुजरना आ जाता है या नहीं? जवाब आया है कि पंजाबका हुक्म ही २८ तारीखको रद्द हो जाता है। सरहदका हुक्म तो अपने आप ही २९ तारीखसे रद्द हो जाता है। जिसलिअे अुसे फिर ताजा न करें तो खानसाहब सरहदमें भी जा सकेंगे। मेहर[1] तो मेरे साथ आ ही रही है। साथ तो मेरा ही है।

ग्राम-अुद्योग संघके सिलसिलेमें वैकुण्ठ मेहता यहां आये हैं। अभी दो दिन ठहरेंगे।

नासिककी बात समझा। डॉक्टर ही मना करते हैं तब फिर क्या कहा जाय?

रचनात्मक कार्यके बारेमें खूब दृढ़ रहिये। लोग आलस्य नहीं छोड़ेंगे और करने योग्य काम न करेंगे तो न अहिंसा ही होगी न स्वराज्य ही मिलेगा। हममें सहयोग तो होना ही चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८९, वार्डन रोड
बंबअी

---

१ खानसाहबकी पुत्री।

२ सहकारी आन्दोलनके अेक प्रमुख पुरस्कर्ता। बंबअी राज्यके अर्थ-मंत्री थे। अब केन्द्रीय सरकारकी अर्थ-समितिके सदस्य।

८६

वर्धा,
१४-२-३५

भाओ वल्लभभाओ

बायां हाथ थक गया है, जिसलिये आराम कर रहा हूं। आपका पत्र मिला था। बादमें मुलाकात¹ का वर्णन भी मिला। मिल लिये यह ठीक हुआ। अब पत्रव्यवहार जारी रखें।

नाक कष्ट नहीं देती होगी।

यहां कब आयेंगे? तारीख निश्चित करें।

प्यारेलालसे बातें कर लीजिये।

मैं तो भोजनालय लेकर बैठा हूं। मेरा काम बदल गया है। सोचा था अुससे ज्यादा बढ़ गया है। लेकिन जिसकी क्या शिकायत? महादेव कल जायेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बओ

१ केन्द्रीय सरकारके गृहमंत्री सर हेनरी क्रैक पू० बापूसे मिलना चाहते थे। जिसलिओ श्री घनश्यामदास बिड़लाने अपने यहां पू० बापूको और सर हेनरी क्रैकको खानेका आमंत्रण देकर मुलाकात करवाओ थी। मुलाकातमें अभी तक गुजरातकी शिक्षा संबंधी तथा दूसरी संस्थाओंके बन्द रहनेके बारेमें ही बात हुओ थी। मुलाकातके बाद पू० बापूने अुन्हें विस्तृत पत्र लिखा था।

यह तो मेरी साधारण राय हुअी। अहमदाबादकी परिस्थितिके अनुसार कुछ और ही व्यवहार आवश्यक हो तो अुसका मुझे कैसे पता चले?

अब आपको जैसा ठीक लगे वैसा बल्लूभाअीको रास्ता बताअिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
बम्बअी

८८

वर्धा
२२-१-३५

भाअी वल्लभभाअी

पहले दिनके मौनका रस चख रहा हूं। राजकुमारी[1] के साथ बोलनेकी छूट रखी है। वह खास तौर पर मिलने आअी है। अिसलिअे अुसका दिल कैसे दुखाअू? चार दिनसे आअी है, परंतु वास्तवमें बात तो आज ही कर सका हूं।

मेरे खयालसे आप सिर्फ यह बतानेके लिअे कि आपके यहां क्या हो रहा है दिल्ली लिखें तो अच्छा हो।

का प्रकरण दुःखद है। अुन्हें मैं लिख रहा हूं। अुन्हें आपके पास तो हरगिज नहीं बुलवाया जा सकता। मैं जो पत्र लिखूंगा अुसकी नकल आपको भेजूंगा। अुससे पता चल जायगा।

दूसरा काम नहीं लिखूंगा। मुन्शीका पत्र आ गया है। अिसके बारेमें अधिक महादेव लिखेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
बरोदा

---

१ राजकुमारी अमृतकौर। बापूजीकी अेक अंतरंग शिष्या। अिस समय भारत सरकारकी स्वास्थ्य-मंत्री।

६०

वर्धा
१०-४-३५

भाअी वल्लभभाअी

मैंने तो किसीसे हां कहा ही नहीं। अखबारमें पढ़ा तब मुझे आश्चर्य हुआ। मेरी अिच्छा अिस समय कहीं भी जानेकी नहीं होती। मेरा बस चले तो मैं मौन बढ़ा दूं। यह मुझे बहुत अनुकूल हो गया है। जरूरत पड़ने पर सूचनायें दे देता हूं। परंतु आपके वचनको कौन टाल सकता है? दूसरा कोअी मुझे अिस वक्त बाहर नहीं निकाल सकता था। अगर अब भी मुझे ज्यों त्यों करके अेक वर्ष निकाल लेने दें तो निकाल डालूं। लेकिन अगर मुझे कहीं ले ही जाना हो तो वह जगह बोरसद ही हो सकती है। वहां अधिकसे अधिक महामारी हो गअी। मंडपमें रहना अच्छा लगेगा। रासकी पैदल यात्रा करेंगे। मुझसे चार काम लीजिये अस्पृश्यता-निवारण खादी ग्रामोद्योग और प्लेग-निवारण। किसानोंके आंसू पोंछना कोअी कार्यक्रम थोड़ा ही माना जा सकता है? मुझे और कहीं न ले जायं। कमसे कम दिन रखकर बिदा कर दें। मअीके मध्यमें कोअी भी तारीख रख लें। अिन्दौरके बाद वापस आनेकी बात तो रहेगी ही।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
सत्याग्रह छावनी
बोरसद

६२

वर्धा
२-४-३५

भाभी वल्लभभाभी

मणिलाल (कोठारी) को मिले हुअे जवाब[1] की नकल भेजिये। अुसकी भाषा परसे दिल्ली लिखनेके पत्रके बारेमें सूझ पड़ेगा।

अैसे जवाब तो अभी कुछ भी नहीं है। अिससे भी अधिक अपमान होने ही वाले हैं। अिसीलिअे हमें अलग रहकर जो हो अुसे तो करते रहना है। मैं अिसीमें हमारी पवित्रता संग्रह मानता हूं। अैसे गुस्सा करना तो आसान ही है।

प्लेग का टीका लगवानेके बारेमें मेरे विचारोंको निकम्मे मानकर चलनेमें शायद सुरक्षितता हो। मैं तो अैसे खतरे अुठाता ही रहा हूं और दूसरोंसे भी अुठवाये हैं। लेकिन अैसे वक्त मैं हमेशा मौके पर हाजिर रहा हूं। जिस समय दूर बैठा अपने विचार फेंका करूं तो अुनका अनुकरण खतरनाक हो सकता है। अिसलिअे मेरी तो सलाह

---

१ सजा पूरी होने पर अुन्हें सौराष्ट्रमें ले जाकर छोड़ दिया गया और ब्रिटिश हदमें प्रवेश न करनेकी आज्ञा दी गयी थी। अुसके बारेमें जो पत्र लिखा गया था अुसका सरकार द्वारा दिया गया जवाब।

२ बोरसदमें चार सालसे प्लेगका जोर था और सरकारी विभाग अच्छी तरह ध्यान नहीं दे रहा था। कांग्रेसके कार्यकर्ता लड़ाअीके कारण जेलमें थे। परंतु १९३५ में प्लेग फिर शुरू हुआ, अुस समय पू बापूने प्लेग-निवारणका काम बहुत व्यवस्थापूर्वक और सावधानीसे हाथमें लिया। अुसके बाद आज तक बोरसदमें प्लेग नहीं आया। अुस समय तमाम स्वयंसेवकों और तहसीलके लोगोंको प्लेगका टीका लगाया गया था। टीका न लगवानेवालोंमें पू बापू और मैं ही थी।

है कि डॉ. भास्कर[1] कहें सो किया जाय। मैंने अपने विचार अुनके सामने रख ही दिये हैं। शायद यह पत्र आपने पढ़ा भी हो।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
सत्याग्रह छावनी
बोरसद

९३

वर्धा,
४-४-'३५

भाअी वल्लभभाअी

खूब थके गये मालूम होते हैं। मणिका पत्र आया है। बिना छूटे बादल शायद आपसे न लाये जायं। यहां तो सबको पत्र जाते हैं। ये किसीको भी खिसकने तो नहीं चाहियें। परंतु प्रयोग आपके लिये नहीं हो सकते। आप तो शरीरको टिकाये रखें जितना काफी है। जरूरी भोजन करते रहेंगे तो स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

मेनाबाका पत्र आया है। अुसमें वह राजाजीको विलायत भेजनेके बारेमें लगातार मांग कर रही है। कोअी भी जाय वह जिस समय यहां कुछ कर नहीं सकता। अैसोंके जानेका अुपयोग शायद भविष्यके लिये हो सकता है।

अपनी राय बताअिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
सत्याग्रह छावनी
बोरसद

---

१ डॉ. भास्कर पटेल जिन्होंने महामारीके दिनोंमें प्लेगके काम चलाअू अस्पताल चलाये थे। अुनकी सेवा अिस प्लेग-निवारण कार्यमें बड़ी अुपयोगी सिद्ध हुअी थी। अब बम्बअी राज्य विधान-सभाके सदस्य।

२ पू. बापूको बोरसदमें बुखार आने लगा था।

वर्धा,
५-४-३५

भाओी वल्लभभाओी

मेरी बुखार अब बिलकुल चला गया होगा। मुझे तो अपने पास आना ही न पड़ने दें।

यू० पी०[1] जाना तो अच्छा ही है। आप जो कहेंगे वह किसीको खटकेगा नहीं। "आपके सच्चे नायक जवाहर हैं। हम तो अुनके ट्रस्टी बनकर ही आपके पास आते हैं। यह ताना बनाकर जो बाना डालना हो डालिये। मुझे तो यही अच्छा लगता है कि आपको कितने आग्रहसे बुलाया है।

* * *

आपकी पत्रिकायें[2] सब ध्यानसे पढ़ जाता हूँ। कलसे मुझे संभालकर रखने लगा हूँ। मणि रखती ही होगी। अेक सेट भले ही यहाँ भी रहे। पहले सात अंक भेजनेको मणिसे कह दें।

आपको कभी जेम[3] मिले तो मुझे हिस्सा देंगे न?

राजाजीको पत्र लिखिये। वे अकेले पड़ गये लगते हैं। सतत काम कर रहे हैं। वो बात किसीसे कह सकें अैसा भी नहीं लगता।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
सत्याग्रह छावनी
बोरसद

---

१ प्रान्तीय किसान सम्मेलनके अध्यक्ष बनकर।

२ प्लेग-निवारणके सिलसिलेमें लोकशिक्षा देनेके लिये हर रोज पत्रिकायें निकाली जाती थीं।

२ अखबारोंमें अेक कॉन्टीका विज्ञापन था। अुस पर पू० बापूने विनोद किया था अुसीके जवाबमें यह है।

९५

वर्धा
६-४-'३५

भाअी वल्लभभाअी

ने मेरे नाम भी वैसा ही पत्र लिखा था। वो पैसे मांगता ही रहता है, जिसका मैंने कारण पूछा है। आपको न सतानेका लिख रहा हूं। मेरे पास आना हो तो आ जायगा।

चंदूभाअीको ठीक अुत्तर दिया है। संन्यासमें क्या रखा है?

भूलाभाअीका पत्र। ठीक है। हो सके तो फाड़ डालें।

आज अधिक नहीं लिखूंगा। आज अुपवास का दिन[1] है, यह तो मैं लगभग भूल ही गया था।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
सत्याग्रह छावनी
बोरसद

९६

वर्धा
७-४-'३५

भाअी वल्लभभाअी

मणिलाल कोठारीसे मिल हुये मथुरादासमें अुदारताकी हद हो गयी। वे अपने स्वभावके अनुसार चलें, हम अपने स्वभावके अनुसार। व्यवहारमें हिंसाकी परिसीमा हो गयी मानता हूं। हमारी अहिंसाकी हद कहां? हिंसाकी हद हो सकती है अहिंसाकी तो है ही नहीं। जिसीलिये वह अजेय है। यह भाषा पांडित्य जैसी भासने क्यों? परन्तु यह पांडित्य नहीं है। मनमें के अुद्गार आते हैं। मेरे मनमें जो विचार

१. ६ अप्रैल अर्थात् राष्ट्रीय सप्ताहका पहला दिन।

रातको भले ही कट लें। हम भिन्न भिन्न (जमीन) वापस लेंगे। मुझे बुलाना तो आपके ही हाथमें है। मेरा जुलूस हरगिज न निकालें। बोरसद ले जाना हो तो ले जाइये।

आपका स्वास्थ्य फिर न बिगड़े तो अच्छा।

मणि मावजीके मुआवजेकी बात लिखती है सो क्या बात है?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
सत्याग्रह छावनी
बोरसद

६८

वर्धा
१०-४-३५

भाई वल्लभभाई

आपकी पत्रिकायें रोज होती जा रही हैं। अंधेरी कोठरी ठीक, लगी है। ऐसी तो कितनी ही हैं। जिसकी सजा हम भोग रहे हैं। आप कर रहे हैं वही सच्चा काम है।

देवशर्माका पत्र साथमें है। मुझसे जो कुछ मिलनेकी आशा थी वह मिल गया। आपमें शक्ति आ रही होगी।

महुवे[1] का प्रयोग ठीक कर रहे हैं। परिणाम बताइये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
सत्याग्रह छावनी
बोरसद

---

१ सूर्योदयसे पहले महुवेके पेड़के नीचे गिरे हुये आठ-दस महुवे उस समय पू० बापू खाया करते थे।

९९

अिंदौर,
२२-४-३५

भाओी वल्लभभाओी

आपका भाषण पढ़ लिया। यह काम नहीं देगा। जिस समय सरकारकी नीतिकी चर्चा आपने जिस स्वरमें की है अुस स्वरमें नहीं हो सकती। यह युग सरकारकी नीति या जमींदारोंकी नीतिका निरीक्षण करनेका नहीं परंतु आत्म-निरीक्षण करनेका है। अपना घर साफ करने और रखनेका है। अिसलिये अिस समय हमें क्या करना चाहिये अिसके सिवाय आप मेरे मुंहसे और कुछ सुननेकी कम ही आशा रखें। अिस प्रस्तावनाके बाद मुझे तो यही समझमें आता है कि किसानोंका कर्तव्य बताया जाय और सरकारका नाम तक न लिया जाय। अभी किसीको अिस वक्त मूक पाना ही अुचित है। परंतु अगर यह बात आपको न सूझे तो फिर हृदयका स्वामी जो सुझाये वही बोलिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
जबलपुर

---

१ २७ अप्रैलको होनेवाले अलाहाबाद प्रान्तीय किसान सम्मेलनके लिये तैयार किया गया भाषण।

१००

वर्धा
२२-४-३५

भाओी वल्लभभाओी

सुबह तो आपको अेक पत्र लिखा ही था। अुसके बाद जितना लिखना पड़ा कि अब दायें हाथसे लिखा नहीं जाता।

मुन्शीको (पार्लियामेन्टरी) बोर्डके मंत्री बनानेकी आवश्यकता मालूम हो तो देख लीजिये। क्या अंसारीके निकल जानेसे भूलाभाओी अध्यक्ष बनेंगे? राजाजीको किसी भी तरह समझाया जा सके तो समझाअिये। डॉ. बिधान भी निकल गये क्या?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
जबलपुर

१०१

वर्धा
५-५-३५

भाओी वल्लभभाओी

आपका तार मिला। २५ तारीखको वहां पहुंच जाअूंगा। २१ तारीखको पहुंचूं तो हर्ज तो नहीं है न? २२ तारीखको बम्बअीमें कमला (नहरू) से मिल तो ३१ तारीखको सवेरे शायद वहां पहुंचूंगा। लिखिये वहां कितने दिन रोकनेका विचार है। कमसे कम दिन रोकें।

राजाजीकी थकावटका पार नहीं है। अिसमें अुनका दोष भी क्या बताया जाय? जिसका मन थक जाय अुसे क्या अवरोध रखा जा सकता है? आप और राजेन्द्रबाबू वगैरा अिन्हें त्यागपत्र देंगे? जो

९६

अिन्दौर,
२२-४-'३५

भाअी वल्लभभाअी

आपका भाषण पढ़ लिया। यह काम नहीं देगा। अिस समय सरकारकी नीतिकी चर्चा आपने जिस रूपमें की है अुस रूपमें नहीं हो सकती। यह युग सरकारकी नीति या जमींदारोंकी नीतिका निरीक्षण करनेका नहीं परंतु आत्म-निरीक्षण करनेका है। अपना घर साफ करने और रखनेका है। अिसलिअे अिस समय हमें क्या करना चाहिये अिसके सिवाय आप मेरे मुंहसे और कुछ सुननेकी कम ही आशा रखें। अिस प्रस्तावनाके बाद मुझे तो यही समझमें आता है कि किसानोंका कर्तव्य बताया जाय और सरकारका नाम तक न लिया जाय। अभी दिल्लीको अिस वक्त भूल जाना ही अुचित है। परंतु अगर यह बात आपको न सूझे तो फिर हृदयका स्वामी जो सुझाये वही बोलिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
जबलपुर

---

१ २७ अप्रैलको होनेवाले अलाहाबाद प्रान्तीय किसान सम्मेलनके लिअे तैयार किया गया भाषण।

है वे जब तक काम चले चलाअिये। किसी ढंगसे किया जा सके तो खुशीसे कांग्रेस पर कब्जा कर ले।[1]

---

१ यह पैरा पू॰ बापूके नीचे लिखे पत्रके अुत्तरमें है

सत्याग्रह छावनी
बोरसद

पूज्य बापू, २-५-३९

आपका पत्र मिला। राजाजीको न रोका जा सके यह दुःखकी बात है। मेरा मत यह था कि निकलना हो तो सभीको अेक साथ निकल जाना चाहिये। अिस तरह अेकके बाद अेक निकलनेका अनर्थ होता है। और बाकी रहनेवालोंकी शक्ति क्षीण होती जाती है। आपके निकल जानेके बाद हमारी मंडलीमें अेक-दूसरेके साथ जुड़े रहकर समूहमें काम करनेकी जरूरत थी। जमनालालजी बीमार हैं। राजाजी जाय तो फिर हमारा दो तीन जनोंका यह सब घसीटते रहना व्यर्थ है। सोशलिस्टोंने अिनके त्यागपत्रका बड़ा अनर्थ किया। बम्बअीके अखबारोंमें तो अिस बातको भारी भगदड़की शुरूआतके रूपमें चित्रित किया गया। अैसा करनेवाले हमारे ही आदमी हैं। अिसलिअे अिस तरह अेकके बाद अेक त्यागपत्र देकर बाकी लोगों पर सब भार डालना मुझे केवल आत्महत्या करने जैसा लगता है। परंतु राजेन्द्रबाबू तो जैसा कहनेवाला मिल जाय वैसा ही मान लेनेवाले ठहरे, अिसलिअे मैं हार गया। मुझे जबलपुरमें कहते थे कि मेरी बात सही है। यहां आप दोनोंके साथ सहमत हो जाते हैं। तो फिर अब मेरे लिअे कहनेको रह ही क्या जाता है?

भूलाभाअीकी भी मुश्किल बढ़ती जा रही है। राजाजीका बड़ा सहारा था। जिस प्रकार भगदड़ मचानेसे आखिर मनुष्योंके दिमाग फिर जाते हैं। डॉ॰ चंदूलालने जबलपुरसे आकर बम्बअीमें जो भाषण दिया वह कार्यसमिति पर गंभीर आरोप लगानेवाला था। वहां अुन्होंने अेक-अेक प्रस्ताव पर समितिके साथ मत दिया था। परंतु

जमनाप्रकाशने आपको जो पत्र भेजा है उसकी नकल मुझे बतानेके लिये उसने प्रभावतीको भेजा है। वह किस बारेमें है? आप कैसा क्या बोले हैं?

आठवले[1] यहां आये थे। वे गये। मुझसे भी उन्होंने वही बात कही जो आपको लिखी है।

अब तो खांसीका जोर कम हो गया होगा। आपमें शक्ति आ गयी?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
सत्याग्रह छावनी
बोरसद

यह सोशलिस्टोंकी एकता और हमारी छिन्नभिन्नताका मूल परिणाम जान पड़ता है। जिस प्रकार हम हरेक ग्राममें लोकमतको बिगाड़ते हैं उसके बनिस्बत तो मैं यही ज्यादा पसन्द करूंगा कि हम सभी निकल जायें।

हमारी राय यह है कि अगर आपका २१ तारीखको बम्बई जाना हो और २४को यहां आना अधिक अनुकूल हो तो सूचीके अनुसार कार्यक्रम रखा जाय। अगर पहले आना अधिक अनुकूल हो तो तारसे खबर दीजिये। नहीं तो मितीके अनुसार २८ को सुबह यहां आनेका तय रखिये।

वल्लभभाईके प्रणाम

महात्मा गांधीजी
मगनवाड़ी
वर्धा (सी पी.)

[1] श्री रावजी आठवले। गुजरात विद्यापीठमें और फिर सेठ भोलाभाई जेसिंगभाई आर्ट्स कॉलेजमें संस्कृतके अध्यापक।

१०२

वर्धा
११-५-'३५

भाअी वल्लभभाअी

रिस्मीके बारे लिखने वाला मजाक ठीक नहीं मानता। अिसमें लोगोंको कुछ मिलता नहीं। अभी लड़ाअी तो है नहीं।

अमृतलाल (सेठ)का पत्र मिल गया। मैंने लिखा है कि अपने अखबारमें कुछ प्रगट करें तो अच्छा।

बाकी आप महादेवके पत्रसे जानना। अिस वक्त तो खूब काममें फँसा हूँ। अेण्ड्रूज है। हैरिसोन और विल्किन्सन[1] कल आये। और लोग आ रहे हैं। २१ तारीखको मुश्किलसे तैयार हो पाअूँगा। महादेवको साथ लाना असम्भव दीखता है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
सत्याग्रह छावनी
बोरसद

---

१ कु० मिस अेलेन विल्किन्सन। १९३२ में मजदूर दलकी तरफसे ब्रिटिश पार्लियामेण्टकी सदस्या। यहाँके मजदूरोंकी जाँच करनेके लिअे अेक प्रतिनिधि-मण्डल आया था अुसमें वे १९३२ में हिन्दुस्तान आयी थीं।

बिमलीका रस और हरी भाजीके बजाय नीमके पत्ते पीस कर लेता हूं। आजकल यहांके बगीचेके आम लेता हूं। बम्बओके तो पके तक नहीं। वे बम्बओमें बोरसदमें हरगिज नहीं।

महादेवको यहां छोड़ना ही पड़ेगा। जरूरत हुआी तो मेरे यहां लौटने पर तुम्हें भेज दूंगा। शेष सब मिलने पर।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
सत्याग्रह छावनी
बोरसद

१०४

वर्धा
२-५-१९

भाओश्री वल्लभभाओ

आपके विचार मुझे छोड़ते ही नहीं। काका अभी यहीं हैं। अुनके हाथमें सब कुछ सौंपकर महादेवके साथ आ रहा हूं। मुझे यह विचार परेशान कर रहा था कि आपको यदि अभी ही काम है तो बादमें तुम्हें भेजकर क्या करूंगा। जिसलिओ काकासे बात की और अुन्होंने भार अुठाना स्वीकार कर लिया।

और बातें तो जब मिलेंगे तब या ठेठ बोरसदमें करेंगे। बुधवारके दिन तो शायद आपको और मुझे बातें करनेका कोअी वक्त ही न रहने दे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
श्रीराम मैन्शन
सैंडहर्स्ट रोड बम्बओ

वर्धा,
४-६-४५

भाई वल्लभभाई

मुझे आपको लिखना था या सूरतमें परन्तु वहां वक्त कहांसे मिलता? रास्तेमें असंभव था और कल लिख ही न सका। वापसीका सफर कठिन निकला। मुसाफरोंमें मुश्किलसे जगह मिली। रात बैठे बैठे बीती।

अपनी आंतोंका इलाज तुरन्त कीजिये। अभी तो रोग मामूली ही है। तुरन्त अच्छा हो सकता है। समय न खोइये।

कानूगा[1] ने आपकी मारफत आम भेजे हैं। [illegible][2] को मृदुला भेज रही होगी।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
बंबई

१ श्री बलवन्तराय कानूगा। अहमदाबादके प्रसिद्ध डॉक्टर।
२ [illegible] समय [illegible] भेजते थे।

वर्धा
११ ३५

भाअी वल्लभभाअी

आपका पत्र मिला।

* * *

क्वेटा[१] के मामलेमें अब क्या किया जाय? सभीको निकाल रहे हैं, जिसलिअे जानेकी बात ही न रहने दी। जहां जाकर या बिना सरकारवाले जा रहे हैं वहां तो लोग मदद दे रहे हैं। जिससे ज्यादा हम क्या करें? जैसा राजेन्द्रबाबूको वैसा ही मुझे भी कल तार मिला है। अब तो हमारे लिअे मौन धारण करनेकी बात ही रह गयी है।

भारत-मंत्रीके कार्यक्रममें जो तब्दीली हुअी[२] अुसे मैं शुभचिह्न नहीं मानता। सप्रू साहबका प्रमाणपत्र देखा होगा। किसके आगे दुखड़ा रोयें? अुन्होंने जिस बिलकी[३] निन्दा की थी। अब वे ही जिसका स्वागत कर रहे हैं।

राजेन्द्रबाबू १२ तारीखको आ रहे हैं। चार घण्टे ठहरेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
श्रीराम मेन्शन
सैंडहर्स्ट रोड बम्बअी

---

१ १९३५ में हुआ क्वेटाका भूकम्प। भूकम्प पीड़ित लोगोंको मदद देनेके लिअे किसी कांग्रेसवालेको वहां नहीं जाने दिया गया था। अिस कारण हिन्दुस्तानमें बड़ा शोरगुल मचा था।

२ जेटलैंडकी जगह सेम्युअल होरकी भारत-मंत्रीके रूपमें नियुक्ति हुअी अुसीका अुल्लेख है।

३ हिन्दुस्तानके शासन-विधानमें महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करनेवाला बिल जो अिण्डिया बिलके नामसे मशहूर था और जिसमें प्रान्तीय स्वराज्य दिया गया था।

वर्धा
१७-६-३९

भाओीश्री वल्लभभाओी

टोटका तो टोटका ही है। जब गया तो तीर, वर्ना तुक्का तो है ही। अब तो सिर्फ रसदार फलों पर कुछ दिन बितायें तो न दवा चाहिये न दूसरा कुछ। दस्त न आये तो पिचकारी लेनी ही चाहिये। कमोड काममें न लेना तो आपकी ज्यादती ही कही जायगी। अिसमें बीमार और सेवा करनेवाले दोनोंकी सहूलियत है। कमोड तो शुरू कर ही दीजिये।

अेण्ड्रूज कल आ रहे हैं। अेक दो दिन रहकर जायेंगे।

आजकल यहां मनुष्योंकी काफी विविधता है। कुमारप्पाके भाओी भारतन् आये हैं।

वसुमती[1] बोचासण छोड़नेकी तैयारीमें थी। अुससे शिवाभाओी[2] ने ठहर जानेका आग्रह किया है। मैंने लिखा है कि सचमुच ही अुसकी जरूरत हो तो खुशीसे अेक वर्षके लिये वहां रहे। अिस बारेमें आपको कुछ सुझाना हो तो मणिसे कह दें। आपके अक्षरोंकी अभी आशा नहीं रखूंगा। बीमारी झट मिटनी ही चाहिये।

अच्छे होने पर यहां आअिये। राजेन्द्रबाबू तो आयेंगे ही। जमनालाल भी जुलाओीमें पहुंच जायेंगे। अुस समय ठंडक भी काफी होगी। अब यह सख्त गरमी तो नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बओी

---

१ अेक आश्रमवासी बहन।

२ श्री शिवाभाओी गोकुलभाओी पटेल। बोचासण वल्लभ विद्यालयके आचार्य।

१०६

वर्धा,
२१ ९ ३५

भाअी वल्लभभाअी

मैंने जरा भी धीरज नहीं छोड़ा। परन्तु वैद्योंकी बात मेरे गले नहीं अुतरती। वे नीमहकीम जैसे होते हैं। अुनकी दवा लग जाय तो तीर। जिसमें फंसकर अच्छे भी कैसे हों? हिन्दुस्तानमें प्रख्यात वैद्य तो गणनाथ सेन हैं। अुनका भी यही हाल समझिये। जिनके पास कुछ दवाअियां होती जरूर हैं परन्तु अुनका असर खतम होने पर सब शून्यवत् हो जाता है। अिसमें आपको लगानेमें कंपकंपी छूटती है। मैं देखता हूं कि मालवीयजी और मोतीलालजी भी अन्तमें डॉक्टरोंके घर गये। लेकिन आप अच्छे हो गये हों तब तो मुझे कुछ कहना ही नहीं है। महादेवको जब मरजी हो बुला लें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बअी

मगनवाड़ी
वर्धा,
२७-१-३५

भाऔ वल्लभभाऔ

महादेव हों या न हों अिसलिये आप ही को लिखवाता हूं। मुझे बयान[1] मिल गया और मैंने पढ़ लिया। दूसरी डाकका अिन्तजार कर रहा था। वह भी नहीं आयी। बा भी पत्र लेकर नहीं आयी। बादमें तार दिया।

मुझे बयान जरा भी पसन्द नहीं आया। अुसमें हकीकतोंके बजाय केवल दलीलोंका मिश्रण है। पहला पैराग्राफ ही अटपटा लगा अिसलिये मैंने तार दिया। अभी शामको ४ बजे डाक मिली और यह लिखवा रहा हूं। मैं देख रहा हूं कि हमारी कमेटी बनानेकी बात आपको पसन्द आयी है। अिससे मैं खुश हुआ क्योंकि मैं मानता हूं कि यह कमेटी हमें बहुत मदद दे सकती है। कारण डॉक्टरोंकी राय तो स्वतंत्र मानी ही जायगी। बाकी आपके पत्रके अुत्तर यही है अिसलिये अधिक लिखनेकी जरूरत नहीं रह जाती। जो बयान तैयार हो अुसे मेरे देख लेनेके बाद ही भेजा जाय तो अच्छा।

महादेवके पास सारी तफसीलें आ गयी हों तो वहीं ही बयान वहां तैयार कर लें अथवा अेक दिन और महादेवको रोकनेकी जरूरत मालूम हो तो रोक लीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाऔ पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बओ

---

१ बोरसद प्लेग-निवारण कार्य सम्बन्धी।

१११

मगनवाड़ी
वर्धा
१-७-३५

भाओ वल्लभभाओ

आपका पत्र मिला। महादेवने आपको व्यर्थ ही घबरा दिया है और खुद भी घबरा रहे हैं। मैंने तो केवल हरिलाल (गांधी) को चेतावनी दी थी कि वह मेरे साथ वादविवाद न करे और करेगा तो शायद मुझे खा बैठेगा। अुसने वादविवाद छोड़ना सीखा है, अिसलिये अपने आप ही बैठ गया है। जो विनय माँग गया है अैसा माफ़ीनामेका पत्र आया है। अिसलिये आपका न आना हो तो अुसे आये हुये आज पांच दिन हो गये। अुसके आगमनेका असर भी आघात नहीं पहुंच सकता। जिस तरह नागरीक तो वह करता ही रहता था। जीवन-परिवर्तनका कुछ आभास हुआ, अिसलिये मैंने अुसके बारेमें आशा अवश्य बांधी थी। परन्तु ढोंग कब तक चल सकता है? आप बिलकुल निश्चिन्त रहिये। मैं हरगिज अुपवासादिका कदम नहीं अुठाअुंगा। अब तो अुठानेकी कोअी बात भी नहीं रही। दूसरी तरह स्वास्थ्य अच्छा ही है और काफी सावधानी रखकर चल रहा हूं। अन्तमें तो हरि करे सो होय। जब तक अुसे मुझसे सेवाकार्य लेना है तब तक कोअी हानि नहीं होगी। और जब समय आ जायगा तब कोअी भी अुपाय काम नहीं देगा। हिन्दुस्तानका तो खेद ही है। मगर कहीं भी निराशाका चिह्न नजर नहीं आता। ओश्वर सब अच्छा ही करेगा।

अच्छे हो जायं तब मुकाम शायद यहीं रखना ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बओ

वर्धा
२१-७-३५

भाई वल्लभभाई

लाहोरमें क्या हो रहा है? कुछ समझ पड़ता है? किसका दोष है? बीमा कंपनियोंकी तो बाढ़ आ गयी है।[1] मुझे तो जरा भी पसन्द नहीं। परन्तु क्या करें? कांग्रेसके नाम पर बहुत बुरे यह भयानक काम है। परन्तु जिस चीजको देखते रहनेके सिवाय और क्या किया जाय?

* * *

स्वच्छ आदमी है। मान-अपमानका तो विचार तक हम ऐसे कामोंमें कैसे कर सकते हैं?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बई

---

१ सन १९३२की लड़ाई जारी थी तब देशमें धोखेबाजी करनेवाली बहुतसी फर्जी बीमा कंपनियां बनी थीं। उनके विरुद्ध पंजाबमें कांग्रेसके कार्यकर्ताओंकी तरफसे आन्दोलन चलाया गया था।

११३

वर्धा,
११-८-४५

भाओ वल्लभभाओ

आपका पत्र मिल गया। सरकारकी अनुमति लेकर मुझसे आज तकका सारा पत्रव्यवहार छाप दिया जाय। कमेटीकी नियुक्ति करनेवाला पत्र भी छपा जाय। यह सब छापकर हमें तो सबूत देनेमें लग जाना चाहिये। कस्तूभाओ का शरीर काम देने लायक हो गया हो तो अच्छा ही है। वे यहाँ आ सकते हैं या नहीं इसके बारेमें मुझे पूरी शंका है। कुंवरके बारेमें तो मुझे अच्छा लगेगा। मिस्त्री और बहादुरजी हों तो काफी होगा। तीसरे जरा कमजोर हों तो भी हर्ज नहीं।

बलवन्तरायकी बात समझ गया। हम तो जो उचित है सो करते रहें। सर्वेन्ट के लेख पर नजर डाली थी। पूरा पढ़नेका समय भी नहीं था। राजेन्द्रबाबू यह लेख ले गये हैं।

का पता मालूम हो सके तो उनका पत्र उन्हें भेज दीजिये।

महादेवके लिए तो साथमें सब कुछ भेज रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

विठ्ठलभाओवाले रुपयोंके बारेमें कोओ विचार सूझे हों तो बताइये।

सरदार वल्लभभाओ पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बओ

१ स्व. सर लल्लूभाओ शामलदास। आज समयके बम्बओके अर्थमंत्री श्री वैकुंठभाओ महेताके पिता।

११२

वर्धा,
२१-७-३५

भाअी वल्लभभाअी

लाहोरमें क्या हो रहा है? कुछ समझ पड़ता है? किसका दोष है? बीमा कंपनियोंकी तो बाढ़ आ गअी है।[1] मुझे तो जरा भी पसन्द नहीं। परन्तु क्या करें? कांग्रेसके नाम पर बट्टा लगे यह भयानक बात है। परन्तु जिस चीजको देखते रहनेके सिवाय और क्या किया जाय?

*   *   *

स्वच्छ आदमी है। मान-अपमानका तो विचार तक हम अैसे कामोंमें कैसे कर सकते हैं?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बअी

---

[1] जब १९३२ की लड़ाअी जारी थी तब देशमें धोखेबाजी करनेवाली बहुतसी फर्जी बीमा कंपनियां बनी थीं। अुनके विरुद्ध गुजरातमें कांग्रेसके कार्यकर्ताओंकी तरफसे आन्दोलन अुठाया गया था।

वर्धा
११-८-३५

भाअी वल्लभभाअी

आपका पत्र मिल गया। सरकारकी अनुमति लेकर मुझसे आज तकका सारा पत्रव्यवहार छाप दिया जाय। कमेटीकी नियुक्ति करनेवाला पत्र भी छापा जाय। यह सब छापकर हमें तो सबूत देनेमें लग जाना चाहिये। लल्लूभाअी[1] का शरीर काम देने लायक हो गया हो तो अच्छा ही है। वे पहुंच जा सकते हैं या नहीं अिसके बारेमें मुझे पूरी शंका है। कुंवरजी आयें तो मुझे अच्छा लगेगा। गिरधर और बहादुरजी हों तो काफी होगा। तीसरे जरा कमजोर हों तो भी हर्ज नहीं।

बलवन्तरायकी बात समझ गया। हम तो जो अुचित है सो करते रहें। सर्वेन्ट के लेख पर नजर डाली थी। पूरा पढ़नेका समय भी नहीं था। राजेन्द्रबाबू वह लेख ले गये हैं।

का पता मालूम हो सके तो साथका पत्र अुन्हें भेज दीजिये।

महादेवके लिखे तो साथमें सब कुछ भेज रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

विठ्ठलभाअीवाले वसीयतके बारेमें कोअी विचार सूझे हों तो बताअिये।

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बअी

१ स्व० सर लल्लूभाअी शामलदास। अेक समयके बम्बअीके अर्थमंत्री श्री वैकुंठभाअी महेताके पिता।

११४

वर्धा
१५-८-'३५

भाओ वल्लभभाओ

आपका पत्र मिला। दूसरा कोओ न कोओ मिल ही जायगा। हमें बहुत जल्दी नहीं। महादेवको जब तक जरूरत हो तब तक रख सकते हैं। यहां तो जैसे-तैसे काम चला लेंगे। राजकुमारी और खुरशेद यथाशक्ति सहायता कर रही हैं। अधिकांश अंग्रेजी पत्र राजकुमारी निपटा लेती हैं। वे २१ तारीखको वापिस जायेंगी। खुरशेदबहन तो अभी यहां हैं ही।

राजेन्द्रबाबू आज गये। साथमें मथुराबाबू और गोरखबाबू[1] भी थे। जमनालालजी आज शामको अुधर आ रहे हैं।

सातके बजाय चौदह पुड़ियां लेकर भी (पीलियेके रोगसे) सर्वथा मुक्त हो जायं तो अच्छा ही है। जो करना हो अुसे पूरा ही करना ठीक है।

अेण्ड्रूजको दूसरे दर्जेमें भेजा यह ठीक किया। यहां अुन्हें भूखा रखा तभी तो वहां आप बिठा सके। अगर वहां बिठाया होता तो आज अुन्होंने खटिया पकड़ ली होती जैसे अलाहाबादमें पकड़ ली थी।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बओ

---

१ बिहारके अेक कार्यकर्ता।

११५

वर्धा

१९-८-३५

भाअी वल्लभभाअी

आपका पत्र मिला।   के बारेमें   को लिख रहा हूं। अैसी घटनायें मनुष्यको नास्तिक बना देती हैं। अिसका अिलाज तो यही है कि जो जाग्रत हैं वे अधिक जाग्रत बनें।

जयकर[1]ने अभी पूनामें भाषण दिया था। अुसमें तिलक स्वराज फंडकी कड़ी आलोचना की गयी है। अुसकी रिपोर्ट हरिभाअू[2]ने भेजी है। मैंने जयकरसे पुछवाया है कि क्या यह रिपोर्ट सही है? जवाब आने पर लिखूंगा।

अुन श्रमजीवीका पत्र और अुसका जवाब साथमें है।

बापूके आशीर्वाद

के नामका पत्र साथमें है। अुनका पता तलाश करके यह अुन्हें भेज दें।

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बअी

---

१ श्री मुकुन्दराव जयकर। नरम दलके अेक मुख्य नेता।

२ श्री हरिभाअू फाटक। पूनाके कांग्रेसी कार्यकर्ता।

११६

वर्धा
१८-८ ४५

भाअी वल्लभभाअी

साथमें   का पत्र है। अिस बेचारेको तो कमेटीका कोअी पता ही नहीं। आपने कोअी कदम अुठाया क्या?

किशोरलालने कल कहा कि आपको सख्त बवासीर हो गअी है और अब खून भी जाने लगा है। ऑपरेशन कराना पड़ेगा। यह तो शरीरके भीतर अिकट्ठी हुअी गन्दगीका नतीजा है। मुझे पूरी बात लिखिये। आपकी अिस हालतमें ऑपरेशन भी अच्छा तो नहीं कहा जा सकता। अिसलिअे अुसके बिना काम चल सके तो चला लेना ठीक होगा। गौरीशंकरकी या डॉ॰ (दिनशा) महेताकी मदद लें तो ठीक होगा। शायद गौरीशंकर अच्छी मदद कर सकें। कितने ही लोग केवल पेट अच्छा करके ऑपरेशनसे बच जाते हैं। अहमदाबादके नीमहकीमकी गोदमें सिर रखा तो मरे ही। अिस प्राकृतिक नीमहकीमकी गोदमें सिर रखा जाय। आप बीमार रहें यह हमें पुसा नहीं सकता। अमृतलाल कैसे हैं?

बापूके आशीर्वाद

साथमें परीक्षितलालका पत्र है। यह आपके पढ़ने लायक है। दोनों मामलों पर।

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बअी

११७

वर्धा
२०-८-'३५

भाओ वल्लभभाओ

आपका पत्र मिला। अच्छी कमेटी[1] बन गओ। काम तुरत निपट जाय जिसीमें लाभ है।

* * *

मोरारजी और चंदूभाओ यहां २५ तारीखको सबेरे पहुंच रहे हैं।

आपकी बवासीरका क्या हाल है?

कुमारप्पामें अभी बुखारकी कुछ न कुछ निशानी बाकी है। आज सिविल सर्जनको दिखलानेवाला हूं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बओ

---

१ प्लेग-निवारण सम्बन्धी कमेटी। सरदारने बोरसदमें प्लेग निवारणके सिलसिलेमें जो काम किया था उसके लिओ सरकारकी तरफसे यह आक्षेप किये गये थे कि वह काम [illegible] था। जिन आक्षेपोंके उत्तरमें यह कमेटी बनाओ गओ थी।

११८

वर्धा
२१-८-३५

भाअी वल्लभभाअी

शर्तें[1] तो कल ही तैयार कर ली थीं और भाअी वैकुण्ठ साथ ले जा रहे हैं। अुनके साथ बात भी कर ली है।

साथमें 'सांस'की कतरन भेज रहा हूं। अैसी हलचलें तो अभी और भी चलने ही वाली हैं। कमेटी काम करने लग जाय तो छुटकारा मिले।

कुमारप्पाके हलके ज्वरसे सिविल सर्जन घबरा गये हैं। वे बम्बअीमें जांच करानेको कहते हैं। वे दो-तीन दिनमें वहां जायेंगे। फिर शिमला भेजनेका विचार कर रहा हूं। राजकुमारीका निमंत्रण है। कुमारप्पाकी जांच डॉ॰ जीवराजसे करायें। आप वहां हैं अिसलिअे मैं किसी औरको नहीं लिख रहा हूं। मैंने तो अुन्हें आपके पास रहनेको कहा था। परंतु सूरजी[2] वहां हैं वे अुन्हें घसीट रहे हैं। सहानी (यानी सिविल सर्जन) अुनके गले और फेफड़ोंकी जांच करानेके लिअे कह रहे हैं।

वेलचंद[3] के सोचे हुअे दानके बारेमें आप किसी निर्णय पर पहुंच सके हों तो बताअियेगा। अुनका नरहरिके नामका पत्र साथमें है। मेरा तो अब भी खयाल है कि अुनके दानसे कुछ कुअें अुनकी अिच्छानुसार बनवाकर बाकी रकम ग्रामोद्योगमें ही खर्च की जाय। गुजरातमें हर

---

१ क्वेटा-निवारण कमेटी संबंधी।

२ स्व॰ सेठ सूरजी वल्लभदास। बंबअीके कच्छी व्यापारी।

३ बड़ोदाके स्व॰ वेलचंद बैंकर। अुन्होंने मोहनलाल पंड्याके स्मारकके लिअे अेक लाख रुपयेका दान देनेकी बात की थी। अुनकी दी हुअी रकम खादीके काममें लगाअी गअी थी।

मणि भी यहां है। अन्सारी जैसे डॉक्टर हैं। फिर क्या चाहिये? मैं बिलकुल निश्चिन्त हूं।

कुमारप्पा काम कर रहे हैं। उनके लिये जो करना जरूरी हो वह कीजिये। कल मैंने लिखा है। डॉक्टरी जांच हो जाने पर वापस भेज दें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बई

१२०

वर्धा,
२०-८-'३५

भाई वल्लभभाई

बाबा[1] के गलेकी गिल्टियोंका हाल कल मणिके पत्रसे मालूम हुआ। कितनेक छोकरोंको कितनी बड़ी गिल्टियां? इनका क्या कारण हो सकता है? डॉक्टर कुछ कह सकते हैं?

* * *

दरबार और मास्टर बीमार हैं। ऐसी स्थितिमें क्या मार्ग निकाला? क्या महादेवकी जरूरत है?

मोरारजी और चंदुलाल दो-तीन दिन रहेंगे। अमेरिकाके स्वामी योगानन्द यहां हैं।

१ श्री डाह्याभाईका पुत्र।

२ स्व. गोपालदास अम्बाईदास देसाई। असहयोग-आन्दोलनके दिनोंमें कूद पड़े और रायसांकलीकी जागीर खोयी थी जो पूर्ण स्वराज्य मिलने पर सरकारने उन्हें लौटा दी।

बाबा ठीक हो गया होगा। अभी तो मेरे पास अेक न अेक बैठक होती ही रहती है।

*   *   *

महादेव परसों वापस आयेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बओ

१२२

वर्धा
९ ९ १५

भाओ वल्लभभाओ

आपका पत्र देख लें। मैंने जवाब नहीं दिया। शायद आप जिन्हें पहचान लें। कुछ करने जैसा हो तो कीजिये। आपका बोझ कुछ न कुछ तो हल्का हुआ होगा।

सरकारकी तरफसे पूना-करार[1] के आड़े-टेढ़े ढंगसे भंग होनेके समाचार मेरे कानों पर आ रहे हैं। जो हो काम सो सही।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बओ

---

१ गोलमेज परिषद्के समय साम्प्रदायिक समझौता नहीं हो सका था। अिसलिये ब्रिटिश प्रधानमंत्रीने नये शासन-विधानमें अल्पसंख्यकोंका स्थान निश्चित करनेवाला निर्णय दे दिया था। अुसमें हरिजनोंके लिये पृथक् निर्वाचनकी पद्धति रख दी थी। अिसके विरुद्ध पू. बापूजीने यरवडा जेलमें अुपवास किये थे। अिसके परिणामस्वरूप हरिजनोंका अलग चुनावका तरीका रद्द कर दिया गया और हरिजन नेताओंके साथ जो समझौता हुआ वह पूना-पैक्ट या यरवडा-पैक्टके नामसे प्रसिद्ध है।

लड़का जो बीमार था, अुसकी बाट देख रहा है। वे मानते हैं कि आप अुनसे कांग्रेसके ताज[1] की ही बात करना चाहते हैं। अगर यही बात हो

कभी गांवोंको मिलेगा। जब कि जिस गांवके पीछे पड़नेमें अुल्टा परिणाम आ रहा है। अतः अुन लोगोंको आराम लेने दीजिये। जब तक अुनके गले न अुतरे तब तक अुन्हें शान्त रहने देना अच्छा है। बरसात खतम हो जाय तो फिर और अनेक स्थान हैं। हम अपना प्रयोग किसी और गांव पर आजमाकर अुसे आदर्श बनानेका प्रयत्न करें, तो अुसका फल जरूर मिलेगा। परंतु जिसके लिये हमें अनुकूल क्षेत्र चुनना पड़ेगा। मेरे खयालसे यह जगह — सी पी से दूर होगा।

मोसंबीका भाव अेक नहीं होता। अेक रुपयेसे अढ़ाओ रुपये तक होता है। बीमारीके समय आवश्यक मोसम्बीके भावोंमें पड़नेसे क्या लाभ? जितना जरूरी है अुतना काम तो करना ही पड़ेगा। भावकी कंजूसी करनेसे बीमार आदमीको पता लगने पर वह रस शायद अुसे हजम ही न हो।

यह अस्पतालवाला तो हरकिशनदास अस्पतालमें है। कमरजी अुसे अेक सप्ताह पहले यहां रख आये थे। मुझे यहां सब प्रकारकी अनुकूलता और सुविधा है। किसी तरहकी तकलीफ नहीं। मैं और महादेव देख आये। अस्पताल जिसके बारेमें आलोचना हुआी थी। यह भवनकी जायदाद की गयी मालूम होती है। अुस आदमीकी जितनी चिन्ता करनी चाहिये की जा रही है।

कमेटीका काम बहुत धीमा चल रहा है। जिस रविवारको पूरा हो जायगा अैसी आशा रखता हूं। राजाजीको यहां इन्तजार रखिये। मेरा आना हो सका तो तुरत आ जाअूंगा। अभी तो यह काम पूरा होने तक यहांसे हटा नहीं जा सकता।

बम्बई

जमनालालके प्रणाम

१ कांग्रेसका अध्यक्ष-पद स्वीकार करनेके बारेमें।

तो वह व्यर्थ है। व कहते हैं अुन्होंने मुसाभाओीको कोओी वचन नहीं दिया। वे यह ताज पहननेकी स्थितिमें बिलकुल नहीं हैं। अुन्हें शारीरिक और मानसिक थकावट बहुत है। अुनकी संमतिसे मैंने जवाहरलालसे पुछवाया है। मिलने पर भी आप सोमवार तक आ सकें तो ठीक हो। मंगलवारको अुन्हें जाने ही देना होगा। महादेवका बलवाय अभी खराब है।

मीराका हाल ठीक है मगर वो बखत बुखार चढ़ता है। कुनैनकी कीमत मिसीमिसे जानती है कि अुसी भावमें यहां मिल जाय तो यहींसे लेकर काम चला लूं।

सिरोहीके बारेमें गलतफहमी हो रही है। बातों पर कुछ भी जबरदस्ती नहीं करनी है। चुपचाप काम ही करना है। अधिक बातें मिलने पर। तुरंत लिखना नहीं हो सका तो विस्तारपूर्वक लिखूंगा। जल्दबाजी जरा भी नहीं करूंगा।

बलसाडवाले की बात समझ गया।

कमेटी (प्लेग-निवारण जांच समिति) की रिपोर्टमें जितनी कम दलील होगी अुतनी ही शोभा होगी। विवेचन तो हरगिज न होना चाहिये। महत्त्वकी बातों पर अुसका निर्णय और भविष्यके लिये सूचना अुसे बिलकुल निर्दोष पैम्फलेट बना देंगे। अुसे भी बड़ करना हो तो मने ही कर दें। यह मेरी राय है।

भाभू जमनालालजीकी जालमें रहना मालूम होता है। अुसे बीच मिलते रहे तो काफी है।

या किस्सा बड़ा विचित्र है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बओी

---

१ स्व. दौलतराय गढ़माओी देसाओी।

२५

१२४

वर्धा,
१५-९-३५

भाअी वल्लभभाअी

मणिलाल (कोठारी)का तार मुझे भी परेशान कर रहा था। मैंने तो अन्तमें आपकी सलाहके अनुसार पत्र लिखा है। अच्छा किया आपने महादेवको रोक लिया। मेरी गाड़ी तो दिन-दिन अधिक बेहूदी बनती जा रही है। अुसके मोटे मोटे पहिये और दो-चार दिन धूलकी धर! अब अुसमें रास्ता तय करना है तब अुतावली कैसी? मगर अब तो आप मंगलवारको यहीं पहुंच जायेंगे औसी आशा रखता हूं। अुस दिनके लिये रामजी यहीं रहेंगे। अुसी दिन शामको अुन्हें मुक्ति दे दीजिये।

दिल्लीके बारेमें आप व्यों ही घबरा गये हैं। अिस बारेमें आपको पूरा संतोष दूंगा।

का मामला निपट जाय तो अच्छा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बअी

१२५

वर्धा
११-१-'३९

भाभी वल्लभभाभी

साथमें परीक्षितलालका पत्र है। मालूम होता है अिसे आपने देखा है। मेरी संमतिमें कुछ न कुछ भूल हुआी जान पड़ती है। मुझे सुधारनेसे पहले जरा ज्यादा समय लेनेकी आवश्यकता देखता हूं। मेरे खयालसे जहां हरिजनों पर मार पड़े वहांसे अुन्हें दूसरा कोअी अिन्साफ न मिले तो अुन्हें वह गांव छोड़ देना चाहिये और हमें अुन्हें अिसके लिये प्रोत्साहित करना चाहिये। अिस नीतिको मैं तो बहुत बरसोंसे अपनाता और अुस पर अमल करता रहा हूं। व्यक्तियोंके लिये भी और समूहोंके लिये भी। सन् १९०६ में अिसका प्रचार शुरू किया। सन् १९०८ में अिन विचारोंको लेखबद्ध किया और आज तक अैसी ही सलाह देता आया हूं। धोलका और बोरसदके पासके गांवोंमें जब हरिजनों पर जुल्म हुअे तब भी मैंने यही सलाह दी थी। धोलकामें पट्टणीसाहबने[1] न्याय दिलवाया। बोरसदके पासके गांवोंमें लम्बा मुकदमा चला। हरिजन हार गये। वकीलों और दूसरे सलाहकारोंने कमजोरी दिखाअी और बात अधूरी रह गअी। काविठा[2] के बारेमें कोअी खास कारण हरिजनोंके हिजरत न

---

१ स्व० सर प्रभाशंकर पट्टणी। भावनगरके दीवान।

२ काविठा अहमदाबाद जिलेके धोलका तालुकेका अेक गांव है। वहां गिरासिया जातिकी बड़ी आबादी है। अुन्होंने और दूसरे सवर्ण लोगोंने वहांके हरिजनोंका सामाजिक बहिष्कार किया और अुन पर बड़ा जुल्म किया। अिसलिअे यह प्रश्न अुठा कि हरिजन गांव छोड़ दें या नहीं। बादमें अच्छी तरह समझौता हो गया था।

करनेका हो सकता है। परंतु ये हरिजन सबके सब या अुनमें से कुछ काठियावाड़के सवर्ण लोगोंको चेतावनी देकर निकल जायें तो अिसमें बुराओ क्या है? अिस विचारसरणीके बारेमें हमारे बीच मतभेद हो तो मुझे समझायें। काठियावाड़में कोओ खास परिस्थिति हो तो मैं नहीं जानता। आप वहां हो आये हैं अिसलिओ अिस पर अच्छी रोशनी डाल सकते हैं। हम काठियावाड़ प्रकरणको पूरा हुआ न मानें। जैसा गुजरातमें होता है वैसा अन्य प्रान्तोंमें हमेशा देखनेमें नहीं आता। तामिलनाडमें नायरों व हरिजनोंके बीच अवश्य अैसा है। और तो कहीं भी मैंने नहीं सुना। हमें कुछ न कुछ रास्ता निकालना होगा।

माणकचंद[1] का आम्बेडकर[2] को लेकर यहां आनेका विचार है।

जनवरीमें मैं वहां आअूं, तब तैयार किये जानेवाले कार्यक्रमके बारेमें आपने पुछवाया है। अुसमें भीलबालकोंकी शाला और हरिजनोंके लिअे आम धंधा करनेकी योजनाका समावेश होता है।

आपका ऑपरेशन कराना अुचित हो, तो तुरंत करा लेना ठीक होगा। डॉक्टर न चाहें तो दूसरी बात है।

वेलचर मावेकरके अस्पतालमें मृत्युशय्या पर पड़े हैं। अुन्हें लिखिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
डॉ. कानूगाके बंगले पर,
अेलिसब्रिज
अहमदाबाद[3]

---

१ सेठ माणकचंद हीराचंद। पू. बापूके अेक मित्र।

२ श्री भीमराव आम्बेडकर। प्रसिद्ध हरिजन नेता।

३ यह पत्र भी जीवणजीभाओने अेक आदमीके द्वारा दूसरी डाकके साथ बड़ोदा पहुंचाया। वहांसे पू. बापू आभी रातको स्टीमर मेलसे आयरा गये।

१२६

वर्धा
१४-११-३५

भाई वल्लभभाई,

अब तो आप चलफिर करने लायक हो गये होंगे।[1] आम्बेडकरके मामलेका आपका पत्र सारा ही पढ़ गया। सच्ची है मगर इस समय उन पर इसका कुछ भी असर नहीं हो सकता। मेरी निन्दा किये बिना उनसे रहा ही नहीं जा सकता। इसलिये आपको कैसे छोड़ सकते हैं? लंदनकी तरह यहां भी उनके पीछे अनेक शक्तियां काम कर रही हैं। दुःख इतना ही है कि उनकी धमकियोंसे डरकर इस चीजको बहुत बड़ा स्वरूप दे दिया गया है। इसकी भी चिन्ता नहीं परंतु उसका सदुपयोग होनेके बजाय दुरुपयोग हो रहा है। अस्पृश्यता मिटानेका महाप्रयत्न करनेके बजाय लोग उनकी खुशामद कर रहे हैं। और, हमें इसी वातावरणमें काम करना है। जहां देखो वहीं भय और दुर्बलताका प्रदर्शन है।

पाटडी[2] के मामलेमें आप क्यों कोई कदम नहीं उठा सकते? आपके मंत्री आपसे पूछे बिना जहां तहां सभापति बन सकते हैं?

जनवरी मासमें गुजरातके मेरे कार्यक्रमके विषयमें अब तो समझमें आया होगा। जैसे १२ तारीख अहमदाबाद पहुंचनेकी निश्चित हो चुकी है वैसे २८ तारीख यहां पहुंचनेकी भी निश्चित हो चुकी है। क्योंकि उसी दिन राधाकृष्ण (बजाज) और अनसूया[3] की यहां शादी

---

१ ९ तारीखको पू. बापूका बवासीरका ऑपरेशन बम्बईके पोलीक्लिनिकमें किया गया था।

२ पाटडीमें ८ नवम्बर १९३५ को श्री मोरारजी देसाईकी अध्यक्षतामें पाटडी इलाकेके १७ गांवोंके लोगोंकी परिषद् ब्रिटिश इलाकेके इन गांवोंके फौजदारी-दीवानी अधिकार पाटडीके देसाईको सौंप देनेकी हलचलके विरुद्ध हुई थी।

३ श्री श्रीकृष्णदास जाजूकी पुत्री।

है। जिसलिये कमसे कम कुछ वक्त तक मुझे यहां पहुंच ही जाना चाहिये। जिस कारण गुजरातको अधिकसे अधिक १५ दिन मिल सकते हैं। जितनेमें जो हो सकता हो कीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाभी पटेल
८९, वार्डन रोड,
बम्बभी

१२७

वर्धा
११ १२ ३५

भाभी वल्लभभाभी

आपको बहुत दिनों बाद आज लिख रहा हूं। शायद कौन्सिलोंकी आशाओंका अंत होता हो। जमनालालजी घबरा गये हैं। आप न घबरायें। जानेका समय हो जाय तभी जाजिये। मैं आनन्दमें हूं। मेरी आपकी सबकी डोर मीराके बालम के हाथमें है। यह पेंच खींचना कैसे हम सीखेंगे। वह कब किसीको जानने देता है? प्यारेलाल सकुशल है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाभी पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बभी

---

१ जिसके जवाबमें पू. बापूने महादेवभाभीको जिस प्रकार लिखा था

८९, वार्डन रोड
बम्बभी,
१२ १२ ३५

भाभी महादेव

बापूके हाथका पत्र देखकर आनन्द तो हुआ, परन्तु साथ ही रंज भी हुआ। अभी हाथसे लिखने या लिखवानेका भी लोभ छोडें

वर्धा
४ १ ३६

भाई वल्लभभाई

वहां न आ सकनेका बड़ा दुःख है। परन्तु डॉक्टरोंकी कठिन शर्तें स्वीकार नहीं कर सका। वे मानते हैं वैसी ही खराब तंदुरुस्ती हो, तो न आनेमें ही लाभ है। अब तो थोड़े दिनोंमें हरिजन चंदा छोड़ देना चाहिये। लिखना शुरू कर दें तो किसे लिखें और किसे न लिखें? अिसको कुटुंब बनाकर बैठे हैं अिसलिये बापूजीको सारे शहरकी फिक्र और महात्माको सारी दुनियाकी फिक्र। यहां अभी सबको भूलकर अेक प्रभुजीको ही भजते रहनेमें सार है।

वीरराज और मैं दोनों शनिवारको चलकर रविवार सुबह पहुंचेंगे। मेरा सेवा-शुश्रूषाका काम अब यहां पूरा हो गया है। अब तो पेटको दुरुस्त करनेके लिये मुझे स्वयं जो कुछ करना हो करूंगा।

*   *   *

लिखना ही

वल्लभभाईके प्रणाम

महादेवभाई
वर्धा

१ पू॰ बापूजी चंदा करने गुजरातमें आनेवाले थे। परन्तु वे बीमार हो गये अिसलिये न आ सके। और हरिजन सेवक संघके लिये चंदा कर देनेका भार पू॰ बापू पर डाल दिया। अुसका अेक अंदाजा बजट रु॰ १   का था। पू॰ बापूने सिर्फ अहमदाबादसे दो ही दिनमें लगभग रु॰ ५   अिकट्ठे कर दिये थे।

पूरा करके यहां आअिये। राजेन्द्रबाबूको भी लाअिये। शायद अहमदाबादमें ही आप चंदा पूरा कर लेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
गूजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद

१२९

सेगांव
१-५-३६

भाअी वल्लभभाअी

महादेव आज रवाना नहीं हो सकेंगे। अेक सबल कारण तो तारमें दे दिया है। दूसरा हरिजन का है। अिसे पूरा कर दें तो आप अुन्हें ज्यादा भी रोक सकते हैं। महादेवको सब कुछ समझा दिया है। अिसलिअे यहां अधिक नहीं लिख रहा हूं।

आप अपनी तंदुरुस्ती ठीक नहीं कर लेंगे तो झगड़ा होगा।

सचमुच अिस गांव (सेगांव) का जलवायु अच्छा है। रातको अच्छी ठंडक थी। खाने-पीनेकी सुविधाका ध्यान रखा जा रहा है। परन्तु यह तो फुरसतके वक्त। डॉक्टर (आंबेडकर) और बालचंद सेगांवमें मिले थे। फिर आयेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बअी

१३०

सगांव

११ ९ ३९

भाअी वल्लभभाअी

मझाधमें थोड़ा समय मिला है। अिस बीच मंगलदास¹को पत्र लिख डाला है। समय होगा तो अुसकी नकल महादेव अिस पत्रके साथ रख देंगे। सफरमें आपको तकलीफ नहीं हुअी होगी। काम निपटा कर जल्दी आअिये। घूमने जानेका नियम अवश्य रखें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बअी

१३१

सेगांव

०८-७-३९

भाअी वल्लभभाअी

आप काफी दुःख सहन कर रहे हैं। अब तो ऑपरेशन (नश्तर) करा लिया होगा।

मा दांत जबरदस्त बड़ा जायगा। परन्तु यह मंत्री स्टेट्स कौंसिलमें ही हो तो काम नहीं। अैसा समझ लीजिये कि यह

---

१ श्री मंगलदास पकवासा। बम्बअीके अेक मिनिस्टर। बम्बअी कौंसिलके अध्यक्ष थे। मध्यप्रदेशके भूतपूर्व गवर्नर।

व्यापक वस्तु है। हमारे समाजमें   जैसे बहुतसे मौजूद हैं।
का भंडा फूट गया। अब यह देखना है कि वे क्या करते हैं।

बापूके आशीर्वाद

आप काफी आराम लें भले ही यहां न आ सकें। मेरी तबीयत अच्छी ही है।

सरदार वल्लभभाई पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बई

१३२

सेगांव-वर्धा
१-८-३९

भाई वल्लभभाई

ऑपरेशन[1] ठीक हो गया। सफल हो जाय तो छूटे।

राधारामको मैंने जो जवाब दिया अुसकी नकल तो आपको मिल गयी होगी। आपने अगर अभी तक जवाब न दिया हो तो मेरी सुचना यह है

आपके पत्रमें अुत्तर देने जैसी कोअी नयी महत्त्वकी बात नहीं है। अिसलिअे मुझे अपने पहले पत्रमें कुछ भी जोड़ना नहीं है।

अस्पतालसे जल्दी करके न निकलें। और पूरा आराम लिये बिना काममें न लगें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
८९, वार्डन रोड
बम्बई

---

[1] ता. ३०-७-३९ को पू. बापूकी नाकके हेम्टमका ऑपरेशन पोलीक्लिनिकमें किया गया था।

सेगांव–वर्धा
२४ ११ ३६

भाई वल्लभभाई

आपकी रायसे यहां तो कोअी सहमत नहीं होता। मुझे जवाहरलालका बयान[1] पसन्द आया है। अिससे कम वे क्या कह सकते थे? अिससे ज्यादाकी अुनसे क्या आशा रखें? अिस बार केबिनेटमें रहनेकी बात तो है ही नहीं। समय आने पर देख लिया जायगा। मैं तो मसौदा भेजना नहीं चाहता था। मगर मथुरादासको अिनकार करनेवाला मैं कौन? आखिर तो मामला ही ठहरा। अिसलिअे मुझसे बहुतसा काम निकलवा लि गया है। यह मसौदा आपको पसन्द न आये तो दूसरा तैयार कर लीजिये और ठीक करना लगे उसमें तो कीजिये। मसौदेमें फेरबदल करना अुचित हो तो जरूर करें। जो कुछ करें विश्वासपूर्वक करें, क्योंकि हमें बहुतसी मुसीबत पार करनी होंगी।

शरीर अच्छा कर लीजिये।

सरहद[3] से लौटते हुअे वर्धा होकर जाना हो सके तो आअिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाउसके सामने
बम्बई – ४

---

१ १९३७ की फैजपुर कांग्रेसके अध्यक्ष बननेके बारेमें।

२ पू. बापूका नाम फैजपुर कांग्रेसकी अध्यक्षताके लिअे सुझाया गया था। वह अुन्होंने वापस ले लिया था और कहा था कि पं. जवाहरलालजीको दुबारा अध्यक्ष बनना ठीक होगा। अिस संबंधमें पू. बापूके बयानका मसौदा।

३ सरहद प्रान्तके दौरेके सिलसिलेमें।

सेगांव
५-२-'३७

भाअी वल्लभभाअी

मेरा बायां हाथ आराम चाहता है। सोमवारके लिअे तो मुझे तैयार[1] रखना ही होगा। अिसलिअे और दिन मुझे आराम देता हूं।

आप शरीर पर खूब अत्याचार कर रहे हैं, परंतु सरदारसे कोअी कुछ कह या करा सकता है? स्वास्थ्य बिगाड़ लेंगे तो बहुत भुगतना पड़ेगा। यह तो हुअी प्रस्तावना।

चंद्रशंकर महादेवको लिखते हैं कि पोलाक[2] के नाम मेरा पत्र आपको अच्छा नहीं लगा। पोलाकको पत्र दिये बिना तो छुटकारा ही नहीं था। जवाब तो देना ही चाहिये। वे पत्र मांगें तो वह भी देना ही पड़े। मुझे पता नहीं था कि वे झट वह पत्र छाप देंगे। परंतु अुसमें कोअी नुकसान नहीं हुआ। और मान लीजिये कि हो भी जाय तो वह क्षणिक ही होगा। क्योंकि जो चीज ठीक है अुसके प्रकाशित हो जानेसे हानि हो ही नहीं सकती।

चंद्रशंकरके पत्रमें   के साथ हुअी बातचीतका हाल भी है। वह तो वैसी थी ही नहीं जो पसन्द आवे। परंतु मैं अिसके लिअे जिम्मेदार नहीं हूं। अुसमें मैंने जो कहा अुसका अुलटा ही अुसने किया। मैंने अपनी राय दृढ़तासे बिलकुल अिनकार कर दिया था। आपकी शिकायत करनेको कहा था। यह भी समझाया कि मुझे बीचमें पड़नेका अधिकार नहीं है। अंतमें अेक सिद्धान्तकी बात लिखवाअी। वह अुसने प्रकट कर दी। अुससे हमारा कुछ नहीं बिगड़ता। मैं कोअी झूठ बात

१ सोमवारको पू॰ बापूजीका मौन होता था। अिसलिअे सब कुछ स्वयं ही लिखते थे। सोमवारका बहुतसा समय 'हरिजन' साप्ताहिकों वगैराके लिअे लिखनेमें बिताते थे।

२ हेनरी पोलाक। दक्षिण अफ्रीकामें पू॰ बापूजीके साथ थे।

है तो अुसका क्या करें? रिपोर्ट देखते ही मुझे सख्त अुलहना लिखा परंतु वह आदमी बेहया ठहरा। अुसकी पहुंच तक नहीं दी।

आप चाहते हैं कि मैं अिनकार जाहिर करूं? असा करनेसे अुसकी शामत आ जायगी। आपको किसीसे कहना हो तो कह सकते हैं कि मैंने बीचमें पड़नेसे अिनकार किया था।

अिधर कब आनेवाले हैं?

कांग्रेस कहां करनी है? तैयारी आजसे ही होनी चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बअी – ४

१३५

सेगांव-वर्धा
४-५-३७

भाअी वल्लभभाअी

आप मुझे कहां ले जा रहे हैं? जहां ले जायेंगे वहां आपको बड़ी भारी अशान्ति करनी पड़ेगी। और मैं किसीको रोक नहीं सकूंगा। जाते तो अिसमें हर्ज नहीं, परंतु अिनके बंगले[1] में जाकर ठहरें अुनका खयाल तो करना ही होगा। मीराबहनका नोटिस मिल गया है। अिस बार मैं जहां जाअूंगा वहां वह मेरे साथ आयेगी। मुझे खुदको असा नहीं लगता कि मेरे लिअे समुद्रकी हवाकी आवश्यकता है। बारडोलीमें मुझे जिनके पास रखना अुचित हो अुनमें जरूर अवश्य रखिये। अुसमें रखना हो तो वहां रखिये। परन्तु बड़ी पार्टी हो जाने पर भी आप

१ तीथलमें वह भूलाभाअी देसाअीके बंगलेमें ठहरा था।

सेगांव
५-२-३७

भाई वल्लभभाई

मेरा दायां हाथ आराम चाहता है। सोमवारके लिये तो कुछ तैयार[1] रखना ही होगा। अिसलिये और दिन मुझे आराम देता हूं।

आप शरीर पर खूब अत्याचार कर रहे हैं परंतु सरदारसे कोई कुछ कह या करा सकता है? स्वास्थ्य बिगाड़ लेंगे तो बहुत सुनना पड़ेगा। यह तो हुआ प्रस्तावना।

चंद्रशंकर महादेवको लिखते हैं कि पोलाक[2]के नाम मेरा पत्र आपको अच्छा नहीं लगा। पोलाकको पत्र दिये बिना तो छुटकारा ही नहीं था। जवाब तो देना ही चाहिये। वे पत्र मांगें तो वह भी देना ही पड़े। मुझे पता नहीं था कि वे झट वह पत्र छाप देंगे। परंतु छापनेसे कोई नुकसान नहीं हुआ। और मान लीजिये कि हो भी जाय तो वह क्षणिक ही होगा। क्योंकि जो चीज ठीक है अुसके प्रकाशित हो जानेसे हानि हो ही नहीं सकती।

चंद्रशंकरके पत्रमें   के साथ हुई बातचीतका हाल भी है। वह तो ऐसी थी ही नहीं जो पसन्द आये। परंतु मैं अिसके लिये जिम्मेदार नहीं हूं। अुससे मैंने जो कहा अुसका अुलटा ही अुसने किया। मैंने अपनी राय देनेसे बिलकुल अिनकार कर दिया था। आपसे शिकायत करनेको कहा था। यह भी समझाया कि मुझे बीचमें पड़नेका अधिकार नहीं है। अंतमें अेक सिद्धान्तकी बात लिखवाली। वह अुसने प्रगट कर दी। अुससे हमारा कुछ नहीं बिगड़ता। यों कोई झूठ छाप

---

१ सोमवारको पू० बापूजीका मौन होता था, अिसलिये सब कुछ स्वयं ही लिखते थे। सोमवारका बहुतसा समय 'हरिजन' साप्ताहिकों वगैराके लिये लिखनेमें बिताते थे।

२ हेनरी पोलाक। दक्षिण अफ्रीकामें पू० बापूजीके साथ थे।

थे, तो अुसका क्या करें? रिपोर्ट देखते ही मुझे सख्त अुलहना लिखा, परंतु वह आदमी बेहया ठहरा। अुसकी पहुंच तक नहीं दी।

आप चाहते हैं कि मैं अिनकार जाहिर करूं? अैसा करनेसे अुसकी शामत आ जायगी। आपको किसीसे कहना हो तो कह सकते हैं कि मैंने बीचमें पड़नेसे अिनकार किया था।

बिहार कब जानेवाले हैं?

कांग्रेस कहां करनी है? तैयारी आजसे ही होनी चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाउसके सामने
बम्बअी – ४

१३५

सेगांव–वर्धा
४-५-३७

भाअी वल्लभभाअी

आप मुझे कहां ले जा रहे हैं? वहां ले जानेसे वहां आपको बड़ी पार्टी बर्दाश्त करनी पड़ेगी। और मैं किसीको रोक नहीं सकूंगा। मुझे तो अिसमें हर्ज नहीं परंतु जिनके बंगले[1] में जाकर ठहरें अुनका खयाल तो करना ही होगा। मीराबहनका नोटिस मिल गया है। अिस बार मैं जहां जाअूंगा वहां वह मेरे साथ आयेगी। मुझे अैसा नहीं लगता कि मेरे लिये समुद्रकी हवाकी आवश्यकता है। बारडोलीमें मुझे जितने समय रखना अुचित हो अुतने समय अवश्य रखिये। सूरतमें रखना हो तो वहां रखिये। परन्तु बड़ी पार्टी हो जाने पर भी आप

१ तीथलमें स्व. भूलाभाअी देसाअीके बंगलेमें रहना था।

पूर्ण न मानें तो यह न समझिये कि मेरी तरफसे कोअी अैतराज है। मुझे अत्यंत संतोष जरूर है। अब उनकी सूची यह है

बा कामा मीरा प्यारेलाल महादेव रामाकृष्ण कनु, मनहरलाल शारदा।

आप आराम ले रहे होंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
डॉ. कानूगाके बंगले पर,
अेलिसब्रिज
अहमदाबाद

१९६

सेगांव
११ ६ ३७

भाअी वल्लभभाअी

अच्छा हुआ यह कांटा[1] निकल गया। ठीक राजकुमारीके जैसा ही हुआ। डॉक्टरोंकी अकल खतम हुअी और कुदरत जोरावर बन गअी। मद्रासका किस्सा पढ़ लिया। अैसे अवसर तो आते ही रहेंगे।

---

१ पू. बापू तीथलमें समुद्र तट पर पू. बापूजीके साथ रोज शामको घूमने जाते थे। अेक दिन घूमते हुअे पू. बापूके पैरके तलुअेमें कांटा घुस जानेसे वे पंद्रह दिनसे ज्यादा परेशान हुअे। अंतमें अुस पर अेन्टीफ्लोजिस्टीन लगाया। और तीथलसे बारडोली गये तब अेक दिन स्नान करके पैरके तलुअेको अेक जगह दोनों हाथोंसे दबाया तो पाव अिंचका बबूलका कांटा अूपर निकल आया। अुसे पू. बापूजीके पास भेजा था अुसीके जवाबमें यह लिखा है।

२ मद्रासके मंत्रियोंकी हड़तालके बारेमें।

दिनकररायने[1] वैसोंके प्रति दूसरा व्यवहार क्या हो सकता है? कार्य समितिकी बैठक तो अब २६ से २९ तक हो सकती है। अितना समय बहुत है। अिसमें शक नहीं कि जितनी जल्दी हो अुतना अच्छा।

किशोरलाल कभी बीमार कभी अच्छे रहते हैं। अिसलिये वे मेरे पास नहीं आ सके। मैं जिस दिन आया अुस दिन दो-चार मिनट अुनसे मिला था। सेगांव आनेवाले थे। परंतु बीमारीके कारण नहीं आ सके।

दूसरी तरह आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
न्यू क्वीन्स रोड बम्बअी – ४

१३७

सेगांव–वर्धा
२१ ६ ३७

भाअी वल्लभभाअी

आपका पत्र और जवाहरका जवाब पढ़ लिया। मालूम होता है नरीमान[2] अपनी जोदी हुअी खाअीमें पड़ेंगे। देखें अब वे क्या करते हैं। मुझे जल्दी करनेकी जरूरत नहीं दीखती। कार्यसमितिके सामने

१ श्री दिनकरराय देसाअी। अुस समय भड़ौंच म्युनिसिपैलिटीके अध्यक्ष थे। अब बम्बअी राज्यके शिक्षा-मंत्री हैं।

२ बम्बअी प्रान्तके कांग्रेस दलने नरीमानको नेता नहीं चुना जिसके लिये अुन्होंने पू० बापू पर आक्षेप किये थे और अखबारोंमें अुसका प्रचार होता रहा।

यह बात जानेकी ही। बैठक बहुत देरमें तो होगी परंतु जिसका कोअी अुपाय नहीं है। जो हो सो होने दिया जाय। लोथियन[1]का लम्बा पत्र मिला है। अभी पढ़ नहीं सका हूं। अब आप चलने-फिरने लगे होंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बअी – ४

१३८

वर्धा
११-७-३७

भाअी वल्लभभाअी

नरीमानके मामलेमें आपको चिन्ता करनेकी जरूरत ही नहीं। सब ठीक हो जायगा।

नरीमानका आपको दिया हुआ अुत्तर आने पर अधिक लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बअी – ४

---

१ लॉर्ड लोथियन। अुस समय हिन्दुस्तानके प्रति सहानुभूति रखनेवाले श्रेष्ठ ब्रिटिश राजनीतिज्ञ।

१३९

सेगांव-वर्धा
१४-७-३७

भाअी वल्लभभाअी

अगर आपके मनमें मौलानाके लिअे शंका या भय था तो आपको अुनके बारेमें तार नहीं देना चाहिये था। मैं मानता हूं कि अैसा करनेसे हम बहुतसी आपत्तियोंसे बच जाते। मैं तो अब भी मानता हूं कि अैसा करनेसे हमें लाभ ही हुआ है। आपको याद होगा कि जवाहरलालको भी अैसी चेतावनी दी ही थी। और नोटिस जारी करनेका बोझ तो मैंने ही जवाहरलाल पर डाला था। मैं जो विचार देता रहता हूं अुनका असर मन पर न हो तो अमल करना हरगिज अुचित नहीं। नरीमानको पत्र लिखा है। अुसकी नकल साथ है। अब आपको कोअी बयान नहीं निकालना है। मुझे तो आशा है कि यह काम अच्छी तरह निपट जायगा। जिसकी बुनियाद ही न हो वह कहां तक टिकेगा?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बअी – ४

१४०

सेगांव-वर्धा
१५-७-३७

भाअी वल्लभभाअी

नरीमान संबंधी आपके पत्र पढ़े। मुझे तो कोअी घबराहट नहीं होती। मेरे खयालमें अब आपके लिअे कहनेको कुछ रह ही नहीं जाता। नरीमानको मैंने लिखना शुरू कर दिया है। सार्वजनिक रूपमें कहनेका समय आयेगा तब जरूर कहूंगा। अखबारोंमें आपका कोअी

पत्र नहीं भेजा अिसमें आश्चर्य नहीं। अखबार है ही कैसे? अुनके पत्र लेनेसे हम क्यों खुश हों?

मुन्शी और मूलाभाईके बारेमें तो आप निपट ही लेंगे। अिसमें मेरा दखल नहीं है। गिल्डर आ जायेंगे[1] तो अच्छा ही माना जायगा।

मौलानाको तार देने पर भी जवाब न मिले और अिंतजार करने जितना समय ही न रहे तो दो बातें संभव हैं। अेक तो यह कि जो आदमी ठीक लगे अुसकी नियुक्ति कर दी जाय या यह स्पष्ट घोषणा कर दी जाय कि मौलाना जिसे नियुक्त कर दें सो सही। मौलानाकी दीर्घसूत्रता तो हम जानते ही हैं।

परंतु मुस्लिम मंत्रीका काम मुश्किल है।[2] मेरा विश्वास है कि सार्वजनिक रूपसे के हाथमें रख देनेसे ही हम बच सकते हैं। जवाहरलालको क्यों न तार कर दें कि मौलानाकी संमति भेजें या खुद दूसरा सुझाव दें।

आप साथियोंको काफी खासी-खासी भेजने लगे हैं।[3] वे हमारे लिये कहीं न कहीं जगह खाली रखेंगे। अल्लामियां हमारा यहांका काम जब पूरा हुआ समझेगा तब हमें पल भरमें अुठा लेगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाउसके सामने
बम्बई – ४

---

१ बम्बईके मंत्रि-मंडलमें।

२ बम्बई प्रान्तके मंत्रि-मंडलमें मुस्लिम मंत्रीकी नियुक्तिका मामला था।

३ पू. बापूके सबसे बड़े भाई सोमाभाईके देहान्तका जिक्र है।

१४१

वर्धा
१७-७-३७

भाओ वल्लभभाओ

आप व्यर्थ दुःखी होते या गुस्सा करते हैं। नरीमान-कांडमें आपका बयान जल्दी ही निकलना चाहिये था। कार्यसमितिके प्रस्तावके अलावा सदस्योंसे और क्या आशा रखी जा सकती है? द्वेषभावसे हमला होते रहें तो अुसका क्या अुपाय है? नुकसान भी अन्तमें नरीमानके सिवाय किसका होगा? हां यह मानता हूं कि अगर हम गुंडाशाहीके वश हो जायं तो बहुतोंकी हानि हो सकती है। परंतु आप या दूसरे कोओ अुसके वश थोड़े ही होनेवाले हैं? साथमें नरीमानके नाम मेरे पत्रकी नकल और सर गोविन्दराव[1] के पत्र भेज रहा हूं।

धीरज और शान्ति न छोड़ें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बओ – ४

---

१ स्व० सर गोविन्दराव मडगांवकर। बम्बओ हाओकोर्टके निवृत्त जज।

पता नहीं अैसा अिसमें आश्चर्य नहीं। अखबार है ही कैसे? अुनके पत्र लेनेसे हम क्यों चुप हों?

मुन्शी और मूलाभाअीके बारेमें तो आप लिख ही देंगे। अिसमें मेरा दखल नहीं है। फिरकर आ जायेंगे[1] तो अच्छा ही माना जायगा।

मौलानाको तार देने पर भी जवाब न मिले और अिन्तजार करने जितना समय ही न रहे तो दो रास्ते संभव हैं: अेक तो यह कि जो आदमी ठीक जंचे अुसकी नियुक्ति कर दी जाय या यह स्पष्ट घोषणा कर दी जाय कि मौलाना जिसे नियुक्त[2] कर दें सो सही। मौलानाकी दीर्घसूत्रता तो हम जानते ही हैं।

परंतु मुस्लिम मंत्रीका काम मुश्किल है। मेरा विश्वास है कि सार्वजनिक रूपसे   के हाथमें रख देनेसे ही हम बच सकते हैं। जवाहरलालको क्यों न तार कर दें कि मौलानाकी संमति भेजें या खुद दूसरा सुझाव दें।

आप भाअियों[3]को काफी जल्दी-जल्दी भेजने लगे हैं। वे हमारे लिअे कहीं न कहीं जगह खाली रखेंगे। अल्लामियां हमारा यहांका काम जब पूरा हुआ समझेगा तब हमें पल भरमें अुठा लेगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बअी – ४

---

१ बम्बअीके मंत्रि-मंडलमें।

२ बम्बअी प्रान्तके मंत्रि-मंडलमें मुस्लिम मंत्रीकी नियुक्तिका मामला था।

३ पू. बापूके सबसे बड़े भाअी सोमाभाअीके देहान्तका जिक्र है।

१४१

वर्धा
१०-७-३७

भाअी वल्लभभाअी

आप व्यर्थ दुःखी होते या गुस्सा करते हैं। नरीमान-कांडमें आपका बयान जल्दी ही निकलना चाहिये था। कार्यसमितिके प्रस्तावके अलावा सदस्योंसे और क्या आशा रखी जा सकती है? बेरहम हमले होते रहें, तो अुसका क्या अुपाय है? नुकसान भी अन्तमें नरीमानके सिवाय किसका होगा? हां यह मानता हूं कि अगर हम दुराचारीके वश हो जायं तो बहुतोंकी हानि हो सकती है। परन्तु आप या दूसरे कोअी अुसके वश थोड़े ही होनेवाले हैं? साथमें नरीमानके नाम मेरे पत्रकी नकल और सर गोविन्दराव[1] के पत्र भेज रहा हूं।

धीरज और शान्ति न छोड़ें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बअी – ४

---

[1] स्व. सर गोविन्दराव मडगांवकर। बम्बअी हाअीकोर्टके निवृत्त जज।

१४२

सेगांव
१९-७-३७

भाअी वल्लभभाअी

यह रु ५ के वेतन[1] की बात बड़ी विचार करने लायक है। मैं तो रु ५ और मकान किराया तथा दीवान और मंत्रीमें कोअी फर्क नहीं मानता। मगर आपके विचार अलग हों तो बताअिये।

नरीमानसे मैं निपट रहा हूं यह आप देख रहे होंगे। अब आप तो सब कुछ मुझ पर ही छोड़ दीजिये। मैं जल्दी-जल्दी सार्वजनिक वक्तव्य नहीं निकालूंगा। आप अशान्त न हों।

बापूके आशीर्वाद

काकाभाअी

यह पत्र बापू जहां हों वहां तुरंत पहुंचा देना।

महादेव

१४३

सेगांव-वर्धा
२२-७-३७

भाअी वल्लभभाअी

ठक्करबापाके पत्र फैसलेमें से कोअी शब्द रह गये दीखते हैं। आपने फैसला पढ़ लिया? अगर रह गये शब्द अर्थको न बदल देते हों, तो अैसा लगता है कि बापाके फैसलेके अनुसार म्युनिसिपैलिटी १८५ आदमियोंको रखनेके लिअे बंधी हुअी है। फिर भी दिनकररायके पत्रकी बाट देख रहा हूं। वे चाहें तो वकीलसे जो अर्थ निकलता हो, वह कराकर भेजें। मेरे लिअे मुरव्वत दिखानेकी बात नहीं है। परंतु यदि १८५ वाला अर्थ निकलता हो तब तो और हो ही क्या सकता

१ प्रान्तके मंत्रियोंका वेतन।

है? मैं चाहता हूं कि समय मिल जाय तो आप यह फैसला पढ़ लें। साथमें नकल भेजता हूं। मैं जल्दी भी नहीं करूंगा। देर भी न होनी चाहिये।

क्या नरीमान-कांड शान्त हो गया?

बापूके आशीर्वाद

फैसलेके १० और ११ वें पन्ने पर मैंने लकीर लगाई है। उतना ही पढ़ लें तो काफी होगा। यह सोचिये म्युनिसिपैलिटीको रु १५६ वेतन अधिक देना पड़ेगा। परंतु यदि २५ आदमी घटा दिये जाय तो २५ × ११ = २७५ – १५६ = ११९ इससे हर माह साफ बचा सकती है। यह अर्थ आपके फैसलेका हो सकता है? अगर आपने कहीं भी गलती न खायी हो तो यही परिणाम आता है न?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाउसके सामने
बम्बई–४

१५४

सेगांव–वर्धा,
२४-७-३७

भाई वल्लभभाई

नरीमानके बारेमें मुझे जो सूझता है करता रहता हूं। अब आप तो किस बातसे मुक्त ही जाइये। बाद जैसे समझे लें। हम सब प्रतिज्ञाके भूखे हैं? सबसे-महर्षियोंको तो यही समझाना है नहीं। कोई किसीको कोई बात कहे, कोई कैसे कहे न।

१ करीब म्युनिसिपैलिटीके कर्मचारी हड़ताल कर दी थी। सुमन टाउनहालको पंच बनाया गया था।

अैसे काम लेनेके हमारे ढंगमें भेद है। मेरे कहनेका अर्थ अिसके सिवाय और कुछ नहीं है। यह कौन कह सकता है कि कौनसा ढंग बेहतर है? यह तुलना तो परिणामसे भी नहीं की जा सकती। मेरे ढंगसे कोअी परिणाम न निकले या भुलटा दिखाअी देनेवाला निकले तो भी मैं अुसका त्याग नहीं करूंगा। अुसी तरह आप अपने ढंगको न छोड़ें। यह तो हृदयकी बात ठहरी। जिसे जो जंचे वही वह करेगा न? मेरे पत्रोंसे यह अुपर आयगा अैसी आशा मैं नहीं रखता।

बापूके आशीर्वाद

मेरी तबीयत अच्छी ही है। थोड़ा आराम चाहिये सो लेता हूं।

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बअी – ४

१४५

सेगांव
१०-७-३७

भाअी वल्लभभाअी

यह आपको बताना था पर रह गया। अिसका अुत्तर आप ही दें तो अच्छा। या अुन्हें भुला दें। आपका काम पूरा हो जाय तो बादमें यह पत्र अपनी टिप्पणीके साथ राजाजीको भेज दें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बअी – ४

१४६

सेगांव
१-८-३७

भाअी वल्लभभाअी

आपको तार तो कल ही किया जा सकता है न? हो सकेगा तो महादेव करेंगे। मेरा बयान झटपट तो नहीं निकल सकता। अुसके समय पर ही निकलेगा। मेरा कलका पत्र देख लें। सारा पत्रव्यवहार प्रकाशित किया जाय या नहीं अिसका निश्चय नहीं हो सकता। विश्वासघातका सवाल नहीं, सवाल यह है कि हमारे दृष्टिकोणको यह शोभा देगा या नहीं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
डॉ. कानूगाके बंगले पर,
अेलिसब्रिज अहमदाबाद

१४७

सेगांव–वर्धा
१-८-३७

भाअी वल्लभभाअी

यह पत्र निमाडन वाले मैयरसाहब आपको देंगे। अिनके पास डॉक्टर सत्यपाल[1] की चार चिट्ठियां थीं। अुनमें से अेक आपके लिये है। मैंने अुनसे कह दिया कि मुझसे तो कुछ हो नहीं सकेगा। आप सरदारके पास जाअिये। वे आपकी बात ध्यानसे सुनेंगे। और अुनको

१ पंजाबके अेक नेता।

बात पंच भजी तो शायद मदद भी दिला सकें। सब कुछ सुनकर अुचित हो सो करें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बअी – ४

१४८

सेगांव–वर्धा,
२२-८-३७

भाअी वल्लभभाअी,

मेरे नाम जयंती[1]का पत्र आया है। यह साथ भेज रहा हूँ। मैंने अुसे लिखा है कि मुझे लिखनेके बजाय सीधे आपको लिखना अधिक अच्छा होगा। आपके पत्रका अुत्तर आप ही लिखें तो ठीक।

नरीमानकी तरफसे पत्र आ रहे हैं। अुनकी नकलें आपको नहीं भेजता। जिनकी भेजना अुचित होगा अुनकी तो भेजूंगा ही।

मेरे स्वास्थ्यके बारेमें चिन्ता न करें। मैं आराम ले रहा हूँ और अब अुसमें वृद्धि कर दूंगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पूना

---

१ स्व. जयंती पारेख। आश्रमके अेक विद्यार्थी। बादमें साम्यवादी दलमें शरीक हो गये।

१४९

सेगांव
२१-१-३७

भाअी अब्बासभाअी

आपके पत्र तो पढ़ता ही रहता हूं। पांच दिनकी यात्रामें आप टिक रहे यही मुझे आश्चर्य लगता है। दो व्यक्ति अेकसे काम करनेवाले जिकट्ठे हो जायं तब दोनोंकी ही शामत समझिये! कभी-कभी कमजोर और बलवानका साथ निभ सकता है। बलवान मनुष्य भी थोड़ीसी दया तो कमजोर पर करता ही है। जिसलिये दोनोंका कुछ काम हो सकता है। लेकिन आप लोग तो सेरके सिर पर सवा सेर जैसे जिकट्ठे हो गये। जिसलिये आपकी यात्रा देखने लायक तो जरूर रही होगी। ठीक है। कमला-स्मारकका कर्ज तो अदा कर दिया। फिर क्या हर्ज? रकम भी अच्छी — समयानुसार — जिकट्ठी हो गयी यह कह सकते हैं। मिल-मालिकों (अहमदाबादके) ने काफी दिया होगा?

काठियावाड़ परिषद्की बात समझा।

नरीमान-कांडको भूल जाजिये। आपकी चिन्ता मुझे और भी कम है। मैंने बहादुरजीको सौंप दी है। यह तो व्यवस्थित काम करनेवाला आदमी दीखता है। अेक अेक कागज रोज नियमित समय निकालकर पढ़ता है और नोट करता है। यह सब पढ़नेमें ही दो सप्ताह लगेंगे। अुनके पास मुकदमोंका ढेर होता है। अुनमें से समय निकालकर जिसे भी अेक मुकदमा समझकर पढ़ता है। जिसलिये समयका हिसाब न लगाकर जो होता हो सो होने दीजिये। अखबारोंके हल्लेमें बिलकुल न पड़िये।

१. पं. जवाहरलाल नेहरू अुस समय गुजरातके दौरे पर आये थे। वहां सरदारने कमला नेहरू स्मारकके निमित्तसे अर्पित करा दिया गया था। अुस समय चन्दा खूब ही बढ़ाया था। अमीरा जिस है।

मैं मानता हूँ कि हमें सिपाहियों और नायकोंके लिये सब सुविधायें कर देनी चाहियें। अुन्हें हमारे नियमके अनुसार चलना होगा।

अब दरबारके बारेमें। दरबारका गांव दरबारकी खातिर नहीं परंतु हमारी प्रतिष्ठाकी खातिर वापस लेना होगा। दरबार तो अपनी राजधानी खोकर बोड़ाकी राजधानी ले बैठे हैं। ढसाके दरबारको कोअी जानता न था। बोड़ाके दरबारको सब पहचानते हैं। अिसलिये रावजीभाअी[1] के पत्रका मुझ पर कोअी असर नहीं होता। अुससे तो मनमें रोष पैदा होता है। परंतु बुढ़ापेमें रोष नहीं किया जा सकता और मैं ठहरे हुए, अिसलिये रोषको शान्त कर देता हूँ। अुसकी चिन्ता अुनसे हमें अधिक होनी चाहिये और है। अुनकी चिन्ता दरबारकी मित्रताके कारण है। हमें तो दरबार मित्र न होते और अेक राष्ट्रीय सेवक ही होते तो भी अुनकी चिन्ता करनी पड़ती। और न करते तो कांग्रेसमें हमारी दो कौड़ीकी भी कीमत न रहती। परंतु यह सब तो आत्मश्लाघा जैसा हुआ। रावजीभाअी जो समाचार दे रहे हैं, अुन परसे यह कहा जा सकता है कि हम अभीसे काम शुरू कर दें। मैंने तो यह सोचा था कि नया मंत्रि-मंडल जरा जम बैठे तब शुरू करें। अब मेरे खयालसे गुजरात प्रान्तीय समितिके अध्यक्षके नाते आप या अुसके मंत्री प्रधान मंत्रीको लिखें कि कांग्रेसकी प्रतिष्ठाकी खातिर दरबारका मामला हाथमें लें और गवर्नरसे सिफारिश करायें कि दरबारको अपना हक वापस मिले। मैं मानता हूँ कि मांगनेसे ही मिल जायगा। मुझे अिसमें दखल नहीं देना पड़ेगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
स्वराज्य आश्रम
बारडोली

[1] श्री रावजीभाअी मणिभाअी पटेल। दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहमें पू० बापूजीके साथ थे। आजकल गुजरात प्रान्तीय समितिके मंत्री हैं।

१५१

सेगांव-वर्धा[1]

भाअी वल्लभभाअी

अभी तो नहीं सोचता कि जिन्ना (कायदे आजम) से मिलना होगा। जवाहरलाल यह नहीं चाहते।

अैसा जान पड़ता है कि मुझे कलकत्ते जाना पड़ेगा। जवाहरलालका विशेष आग्रह है। बंगालकी तरफसे भी है। सुभाष भी लिख रहे हैं। और मैं जाऊं तो नजरबन्दोंसे भी मिला जा सकता है। अिसलिओ वहां जाते हुओ रास्तेमें नहीं तो वहां पहुंचने पर तो हम मिलेंगे ही न?

नरीमान-कांडमें अब आप शुरू ही बहादुरजीकी मदद लिये तो ठीक हो कि जल्दी निपटारा हो जाना अच्छा है।

जो तूफानी आंधी चल रही है अुस पर यदि काबू नहीं पा लिया गया तो मेरी समझमें तो बाजी हाथसे गयी ही समझिये। यह

किसान बड़ी कठिनाअीमें आ गये थे। कर्जकी रकममें कोअी फेरबदल न होने पर भी भावोंकी मंदीके कारण कर्जका भार बढ़ गया था। अैसी स्थितिमें किसानोंको राहत पहुंचानेके लिओ क्या किया जाय अिस बारेमें जांच करके अपनी सिफारिशें पेश करनेके लिओ बम्बअी सरकारने कांग्रेसी मंत्रि-मंडल बन जानेके बाद, अेक अभ्यास समिति मुकर्रर की थी। अुसमें भी वैकुण्ठभाअी भी थे। अिस कमेटीकी सिफारिशों परसे किसानों पर जारी किये गये अदालतके हुक्मनामोंकी तामील अेक खास वक्त तक मुल्तवी रखनेका प्रस्ताव किया गया था। लेन-देनका नियमन करनेवाला कानून और कर्जदार किसानको राहत दिलानेवाला कानून बादमें बनाया गया था।

[1] यह पत्र अखबारके पहले पन्नेपर लिखा हुआ है।

काबू रखनेके लिअे हमसे जो भी बन पड़े कर गुजरें। न मानें तो हमें हट ही जाना है। आजकी रचनामें थोड़ासा काबू थोड़ोंकी जगहों पर हो, वह हमारे लिअे व्यर्थ है। सारे तंत्र पर नियंत्रण हो तो ही काम आने लगेगा। अुसे कायम रखनेके लिअे हमसे जितना होगा करेंगे।

सदानंद[1]के बारेमें आपको लिखना ही रह गया। वह आया था। अुसे तो फिरसे अखबार निकालना था और न्यूज अेजेंसी जमानी थी। मैंने अिसमें जरा भी प्रोत्साहन देनेसे अिनकार कर दिया। अिस मिथ्या प्रवृत्तिमें फिर न पड़नेको समझाया। यह बता दिया कि वह पड़े या न पड़े मुझे तो भूल ही जाय। मुझे भूल जाना तो अुसने स्वीकार कर लिया। पर मुझे किसी भी तरह पश्चात्ताप होता नजर नहीं आता। मेरी दृष्टि तो यह है कि हम लोगोंमें नये अंग्रेजी अखबारोंकी झंझटमें पड़ना अुचित नहीं।

निम्बकरको जवाब जरूर देना चाहिये। मैंने अितना ही कहा कि अखबारोंकी मदद करना मैं कुछ नहीं कर सकता।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाउसके सामने
बम्बई – ४

१ श्री [illegible]

१५२

सेगांव
(पुर्जा)
१ ११ ३७

मैं तो अिस नतीजे पर पहुंचा हूं कि सभी हट जायं[1] तो अच्छा है। अगर सब न भी हटें तो भी आपको हट जाना चाहिये। जमनालाल तो हटेंगे ही। फिर रहा कौन? दिवाला ही निकला समझिये। भूलाभाओ भी हटेंगे। परंतु आप हट जायं तो हर्ज नहीं। मौलानाका साथ मिलना ही चाहिये औसा मुझे नहीं लगता। अगर आप न हटे तो अन्तमें मजबूरन् हटनेकी नौबत आयेगी। मैंने देख लिया है कि सुभाषका कोअी ठिकाना नहीं। फिर भी अुनके सिवाय और कोअी अध्यक्ष नहीं बन सकता। मैंने रातको खूब विचार किया अिस समय भी किया। दूसरे जो जीमें आये करें। मेरा विश्वास है कि आपको तो हट ही जाना चाहिये। प्रान्त अपना फर्ज न समझें तो कुछ होगा नहीं और सारी बाजी हाथसे चली जायगी।

नरीमानका मामला फिरसे ताजा तो करेगा परंतु संभव है वह कुछ भी न करना चाहे। तो भी दूसरे सदस्य क्या कहते हैं? देव[3] और पटवर्धन[4] क्या सोचते हैं? भूलाभाओ क्या कहते हैं? अकेला ही कहे तो अिससे क्या? आधार तो पक्का है।

मैसूरका प्रकरण और बढ़ता जानेवाला मतभेद। कमेटीमें औसे तीव्र मतभेदोंके कारण हरगिज नहीं रहा जा सकता यह स्पष्ट करना चाहिये। पूरा विचार आप खुद ही अकेले बैठकर कर लीजिये। अिसमें किसीकी समझदारी काम नहीं आ सकती। मैं तो रहनेमें

---

१ कांग्रेसके अध्यक्ष पं. जवाहरलाल नेहरूके साथ मतभेद होनेसे कांग्रेसकी कार्यसमितिमें से।

२ आगामी हरिपुरा कांग्रेसका।

३ श्री शंकरराव देव। अुस समय कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्य।

४ श्री अच्युत पटवर्धन। अुस समय समाजवादी नेता और कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्य।

अकस्मात ही देखता हूं। गुजरातको संभाला जा सके तो ठीक है। यह भी जाय तो भले चला जाय। प्रवाहमें बह जानेमें नाश है।

मैंने तो सुझाव दिया है कि आप सबको त्यागपत्र दे देना चाहिये। आप सब इकट्ठे होकर विचार कर लीजिये। आजका काम हरगिज ठीक नहीं माना जा सकता। और भी जो कुछ हुआ सब अनुचित है। वे खुशीसे अपनी केबिनेट बनावें। वे विरोधमें इस्तीफा दें तो ठीक न होगा। यह भी उनके सामने स्पष्ट कर देना चाहिये। राजेन्द्रबाबू आज यहां आ रहे हैं। यह सब सुनकर मुझे लगता है कि आप सबको त्यागपत्र दे देना चाहिये। मेरे पास तो समय नहीं है। शक्ति नहीं है। मुश्किलसे टिका हुआ हूं। आप ही को आज रातमें बात कर लेनी चाहिये।

१५३

विट्ठलनगर हरिपुरा
२ [illegible]

भाई वल्लभभाई

देवदासने आपके आजके भाषणकी शिकायत की। फिर [illegible] आया। उसने भी बड़े दुःखसे बात की। मेरे खयालसे [illegible] बहुत गरम था। समाजवादियोंको यों नहीं [illegible]। [illegible] आपको अपनी भूल मालूम हो तो सुभाषकी [illegible] पर जाकर उनके आंसू पोंछ देना और [illegible]। [illegible] जैसे हममें हरगिज नहीं हुआ था [illegible]। [illegible] है। उनकी जबानमें तलवार हरगिज [illegible]। [illegible] बरती थी परन्तु समय ही न रहा।

बापूके आशीर्वाद

१ यह हरिपुरा ही [illegible] बोलनेके मामलेके बारेमें है।

१५४

सेगांव
१८-४-१८

भाओी वल्लभभाओी

कल प्यारेलालने तो आपको लिखा ही है। आप आ जायें तो कुछ बातें कर लें। यहाँ आना जाय तो कोओी हर्ज नहीं। गुजरातकी जमीनोंके बारेमें बात हुओी है। नागपुरके विषयमें अब अधिक करना असंभव मानता हूं। नियमानुसार जो होता हो वह होने दीजिये। सारी नीति विचार करने योग्य है। मुझे यहां २८ तारीखको तो जाना ही है जिनाभाओी[1] से मिलने। अुसी दिन लौटनेका विरादा है। आप जालभाओी[2] को देखने गये थे? अुन्हें पत्र लिखते हैं?

मैं चाहता हूं कि मुझे समुद्र किनारे न ले जायें। ६-७ मओीको तो वर्धामें आपकी कमेटी है। सचमुच मेरी तबीयत अच्छी रहती है। महादेव २०-२१ तारीखको लौटने चाहियें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बओी – ४

१ कायदे आजम जिना।
२ स्व. दादाभाओी नौरोजीके पौत्र

१५५

सेगांव–वर्धा
२३-४-'३८

भाई वल्लभभाई

आपका पत्र मिल गया। महादेव आज शामको पहुंचने चाहियें। मैं २८ तारीखको प्रातःकाल वहां पहुंचनेकी आशा रखता हूं। उसी दिन पवनारमें भी आसानीसे मिलना हो सकता है। उनसे ९ या ११ बजे मिलनेको तैयार हूं।

बड़े लाटके साथ ओडीसा बंगालकी जमीन और कैदियों वगैराकी काफी बातें हुई हैं। ओडीसा[1] का मामला विचारणीय है।

गुजरातमें थोड़ा समय तो कभी भी बिताया जा सकता है। शायद मईमें सरहद जाना पड़ेगा। आज खानसाहबको तार दिया है। महादेवके आने पर और पता लगेगा।

मेरा स्वास्थ्य अभी तो अच्छा काम दे रहा है।

बापूके आशीर्वाद

जिनाके बारेमें मेरा खयाल ऐसा है। न मिले तो उसका उलटा अर्थ हुए बिना नहीं रहेगा।

सरदार वल्लभभाई पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाउसके सामने
बम्बई – ४

---

१ ओडीसामें नौकरी कर रहे अफसरको कामचलाऊ गवर्नर बनानेकी बात चल रही थी।

सेगांव
१८ ४ ३८

भाई वल्लभभाई

कल प्यारेलालने तो आपको लिखा ही है। आप आ जायं तो कुछ बातें कर लें। नहीं आया जाय तो कोई हर्ज नहीं। पुरुषोत्तमकी जमीनोंके बारेमें बात हुई है। नागपुरके विषयमें अब अधिक करना असंभव मानता हूं। नियमानुसार जो होता हो वह होने दीजिये। सारी नीति विचार करने योग्य है। मुझे यहां २८ तारीखको तो जाना ही है जिनाभाई[1] से मिलने। उसी दिन लौटनेका विचार है। आप जालभाई को देखने गये थे? उन्हें पत्र लिखते हैं?

मैं चाहता हूं कि मुझे समुद्र किनारे न ले जायं। १-७ मईको तो वर्धामें आपकी कमेटी है। सचमुच मेरी तबीयत अच्छी रहती है। महादेव २०-२१ तारीखको लौटने चाहियें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाउसके सामने
बम्बई – ४

१ कायदे आजम जिन्ना।
२ स्व. दादाभाई नौरोजीके पौत्र

१५५

सेगांव–वर्धा
२३ ४ ३८

भाई वल्लभभाई

आपका पत्र मिल गया। महादेव आज शामको पहुंचना चाहिये। मैं २८ तारीखको प्रातःकाल वहां पहुंचनेकी आशा रखता हूं। मुन्शी दिन पहलेसे भी आसानीसे मिलना हो सकता है। तुमसे ९ या ९॥ बजे मिलनेको तैयार हूं।

बड़े लाटके साथ उड़ीसा सरकारकी जमीन और कैदियों वगैराकी काफी बातें हुई हैं। उड़ीसा[1] का मामला विचारणीय है।

गुजरातमें थोड़ा समय तो कभी भी बिताया जा सकता है। शायद मईमें सरहद जाना पड़ेगा। आज खानसाहबको तार दिया है। महादेवके आने पर और पता लगेगा।

मेरा स्वास्थ्य अभी तो अच्छा काम दे रहा है।

बापूके आशीर्वाद

जिनाके बारेमें मेरा ख्याल ठीक है। न मिलूं तो उसका उलटा अर्थ हुए बिना नहीं रहेगा।

सरदार वल्लभभाई पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाउसके सामने
बम्बई – ४

---

१ उड़ीसामें नौकरी कर रहे कमिश्नरको कामचलाऊ गवर्नर बनानेकी बात चल रही थी।

१५६

सेगांव-वर्धा
१८-७-३८

भाअी वल्लभभाअी

शरीफ[1] मेरे साथ कल अेक डेढ़ घंटे बैठे थे। अिस अर्सेमें अुन्होंने आपके साथ हुआ पत्र-व्यवहार दिखलाया। अुनका सवाल यह था कि आपने सर मन्मथ का जिनके विषयमें कुछ लिखा था अुसका जवाब नहीं है। मैंने तो कह दिया कि सरदार सर मन्मथको कभी नहीं लिखेंगे। फिर भी मैंने आपसे पुछवाकर तय करनेको कहा है। अब मुझे बताअिये।

जिनाभाअी (कायदे आजम जिन्ना) को देनेका अुत्तर तैयार कर रखा है। आये तब देख लीजिये।

बाकी तो महादेव लिखते ही रहते हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बअी – ४

---

१ मध्यप्रदेश (अुस समय मध्यप्रान्त) के कांग्रेसी मंत्रि-मंडलके मुस्लिम मंत्री। हरिजन लड़की पर बलात्कार करनेके बारेमें अेक मुसलमानको सजा हुअी थी। अिन्होंने मंत्रीकी हैसियतसे गवर्नरसे सिफारिश करके अुसे मियादसे पहले छुड़वा दिया था। अिस कारण कांग्रेस कार्यसमितिने अुनसे मंत्रीपदसे अिस्तीफा दिलवाया।

२ सर मन्मथनाथ मुकर्जीको अुपरोक्त मामलेमें कांग्रेस कार्य समितिके निर्णय पर फैसला देनेके लिये पू. बापूजीके सुझावसे पंच बनाया गया था। अुन्होंने शरीफके विरुद्ध फैसला दिया था।

तो ठीक हो। जैसा आपको ठीक लगे वैसा कीजिये। अधिक विचार करता हूँ तो मन सत्याग्रहकी ओर ही झुकता है। अहमदाबादका विचार करने लायक हो सकता है। वहां सभी विरुद्धमें ही नहीं होंगे। परन्तु यह सिर्फ आपके विचारके लिये ही है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाउसके सामने
बम्बई – ४

१५६

सेगांव—वर्धा
१-८-३८

भाई वल्लभभाई

राजकोट गये यह अच्छा हुआ। आपके साथमें गये[1] थे तब तक वैसा ही होगा। 'चूड़गर'[2] की शिकायत है। वे जो चाहे करें। अगर राज्योंकि लोगोंमें दम होगा वे आकाशमें नहीं उड़ेंगे और बाहरकी आशा रखे बिना शांतिसे लड़ेंगे तो अवश्य जीतेंगे। और अगर कांग्रेस नीतिका मार्ग नहीं छोड़ेगी तो रियासतोंमें भी अहिंसाका जोर बढ़ेगा।

आप तो बीमार पड़ने ही वाले थे।[3] आप दूसरोंके सरदार होकर अपने तो दास ही मालूम होते हैं। सच्चे सरदार तो न होने

१ ता ५-८-३८ को पू. बापू काठियावाड़ राजनैतिक परिषद्के प्रसंगमें राजकोट गये थे। वीरावालाके मिलनेके लिये पत्र आया था इसलिये पू. बापू और दरबार साहब उनसे मिलने गये थे।

२ सौराष्ट्रके एक प्रसिद्ध बैरिस्टर।

३ राजकोटसे लौटने पर पू. बापूको बुखार आ गया

है जो खुद अपने पर सख्ती भोगें। आप समय पर काबू रखें और सब बातोंके नियम बना लें तो बहुत मिलेंगे। कठौती धूंडे पर हंसती है, यों समझकर यह बात भुला न दें। महादेव अपने कियेका फल भोग रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाउसके सामने
बम्बई – ४

१९०

सेगांव–वर्धा
४ १ ३८

भाई वल्लभभाई

दवाओंके बल पर कहां तक टिकेंगे? कौनसा रोग लेना है? धीरे चलिये। हो सके उतना काम कीजिये। शरीरको संभालिये नहीं तो हिंसाके दोषी माने जायेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाउसके सामने
बम्बई – ४

---

१ महादेवभाई भी ज्यादा काम करके बीमार हो गये थे उसका जिक्र है।

तो ठीक हो। जैसा आपको ठीक लगे वैसा कीजिये। अधिक विचार करता हूं तो मन बम्बअीकी ओर ही झुकता है। अहमदाबादका विचार करने लायक हो सकता है। वहां कभी भिन्दठे ही नहीं होंगे। परन्तु यह सिर्फ आपके विचारके लिये ही है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाउसके सामने
बम्बअी – ४

१५९

सेगांव-वर्धा
१५-८-३८

भाअी वल्लभभाअी

राजकोट गये यह अच्छा हुआ। आपके भाग्यमें यश है तब तक वैसा ही होगा। ढूगर भी दिलासफूल है। वे जो चाहें करें। मगर राज्योंके लोगोंमें दम होगा वे आकाशमें नहीं उड़ेंगे और बाहरकी आशा रखे बिना शांतिसे लड़ेंगे तो अवश्य जीतेंगे। और अगर कांग्रेस नीतिका मार्ग नहीं छोड़ेगी तो रियासतोंमें भी कांग्रेसका जोर बढ़ेगा।

आप तो बीमार पड़ने ही वाले थे। आप दुसरोंके सरदार, लेकिन अपने तो दास ही मालूम होते हैं। सच्चे सरदार तो वे होंगे

---

१ ता ५-८-३८ को पू बापू काठियावाड़ राजनैतिक परिषद्के लिये राजकोट गये थे। दीवानका मिलनेके लिये पत्र आया था जिसलिये पू बापू और सरदार साहब अुनसे मिलने गये थे।

२ सौराष्ट्रके अेक प्रसिद्ध बैरिस्टर।

३ राजकोटसे लौटने पर पू बापूको बुखार आ गया था।

तो ठीक हो। जैसा आपको ठीक लगे वैसा कीजिये। अधिक विचार करता हूं तो मन बम्बईकी ओर ही झुकता है। महाबलेश्वरका विचार करने लायक हो सकता है। वहां कभी झिकझिके ही नहीं होते। परन्तु यह सिर्फ आपके विचारके लिये ही है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाउसके सामने
बम्बई – ४

१५६

सेगांव-वर्धा
१५-८-३८

भाई वल्लभभाई

राजकोट गये यह अच्छा हुआ। आपके भाग्यमें यश[1] है, तब तक वैसा ही होगा। चूडगर[2]की विद्यामूल है। वे जो चाहे करें। अगर राज्योंके लोगोंमें दम होगा वे आकाशमें नहीं उड़ेंगे और बाहरकी आशा रखे बिना शान्तिसे लड़ेंगे तो अवश्य जीतेंगे। और अगर कांग्रेस नीतिका मार्ग नहीं छोड़ेगी तो रियासतोंमें भी कांग्रेसका जोर बढ़ेगा।

आप तो बीमार पड़ने ही वाले थे। आप दूसरोंके सरदार, लेकिन अपने तो दास ही मालूम होते हैं। सच्चे सरदार तो वे होते

---

१ ता. ५-८-३८ को पू. बापू काठियावाड़ राजनैतिक परिषद्के लिये राजकोट गये थे। दीवानका मिलनेके लिये पत्र आया था इसलिये पू. बापू और सरदार साहब उनसे मिलने गये थे।

२ सौराष्ट्रके एक प्रसिद्ध बैरिस्टर।

३ राजकोटसे लौटने पर पू. बापूको बुखार आ गया था।

१६१

पेशावर,
११-१०-३८

भाओ वल्लभभाओ,

मैं आनन्द कर रहा हूं। जितना आराम तो आप भी न दे सके। आबहवा अुत्तम है। फल खूब मिलते हैं। खानसाहब अभी तो मेरी रक्षाके लिये ही जी रहे हैं।

महादेव बिलकुल सकुशल है। वे शिमला गये हैं। यह अच्छा ही हुआ। परन्तु आप अुन्हें बुला सकते हैं।

जिनाके साथ चर्चाकी संभावना तो अब हमेशाके लिये खतम हो गअी। अुनका पत्र भी अैसा ही है। अब तो हमें स्वतंत्र रूपसे जो कुछ कहना है वह कहकर शांत हो जायं। मैंने जो वक्तव्य तैयार किया है अुस पर विचार कर लीजिये। और मुझे लिखना अुचित हो तो लिखिये। अैसा हमें तुरन्त प्रकाशित करना चाहिये।

कोस्टमेमकी[1] राय बढ़िया है। अब यही ठीक प्रतीत होता है कि अेक्जीक्यूटर समझ बातें करके फैसला कर दें। यद्यपि मैं यह राय भी भुलाभाअीको भेज तो रहा ही हूं।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

सी. पी.[2] का काम बड़ा टेढ़ा है। अकेले रामचन्द्रन्[3]से कुछ नहीं हो सकता। वे लोग मजबूत हैं। आपको वहां जाने दें तो

---

१ बम्बअीके अंग्रेज बैरिस्टर। स्व. विठ्ठलभाअीकी वसीयतके बारेमें।

२ सर सी. पी. रामस्वामी। अुस समय त्रावणकोरमें राज्य और जन-कांग्रेसमें लड़ाअी चल रही थी।

३ त्रावणकोरके अेक समर्थ कार्यकर्ता।

बाजिये और मामला मिपटा डालिये। जिसमें सी पी अपनी जिज्जत बिलकुल खो देंगे। मेरे पास बहुतसे पत्र आते रहते हैं। दूसरा तो प्यारेलाल लिखेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बओी – ४

१६२

कोहाट
२१ १ ३८

भाओी वल्लभभाओी

आपके तारका अुत्तर दिया है। आप बाबमकोर बालयी व्यक्तिकी हैसियतसे जायंगे तब भी जीत कर आयगे। कैदियोंसे जेलमें मिलिये। झूठ खूब चल रहा है। मेरे नाम कांग्रेस[1] की तरफसे आये हुझे तारोंके ढेर रखे हैं। अुनमें कांग्रेसकी ओरसे हिंसाका साफ जिनकार किया गया है। दूसरे तार औसे हैं जिनमें कहा गया है कि निश्चित हिंसा है। जिसका पता तो कोओी वहां जाय तभी चले। मैंने जो नीति ग्रहण की है वह तो आप जानते ही हैं। सी पी के विरुद्ध जिल्जाम या तो वापस ले लिये जायं या अुन्हींको मुख्य वस्तु बनाया जाय। अुन्हींको मुख्य वस्तु बनाया जाय तो अुनके लिओ सत्याग्रह नहीं हो सकता। जिसमें जिन लोगोंको चुनाव कर लेना

---

१ बावनकोर राज्य कांग्रेस। वह अखिल भारत कांग्रेससे सम्बद्ध नहीं थी।

होगा। सी पी बाहरके अफसरको लाकर मुकदमा चलायें तो जिन लोगोंको चुनौती स्वीकार कर लेनी चाहिये। परन्तु अैसा न करें तो लड़ाओी लंबी हो जायगी। आपने मेरी अंतिम सलाह देखी होगी। किसी भी कारणसे अगर हिंसा हो गयी हो तो कोओी भी सुलह समझौता किये बिना सविनय-भंग मुल्तवी कर दिया जाय। जेलोंमें पड़े हुअे भले ही जेलोंमें रहें। कानूनभंगके सिवाय और सब कुछ जारी रहे। परन्तु आप जाकर जो ठीक मालूम हो वह कीजिये। पहले तो रामचन्द्रसे और बादमें कैदियोंसे मिलें।

साथमें कानपुरके बालकृष्ण[1]का तार देख लें। मैंने तारसे अुत्तर दे दिया है। जिस मामलेमें मैं कुछ नहीं जानता। पार्लियामेण्टरी बोर्डने तो मंत्रीकी सलाहसे दखल देना स्वीकार किया होगा। अैसा न हो तो भी प्रान्तीय समिति जो कुछ करना चाहे, कर सकती है। मैं मान लेता हूं कि यह सब आपके ध्यानसे बाहर नहीं होगा।

स्वास्थ्य अच्छा होगा। मेरी तबीयत ठीक है।

बापूके आशीर्वाद

आप गांधी-सेवा-संघसे त्यागपत्र क्यों देते हैं? जमनालालजीकी स्थिति जिस समय बीमारके जैसी है। वे जिस्तीफा देंगे फिर भी काम तो करेंगे ही न? आपके त्यागपत्र देनेसे कुछ सुधार नहीं होगा।

सरदार वल्लभभाओी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बओी – ४

१ कानपुरके श्री बालकृष्ण शर्मा। आजकल संसदके सदस्य।

सेगांव-वर्धा
१९ ११ ३८

भाभी वल्लभभाभी

भाभी अनंतराय और नानाभाभीके साथ बातें करके अन्तमें मैंने मसौदा तैयार किया है। जिसे आप देख लें। यह ठीक मालूम हो तो अुसके अनुसार ठाकुरसाहब चलें और सत्याग्रह खतम हो जाय। कमेटीके मातहमियोंके नाम भाभी अनंतरायके साथ बैठकर तय कर

---

१ ता २६ १२ ३८ को पू बापू और राजकोटके ठाकुरसाहबके बीच जो अंतिम समझौता हुआ वह अिस मसौदेके आधार पर ही हुआ था। अिस आखिरी समझौतेकी नकल नीचे दी जाती है

(१) पिछले कुछ महीनोंमें हमारी प्रजामें जो सार्वजनिक भावना जाग्रत हुआी है और अपने माने हुअे दुखोंके अिलाजके लिअे अुसने जो बेहदतक कष्ट सहन किये हैं अुन्हें देखनेके बाद और कौंसिल तथा श्री वल्लभभाभी पटेलके साथ सारी परिस्थितिकी चर्चा करनेके बाद हमें यह विश्वास हो गया है कि हालकी लड़ाभी और कष्ट सहनका तत्काल अंत हो जाना चाहिये।

(२) हमने दस सज्जनोंकी अेक समिति बनानेका निर्णय किया है। ये सज्जन हमारे राज्यके प्रजाजन होंगे। जिनमें से तीन राज्यके अफसर होंगे और दूसरे सात प्रजाजनोंके नाम बादमें घोषित किये जायेंगे।

(३) यह समिति जनवरी १९३९ के अंत तक अुचित जांचके बाद हमारे सामने रिपोर्ट पेश करके जिस ढंगसे हमारी प्रजाको अत्यधिक विशाल तथा दिया सकनेवाले सुधारोंकी योजना पेश करेगी जिससे सार्वभौम सत्ताके प्रति हमारे कर्तव्यों और राजकर्ताकी हैसियतसे हमारे विशेष अधिकारोंमें कोभी अड़चन न आये।

कीजिये। अुसमें प्रजाके प्रतिनिधियोंका बहुमत होना चाहिये। जितना हो जाय तो मेरे खयालसे संतोष रखना चाहिये। जिसमें जिम्मेदार हुकूमतका नाम नहीं है, परन्तु यह तो मेरे मसौदेमें स्पष्ट रूपसे आ ही जाता है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बअी – ४

---

(४) हमारा निजी खर्च नरेन्द्र-मण्डलकी कौंसिल द्वारा की गयी सिफारिशके अनुसार रहेगा।

(५) हम अपनी प्रजाको यह भी विश्वास दिलाना चाहते हैं कि अुपरोक्त समितिकी तरफसे जिस योजनाके लिअे सिफारिश की जायगी अुसे ध्यानमें रखकर अुस पर पूरी तरह अमल करनेका हमारा अिरादा है।

(६) फिरसे शांति और सद्भावना स्थापित करनेकी आवश्यक पूर्व भूमिकाके रूपमें सविनय कानूनभंगके सिलसिलेमें सजा पाये हुअे सब कैदियोंको तुरन्त छोड़ देनेकी, तमाम जुर्माने लौटा देनेकी और दमनकी समस्त कार्यवाहियोंको वापस लेनेकी हम घोषणा करते हैं।

(हस्ताक्षर) धर्मेन्द्रसिंह
ता २६ १२ ३८

नोट दूसरे पैरेग्राफमें दिये हुअे प्रजाजन की व्याख्या ब्रिटिश अिलाकेमें हिन्दुस्तानी प्रजाजनोंकी व्याख्या जैसी ही रहेगी।

१६४

सेगांव
२८ ११ ३८

भाअी वल्लभभाअी

डाकमें भावनगरका पत्र है। मैंने अुन्हें तार दे दिया है कि और जत्थे भेजनेसे पहले पत्रकी प्रतीक्षा करें। विद्यार्थी जिस तरह काम करें यह मुझे तो बिलकुल अनुचित प्रतीत होता है।

और राजकोटसे बाहरके लोग अलग-अलग जगहोंसे जत्थे भेजें यह भी ठीक नहीं। यह हमारी नीतिके बिलकुल विरुद्ध है। जिन जत्थोंको स्वराज्य नहीं चाहिये मिलेगा भी नहीं। जिनके जानेसे तेज बढ़ेगा और राजकोटकी कमजोरी होगी तो छिप जायगी। मगर कमजोरी छिपाकर हम क्या करेंगे? राजकोटकी प्रजामें जितना जौहर होगा अुतना ही चमकेगा। हम अुसका तेज बढ़ायें। मगर वह तो अंदरकी प्रगतिसे बढ़ेगा। सोच लीजिये। यह बात ठीक समझें तो बाहरके जत्थे बन्द कर दें और विद्यार्थियों आदि सभीको रोक दें। और तो बहुत लिखा जा सकता है परन्तु वक्त कहां है? और, कोअी हर्ज नहीं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बअी – ४

१६५

सेगांव – वर्धा[1]

भाओी वल्लभभाओी

सारे कागजात पढ़ लिये। भयंकर बात है। ठाकुरसाहब दृढ़ रहें तो अभी सब कुछ निपट जाय। पर अुनके दृढ़ रहनेके विषयमें मुझे शक है। अखबारोंसे जो कुछ पता चलता है, अुसका अुपयोग कहां तक किया जा सकता है? आपको सुभीता मिले तो जरूर जायें। मेरा खयाल है कि आप जायें तो आपको रेसिडेन्टसे भी मिलना चाहिये और साफ बात कर लेनी चाहिये। राजाका निर्णय बिलकुल खानगी नहीं रखा जा सकता। अिसलिये अगर अितनी हिम्मत राजाकी न हो तो राजकोट जानेमें शायद कोओी लाभ नहीं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बओी – ४

---

१ यह पत्र दिसम्बर १९३८ में लिखा हुआ है।

१६६

सेगांव – वर्धा,
२१-१२-३८

भाजी वल्लभभाजी

मौलाना तो बिलकुल जिनकार कर रहे हैं। अैसी स्थितिमें अुन्हें ज्यादा दबाना ठीक नहीं लगता। मेरे खयालसे पट्टाभिका ही विचार करना ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाजी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाउसके सामने
बम्बजी – ४

१६७

सेगांव – वर्धा,
११-१२-३८

भाजी वल्लभभाजी

शंभुशंकर को तो आप जानते ही हैं। वे पालीताणामें स्वराज्य लेनेकी आशा रखते हैं। दरबारको पत्र तो लिखा ही है। शंभुशंकर काफी स्वतंत्र स्वभावके हैं। मुझे अुम्मीद तो यह है कि केवल आखिरतक अपनेमें रहकर वे अपनी मुराद हासिल कर लेंगे। परन्तु बुजुर्गोंके आशीर्वादकी आशा तो रखते ही हैं। मैंने यह लिखा है कि अैसी लड़ाओ लड़ें और लड़ सकें तो आशीर्वाद तो है ही। जो सत्य और अहिंसाके पुजारी हैं आशीर्वाद अुनकी जेबमें रहते हैं। परन्तु अन्हें जिसमें थोड़ा सन्तोष हो सकता है? आपके

१ कांग्रेसके अध्यक्ष बननेके बारेमें।
२ पालीताणाके राज्यीय कार्यकर्ता।

आशीर्वाद तो मुझे जरूर चाहियें। मुनकी बात सुनकर आशीर्वाद दीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बअी – ४

१९८

(राजकोट सत्याग्रहके समयका पुर्जा)

वल्लभभाओसे कहा जाय कि कमसे कम जल्दीसे काम चलायें। जहां तक हो सके तटस्थ भाषण दें। सत्याग्रहीके रूपमें यात्रा न करना[1] तो पसन्द किया ही जाय। दरबारको और ट्रस्टको पंच द्वारा फैसला करनेकी सलाह दें। लोगोंको प्रतिज्ञा-पालनके बारेमें समझायें।

१९९

बारडोली
११ १ ३९

मेरी हमेशा यह आस राय रही है (और जिस समय मुसका मुझ पर प्रभुत्व है) कि प्रत्येक प्रान्तमें अेक दो प्रसिद्ध नेताओंको छोड़कर दूसरे कार्यकर्ताओंको मौन धारण कर लेना चाहिये। और यदि यह असंभव हो जाय तो मुन्हें पहलेसे सोचे हुअे संक्षिप्त और सादे लिखे हुअे भाषण सभाओंमें पढ़ देने चाहियें। सबको याद रखना चाहिये कि सब लोगोंके हाथोंमें बढ़ती हुअी सत्ता आती जा रही है। अैसी स्थितिमें लोकनायकोंके मुंहसे अेक भी शब्द बिना विचारे हरगिज न निकलना चाहिये।

(हस्ताक्षर) मो० क० गांधी

---

१ जेलमें जाना धर्म न हो तो लोगोंकी आलोचनाकी परवाह किये बिना जेलमें न जायें।

आशीर्वाद तो अुन्हें जरूर चाहियें। अुनकी बात सुनकर आशीर्वाद दीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बअी – ४

१६८

(राजकोट सत्याग्रहके समयका पुर्जा)

वल्लभभाअीसे कहा जाय कि कमसे कम शब्दोंसे काम चलायें। जहां तक हो सके तटस्थ जायज हैं। सत्याग्रहीके रूपमें जाना न करना[1] तो पसन्द किया ही जाय। दरबारको और ट्रस्टको पंच द्वारा फैसला करनेकी सलाह दें। लोगोंको प्रतिज्ञा-पालनके बारेमें समझायें।

१६९

बारडोली
११ १ ३९

मेरी हमेशा यह राय रही है (और जिस समय अुसका मुझ पर प्रभुत्व है) कि प्रत्येक प्रान्तमें अेक दो प्रसिद्ध नेताओंको छोड़कर दूसरे कार्यकर्ताओंको मौन धारण कर लेना चाहिये। और यदि यह असंभव हो जाय तो अुन्हें पहलेसे सोचे हुअे संक्षिप्त और सारे लिखे हुअे भाषण सभाओंमें पढ़ देने चाहियें। सबको याद रखना चाहिये कि अब लोगोंके हाथोंमें बढ़ती हुअी सत्ता आती जा रही है। अैसी स्थितिमें लोकनायकोंके मुंहसे अेक भी शब्द बिना विचारे हरगिज न निकलना चाहिये।

(हस्ताक्षर) मो० क० गांधी

१ जेलमें जाना धर्म न हो तो लोगोंकी आलोचनाकी परवाह किये बिना जेलमें न जायें।

१७४

वर्धा

२२-१-३९

भाई वल्लभभाई

राजकोटका तार देख लें। जाने दीजिये। मेरे खयालसे आपको वहां रहना चाहिये जिससे आपका बोझ हलका हो और रोज मिल कर विचार कर सकें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
बिड़ला हाउस
५, अल्बुकर्क रोड
नयी दिल्ली

१७५

नागपुर,

२४-१-३९

भाई वल्लभभाई

लीलावती (मुन्शी) या हंसाबहन[१] से अभी राजकोट जानेके लिये न कहें। मैंने पेरीनबहनको लिखा तो है कि वे जायें। मुझे लगा कि मुझे लिखना चाहिये। वाड़ियाका इनकार नहीं आया।

---

१ श्री हंसाबहन मेहता। १९३७-३९ के मंत्रि-मंडलके समय बम्बई शिक्षा-विभागकी पार्लमेण्टरी सेक्रेटरी थीं। बादमें भारतीय संसदकी सदस्या और आजकल बड़ौदा विश्वविद्यालयकी वाइस चान्सलर हैं।

२ वरना हाउसी पर राजकोट राष्ट्रीय शालामें जाना था।

पैगीनको लिखा है कि माहियाका सिलसिला आने पर वह अभी आय तो ठीक हो। अुसका जवाब आने पर लिखूंगा। तार अिससे मंगाया है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
बिड़ला हाअुस
५, अल्बुकर्क रोड
नअी दिल्ली

१७६

सेवाग्राम–वर्धा
१४-१०-'३९

भाअी वल्लभभाअी

यह पत्र पढ़कर और अिसके बारेमें जांच करके लिखनेवालेको जवाब दे दीजिये। मैंने अुन्हें संक्षिप्त अुत्तर दिया है कि मंत्रीको लिखें। परन्तु अितना काफी नहीं। हमें अिन मामलोंकी बारीकीसे जांच-पड़ताल करनी चाहिये।

मन [illegible] कहते थे कि आपने कहा बापूने हमें जवाहरलालको सौंप दिया है अब वे जो कहेंगे सो हमें करना

---

१ अिसके जवाबमें पू. बापूने महादेवभाअीके पत्रमें यों लिखा था:
"बापूका पत्र मिल गया। किशोरलालभाअीने मेरे बारेमें बापूको जो कल्पना दी है अुसमें अन्याय किया गया दीखता है। जो स्थिति बापूकी है वह हमारी नहीं है। अिसी तरह जवाहरके साथ भी हम पूरी तरह सहमत नहीं हैं। दिल बापूकी ओर है परन्तु अुस मार्गमें सामने मोटी दीवार दिखाअी देती है। अिसलिअे रास्ता नहीं सूझता। बापूकी अंदरकी conviction का सवाल है। और अपनी स्थिति तो मैंने स्पष्ट बता ही दी है। अगर कार्यसमितिका बहुमत निकलनेसे पहले बापूने अपने मनके विचार बता दिये होते तो दूसरी ही स्थिति होती। अब तो हम अुस वातावरणसे हट नहीं सकते। आज भीतर जो भाव सूझा है सो नहीं।"

होगा। अिसे मैं मजाक ही समझूं न? मैंने आपको किसीके सुपुर्द नहीं किया। कल और परसों यहां रहनेवालोंके साथ खूब चर्चा हुआी। आप सब अपनी स्वतंत्रता काममें न लें और अुसकी जिम्मेदारी मुझ पर डालें तो काम नहीं चलेगा।

राजेन्द्रबाबू कब गये?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बओी – ४

१७७

सेवाग्राम-वर्धा
११ १ ४१

भाओी वल्लभभाओी

अिस तरह क्या बीमार पड़ते रहते हैं? आपको स्वास्थ्यकी रक्षा करनी ही चाहिये। चिट्ठी तार दें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
११ चौपाटी सी फेस
बम्बओी

१७८

सेगांव–वर्धा
आजादी दिवस

भाई वल्लभभाई

यह कैसे कहते हैं कि मेरे साथ बात तक नहीं हो सकती? सही बात यह है कि आपको मेरे साथ बात करनी ही नहीं होती। यह आपकी पुरानी आदत है।

आप अभी दिल्ली न आवें यही अच्छा है। पांच तारीखको पहुंचना है। अगर बातमें कोअी दम हुआ तो आपको तार दूंगा। तब तो सभीको बुलाअूंगा। यह मेरी राय है। परंतु आपको आनेका खास कारण दिखाई दे तो अवश्य आअिये। न आवें तो भी आनेकी तैयारी रखिये।

बबुभाईके[1] बारेमें नारणदास (गांधी) को लिख रहा हूं। जमनादास (गांधी) को लिखा था। अुसका अुत्तर नहीं आया।

वीरावाला चले गये। अब देखना है कि कौन आता है। मैसूरका बिलकुल अजीब हाल हो रहा है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
६८ मरीन ड्राइव
बम्बई

१ श्री बबुभाई शाह।
२ राजकोटके दीवानके देहान्तका अुल्लेख है।

होगा।" अिसे मैं मजाक ही समझूं न? मैंने आपको किसीके सुपुर्द नहीं किया। कल और परसों यहां रहनेवालोंके साथ खूब चर्चा हुअी। आप सब अपनी स्वतंत्रता कायममें न लें और अुसकी जिम्मेदारी मुझ पर डालें तो काम नहीं चलेगा।

राजेन्द्रबाबू कब गये?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
पुरुषोत्तम बिल्डिंग
ऑपेरा हाअुसके सामने
बम्बअी – ४

१७७

सेगांव–वर्धा,
११-१०-३९

भाअी वल्लभभाअी

अिस तरह क्या बीमार पड़ते रहते हैं? आपको स्वास्थ्यकी रक्षा करनी ही चाहिये। तिथी तार दें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
८९ चौपाटी सी फेस
बम्बअी

१७९

दिल्ली जाते हुअे
१ २ '४

भाअी वल्लभभाअी

ये आंकड़े पढ़ लिये। जिनमें दो बातें पाता हूं। तीस अुम्मीदवारोंको पृथ्वीसिंह[1] नहीं ढूंढेंगे आप सबको या अकेले आपको अुनका चुनाव करके भेजना है। फी आदमी तीसका खर्च बताया है। अुसमें से अुनको कुछ भी नहीं मिलेगा? अैसा हो तो प्रति व्यक्ति तीस नहीं परंतु १५+१ = १६ हुअे। सोचना है कि यह ठीक है या नहीं। स्वावलम्बी योजनाओंमें क्या खर्च आता होगा? परंतु मुख्य वस्तु खर्च नहीं अुम्मीदवारोंका चुनाव है। अुनके कहे अनुसार चुन लेने हैं। मेरे कहनेका यह अर्थ न करें कि पृथ्वीसिंहका पथप्रदर्शन न लिया जाय। जहां आपको रास्ता बताने लायक लगे वहां जरूर बताअिये। देखरेख तो आपको ही करनी होगी। दिल्ली[2]के बारेमें प्रार्थना कीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
स्वराज्य आश्रम
बारडोली

---

१ सरदार पृथ्वीसिंह। वे हिंसावादी थे। सरकार अुन्हें पकड़ना चाहती थी अिसलिअे बहुत वर्ष तक छिपे रहे। पू० बापूजीसे मिलकर अुन्होंने कहा कि मेरे विचार बदल गये हैं। तब बापूजीने अुन्हें प्रगट हो जानेकी सलाह दी। प्रगट होते ही सरकारने अुन्हें पकड़ लिया। पू० बापूजीने प्रयत्न करके छुड़वाया। तब अुन्होंने व्यायामका काम शुरू करनेकी योजना बनायी। अुसके संबंधमें पूछनेवाले वर्गका यह बजट है। अब वे साम्यवादी दलमें मिल गये हैं।

२ लड़ाअी शुरू हो जानेके बाद प
मिलने बुलाया था। जिन्होंने वहीं

१८१

सेवाग्राम–वर्धा
११-५-'४

भाअी वल्लभभाअी

आपको मैंने अिस बारेमें लिखा तो है। मैंने अुन्हें भी लिखा है। अिसमें नानाभाअी हैं यह मालूम है न? अभी तो २ रुपये भेजने पड़ेंगे। निपट लेंगे। मैं विस्तारसे लिख रहा हूं। आप भी लिखें।

चंद्रशंकरका पत्र मैंने अभी पढ़ा नहीं। कुछ हो सकेगा तो करूंगा।

राजकोटमें क्या हुआ?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

१८२

सेवाग्राम–वर्धा
१०-५-'४

भाअी वल्लभभाअी

मुझे पता नहीं। सुरेश[1] की मुलाकातके बारेमें महादेवने लिखा है या नहीं? सुरेश खुद अिस ओर अधिक झुके हैं। अुनकी अिच्छा सुभाषको खींचनेकी है परंतु वे सफल नहीं हो सकते। मैंने कहा है कि वे जब चाहें मिलने आ सकते हैं। मेरी स्थिति वे जानते हैं। अुनके प्रकाशित हुये विचार स्पष्ट कह रहे हैं कि वे नहीं आ सकते। वे मानते हैं कि अुनके विचार अच्छे हैं। पर अिस बातमें कोअी सार नहीं दिखाअी देता।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

---

१ श्री सुरेश बेनर्जी। बंगालके अेक कार्यकर्ता।

क्योंकि आखिर तो मनुष्य अपनी प्रेरणा अथवा शक्तिके अनुसार ही चल सकता है। भूल होती हो तो वह भी करनेसे ही सुधर सकती है न? राजाजीके साथ बातें कर रहा हूं — अुन्हें पटरीसे अुतारनेकी नहीं परंतु अिस विषयमें कि अब क्या करना चाहिये। पटरीसे अुतारनेका प्रयत्न अभी नहीं करना है। वह तो अनुभवसे होगा। मुझे बिलकुल शक नहीं है। राजनीति भी मेरे मार्ग पर ही है। परन्तु यह बात अभी नहीं। अब आना हो तो आ जािये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बओी

१८४

सेवाग्राम
२९-१-४

भाओी वल्लभभाओी

अब तो आप यहां आने ही क्यों लगे? मैंने तो आपके आनेका अिन्तजार किया था। अब बुधवारको यहांसे चलूंगा।

किरानेके व्यापारी ७१ वर्षोंका दान[1] करेंगे। [illegible]

अनुसरण करनेसे मेरे प्रति वफादार रहे नहीं माने जायेंगे। जिससे न आपको काम होगा न आप देशका कोओी काम करेंगे। मेरी बात आपकी बुद्धि मानती हो तो ही आप मेरा अनुसरण करें नहीं तो आपका धर्म है कि आप राजाजीके प्रस्तावमें पूरी तरह शरीक हो जायं।

१ पू. बापूजीकी ७१ वीं जयंतीके निमित्त।

१८५

(पुर्जा)

सेवाग्राम—वर्धा
१९४ [1]

राजकुमारी[2] को रखना है अिसका अर्थ यह है कि सब (जेलमें) जायं। मैं भी चला जाऊं तो वह बाहर रहकर छोटे-छोटे काम संभालती रहे। अितना करनेकी शक्ति अुसमें है। वहां पड़ी रहेगी। अगर सरकार ही गोलियां चलावे तो वह सामने खड़ी होकर मरेगी। मेरा विश्वास है कि अुसमें अितनी हिम्मत है। न भी हो तो कुछ बिगड़ेगा नहीं।

१८६

(पुर्जा)

वल्लभभाअीसे कहना कि मैं सरकारके प्रति दिन-ब-दिन सख्त होता जा रहा हूं। अभी तो अिनके लिये सोचा है वे जायं। मुझे नहीं पकड़ा तो सभीको और अितनोंको चाहेंगे अुतनोंको भेज दूंगा। मुझे पकड़ लेंगे तो सब कुछ अीश्वरके हाथ है।

---

१ १९४ के नवम्बर मासके दूसरे पखवाड़ेमें लिखा हुआ है।

२ व्यक्तिगत सविनय कानून भंग शुरू करनेका जो निर्णय किया अुसके सिलसिलेमें है। अुसमें राजकुमारी अमृतकुंवरको सत्याग्रह क्यों न करने दिया जाय अिस बारेमें बापूजी द्वारा मौनमें लिखी गयी सूचनायें।

१ नवम्बर १९४ के दूसरे पखवाड़ेमें लिखा गया है।

१८७

सेवाग्राम—वर्धा
११-११-'४

भाई वल्लभभाई

आपका कार्ड[1] मिला। आपका महादेवके नामका पत्र भी मिला। महादेवसे आपने जान तो लिया ही होगा। वह सबसे मिल रहे हैं।

---

१ यह पत्र नीचे दिया जाता है

अहमदाबाद,
१०-११-'४

पू बापूजी

१८५

(पुर्जा)

सेवाग्राम–वर्धा

१९४

राजकुमारी[2] को रखना है जिसका मर्म यह है कि सब (जेलमें) जायें। मैं भी चला जाअूं तो वह बाहर रहकर छोटे-छोटे काम संभालती रहे। जितना करनेकी शक्ति अुसमें है। यहां नहीं रहेगी। अगर सरकार ही गोलियां चलावे तो वह सामने खड़ी होकर मरेगी। मेरा विश्वास है कि अुसमें जितनी हिम्मत है। न भी हो तो कुछ बिगड़ेगा नहीं।

१८६

(पुर्जा)

वल्लभभाअीसे कहना कि मैं सरकारके प्रति दिन-ब-दिन सख्त होता जा रहा हूं। अभी तो जिनके लिये सोचा है वे जायं। मुझे नहीं पकड़ा तो सभीको और जितनोंको चाहेंगे अुतनोंको भेज दूंगा। मुझे पकड़ लेंगे तो सब कुछ अीश्वरके हाथ है।

---

१ १९४ के नवम्बर मासके दूसरे पखवाड़ेमें लिखा हुआ है।

२ व्यक्तिगत सविनय कानून भंग शुरू करनेका जो निर्णय किया अुसके सिलसिलेमें है। अुसमें राजकुमारी अमृतकुंवरको सत्याग्रह क्यों न करने दिया जाय, अिस बारेमें बापूजी द्वारा मौनमें लिखी गयी सूचनायें।

३ नवम्बर १९४ के दूसरे पखवाड़ेमें लिखा गया है।

सेवाग्राम-वर्धा
११-११-'४

भाओी वल्लभभाओी

आपका कार्ड[1] मिला। आपका महादेवके नामका पत्र भी मिला। महादेवसे आपने जान तो लिया ही होगा। वह सबसे मिल रहे हैं।

---

१ यह पत्र नीचे दिया जाता है

अहमदाबाद,
१-११-'४

पू. बापूजी

आज सुबह बम्बीसे यहाँ आया। यहाँ चार-पाँच दिनका काम है। अुसे पूरा करनेके बाद १५ तारीखको गणेश-पूजन करके ५ तारीखको यात्रा शुरू करनेका अिरादा है। कल सबसे मिलनेके बाद अिसमें कोअी फेरबदल करनेकी जरूरत पड़ेगी तो अेकाध दिनका फेरबदल कर लूँगा। वैसे यह दिन निश्चित रखना है। महादेव दिल्लीसे चौथे अुसी दिन यहाँ आ जायें तो अच्छा। यहाँके बारेमें कुछ विचार करना है, अुसमें भी अुनसे मदद मिलेगी।

अिस प्रलयकालमें अुपवासकी जल्दी न करके अिस चीजको सच्चे रूपमें समझनेके लिये संसारको अनुकूल समय मिलना चाहिये। आज दुनियामें लोग विकराल पशुओंका रूप धारण किये बैठे हैं। जैसे समय बड़े धीरज और खामोशीकी जरूरत है।

सेवक
वल्लभभाओीके प्रणाम

पू. महात्मा गांधीजी
सेवाग्राम वर्धा

---

२ १९४ के व्यक्तिगत सत्याग्रहके समय तय हुआ था कि जिला मजिस्ट्रेटको सविनय-भंग करनेकी तारीखकी सूचना पहलेसे देनी चाहिये। अुसीके अनुसार दी जानेवाली सूचना।

अुसी समय सब लोगोंमें बाना शुरू कर दें यह ठीक नहीं लगता। महादेव यहां आ जायं अुसके बाद सोचिये। मेरी भी जरूरत जान पड़े तो आप आ जाअिये वर्ना महादेवको तो भेज ही दूंगा। यहां सीधे आ जायं तो वे मेरा अन्तिम निर्णय नहीं जा सकेंगे। जिसलिये तारीख कुछ बदलनी पड़े तो बदल लें। बरारमें भी अच्छी तैयारी हो रही है। बम्बअीके पाटील[1] का पत्र आया है। अुसका जवाब अुन्हें भेज रहा हूं। मैं समझता हूं आप अुसे देख ही लेंगे।

महादेव मुझ्मारकी रातको पहुंचेंगे। मंगळदास (पकवासा) और बाबा (मावळंकर) गवर्नरको लिखें[2] यही ठीक लगता है। अुनको त्यागपत्र देनेकी जरूरत तो नहीं है परन्तु अुनका पत्र कोअी वकीलके साथ जाय तो अच्छा रहे। मैं देख रहा हूं कि आप मुझसे मशीनेकी आशा रखते हैं। आज नहीं भेजूंगा दूसरे काम हैं। महादेवके साथ भेजूं तो चलेगा न? हो सका तो आज ही भेज दूंगा। बर्माके (यह तय हुआ था कि अमुक लोग जायं और अमुक कामसें जायं) बाहरवाले या तो सकते ही हैं। मेरा विचार अुनको आप बमके जानेके बाद भेजनेका है। परन्तु वहांके हालातको देखते हुअे आप अुन्हें भेजनेकी जरूरत समझें तो भेज दें। नरहरिको अभी जिसमें न घसीटनेका मेरा आग्रह है। अुनके न जानेसे कोअी नाराज हो तो यह दुःखकी बात होगी।

---

१ श्री सदोबा पाटील। बम्बअी प्रान्तीय कांग्रेस समितिके अध्यक्ष। तीन वर्ष बम्बअी कारपोरेशनके मेयर रहे। आजकल संसदके सदस्य हैं।

२ ये दोनों क्रमशः बम्बअी कौंसिलके और असेंबलीके अध्यक्ष थे। मंत्रियोंने त्यागपत्र दे दिये थे परन्तु जिनके लिअे तय किया था कि त्यागपत्र न दें। फिर भी जिन्हें व्यक्तिगत सत्याग्रहमें तो भाग लेना ही था। कानून तोड़नेसे पहले जिन्हें गवर्नरको पत्र लिखना था।

रफी[1]ने मेरा सिर्फ नाम पेश किया। मेरे विचार ही मालूम किये। जवाहरलालने सबसे कह दिया है कि मैं जैसा कहूँ वैसा चुपचाप करते रहें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
डॉ कानूगाका बंगला
अेलिसब्रिज अहमदाबाद

१८८

सेवाग्राम
९-१-'४१

भाई वल्लभभाई

मैं जानबूझकर ही आपको नहीं लिखता। महादेव दिल्लीमें है। अिसलिअे डाह्याभाअीकी खबर देखकर लिखनेका मन हो गया है। सब ठीक चल रहा है। अच्छे लोगोंमें कुछ बुरे भी आ ही जाते हैं। पर अिस बार बहुत ही कम है। लम्बा तो चलेगा परन्तु अिसीमें हमारा हित है। हारनेकी कोअी बात नहीं है। वहाँ सब शान्ति और श्रद्धा-पूर्वक कातते होंगे। मेरा विश्वास तो अपने स्वभावके अनुसार चरखेमें

---

१ श्री रफी अहमद किदवाई। कुछ समय युक्त प्रान्तके अेक मंत्री। आजकल केन्द्रीय सरकारके अन्न-मंत्री।

२ व्यक्तिगत सविनय-भंगमें सत्याग्रहियोंको चुन-चुनकर भेजा जाता था। फिर भी कुछ अवांछनीय लोग आ गये थे। अुन्हींका अुल्लेख है।

बढ़ता ही जा रहा है। भारतानंद[1]की छोटी-छोटी चीजें सब कुछ बड़ा सस्ता कर सकती हैं। मेरा स्वास्थ्य बहुत बढ़िया रहता है।

सबको

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
यरवडा सेंट्रल प्रिजन[2]
पूना

१८९

सेवाग्राम – वर्धा
७-५-'४१

भाई वल्लभभाई

आपका उत्तर मिला था। मणिबहनके नाम पत्र लिख रहा हूं। जिसलिये आपको भी लिख रहा हूं। मेरी गाड़ी चल रही है। स्वास्थ्य उत्तम रहता है। गरमीमें कोई नुकसान होता नजर नहीं आता। ठंडा कमरा फिरकी रक्षा करता है।

मेरा मन अब कहीं न कहीं सफर करनेकी तरफ झुका है। जहां भगवान ले जायेंगे वहां जाऊंगा। नजरमें तो अहमदाबाद बम्बई और बिहार हैं। देखता हूं। हमें गुण्डोंका रास्ता ढूंढना चाहिये। अथवा कांग्रेस भुसे ढूंढनेमें स्वाहा हो जाय। मेरे जानेसे तो यही मार्ग हो सकता है न? परन्तु यह ईश्वर बतावे तब जिने।

१ मॉरिस फ्रीडमैन। पोलैण्डके निवासी। मैसूर राज्यमें अिंजीनियर थे। नौकरी छोड़कर पू. बापूजीके पास सेवाग्राममें चरखा बनानेके प्रयोग करते थे। धनुष तकलीके आकारके भी चरखा मशहूर हैं वह भिन्हीका आविष्कार है।

२ पू. बापू १०-११-'४० को व्यक्तिगत सविनय भंगकी लड़ाईमें पकड़े गये थे और १-८-'४१ को बीमारीके कारण छोड़ दिये गये थे।

अिस प्रकार न मुझे घबराहट है और न कोअी चिन्ता। देखता रहता हूं और कर्तव्यपरायण रहनेकी कोशिश करता हूं।

मेरे लिखनेका कोअी अर्थ न निकालें। जितना मुझे सूझा अुतना सब लिख डाला है।

सबको
बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
यरवडा सेंट्रल प्रिजन
पूना

१६०

सेवाग्राम
११-५-'४१

भाअी वल्लभभाअी,

मणिबहन चल आअी। दुबली खूब हो गअी है। अैसी हालतमें मैं तो अुसे तुरन्त वापस भेज देता परन्तु मैं मानता हूं कि अहमदाबादमें वह बहुत काम[1] कर सकती। अिसलिअे वहां जानेको कहा है। दो-तीन दिन बम्बअीमें रह लेगी।

मणि कहती है कि स्त्री-विभागमें पाखानोंकी बड़ी अड़चन है। अिसके लिअे आपको वहां लड़ना चाहिये। अिसमें खर्चकी बात कम दीखती है। केवल लापरवाही या आलस्य ही काम करता है। मेरे ख्यालसे आप विवेकपूर्वक बीचमें पड़कर सुधार करा सकेंगे। मणि कहती है कि हंसाबहनने जो लिखा है वह तो कम है।

दंगोंकी आपको जरा भी चिन्ता न होनी चाहिये। जो होना है सो होगा। मैं तो मानता हूं कि लड़ाअी ही शुरू हो गअी है। द-

१ अुस समय अहमदाबादमें हिन्दू-मुसलमानोंके दंगे बन्द हो चुके थे परन्तु लोगोंमें भयका वातावरण था।

२ यरवडा जेलमें स्त्री-विभागकी गन्दी टट्टियोंके विषयमें।

बढ़ता ही जा रहा है। भारतमंत्री की छोटी-मोटी चोटें सब कुछ बड़ा सस्ता कर डालती हैं। मेरा स्वास्थ्य बहुत बढ़िया रहता है।

सबको

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
यरवडा सेंट्रल प्रिजन
पूना

१८९

सेवाग्राम — वर्धा
७-५-'४१

भाओ वल्लभभाओ

आपका अुत्तर मिला था। मणिबहनके नाम पत्र लिख रहा हूं। अिसलिअे आपको भी लिख रहा हूं। मेरी गाड़ी चल रही है। स्वास्थ्य अुत्तम रहता है। गरमीमें कोओ नुकसान होता नजर नहीं आता। ठंडा कपड़ा सिरकी रखा करता हूं।

मेरा मन अब कहीं न कहीं सफर करनेकी तरफ झुका है। जहां भगवान ले जायेंगे वहां जाअूंगा। नजरमें तो अहमदाबाद बम्बओ और बिहार है। देखता हूं। हमें सुलहका रास्ता ढूंढना चाहिये। अथवा कांग्रेस असे ढूंढनेमें स्वाहा हो जाय। मेरे सामने तो यही मार्ग हो सकता है न? परन्तु यह अीश्वर बताये तब मिले।

---

१ मॉरिस फ्रीडमैन। पोलैण्डके निवासी। मैसूर राज्यमें अिंजीनियर थे। नौकरी छोड़कर पू. बापूजीके पास सेवाग्राममें सस्ता चरखा बनानेके प्रयोग करते थे। धनुष तकलीके नामसे जो चरखा मशहूर है वह अिन्हींका आविष्कार है।

२ पू. बापू १७-११-'४० को व्यक्तिगत सविनय-भंगकी लड़ाअीमें पकड़े गये थे और १९-८-'४१ को बीमारीके कारण छोड़ दिये गये थे।

देखना है कि वह हम सबको कहां तक ले जाती है। जिसमें किसीका दोष हुआ कुछ चलनेवाला नहीं है। मैं तो बिलकुल निश्चिन्त बैठा हूं। शक्तिके अनुसार रास्ता बता रहा हूं। जरूरत हुई तो अहमदाबाद या बम्बई या अन्यत्र भी जाऊंगा।

धर्म तो सत्य और अहिंसाका ही है। सत्य और अहिंसा हममें है या नहीं जिसका पता चल जायगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
यरवडा सेंट्रल प्रिज़न
पूना

१९१

सेवाग्राम
१४-८-'४१

भाई वल्लभभाई

आपका पत्र कल मिला। पढ़कर दुःख हुआ। आपका स्वास्थ्य कमजोर हो जानेकी बात तो महादेवने लिखी ही थी। परन्तु आपका पत्र उससे भी ज्यादा बिगाड़ होनेकी सूचना दे रहा है। और ऐसा ही हो तो डॉ. गिल्डरका वहां होना किस कामका? अगर वे आपको न सुधार सकें तो उन्हें मौकूफी मिलेगी।

स्वयं मुझे तो फलोंके रस पर रहना पसन्द है। आंतोंमें कुछ होगा तो सफाई ही हो जायगी। संतरा मोसंबीका अनारका अननासका जितना रस पिया जा सके उतना पीनेसे लाभ होना ही चाहिये। काफी रस पिया जाय — कहिये साठ औंस — तो कमजोरी आनेका कोई कारण न रहे। इसीके साथ रातको पेट पर मिट्टीकी पट्टी बांधें तो मैं मानता हूं कि अवश्य फायदा होगा। बीमारीके कारण आपको छुट्टी मिलनेकी नौबत हरगिज न आनी चाहिये। मुझे बराबर समाचार भेजते रहिये। कुछ नहीं तो कार्ड द्वारा ही।

१९२

सेवाग्राम
२१-८-४१

भाई वल्लभभाई

मुझे तो डर था ही कि आप छूटेंगे। वे भी क्या करें? अब तो बिलकुल अच्छा होकर ही कामसें लगें। काम तो बहुत है। जोरसे काम हुए बिना मुझे चैन नहीं पड़ता। समाचार बराबर भिजवाते रहिये। मेरा पत्र क्या है लोग आपको सचमुच कैसे थे?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
६८, मरीन ड्राइव,
बम्बई

१९३

सेवाग्राम
११-८-'४१

भाई वल्लभभाई

आपका पत्र मिला। अभी मैं आपके पत्रोंकी आशा नहीं रखता। विनयपूर्वक डॉक्टरोंके पंजेसे छूट सकें और यहां आ सकें तो मुझे अच्छा लगेगा। मैं मानता हूं कि आपकी आंतोंको मिट्टी वगैराके उपचार और मौसमके परिवर्तनोंसे अच्छा किया जा सकता है। आयुर्वेद पर मेरा बहुत विश्वास नहीं जमता। वैद्य पूरा ज्ञान प्राप्त नहीं करते। उनकी कुछ दवाइयां असर करती हैं, परन्तु मैंने यह अनुभव नहीं किया कि वे यह जानते हों कि दवाइयां कैसे काम करती हैं। ये तो मेरे तर्क हैं। आपको जिससे सन्तोष हो वही

भी। हमारे अजमीयास भी तो अुसी पर भरोसा करते हैं। परन्तु अंतमें सब बेलोसैबीके द्वार पर आ खड़े होते हैं। यह सब मैंने व्यर्थ लिख दिया है, परन्तु जाने देता हूँ। हमें तो कामसे मतलब है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

[१४-९-'४१ के पत्रके साथवाला पत्र]

सेवाग्राम
१४-९-'४१

भाअी सूबेदार,

आपका पत्र मिला। मेरे जवाबसे आप फिर चौंक गये हैं। कायदे आजमने अेक भी बात निश्चयपूर्वक नहीं कही। अुन्हें तो राष्ट्रोंकी बात सिद्ध करनी है और देशका बंटवारा कराना है। जैसे कोअी दो भाअियोंको अलग करना चाहे तो अुसकी बात नहीं सुनी जाती वैसी ही यह है।

कांग्रेस पर लगाये गये अिलजाम झूठे साबित हो गये हैं। परन्तु न हुअे हों तो पंचके सामने रखे जा सकते हैं।

सरकार और कांग्रेसके बीच रहकर जहांसे ज्यादा मिल जाय वहांसे ज्यादा लेकर आगे बढ़नेकी नीति जब तक वे बरतेंगे तब तक समझौता असंभव समझना चाहिये। अिस नीतिसे पेट भर ही नहीं सकता।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि सिन्ध ढाका और अहमदाबादके दंगे केवल कांग्रेसको दबानेके लिअे थे। फिर भी मैं अुन्हें छोड़नेको तैयार हूँ। बाकी जितनी जबरोंकी बातें हैं वे सब पंचके सामने रख दी जायें। मेरा खयाल है कि अिसके बिना कुछ नहीं हो सकता।

यह भी याद रखिये कि सारे प्रश्नोंका अंतिम निपटारा कौम अपने आप कर लेंगे और हम सब बीचमें लटकते ही रह जायेंगे। सिलसिले मेरी तो यह सलाह है कि आप मिस बातसे अपना हाथ खींच लीजिये या कुछ मौलिक सिद्धान्तोंको लेकर बात कीजिये। अेक पर भी डटे रहें तो काफी है। जब तक वे आपसमें ही समझौतेका निश्चय न करें तब तक कोमी बात नहीं हो सकती।

बापूके आशीर्वाद

१९५

सेवाग्राम
१८-•-'४१

भाओ वल्लभभाओ

आपका पत्र मिला। अब तो होमियोपैथीका पूरा मिलान कर लेना ही ठीक है। थोड़ा समय लगे तो लगे। काम अच्छा हो रहा है यह दीखने तक धीरज रखना ही चाहिये।

से मिले यह ठीक हुआ। अुनका कुछ ठिकाना नहीं दीखता। बालजीका कुछ पता नहीं चलता। बहुत भटक गये हैं। मैं मानता हूँ कि वे भी ठिकाने आ ही जायेंगे।

लीलावती[1]का मामला समझा। आप अुसे हाथमें ले लें तो मैं क्यों चिन्ता करूं? अुसकी चिन्तामें आपको मैं डालना नहीं चाहता था। वह मेहनती और चंचल है। पास हो जाय तो अच्छा। कुछ कच गयी है।

भानुमती[2] ठीक होगी। लड़की[3] क्या चली ही जायगी?

---

१ आश्रमकी बहन लीलावती आसर। अुसकी पढ़ाओका इंतजाम बापूको सौंपा था।
२ डाह्याभाओकी पत्नी।
३ डाह्याभाओकी पुत्री। वह बीमार थी।

अब मुकाभाअी मुक्त हुअे? वे बहुत दुर्बल हो गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

१९६

सेवाग्राम
११-१-'४१

भाअी वल्लभभाअी

खानबहादुर[1] (अल्लाबख्श) के साथ भी भरपूर बातें की हैं। अब वे कराची जा रहे हैं। वहाँसे मौलानाके पास जायेंगे। मेरा तो दृढ़ मत है कि कांग्रेसको असेम्बलीसे निकल जाना चाहिये। खान बहादुरको भी यदि वे कांग्रेसके हों तो अैसा ही करना चाहिये। सिन्धमें कांग्रेस लड़ाअीमें मदद दे और दूसरी जगह न दे अिसका अर्थ बहुत बुरा होगा — हो रहा है। अिस स्थितिको बनाये रखनेसे न तो देशका कोअी लाभ है और न सिन्ध हिन्दू या मुसलमानका। गलत कदमसे किसे लाभ हो सकता है? लड़ाअी न हो तो भी मेरा मत तो यही है कि कांग्रेस सिन्धकी असेम्बलीसे बाहर निकल जाये। परन्तु यह बात अिस समय गौण है। आप चाहेंगे तो अिस बातकी अधिक चर्चा कर लेंगे। अभी तो मैंने अपना आग्रह आपको बता दिया है ताकि आप खानबहादुरको अच्छी तरह समझा सकें। खानबहादुर कहते हैं कि मेरी बात अुनके गले अुतर गअी है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बअी

१ अुस समय सिन्धके प्रधान मंत्री। कांग्रेसके प्रति सहानुभूति रखते थे। *[illegible] विरोधियोंने अुनकी हत्या कर डाली थी।*

१९७

सेवाग्राम
२२-९-'४१

भाअी वल्लभभाअी

आपकी गाड़ी अभी पटरी पर क्यों नहीं बैठती। मैं चाहता हूं कि पंद्रह दिनमें नियमपूर्वक न चढ़ा जा सके तो यहां आ जाअिये। अगर आने-जाने लायक स्थिति हो गयी हो तो थोड़े दिन रह जायं यह भी ठीक होगा। आपको जो पसन्द हो वही कीजिये। राजेन्द्रबाबू दिन प्रतिदिन अच्छे होते जा रहे हैं। अब रोज आते हैं।

महादेवका पत्र साथमें है। वहांसे जहां भेजना हो वहां भेज दें।

प्रेमा कंटक आपसे मिली होगी। अुसका काम नियमपूर्वक चल रहा है।

अहमदाबादका क्या हुआ? मुझे तो विश्वास है कि कांग्रेसको हाथ खींच लेना चाहिये। राजेन्द्रबाबूको अिसमें कुछ शक है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

१९८

सेवाग्राम
२५-९-'४१

भाअी वल्लभभाअी,

मणिबहन सवेरे चली गयी। यह उम्रमें जाने जैसी बात नहीं है। परंतु यह अीश्वरीय कार्य है जिसे हम समझ नहीं सकते।

अहमदाबादकी बात समझा। मैंने तो यह ही लिखा है कि लोकमतका कहना अवश्य मान्य रखना है। परंतु साथ-साथ यह भी

कह दिया है कि वे खुद छोड़नेका औचित्य समझ गये हों तो बाकी बात मौलानाको समझाकर अपना पद छोड़ दें और कांग्रेसके साथ बनवास भोगें। अिसमें तो वचनभंगका या दूसरा कोअी दोष नहीं होता। परंतु अिसे जाने दीजिये। आयेंगे तब मुख्य दोष पर थोड़ी चर्चा कर लेंगे। सिन्धके विषयमें मेरी राय पक्की नहीं है। परंतु बाकी कुछ कमी है और सब प्रान्तोंको लागू होती है। मुझे कोअी जल्दी नहीं है। हममें से बहुतेरे यह समझें तो ही अुस पर अमल किया जा सकता है। बहुतोंमें मौलाना भी आ जाते हैं।

आपके स्वास्थ्यके लिअे होमियोपैथी जितना मर्यादित समय मांगे अुतना भले ही अुसे दीजिये। हकीराके पानीकी ख्याति तो सुनी है। देवशर्माजीका मुझे पता नहीं। हकीरा आपको सब काम अिसकी संभावना तो है। वैसे प्राकृतिक चिकित्सा तो है ही। परंतु पहले हम थोड़े मिल अवश्य लें।

अुस बेबी (डाह्याभाअीकी) का मामला तो लम्बाता ही जा रहा है। मणिबहनके पत्रसे मालूम होता है कि शायद बच भी जाय।

राजेन्द्रबाबू ठीक हैं। जमनालालजीके लिअे यह तो नहीं कहा जा सकता कि वे बिलकुल चंगे हो गये।

भूलाभाअी अच्छे हो जायं तो ठीक।

मणिको अलग पत्र नहीं लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

मैं देख रहा हूं कि दीनबन्धु स्मारकके लिअे मुझे प्रवास करना पड़ेगा। अक्तूबरके मध्यमें शुरू करनेकी अिच्छा है।

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बअी

१९९

सेवाग्राम
२६-९-'४१

भाई वल्लभभाई

आपका पत्र मिला। मैंने कल जो लिखा उस परसे मेरा विचार तो आपने जान लिया। आप मानते हैं उतनी गरमी यहां नहीं है। रात तो सुन्दर होती ही है। संयमेमें मच्छर जरूर है। अगर सेवाग्राममें रहें और आश्रमके नीचे सोयें तो मच्छर तंग नहीं करेंगे। और सब सुविधा तो है ही। इसलिये दो-तीन दिन यहां बितायें तो अच्छा। देवदासकी बात मुझे जंच नहीं रही है। हमीरा तो प्रसिद्ध है ही।

सत्यमूर्ति[1] लिखते हैं कि असेम्बलीमें जानेकी अनुमति मिलनी चाहिये। मुझे तो यह पसन्द नहीं है। आपकी राय बताइये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
६८, मरीन ड्राइव
बम्बई

२००

सेवाग्राम
२-१०-'४१

भाई वल्लभभाई

अब तो आप आनेकी तैयारीमें होंगे। मथुरादास बहुत बीमार हो गये हैं। किसीको उनके पास जाना है तो अच्छा हो। मैंने रामाको तो लिखा है। जमनालालजीको भेजनेका विचार कर रहा हूं। आपका ठीक चल रहा होगा।

---

१ स्व० सत्यमूर्ति। बड़ी धारासभाके सदस्य थे।

गोसेवा-संघ नया स्थापित किया है। जमनालालजीके लिअे यह बड़ी साधना है।

बापूके आशीर्वाद

जमनालाल कल रवाना होंगे। वहाँ होकर मथुरादासके पास जायेंगे।

आपका पत्र मिला। महादेवको दूसरे दर्जेका ही सफर कराना पड़ेगा। मेमूज (स्मारक) का काम कैसे चलता है?

सरदार वल्लभभाई पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

२०१

सेवाग्राम
४-१०-'४१

भाअी वल्लभभाअी

अब तो जल्दी ही मिलेंगे। फिर भी अेक बात लिखता हूँ। मणिबहन लिखती है कि   मजदूरोंके विरुद्ध मालिकोंकी तरफसे (अेक मुकदमेमें) खड़े होंगे। यह न मानने जैसी बात है। फिर भी मणि अैसी भूल कैसे कर सकती है? अिसलिअे पहले तो मैंने   को लिखनेका सोचा। फिर सोचा कि आपके वहाँ मौजूद रहते हुअे मेरे लिखनेकी क्या जरूरत? आप ही अिसका फैसला कर सकते हैं। मणिकी बात ठीक हो तो   को समझाकर आप रोकिये। वे खड़े हों तो मजदूरोंकी तरफसे हों। मालिकोंकी तरफसे खड़े हो ही नहीं सकते। दूसरी बात यह भी है कि मेरी समझके अनुसार   वकालतके धंधेमें नहीं पड़ेंगे। अुन्होंने तो देशसेवाका व्रत लिया है। कोअी खास मुकदमा आ जाय तो ले भी लें। परन्तु यदि दूसरे वकीलोंकी तरह प्रैक्टिस शुरू कर दें तब तो बड़े निन्द्य बन जायेंगे। मेरी समझ साफ है कि वे प्रैक्टिसमें हरगिज नहीं पड़ेंगे। नैतिक

स्पष्टताकी खातिर कांग्रेससे निकले हैं। अिसके सिवाय तो कांग्रेसके ही हैं। कल्पना यह है कि अुसमें से निकलकर मेरी तरह ज्यादा कांग्रेसी बन गये हैं। मुझे ये सरल प्रतीत हुअे हैं हृदयकी बात समझनेवाले हैं त्यागशक्तिवाले हैं भूल सुधारनेवाले हैं। आप पर भी अैसा ही असर पड़ा हो, तो आप अुन्हें बुलाकर स्पष्टीकरण कर लें। हमारा बर्ताव अुनके प्रति यह समझकर हो कि वे कांग्रेसी हैं।

अेक बात और। आप जानते हैं कि मौलाना चाहते हैं कि धारासभायें छूट जायं। मैंने जरूरी नहीं समझा। राजेन्द्रबाबूने नहीं समझा प्रोफेसरने नहीं समझा और मैं समझता हूं कि आपने भी नहीं समझा। यह ठीक है? अिसमें सुधार करनेकी जरूरत है?

बापूके आशीर्वाद

मदालसाके लड़का होनेका पता चला? वह सकुशल है।

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बअी

२०२

सेवाग्राम
५ १ '४१

भाअी वल्लभभाअी

आपके दोनों पत्र मिले। भले ही नासिक रह जाअिये। मुझे तो यह चाहिये कि आप अच्छे हो जायं। अेक तन्दुरुस्ती हजार नियामत। मथुरादास बच जायं तो बड़ा अच्छा हो। मदालसा और बच्चा आनंदमें हैं। मैं तो देखने नहीं गया। मेरा कलका पत्र मिला होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

गोसेवा-संघ नया स्थापित किया है। जमनालालजीके लिये यह नमी साधना है।

बापूके आशीर्वाद

जमनालाल कल रवाना होंगे। वहां होकर मथुरादासके पास जायेंगे।

आपका पत्र मिला। महादेवको दूसरे वर्गका ही सफर कराना पड़ेगा। अेम्बुत (स्मारक) का काम कैसे चलता है?

सरदार वल्लभभाओ पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बआी

२०१

सेवाग्राम
४-१०-'४१

भाओ वल्लभभाओ

अब तो जल्दी ही मिलेंगे। फिर भी अेक बात लिखता हूं। मणिबहन लिखती है कि मजदूरोंके विरुद्ध मालिकोंकी तरफसे (अेक मुकदमेमें) खड़े होंगे। यह न मानने जैसी बात है। फिर भी मणि अैसी भूल कैसे कर सकती है? असलिये पहले तो मैंने को लिखनेका सोचा। फिर सोचा कि आपके वहां मौजूद रहते हुये मेरे लिखनेकी क्या जरूरत? आप ही असका निपटारा कर सकते हैं। मणिकी बात ठीक हो तो को बुलाकर आप कहिये। वे खड़े हों तो मजदूरोंकी तरफसे हों। मालिकोंकी तरफसे खड़े हो ही नहीं सकते। दूसरी बात यह भी है कि मेरी समझके अनुसार अदालतके धंधेमें नहीं पड़ेंगे। अुन्होंने तो देशसेवाका व्रत लिया है। कोओी खास मुकदमा आ जाय तो वे भी लें। परंतु यदि दूसरे वकीलोंकी तरह प्रैक्टिस शुरू कर दें तब तो बड़े भिन्न बन जायेंगे। मेरी समझ साफ है कि वे प्रैक्टिसमें हरगिज नहीं पड़ेंगे। नैतिक

२०४

सेवाग्राम
१ १ '४१

भाअी वल्लभभाअी

यह पत्र पढ़िये और रास्ता बताअिये।

सत्यमूर्ति आज आये हैं। कल अपना मामला सुनायेंगे।

आपका हाथ ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

वियाणी[1] आ गये हैं। अमरावतीमें कहर[2] टूट पड़ा।

सरदार वल्लभभाअी पटेल
बिड़ला हाअुस
नासिक रोड नासिक

२०५

सेवाग्राम
११-१०-'४१

भाअी वल्लभभाअी

* * *

धीरुभाअीकी[3] बात समाप्त भया। आप अिससे बिलकुल अलग रहिये। होगा कुछ नहीं है। मेरा जो भी अधिकार है अुसका आधार ही दूसरा है। तब क्या हो?

---

१ श्री ब्रजलाल वियाणी। विदर्भके अेक नेता। अभी मध्यप्रदेशमें अर्थ-मंत्री।

२ अमरावतीमें हिन्दू-मुस्लिम दंगा हुआ था।

३ स्व. धीरुभाअी देसाअी। स्व. भूलाभाअी देसाअीके पुत्र। स्विट्जर्लैण्डमें हमारे राजदूत थे।

२०३

सेवाग्राम
८-१०-'४१

भाअी वल्लभभाअी

आपका पत्र समझा। से तो मिलनेकी जरूरत है ही। मैं अुनके पीछे अवश्य पड़ूंगा। भूलाभाअीके मामलेमें आपको जरा भी फंसाना नहीं चाहता। अुनके बारेमें जो होगा वह करूंगा।

राजाजी[1] अभी नहीं आ सकते। अुनके भाभीके दो जवान खूब पढ़े-लिखे लड़के अभी-अभी मर गये। अुनके वहां और भी दो-तीन आदमियोंने बिस्तर पकड़ लिया है। अिसलिअे पहले तो वे बंगलोर जायेंगे। वहां कुछ दिन रह जायेंगे। आपको भी अुन्होंने समाचार तो जरूर दिया होगा। मैं भी चाहता हूं कि आपको यहां दो बार न आना पड़े। अिसलिअे भले ही राजाजी वगैरा आयें तब आअिये। सत्यमूर्ति तो १ तारीखको आ ही रहे हैं। कमलादेवी (चट्टोपाध्याय) कल आयेंगी। प्रकाशम्[2] जरूर आयेंगे। आसफअली जवाहरलाल और मौलानासे मिलकर आयेंगे। अिसलिअे मेला तो अच्छा हो जायगा। सबसे निपट लूंगा।

आपका धर्म तो स्वस्थ हो जाना है।

आश्रम पर लोगोंने धावा बोल दिया है। लोगोंकी मांग आती ही रहती है। मैं अधिकतर सबको अिनकार करता हूं। जगह भी कहां है? मकान बनते ही रहते हैं। फिर भी भरा हुआ रहता है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
बिड़ला हाअुस
नासिक रोड नासिक

---

१ व्यक्तिगत सत्याग्रहमें पकड़े जाकर राजाजी ता. १ १ '४१को जेलसे छूटे थे।

१ श्री टी. प्रकाशम्। आन्ध्रके नेता। अुस समय मद्रास राज्यके अेक मंत्री।

२०४

सेवाग्राम
१०-१-४१

भाअी वल्लभभाअी

यह पत्र पढ़िये और रास्ता बताअिये।

सत्यमूर्ति आज आये हैं। कल अपना मामला सुनायेंगे।

आपका हाल ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

बियाणी[1] आ गये हैं। अमरावतीमें कहर[2] टूट पड़ा।

सरदार वल्लभभाअी पटेल
बिड़ला हाअुस
नासिक रोड नासिक

२०५

सेवाग्राम
११-१०-४१

भाअी वल्लभभाअी

* * *

धीरुभाअीकी[3] बात समझ गया। आप अिससे बिलकुल अलग रहिये। होना कुछ नहीं है। मेरा जो भी अधिकार है, अुसका आधार ही दूसरा है। तब क्या हो?

---

१ श्री ब्रजलाल बियाणी। विदर्भके अेक नेता। अभी मध्य-प्रदेशमें अर्थ-मंत्री।

२ अमरावतीमें हिन्दू-मुस्लिम दंगा हुआ था।

३ स्व. धीरुभाअी देसाअी। स्व. भूलाभाअी देसाअीके पुत्र। स्विट्ज़रलैण्डमें हमारे राजदूत थे।

सत्यमूर्ति आपसे मिले? कहा तो था। वे स्पष्ट हैं। मिल जाय तो आज पद ले लें। मगर कांग्रेसके विरुद्ध कुछ न करेंगे। कांग्रेसके सिवाय अुनकी कोअी गति नहीं।

फरीद अन्सारी[1] कल आये। वे अपनी बहनसे मिलने आज हैदराबाद जायेंगे और लौटकर यहां आयेंगे। आज तो सोमवार है न?

आपका स्वास्थ्य कैसा है?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
बिड़ला हाअुस
नासिक रोड नासिक

२०६

[पत्र हाथों हाथ पहुंचाया दीखता है। डाककी मुहर या टिकट नहीं है।]

आश्रम
रविवार

भाअी वल्लभभाअी

सुना है आज आपका जन्मदिवस है। अिसलिअे सेवाके वर्षोंमें से अेक वर्ष तो गया। अैसे अनेक वर्ष जायं अैसी कामना करना यह कहनेके बराबर है कि आप दीर्घायु हों। देखना हमें स्वराज्य लेकर ही जाना है।

बापू

१ दिल्लीके अेक समाजवादी।

२०७

सेवाग्राम
५-१२-'४१

भाओी वल्लभभाओी

आपका पत्र और रिपोर्ट (डॉक्टरकी) मिली। अिससे पहले महादेवके दो पत्र मिले। मेरे पहुंचने तक कोओी फेरबदल न किया जाय। डॉ॰ गिल्डरके साथ बात करूंगा। मैं अपना विश्वास नहीं छोड़ सकता। जो अमल किया जा रहा है वह पर्याप्त है और अुससे लाभ होना ही चाहिये। फिर भी डॉक्टरोंकी आज्ञाका तो हमें आदर करना ही है। आराम लेनेमें कोओी कमी न आने दीजिये। घूमना दोनों वक्त होना चाहिये। डॉक्टरकी अिस सिफारिशका आदर कीजिये कि जहां तक हो सके चलते या लेटे रहें, बैठें कम। पट्टा तो आप यहींसे लगाने लगे थे। परंतु पंडितके पट्टेमें विशेषता हो तो भले ही वह ले लिया जाय।

मैं कैदियोंकी झंझटमें फंस गया हूं। मेरा बयान[१] देखा होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
स्वराज्य आश्रम
बारडोली

---

१ सत्याग्रही कैदी छूटे तब गांधीजीने निम्नलिखित वक्तव्य निकाला था

जिन घटनाओंसे पहले जैसे मैंने कहा था वैसे ही घटनाओंके बाद भी कहता हूं कि जहां तक मेरा संबंध है अिन घटनाओंने मेरे हृदयमें अेक भी जवाब देनेवाला या जिसकी कद्र करनेवाला स्वर नहीं अुठाया।

मैं विद्यार्थी था तभीसे अंग्रेजोंका मित्र रहा हूं और आज भी यह दावा करता हूं। परंतु ब्रिटिश सत्ताधारी हिन्दुस्तानको अेक गुलामकी तरह पकड़े हुअे हैं। मेरी मित्रता अिस बातको न समझने जितना अंधा मुझे नहीं बना सकती। हिन्दुस्तानको जो भी आजादी मिली हुअी

सेवाग्राम
५-१२-'४१

आदरणीय वल्लभभाई

मौलानाका टेलीफोन अभी आया है। कलकत्तेसे ११ बजे यहां पहुंचे। तबीयत ठीक थी परन्तु सायेटिका (जंघा-स्नायुशूल) शेष है। जो है, वह अेक गुलामकी आजादी है। वह समाज यहाँ रखनेवाले की दूसरे धर्मोंमें पूर्ण स्वातंत्र्य भोगनेवालेकी आजादी नहीं है।

मि. अेमरीके मर्म पीड़ा पहुंचानेवाले वचनोंको आराम देनेवाले नहीं हैं। वे तो जिन पर नमक छिड़क रहे हैं। यह बात ध्यानमें रखकर मुझे कैदियोंकी मुक्तिका विचार करना है।

हिन्दुस्तानके तमाम जिम्मेदार दलोंको युद्ध-प्रयत्नोंमें मदद देनेका निर्णय करना ही चाहिये—जिस बारेमें यदि सरकार दृढ़ हो तो अुसका तर्कसे फलित परिणाम यह निकलता है कि अुसे सत्याग्रही कैदियोंको अभी जेलमें ही रखना चाहिये। क्योंकि वे विरोधी स्वर निकालते हैं। परंतु कैदियोंको छोड़नेका अर्थ मैं तो अितना ही करता हूं कि सरकार आशा रखती होगी कि खुद मोल लिये हुअे अेकान्तमें कैदियोंने अपने विचार बदले होंगे। मैं आशा रखता हूं कि सरकारका यह भ्रम थोड़े समयमें मिट जायगा।

सविनय कानूनभंग खूब सावधानीसे विचार किये बिना शुरू नहीं किया गया था। अुसमें द्वेषकी भावना तो हरगिज नहीं थी। ब्रिटिश जनता और दुनियाको कांग्रेस यह बता देना चाहती है कि अेक विशाल लोक-समुदाय कांग्रेस जिसकी प्रतिनिधि है, युद्धमें भाग लेनेके बिलकुल विरुद्ध है। अुसका कारण यह नहीं कि ये लोग चाहते हैं कि ब्रिटिश सरकारकी हार हो या नाजी अथवा फासिस्ट सेनाओंकी जीत हो। ये लोग तो देखते हैं कि जिस युद्धमें विजेता या पराजित कोअी भी पक्ष नृशंसताकी करनीके अपराधसे मुक्त नहीं रहेगा। जिस युद्धमें

(२) बारडोलीके कार्यक्रममें परिवर्तन हो तो वर्धामें बैठक रखना चाहते हैं।

पू० बापूजी टेलीफोन करा रहे हैं कि बैठक तो करनी ही है और जल्दीसे जल्दी करनी है परन्तु बारडोलीके कार्यक्रममें फेरबदल नहीं चाहते। आपके स्वास्थ्यके खयालसे और दूसरी सुविधाओंकी दृष्टिसे भी बारडोली अधिक अनुकूल पड़ेगा।

ऐसा कहेंगे तो जरूर, मगर फिर भी मौलानाका वर्धाका ही आग्रह रहा तो बापू लिखते हैं कि मैं मजबूर हो जाऊँगा।

शायद आपको भी अुनका फोन मिले।

किशोरलालके प्रणाम

सरदार वल्लभभाई पटेल
स्वराज्य आश्रम
बारडोली

परंतु नजरबन्दों और दूसरे कैदियोंके बारेमें मुझे दो शब्द कहना चाहिये। यह बड़ी अजीब बात लगती है कि जिन्होंने गुप्त षड्यन्त्रका स्वागत किया था अुन्हें छोड़ दिया गया। परंतु जिन्हें व्यक्तिगत स्वतंत्रताकी अपेक्षा अपने देशकी स्वतंत्रताको अधिक कीमती माननेके अपराधमें मुकदमा चलाये बिना नजरबन्द या कैदीके तौर पर रखा गया है अुन्हें नहीं छोड़ा गया। जिसमें कहीं न कहीं कोभी बड़ी भूल अवश्य हुआी है। जिसलिअे भारत सरकारके फैसलेसे मुझे जरा भी खुशी नहीं हो सकती।

पृथ्वीसिंहको लिख रहा हूं।

को भले ही यहां भेज दीजिये। यहां अधिक पुष्ट करके जाने दूंगा। फिर भले ही आपकी मददका काम ले। आदमी अच्छा है। अभी जरा नादान है। यहां होशियार बन जायगा। फिर जरूरत हो तो बुला लीजिये।

यह निश्चय कर लीजिये कि आपकी आंतोंकी समस्या केवल भोजनके उचित चुनावसे ही हल होगी। पाखाना जाते समय जरा भी जोर न लगाना चाहिये।

महादेवको वहां बुलानेका आग्रह समझता हूं। परन्तु हरिजन का काम अुनसे वहां बैठकर ठीक तरह नहीं हो सकता। जो लिखते हैं अुसे मुझे दिखानेका और मेरा लिखा देखनेका लोभ मुझे रहता ही है। ऐसा करनेसे कितनी ही बार थोड़े किन्तु आवश्यक परिवर्तन करने पड़ते हैं। मैंने नरहरिको वहां आ जानेके लिये कहा है।

घनश्यामदास अुसी कोठरीमें रहते हैं जिसमें आप रहते थे। वे वर्धामें रहें तो मैं अुपचार नहीं कर सकता। मुझे पूरी बात समझमें आ ही नहीं सकती।

बा की तबीयत ठीक नहीं है। हजीराका काम पूरा करके आपको यहां आ जाना है। काम हो तो ही वहांसे बाहर जायं। बुनपत्रमें कराची सम्बन्धी मेरी सूचना पढ़ी होगी। अुसका पूरा अमल कराजिये। चरखा-संघके लिये रुपया भिजवा दीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
हजीरा
सूरत होकर

च्यांगकाओ शेक[1] के बारेमें 'हरिजन' में पढ़ेंगे ही। काफी आये गये। दिल्लगी भी और कराअी। परन्तु मैं यह नहीं कहूंगा कि मैंने अुनसे कुछ सीखा। अुन्हें तो सीखना ही क्या था? अुनका अेक ही कहना था कुछ भी हो अंग्रेजोंकी मदद कीजिये औरोंसे ये अच्छे हैं और अब तो और भी अच्छे हो जायेंगे।

यहां मित्रोंका सम्मेलन था। आप आ पाते तो अच्छा ही होता। सब प्रेमसे मिले। जमनालालजीके[2] कामोंके बारेमें खूब चर्चा हुअी। कामकी कुछ रूपरेखा तैयार की गअी। घनश्यामदासने खूब भाग लिया। जानकीमैया अध्यक्षा (गोसेवा-संघकी) बनी।

आपके भोजनमें रोटी तो मैं अपनी देखरेखमें देना चाहूंगा। पपीता लीजिये खजूर बढ़ाअिये। केलोंके बारेमें डर है। परन्तु खूब पके हुअे अच्छी तरह मसलकर ले देखिये। कैलोरीज[3] बढ़ानेमें तो कोअी हर्ज नहीं हो सकता। अितनेसे सन्तोष होगा?

अिन्दुलाल[4] का पत्र जरा भी अच्छा नहीं लगता। क्या अुन्हें अैसा नहीं लिखा जा सकता? — आप अितने अस्थिर रहे हैं कि यह नहीं कहा जा सकता कि आप पर कब विश्वास रखा जाय। अिसलिअे यही अच्छा है कि आप कांग्रेससे या मुझसे अलग ही काम करें।

---

१ अुस समय चीनी प्रजातंत्रके अध्यक्ष। जिनके विश्वयुद्धमें चीन मित्र राष्ट्रोंके साथ था। वे पू. बापूजीसे मिलने सेवाग्राम आने-वाले थे। परन्तु वाअिसरॉयको यह ठीक न लगा। अिसलिअे अुनकी मुलाकात कलकत्तेके बिड़ला पार्कमें कराअी गअी।

२ जमनालालजी गुजर गये तब अुनकी प्रवृत्तियोंका भार अलग-अलग व्यक्तियोंमें बांट देनेके लिअे अुनके मित्रों और प्रशंसकोंकी वर्धामें बैठक की गअी थी। अुसीका अुल्लेख है।

३ भोजनकी अलग-अलग चीजोंमें शरीरकी गरमी कायम रखनेकी जो शक्ति होती है अुसका माप।

४ श्री अिन्दुलाल याज्ञिक।

अगर आपका काम कांग्रेसका पोषक होगा तो संघर्ष हो ही नहीं सकता। स्पष्ट लिखनेके लिये आपको दुःख न होना चाहिये।"

राजाजी कल गये राजेन्द्रबाबू आज। कलकत्तेमें मौलानासे मिलकर पटना जायेंगे। हिन्दुस्तानी संघकी बातें कीं। आप अुर्दू सीख लें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
हजीरा
सूरत होकर

२१३

सेवाग्राम
११-'४२

भाई वल्लभभाई

आपका भोजन सम्बन्धी पत्र मेरे हाथमें आज ही जवाब दे दिया। कैलोरी गुड़ ग्लूकोस मुनक्का और खजूरसे पूरी की जाय। आसानीसे पूरी हो जायगी।

चांगकाओ शेक[1] के बारेमें 'हरिजन' में पढ़ोगे ही। आंधी आये आंधी गये। दिल्लगी की और कराओी। परन्तु मैं यह नहीं कहूँगा कि मैंने अुनसे कुछ सीखा। अुन्हें तो सीखना ही क्या था? अुनका अेक ही कहना था कुछ भी हो अंग्रेजोंकी मदद कीजिये अंग्रेज़ ये अच्छे हैं और अब तो और भी अच्छे हो जायेंगे।

यहां मित्रोंका सम्मेलन[2] था। आप आ पाते तो अच्छा ही होता। सब प्रेमसे मिले। जमनालालजीके कामोंके बारेमें खूब चर्चा हुओी। कामकी कुछ रूपरेखा तैयार की गओी। घनश्यामदासने खूब भाग लिया। जानकीबहन अध्यक्षा (गोसेवा-संघकी) बनीं।

आपके भोजनमें रोटी तो मैं अपनी देखरेखमें देना चाहूँगा। पपीता लीजिये खजूर बढ़ाअिये। केलोंके बारेमें डर है। परन्तु खूब पके हुअे अच्छी तरह मसलकर ले लीजिये। केलोरीज[3] बढ़ानेमें तो कोअी हर्ज नहीं हो सकता। अितनेसे सन्तोष होगा?

अिन्दुलाल[4] का पत्र जरा भी अच्छा नहीं लगता। क्या अुन्हें अैसा नहीं लिखा जा सकता? — आप अितने अस्थिर रहे हैं कि यह नहीं कहा जा सकता कि आप पर कब विश्वास रखा जाय। अिसलिये यही अच्छा है कि आप कांग्रेससे या मुझसे अलग ही काम करें।

---

१ अुस समय चीनी प्रजातंत्रके अध्यक्ष। पिछले विश्वयुद्धमें चीन मित्र राष्ट्रोंके साथ था। वे पू. बापूजीसे मिलने सेवाग्राम आने वाले थे। परन्तु वाअिसरॉयको यह ठीक न लगा। अिसलिये अुनकी मुलाकात कलकत्तेके बिड़ला पार्कमें कराओी गओी।

२ जमनालालजी गुजर गये तब अुनकी प्रवृत्तियोंका भार अलग-अलग व्यक्तियोंमें बांट देनेके लिये अुनके मित्रों और प्रशंसकोंकी वर्धामें बैठक की गओी थी। अुसीका अुल्लेख है।

३ भोजनकी अलग-अलग चीजोंमें शरीरकी गरमी कायम रखनेकी जो शक्ति होती है अुसका माप।

४ श्री अिन्दुलाल याज्ञिक।

अगर आपका काम कांग्रेसका पोषक होगा तो संघर्ष हो ही नहीं सकता। स्पष्ट लिखनेके लिये आपको दुःख न होना चाहिये।

राजाजी कल गये राजेन्द्रबाबू आज। कलकत्तेमें मौलानासे मिलकर पटना जायेंगे। हिन्दुस्तानी संघकी बातें कीं। आप अुर्दू सीख लें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
इन्दौर
सूरत होकर

२१३

सेवाग्राम
१ १ '४२

भाओ वल्लभभाओ

आपका भोजन सम्बन्धी पत्र मेरे हाथमें आते ही जवाब दे दिया। कैलोरी गुड़ ग्लुकोस शुगरका और खजूरसे पूरी की जाय। आसानीसे पूरी हो जायगी।

महादेवके लिये बिलकुल चिन्ता न कीजिये। आराम ले रहे हैं — लेना जरूरी है। अच्छी तरह चल सकते हैं। बा भी ठीक है। मगनभाओ[1] और अुनका कुटुम्ब आज आ गया है। चंद्रसिंह[2] गढ़वालीकी पत्नी भी आ गयी है। अिस तरह फिर अच्छा जमघट हो गया है।

---

१ रंगूनवाले स्व. डॉ. प्राणजीवनदास मेहताके पुत्र।

२ १९३० में अेक सैनिक दलने खुदाओ खिदमतगारों पर गोली चलानेसे अिनकार कर दिया था। अिस पर अुस दलके नेता लोगोंको लम्बी सजायें हुआी थीं। वैसी सजा भुगतकर आनेवाले अेक भाओ।

यह समझ लें कि आप आयेंगे तब जगह हो ही जायगी। आज भी है। कार्यसमितिकी बैठक यहां होगी?

डाह्याभाअीकी लड़की कैसी है?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
हजीरा
सूरत होकर

२१४

सेवाग्राम
७-१-'४२

भाअी वल्लभभाअी

आपका पत्र मिला। अगर गरमीमें सेवाग्राम रहनेकी हिम्मत नहीं होती हो तो जहां आप रहें वहीं आनेकी कोशिश करूंगा। मेरा विश्वास है कि आपकी तंदुरुस्ती थोड़ोंमें आने ठीक हो सकती है। अिस बीच कहीं भी सैर कीजिये मगर आराम स्नान और भोजनके समयका पालन कीजिये। वाअिसरॉय अिन सब बातोंका पालन करते हैं तो हम क्यों न करें?

मौलानाका पत्र है कि वे आजकलमें रवाना होकर यहां आयेंगे। बुआ (श्रीमती नायडू) कल जानकीबहनसे मिलने आ रही हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
विठ्ठल कन्या विद्यालय
नडियाद

२१५

सेवाग्राम
२२-३-'४२

भाअी वल्लभभाअी

साथका पत्र आपकी जानकारीके लिये है। मैंने अिसका अुत्तर ही नहीं दिया।

आपने दांत ठीक करा लिये होंगे। मोदी (कागज सिलानेवाले) के बारेमें भी जाननेको अुत्सुक हूं।

आचार्य[1] का स्वास्थ्य बहुत अच्छा हो रहा है। आज घूमने भी निकले थे। पेट सुधर रहा है।

हवामें गरमी बढ़ रही है।

महादेव और मनुको ठीक हो ही जाना चाहिये। नये समाचार तो आप ही बतायें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

२१६

सेवाग्राम
१५-४-'४२

भाअी वल्लभभाअी

आपका पत्र बहुत दिनों बाद मिला। मैं महादेवके नाम पत्र लिखता व लिखाता रहा। परन्तु आप तो राजधानीमें ही चिपक गये। बहुत अच्छा। कमाल किया।

---

१ आचार्य नरेन्द्र देव। किसी समय काशी विद्यापीठके आचार्य। अुस समय कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्य। अेक समाजवादी नेता। अिस समय काशी हिन्दूविश्वविद्यालयके अुपकुलपति।

बातें अभी ठिकाने नहीं आ रही हैं, अिसमें आश्चर्य नहीं। तुम्हें लम्बे आरामकी बड़ी जरूरत है।

जवाहरलालने तो अब अहिंसाको तिलांजलि दे दी दीखती है। आप अपना काम करते रहिये। लोगोंको संभाला जा सके तो संभालिये।

आजका अुसका भाषण[1] भयंकर लगता है। अुन्हें लिखनेका सोच रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बअी

चि० मणि

तुम्हारी चिट्ठी भी मिली। बनुसे कहना कि अुसका पत्र मिल गया।

२१७

सेवाग्राम
१४-४-'४२

भाअी वल्लभभाअी

आपका फिर कोअी पत्र नहीं। प्रोफेसरने सारी रामायण सुनाअी। आपका स्वास्थ्य जाने लायक न हो तो अिलाहाबाद[2] न जाअिये। परन्तु आपको अपने विचार बता देने चाहियें। मेरे खयालमें

१ अिस भाषणमें अुन्होंने भूमि जुलाने (Scorched earth) की बात कही थी।

२ कार्यसमितिके लिये।

कांग्रेस हिसाबी नीति अख्तियार कर ले तो आपको निकल जाना चाहिये। यह समय बैसा नहीं कि कोआी अपने विचार दबाकर बैठा रहे। बहुतसी बातोंमें काम सुस्त हो रहा है। जिसे देखते रहना ठीक नहीं मालूम होता। फिर भले ही लोग निन्दा करें या प्रशंसा करें।

मैं चाहता हूं कि हरिजन में मैं जो लिख रहा हूं भुसे आप ध्यानसे पढ़ें।

भुड़ीसामें अेक तरफ साम्यवादी छापामार लड़ाअीकी तैयारी कर रहे हैं और दूसरी तरफ अग्रगामी दल (फारवर्ड ब्लाक) वाले आपानको मदद देनेकी तैयारी कर रहे दीखते हैं। दोनों अफवाहें हैं। कोअी निश्चित बात नहीं है। परन्तु दोनों चीजें संभव हैं। भुड़ीसा पर हमला होनेकी बहुत संभावना मालूम होती है। सरकारने काफी सेना अिकट्ठी कर दी है।

आपकी तबीयत कैसी है? वे साधु क्या कहते हैं? मनु कैसी है? मुझे कोअी व्यवस्था होता नहीं दिखाअी देता।

बापूके आशीर्वाद

पाटील[1] को भुदोग संघमें रखनेकी बात चल रही है। भुन्हें वेतन देना पड़ेगा? क्या देना पड़ेगा? भुन्हें महाराष्ट्रकी जिम्मेदारी संभालनी है।

बापू

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

---

१ श्री अेस. अेम. पाटील। बम्बअी राज्यके पश्चात् आबकारी और पुनर्रचना विभागके मंत्री थे।

२१८

सेवाग्राम
२२-४-'४२

भाओ वल्लभभाओ

आपका पत्र मिला। मौलानाके तारसे मालूम होता है कि आपको जाना ही पड़ेगा। यद्यपि अैसा करना ठीक नहीं मालूम होता। आप मजबूतीसे काम लीजिये। अगर अहिंसक असहयोगका स्पष्ट प्रस्ताव स्वीकार न हो तो आपका धर्म कांग्रेससे निकल जानेका ही है। भूमि जलानेकी नीतिका और बाहरी सेनायें लानेका भी कड़ा विरोध होना ही चाहिये। मुझे बुलानेका आग्रह हो रहा है परन्तु मैंने तो अिनकार ही किया है। मैंने अिसी अरसेमें यहाँ तीन-चार बैठकें रखी हैं। मुख्य बैठक तो पहलेसे ही तय कर ली गयी थी। मुझसे आया नहीं जा सकता।

आप प्रयागसे लौटते समय यहाँ होकर जाअिये। चाहे अेक-दो दिनके लिये ही आअिये। प्रयागसे तो यहाँ की पूना अच्छा मौसम है। राजेन्द्रबाबूको और देवको भी साथ लेते आअिये।

पार्टीशनके बारेमें आपसे पूछा था लेकिन आपने कुछ लिखा नहीं।

बापूके आशीर्वाद

२१९

सेवाग्राम
२१-५-'४२

भाओ वल्लभभाओ

पृथ्वीसिंहजी मुझ परसे श्रद्धा छूट गयी जिसलिये मेरा सम्बन्ध तो समाप्त हुआ। गोपालराव[1] मुझसे से छूट जायेंगे। मैं मानता हूँ

---

१ श्री गोपालराव कुलकर्णी। अुस समय पृथ्वीसिंहके [illegible] शिक्षक थे।

कि अब भायजी या किशोरलालका उनके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं रहेगा। पृथ्वीसिंहका क्या होगा यह तो बादमें पता चलेगा।

वहांके समाचार लिखिये। थोड़े समयमें कुछ न कुछ तो होना ही चाहिये।

पृथ्वीसिंहको मैंने सूचित कर दिया है कि मदाकी बात बुन्हींको प्रकाशित करनी होगी। वे कुछ नहीं करेंगे तो अन्तमें मुझे ही कुछ न कुछ कहना पड़ेगा। हमारे आश्रमियोंसे आप सम्बन्ध टूटनेकी बात कर सकते हैं।

लीमड़ी[1] के बारेमें अभी तो चुप्पी ही साधूं न?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बअी

२२०

सेवाग्राम-वर्धा
२७-५-'४२

भाअी वल्लभभाअी

जवाहरलालसे दिन भर बातें हुअीं — मीठी थीं। अेक-दूसरेको हमने काफी समझा। सिन्धका मामला चोअिथराम[2] आप पर डाल रहे हैं। आपको दृढ़ बनना चाहिये। अगर मेरी रायसे सहमत हों तो आपको पत्र लिखना चाहिये। जवाहरलालसे पूछा। वे तो कहते हैं कि कांग्रेसी सदस्योंको हट जाना चाहिये और अल्लाबख्शको

---

१ काठियावाड़का अेक छोटा देशी राज्य। राज्यके जुल्मसे प्रजाका कुछ भाग राज्यसे हिजरत कर गया था। बादमें अहमदाबाद और बम्बअीके व्यापारियोंने वहांकी रुअीका बहिष्कार किया था।

२ डॉ॰ चोअिथराम गिडवानी। सिन्ध प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अुस समयके अध्यक्ष।

थी। अैसी बात है। परन्तु स्वयं आपका ही विचार दूसरा हो तो मुझे कुछ नहीं कहना है।

बापूके आशीर्वाद

आश्चर्य है कि आपकी तबीयतमें फर्क नहीं पड़ रहा है। सरदी मिटनी ही चाहिये। आजसे सोडा और नमक लेकर क्या नाक साफ कर रहे हैं? आराम न हो तो यहां आकर रहना चाहिये।

बापू

सरदार वल्लभभाई पटेल
स्वराज्य आश्रम
बारडोली

२२१

सेवाग्राम-वर्धा
१-६-'४२

भाई वल्लभभाई

ढेबरभाई[1] से भी भरकर बातें की हैं। मेरा ख्याल है कि लीमड़ी राज्यने समझौता किया ही नहीं था। भगवानदास[2] ने जरूर अैसा समझ लिया था। [illegible][3] गये तो देखा कि समझौतेकी अेक भी निशानी नहीं है। अिसलिअे आपके वक्तव्यमें अितना सुधार होना चाहिये।

परंतु आपका वक्तव्य प्रकाशित होनेसे पहले कुछ करना बाकी मालूम होता है। फतेहसिंहजी की अिच्छा आपसे मिलनेकी

---

१ श्री अुछरंगराय ढेबर। सौराष्ट्रके अेक पुराने नेता। अिस समय सौराष्ट्रके मुख्य मंत्री।

२ लीमड़ीकी लड़ाईमें शरीक होनेवाले अेक व्यापारी।

३ लीमड़ीके दीवान।

४ रीजन्सी कौंसिलके सदस्य लीमड़ी दरबारके कुंवर।

है, अैसा ढेबरभाअी समझे हैं। अैसा हो और वे समझौता चाहते हों तो आपको मिलनेकी तैयारी बतानी चाहिये। अिस अवसरके निकल जाने पर आपके वक्तव्यका विचार करना पड़ेगा।

अभी जो स्थिति है वह तो ठीक ही है।

हिम्मती बाहर हैं। जो गिरे सो गिरे। कमीका बहिष्कार जारी है। जारी रहना चाहिये। अिसलिअे तुरंत आपके वक्तव्यकी आवश्यकता नहीं जान पड़ती। आप मानते हों कि मुझे वक्तव्य देना चाहिये तो तार दीजिये। मैं दे दूंगा। अगले हफ्तेके 'हरिजन' के लिअे समय बचेगा।

अपनी तंदुरुस्तीके बारेमें अेक बातका तो जरूर अच्छी तरह ध्यान रखें। कमोड पर कमसे कम देर बैठें और जरा भी जोर न लगायें। अिसे अचूक नियम समझिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

२२२

सेवाग्राम-वर्धा
सी पी
१ ६ '३९

भाअी वल्लभभाअी

आपका पत्र मिला। ढेबरभाअीसे भी अच्छी बातें हुअीं।

मेरे खयालसे अिन बातोंमें कोअी दम नहीं है। आपस वाटेस जनकी हैसियतसे नहीं। प्रजामंडलकी तरफसे नहीं बल्कि अेक पुराने मित्रके नाते मिल जिसमें कोअी सार नहीं अैसे नहीं मिला जा सकता।[1]

---

१ लीमड़ीकी लड़ाअीके बारेमें लीमड़ी दरबारसे मिलनेके सम्बन्धमें।

आप कोओी वक्तव्य न दें। समझौता हुआ था या नहीं, अिसमें हम न पड़ें। जो अपने पैरों पर खड़े रह सकें वे रहें और लड़ते रहें। राजा लोग आपसमें व्यापार करना चाहें तो करें। परंतु बहिष्कार समिति कायम रहे और बहिष्कार चलाती रहे। अेक आदमी भी टेक कायम रखे तो वह लड़ाओीका प्रतिनिधि माना जायगा। कहा जायगा कि लड़ाओी चल रही है। अुसका आधार माल भले ही अैसेके बराबर भी न माना जाय।

मौलाना साहबसे मिलने (वर्धा बाहर) जा रहा हूं। वे कमजोर जरूर हो गये हैं।

आप अच्छे होंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बओी

२९३

सेवाग्राम-वर्धा
सी पी
१४ ६ '४२

भाओी वल्लभभाओी

खून खाते हुअे। अिसका हाल तो महादेव लिखेंगे।

जोधपुर[1] किसीको जाना चाहिये। श्री प्रकाश[2] जायें तो तैयार

---

१ जोधपुर राज्यमें प्रजा पर जुल्म हुआ था।

२ अुत्तर प्रदेशके अेक नेता। पाकिस्तानमें भारतके राजदूत १९४७-४९। बादमें आसामके गवर्नर फरवरी १९४९ से मओी १९५०। अुसके बाद केन्द्रीय सरकारके व्यापार-विभागके मंत्री १९५०-५१। अब मद्रासके गवर्नर।

अिसका अर्थ यह हरगिज नहीं कि डॉक्टर न देखें सूचनायें न दें। वे मौनका अध्ययन नहीं करते।[1]

२२५

सेवाग्राम
२२-७-'४५

भाअी वल्लभभाअी

चि. सुशीला (नय्यर) आज रवाना हो रही है। ऑपरेशन जरूरी हो तो करा लीजिये। दो-तीन महीने जांच करके देखना हो तो मैं चाहूंगा कि आप दिनशाके यहां रहें। वहां जाना हो तो मैं साथ आनेके लिये तैयार रहूंगा। और कुछ लिखना हो तो लिखें या लिखायें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

२२६

सेवाग्राम
२५-७-'४५

भाअी वल्लभभाअी

आपका पत्र मिला। अगर अभी अिलाज ही कराना हो तो मेरी जोरदार सिफारिश है कि पूनामें दिनशाके यहां जायं और वहां अिलाज करायें। मैं वहां आनेको तैयार हो जाअूंगा। अिसलिये मेरी नीमहकीमी भी चलेगी। जो हालत है अुससे ज्यादा तो हरगिज नहीं बिगड़ेगी और दिनशाके हाथको यश भी मिल सकता है।

---

१ पू. बापू ता. १५-६-'४५ को यरवडा जेलसे सुबह छूटे और मोटरसे रातके ग्यारह बजेके लगभग पू. बापूजीके पास पंचगनी पहुंचे। अुस समय पू. बापूजीका मौन था। अिसलिये यह पुर्जा लिखा था।

पारडीवाला[1] से बात हुअी है। मैं पत्र लिखूंगा। आज ही। यह डाक तो सबेरे निकलती है। अिसके साथ नकल नहीं जा सकती। अैसी बातें तो होगी ही। पर आप घबरानेवाले नहीं हैं।

अधिक लिखनेका समय नहीं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बअी

२२७

सेवाग्राम – वर्धा
२१-७-४५

भाअी वल्लभभाअी

आपको ऑपरेशन कराना ही न हो तो दिनशाके यहां जाना तय करें। मैं साथ चलूंगा। मैंने अुनसे पूछ लिया है। अुन्हें आशा है और मुझे भी है कि आपकी तबीयत सुधर जायगी। अुनके यहां जानेमें हानि तो हो ही नहीं सकती। अहमदाबाद जाना जरूरी ही हो तो सीधे हुअे और थोड़े ही दिन रहिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बअी

१ बम्बअीके अक पारसी अेडवोकेट।

२ दिल्लीके जिलेमें सेनाके १५ आदमी पकड़े थे। अुनमें से ७ को कोअी आजीवन सजा होनेके समाचार मिले थे। अुन्हें बचानेके लिये।

२२८

सेवाग्राम
३-८-'४५

भाभी वल्लभभाभी

आपका पत्र मिला। मेरी िच्छा तो ८ तारीखको चलकर ९ को आपको पूना ले जानेकी थी। अब देखता हूं कि १९ तारीख तक बैठकोंमें बंध गया हूं। िसलिये जल्दीसे जल्दी १९ तारीखको निकल सकता हूं। मुझे यह पसन्द नहीं। आपको अवकाश मिलते ही मुझे रवाना हो जाना था। अब उस दिन किसी तरह चला लीजिये। अहमदाबादमें कुछ अधिक रहना हो तो भले रहिये। अच्छा तो यह होगा कि बचा हुआ समय आश्रममें आकर बितायें और यहींसे साथ-साथ पूना चलें। पूनाका मकान रोक लीजिये। हमें तो क्लिनिकमें ही रहना है। दूसरोंको बंगलेमें रखेंगे — जरूरत होगी तो।

अब महादेवकी बात। महादेवके बारेमें मेरा सार्वजनिक रूपमें कुछ भी प्रकाशित करना ठीक नहीं। दो-चार मनुष्योंको लिख सकता हूं। बम्बभी[1] का निर्धारित चन्दा न हो तो कोभी बात नहीं। अपनी कल्पना मैंने बताभी है। मुझे आप देख लें। अधिक बातें या जब मिलेंगे तब।

बापूके आशीर्वाद

मणि देखकर रहे यह ठीक नहीं।   के पिताको तार दिया है।

सरदार वल्लभभाभी पटेल
डॉ॰ कानूगाके बंगले पर,
ऐलिसब्रिज अहमदाबाद

---

१ बम्बभीके महादेव स्मारक कोषके बारेमें यह बात है।

जिन्ना साहबको मैंने जो कुछ लिखा था वह स्थायी ही था। अब मैं और कुछ कर ही नहीं सकता। परंतु आप सबको मुझसे भिन्नकार करनेका अधिकार है। और वह हृदयसे स्वीकार न हो तो अैसा स्पष्ट कहना चाहिये। मैंने किसीकी तरफ़से नहीं कहा। अपनी ही राय बताअी है। अिसमें मुझे भूल मालूम हो जाय तो तुरंत स्वीकार कर लूंगा। आप तो जानते ही हैं कि अुन्हें मेरी चीज पसन्द ही नहीं आती। पर अिसकी चिन्ता न कीजिये।

नया चुनाव तो होना ही चाहिये। मगर यह कहां तय है कि होगा ही? होगा तो विचार कर लेंगे। ज्यादा पूनामें।

यह अच्छी तरह समझता हूं कि आप यहां नहीं आ सकते। आपके लिये रेलवेका सफर ठीक नहीं होगा। बंबअीसे पूना विमानसे आनेमें क्या कम दुख होगा?

आपका आखिरी भाषण[1] सबको अच्छा लगा है। पर मुझे वह जरूरतसे ज्यादा लगता है। परंतु अुसकी कोअी बात नहीं। जो आपके मनमें भरा है अुसे आप मनमें रख ही नहीं सकते।

मणि बूतेसे अधिक काम करके बीमार न पड़ जाय तो अच्छा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बअी

---

१ अहमदनगरके किलेसे छूटकर आनेके बाद बम्बअीकी सार्वजनिक सभामें ता० ९-८-'४५ को दिया हुआ भाषण।

राजाजीके सम्बन्धमें किसी भली बातें भी पढ़ लीं। मैं कहता हूं कि शान्तिसे झगड़ा निपट जाय तो बहुत अच्छा माना जायगा। क्योंकि मुझे सन्देह रहा करता है। मेरे नाम ऐसे पत्र आते हैं। मजबूरीसे ही कुछ उत्तर देता हूं।

---

१ वे इस प्रकार हैं

(१) तामिलनाड प्रान्तीय समितिके अध्यक्ष श्री कामराज नादर द्वारा प्रान्तीय इलेक्शन बोर्ड बनानेके लिये की गई प्रार्थनाको सरदार वल्लभभाई पटेलने कांग्रेस सेंट्रल पार्लियामेन्टरी बोर्डकी तरफसे स्वीकार कर लिया है। श्री कामराज नादरने अपनी समितिकी तरफसे इस इलेक्शन बोर्डकी रचना श्री राजगोपालाचार्यसे सलाह-मशविरा करके की है।

सरदार वल्लभभाई पटेलने श्री कामराज नादरको आज रातको जो तार दिया था वह प्रकाशित हुआ है। तार इस प्रकार है

आपका आजका तार मिला। राजाजीसे सलाह-मशविरा करके आप स्वयं मुथुरंगा मुदालियर रामस्वामी रेड्डी अविनाशीलिंगम् चेट्टी श्रीमती लक्ष्मी अम्मी श्री मुथैय्या श्री मुतुस्वामी पिल्लाई तथा श्री अय्यमपेरुमाल पिल्लाईके बने हुये इलेक्शन बोर्डकी रचनाके लिये आपका प्रार्थनापत्र और सदस्य चुननेके काममें हर अवसर पर राजाजीकी सलाह लेनेकी आपकी स्वीकृति मंजूर की जाती है। इस अशोभनीय झगड़ेका संतोषजनक अंत आने पर मैं सभी सम्बन्धित लोगोंको बधाई देता हूं। यह झगड़ा प्रान्तके शान्त वातावरणको क्षुब्ध बना रहा था। मुझे विश्वास है कि तामिलनाड प्रान्तीय समितिमें फिरसे स्थायी शान्ति और एकता स्थापित हो जायगी। जिससे आजकी नाजुक घड़ीमें तामिलनाड देशकी स्वराज्यकी ओर की जानेवाली कूचमें अपना योग्य स्थान बनाये रख सकेगा।"

(२) तामिलनाडमें चुनाव-समिति बनानेके मामलेमें खुद अपनी सिफारिशें पेश करके जैसे श्री आसफअली द्वारा दिये गये मध्यस्थके

आपके स्वास्थ्यके बारेमें क्या लिखूं ? मुझे तो लिखाका बताया हुआ रास्ता पसन्द है। परन्तु अगर आप रोज रोज (शक्ति) खर्च करते ही रहें और यह समझें कि सेवा हो रही है तो क्या किया जा सकता है ?

सम्बन्धमें आंध्र प्रान्तीय समितिके अध्यक्ष श्री टी प्रकाशम्ने बेसो सियेटेड प्रेसके प्रतिनिधि द्वारा पूछे गये सवालके जवाबमें कहा श्री आसफअलीकी सही रास्त पर हैं और मुझसे वे विचलित न होंगे।

श्री प्रकाशम्ने कहा

यह मानना चाहिये कि जिस विषयसे सम्बन्धित सभी बातें और विधानके नियम श्री आसफअलीने समझ लिये होंगे। मैं नहीं मानता कि जिस मामलेमें वे कोओी भूल करेंगे। तामिलनाड्के लिये चुनाव-समिति बनाना केवल तामिलनाड् कांग्रेस कमेटीके कार्यक्षेत्रकी बात है। तामिलनाड् कांग्रेस कमेटी अेक लोकतांत्रिक संस्था है। केन्द्रीय पार्लियामेण्टरी बोर्ड प्रान्तीय समितिका अधिकार नहीं ले सकता। श्री आसफअली दूसरी रायके हों तो अुनके हैदराबाद जानेके लिये आज सवेरे हवाओी जहाजमें बैठनेसे पहले मेरी हिदायत पर हमारी प्रान्तीय समितिके मंत्री श्री काला वेंकटराव द्वारा हवाओी अड्डे पर अुन्हें दिये हुमे वक्तव्य तथा अुसके साथके साहित्यसे अुनकी शंकायें दूर हो जायेंगी।

वक्तव्यके साथ अुन्हें सरदारका पत्र बताया गया था। यह पत्र अुन्होंने १९ नवम्बर, १९४५ को पूनासे नेल्लोरके श्री पी सी सुब्रह्मण्यम्को लिखा था। सरदार वल्लभभाओी पटेलने अुक्त मामलेके सम्बन्धमें केन्द्रीय संस्थाके अधिकार और कार्यक्षेत्रके बारेमें नीचे लिखा नियम बताया था

प्रिय मित्र

७ नवम्बर, १९४५ का आपका पत्र मिला। लोकतंत्रात्मक संस्थामें केन्द्रीय संस्था प्रान्तोंका अपनी सूझके अनुसार आगे बढ़कर

समाधिके बारेमें आगाखां[1] ने तार दिया था कि मिलेंगे। और कोओी जवाब नहीं आया। अुससे बात की तो समझा। अिसभाओी

काम करनेका हक छीन नहीं सकती। केन्द्रीय संस्थाकी तरफसे कमेटियां बनाना या समितियां चुनना ठीक नहीं। निर्णय प्रान्तीय समितिको करना है न कि कार्यकारिणी समितिको।

कांग्रेसके विधानके अनुसार यह सही स्थिति है। और आज तक अुस पर अमल होता रहा है। तामिलनाडके प्रश्नों पर यह असरदार लागू होता है। मेरा विश्वास है कि श्री आसफअलीजी अिस सिद्धान्त और अिस नियमसे विचलित नहीं होंगे। कल रातको सार्वजनिक सभामें दिये गये अपने भाषणमें अुन्होंने यही मत प्रगट किया था। शान्तिके अपने मिशनके बारेमें अुन्होंने यों कहा था: मैं अपने मिशनके परिणामके बारेमें कुछ नहीं कहूंगा। अिसका कारण यह है कि यह आपका मामला है। अिसे आपको हल करना है। मेरा अिससे कुछ सम्बन्ध नहीं। मैं तो अेक मित्रके रूपमें सलाह दे सकता हूं। अिससे यह स्पष्ट है कि वे सही रास्ते पर थे और अिससे वे विचलित नहीं होंगे। जब वक्तव्य दिया गया तब भी श्री आसफअलीने श्री वेंकटरावके सामने अैसे ही विचार प्रगट किये थे।

तिरुवेनगोडके चुनावके बारेमें श्री आसफअलीके निर्णयके विषयमें पूछने पर श्री प्रकाशमूने कहा कि प्रान्तीय पार्लियामेण्टरी बोर्डका चुनाव अथवा अुसकी नियुक्ति केवल प्रान्तीय समितिके कार्यक्षेत्रका मामला हो तो तिरुवेनगोडके चुनावका मामला भी निःसन्देह प्रान्तीय समितिके कार्यक्षेत्रका मामला है।

अे पी आओी

मद्रास २४ दिसम्बर

१ आगाखां महलके पास स्व. महादेवभाओी तथा स्व. बाकी समाधि है। यह स्थान प्राप्त करनेके लिअे माननीय आगाखांके साथ पत्रव्यवहार हो रहा था। अुसका जवाब।

(कायदे आजम) के बारेमें आपने अच्छा ही जवाब दिया। आगाखानीके सुझावके प्रति मुझे कोअी मोह नहीं है। मैं तो अैसे विभाजनके विरुद्ध ही हूं। शेष मिलने पर।

१ तारीखको मैं सोदपुर पहुंचूंगा। ९ को आसाम। बहुत करके १८ को वापस सोदपुर आअूंगा। फिर २१ को मद्रास। मद्रासको अधिकसे अधिक दो सप्ताह दिये हैं। थोड़ा समय सेवाग्राममें बिताकर आप सूचित करें तो पूना। न करें तो बारडोली। और फिर पूना।

भाअी वैकुण्ठका पत्र आया है कि बाळासाहब आप और देव भी मुझे घसीट रहे हैं। अुन्हें सदस्य[1] बनाअिये। अब तो मेरे भान पर।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
नअी दिल्ली

२३३

सोदपुर जाते हुअे जहाज पर
१–१–४६

भाअी वल्लभभाअी,[1]

आपकी चिट्ठी मिली। निम्नलिखित तार दिया है

२ को बंगाल छोड़ रहे हैं। ८ फरवरीके आसपास मद्रास

---

१ बम्बअी [illegible]।

२ जिस पत्रके अुत्तरमें पू. बापूने बापूजीको जिस प्रकार लिखा था

६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी,
८-१-'४६

पू. बापू

आपका १ तारीखका पत्र मिला। तार भी मिला। बारडोलीके लिये १ तारीख रखी है।

छोड़ेंगे। बारडोलीसे पहले पूना जानेको खूब अुत्सुक हूं। बारडोली मार्चके मध्यमें अनुकूल रहेगा?

— बापू

बंगालका कार्यक्रम मैंने सोचा था अुससे बाहर तो नहीं जा रहा हूं। मेरी दृष्टिसे बहुत काम हुआ है। परिणाम तो अीश्वरके हाथमें है। यह मैं गाड़ीमें लिखवा रहा हूं। आज शामको सोदपुर पहुंचूंगा। यह पत्र कल वहांसे डाकमें पड़ेगा। सोदपुरमें चार दिन रहकर ८ तारीखको आसाम जाना है। अिस दौरेमें सफरके मिलाकर ८ दिन लगेंगे। वापस सोदपुर और वहांसे मद्रास। मद्रास

विलायतवाले आ रहे हैं। यह सही है कि अुनके साथ सम्बन्ध नहीं बिगाड़ना चाहिये। यह भी सही है कि अुनसे अच्छी तरह मिलना चाहिये। परन्तु जवाहरलालने गलत नेतृत्व किया और आजकी हवा तो आप जानते ही हैं। फिर भी कुछ समयमें हम सब दिल्लीमें मिलनेवाले हैं। तब अच्छी तरह बातचीत कर लेंगे।

आपका वहांसे कहां और कब मिलना होता है, मुझे लिखिये।

मैं मद्रास १२ तारीखको अहमदाबाद जा रहा हूं। फिर १७ को दिल्ली जानेवाला हूं। कल मौलानाका तार आया था। जिन्नासाहब आकर बैठे हैं और अब तार देते हैं कि दिल्लीमें जो कांग्रेस अप्रैलमें रखी है वह मईमें रखी जाय और बम्बईमें की जाय। यह जवाहरलाल और कृपालानीका मत है। मेरी राय मांगते हैं। जिस तरह जिस साल शायद कांग्रेस बन्द ही रख दें असे लोग हैं।

किसी कामका ठिकाना नहीं। प्रस्ताव पर कायम नहीं रहते। वैसे मिलने पर बातें तो बहुत करते हैं। आपका स्वास्थ्य ठीक रहा यह अीश्वरकी कृपा है।

मेरी गाड़ी किसी तरह चल रही है।

सेवक

जमनालालजीके प्रणाम

डॉ. (सैयद) महमूद मुझसे मिलने आये हैं। परसों मिले। वे तुरंत आसाम जा रहे हैं। अिसलिअे मुझे विदा करके पटना जाना चाहते हैं। अिस कारण आज जायेंगे। अिस बीच गवर्नरने सुना कि वे आये हैं तो अुनसे मिलनेकी अिच्छा बताअी। कोअी घंटा भर बैठे होंगे। कोअी खास बात हुअी नहीं लगती। मिलकर खुश हुअे। मैं तो डॉ. महमूदके साथ अभी पाव घंटा भी नहीं बैठ सका। वे आये और मेरा मौन शुरू हो गया। कल दिन भर तो मौन रहा ही। शामको आप और मैं गवर्नरके पास चला गया। वहांसे लौटा तो पौने दस बज गये थे। अिसलिअे जरा भी बैठ न पा सका।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। कफ का बिगड़ गया है। आशा रखें कि यह भी जायगी। बहुत सख्त अेनीमिया (रक्ताभाव) है। यह व्याधि तो था ही पर अुसने परवाह नहीं की। आज आसाम जा रहा हूं। अुसे छोड़कर जानेका जी नहीं करता। परंतु मुझे तो अैसा अनेक बार करना पड़ा है। खास करके सुशीला (डॉ. सुशीला नय्यर) अुसके लिअे ठहर जायगी। यह सवेरेके समय प्रार्थनाके बाद लिखवा रहा हूं। आजकी स्थिति कैसी रहेगी यह तो बादमें मालूम होगा। अभी तो ठीक है। सुशीला भी रोगी हुअी है। [illegible] अुसने काम ली।

यहांके अनुभवका वर्णन किया जाय तो बहुत लम्बा पत्र लिखाया जा सकता है। लेकिन समय कहां है? और आप भी यह सब पढ़कर क्या करेंगे?

राजकुमारी आ गअी है। बीचमें हैदराबाद (सिंध) जाना पड़ा था। आसाम आयेगी। फिर लौटकर अपने पंजाब जाना होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
६८ मरीन ड्राइव
बम्बई

१ [illegible]

२३५

ग्रामसेवा आश्रम
सेवाग्राम-वर्धा
८-२-'४१

भाअी वल्लभभाअी

जो आप यहाँ आगत होंगे परंतु वे पुराने कांग्रेसी हैं। कष्ट भी काफी उठाये हैं। मेरे पास जो पत्र छोड गये हैं वह आपको भेजता हूँ। अिस पत्रसे आप देखेंगे कि [1] ने कांग्रेसको बदनाम ही किया है। अब अगर अनका नाम अुम्मीदवारोंमें दे दिया जाय तो वह मुल्क पास न हो जाय अिस कारणसे डॉक्टर यह पत्र मुझे दे गये। अब जो ठीक लगे सो कीजिये।

स्वास्थ्य अच्छा रहता होगा।

सफर कठिन तो था परन्तु ईश्वरने मुझे निभा लिया। और सब निर्विघ्न पूरा हो गया। अपने विचारेके मुताबिक मैं तीन तारीखको बारडोली पहुँचनेकी आशा रखता हूँ। वहाँसे १० या बारह १ को पूना पहुँचूंगा। यही मेरा कार्यक्रम है।

अखबारोंसे मालूम हुआ है कि सिन्धमें आपको अच्छी सफलता मिली है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बअी

१ [illegible]

२३६

सेवाग्राम
१०-२-'४६

भाजी वल्लभभाजी

राजेन्द्रबाबू मेरे पास हैं। आपका तार मिला। १ तारीखसे पहले बारडोली पहुंचना संभव ही नहीं।

वाजिसरॉय जा रहे हैं। लेकिन अभी भी मेरा जाना नहीं हो सकता।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाजी पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बजी

२३७

सेवाग्राम
११-२-'४६

भाजी वल्लभभाजी

मेरा बयान अखबारोंमें देखा होगा। जवाहरलालने जो राह बताओ है वह मुझे पसन्द नहीं आया। जिस बारेमें उन्हें कल भी लिखा है। लोगोंको हम जिस तरह भड़का नहीं सकते। करोड़ों गरीबोंके पेट पर हम पट्टी नहीं बांध सकते। अगर किसी विशेष मामलेमें ही सुधार हो, तो मुझे हमें जिस मौसम तक रुकना ही देना चाहिये। मेरी यह राय है कि मुझे पहुंचानेके प्रयत्नमें हमें वक्त लेना चाहिये। बापू अब तो सोमवारको पूना पहुंच रहा हूं। उस दिन मौन होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाजी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बजी

२३८

सेवाग्राम
१४-२-'३९

भाओी वल्लभभाओी

आपका पत्र मिला। चैक भी मिल गया।

को लिख रहा हूं। कुसकी बात विचित्र है। मेरे सामने तो सयानेपनकी बात करता है। आपका काम बहुत बढ़ गया है।

गुड़ाकूके बारेमें मेरे खयालसे आप भूल कर रहे हैं। बाहरसे भले मंगाओी जाय मगर मैं परायी आशाको सदा निराशा समझता हूं। लोग साहस करें तो जरूर पका सकते हैं। संभव है मिलोंके लिये काफी न हो। वह भले बाहरसे आये। पर गरीबोंके लिये तो हमारे यहां काफी होती है।

शेष मिलने पर।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
६८ मरीन ड्राञिव
बम्बओी

२३९

सेवाग्राम
१९-२-'३९

भाओी वल्लभभाओी

आप मुझे १ अप्रैल तक नहीं रोक सकते। मैंने तो आपको लिखा है कि मुझे ज्यादासे ज्यादा १५ दिन ठहरायें। दिया हुआ वचन पूरा तो करना ही होगा। मैंने १९ तारीखके बादके बारडोलीसे बाहरके वादे भी स्वीकार कर लिये हैं। पंद्रह दिनमें मुझसे बारडोलीमें जो काम लिया जा सके खुशीसे लीजिये। भाओी ढेबरके साथ सब बातें हो गयी हैं। मुन्शीके बारेमें तो मिलेंगे तब चर्चा करेंगे। अभी तो काममें फंसा हुआ हूं।

मूळाभाभीकी बीमारीका सुनकर दुःख हुआ। मैं तो चाहूंगा कि घर पहुंचूं अुससे पहले ही मुझे मूळाभाभीके पास ले जायें।¹ अैसा हुआ तो क्या? मथुरादासके बारेमें तो मैं मानता हूं कि वह बिड़ला भवन आयेगा।²

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाभी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

२४०

सेवाग्राम
२३-२-'४६

भाभी वल्लभभाभी³

आपके तपको समझता हूं। क्या होने जा रहा है? अैसी स्थितिमें

---

¹ स्व. मूळाभाभी बीमार थे। अिसलिअे अुनसे मिलना।

² स्व. मथुरादास भी बीमार थे। वे बिड़ला भवन आ सकते तो अुनसे मिलने अुनके घर न जाना पड़ता।

³ अिस पत्रके अुत्तरमें पू. बापूने पू. बापूजीको निम्न पत्र लिखा था —

६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी
२४-२-'४६

पूज्य बापू,

आपका पत्र सुशीलाने दिया। अरुणाने¹ यहां आग भड़काओी और अभी तक बम्बअी आगमें फूंक मारती रहती है। लगभग २५ आदमी गोलियोंसे मारे गये। अेक हजारसे अधिक घायल हुअे। पुलिसका बस नहीं चला। अिसलिअे बड़ी संख्यामें फौज आ पहुंची। कलके आपके छोटेसे बयानका भी अुसने बड़ा खराब बचाव किया। अुसमें से प्रेस

---

¹ श्री अरुणा आसफअली। १९४२ की लड़ाईमें भूगर्भमें थीं।

मुझे बारडोली ले जाना है? १५ दिनसे ज्यादा तो हरगिज नहीं
रह सकता। स्पेशल ट्रेनमें किसलिये ले जायंगे? रात खुशीमें

अेसोसियेटेडने थोड़ा ही भाग छापा। फ्री प्रेस पूरा अिस टोलीके हाथमें है। अच्युत और युसुफकी टोली अिसे आगे रखकर सब कुछ करा रही है। जवाहरलालको मुझने तार दिया। अखबारोंमें छपवाया कि अिस स्थितिमें अेक जवाहरलाल ही असे नेता हैं जो स्थितिको संभाल सकते हैं क्योंकि मुझे मेरा साथ नहीं मिला। जवाहरलालका तार आया। मुझसे पुछवाया कि अुनके आनेकी जरूरत हो तो जरूरी काम छोड़कर आयें। मैंने जवाब दिया कि न आअिये। फिर भी वे कल आ रहे हैं। अुनका तार है कि मुझे चैन नहीं पड़ रहा है अिसलिये आपका तार मिलने पर भी आ रहा हूं। कल तीन बजे आयेंगे। भले ही आयें। वैसे अरुणाके तारसे अुनका आना हुआ यह बहुत बुरा हुआ। अिस प्रकार अिन लोगोंको प्रोत्साहन मिलता है। अिस टोलीका सामना नहीं किया गया तो हम खतम हो जायंगे। परन्तु असा करनेमें सबको अेक स्वरसे बोलना चाहिये। मुझे डर है कि नरेन्द्रदेव सम्पूर्णानन्द और अुनकी टोली अिन लोगोंका पक्ष लेगी। अिसलिये जवाहरलाल नरम पड़ जायेंगे। शहरमें दुकानें लूटी गयी जाने-आनेवाले लोग लूटे गये कुछ सार्वजनिक अिमारतें जला दी गयी स्टेशनके मकानोंमें और रेलगाड़ियोंमें भी आग लगा दी गयी। असी हालतमें अगर सेना लायी गयी तो सरकारकी निन्दा करना ही व्यर्थ था। अब आज मामला नरम पड़ा है। कल सब शांत हो जानेकी संभावना है। परन्तु संभव है सरकार तुरन्त सेना हटा लेनेकी हिम्मत न करे। वायुमंडलमें जहर खूब फैल गया है। और अंग्रेजों पर और अंग्रेजी पोशाक पर लोगोंमें काफी रोष है। अिसमें अिन लोगोंने कितने ही विद्यार्थियोंका काफी अुपयोग किया है।

और अेक ही समयमें जलसेनाके आदमियों और हवाओ फौजके आदमियोंकी विरुद्धी हड़तालसे तथा अिस बातसे कि अिन लोगोंको

बितानेकी बात तो सिर्फ मिठीलिये न कि मौतसे बच सकूँ? यह पत्र आपको जल्दी मिल जाय जिसलिये सुशीलाके साथ भेज रहा हूँ। वह ज्यादा कहेगी।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बअी

अंग्रेज साथियोंसे घटिया स्तर पर रखा जाता है और साथ ही जिस भावनाके कारण कि अंग्रेज अफसर अपमान करें तो अब सहन नहीं किया जा सकता रंगभेदका जहर बढ़ गया है। अेशियाकी साधारण जागृति भी जिस रंगभेदके जहरको बढ़ानेका कारण है।

हमारा काम बड़ा कठिन है। ये लोग आपको बिलकुल नहीं मानते। संतके रूपमें आपका आदर है। परन्तु अब हम सब घटिया नेता हो गये हैं। जिसमें भी आपकी बात तो केवल सुननेके लिये है। वैसे अुसे अव्यावहारिक सिद्ध हुआ ही मानते हैं और वैसा प्रचार करते हैं। अब विचार करना है कि जिस मामलेमें क्या किया जाय।

साथमें अेक पत्र जे० पी० वालोंके नाम आया है, सो देखनेके लिये भेज रहा हूँ। अखबारोंमें छापकर जिसका विज्ञापन न कीजियेगा। जे० पी० वाले भी नहीं छापेंगे। मगर अैसे बहुतसे नये-नये लोग पैदा हो गये हैं। कोओ प्रसिद्ध आदमी तो है नहीं। पर अैसे दंगोंमें आगे ही रहते हैं।

अभी काम तो जरूर बहुत है परन्तु बारडोली जानेका निश्चय कर चुके हैं और उसकी सूचना दी जा चुकी है जिसलिये मेरे खयालसे जाना ही चाहिये।

मेरी अब मौलानाके साथ बन नहीं रही है। वे मनमानी कर रहे हैं। जिसे अब मैं ज्यादा नहीं सह सकता। यह सब तो मिलने पर ही। मैंने अुनसे अलग होनेकी मांग की है। छोड़ेंगे तो नहीं मगर मुझे अब स्थिति स्पष्ट करनी ही पड़ेगी।

पूना
२४-२-'४६

भाओ वल्लभभाओ[1]

अवारी[2] को लिखिये कि अुपवास छोड़ दें और जो मामला पेश

स्पेशल तो रास्तेमें लोगोंसे होनेवाली परेशानीसे बचनेके लिये ही है। हरअेक स्टेशन पर खड़ी रहनेवाली लोकलमें जाना बड़ा कठिन है। आसानीसे हो सका अिसलिये निश्चय कर दिया है। खास कोशिश नहीं की गयी।

मिलनिक तो अब बिलकुल नसीन (साफ) कर दिया होगा। अर्थात् सब आदमी चले गये होंगे और आप व मुन्नालाल दो ही रह गये होंगे। बेचारा किसना भी यदि कोओ हंसानेवाला नहीं हो तो दुःखी होगा।

सेवक
वल्लभभाओके प्रणाम

१ अिस पत्रके अुत्तरमें पू. बापूने पू. बापूजीको यह पत्र लिखा था

१८, मरीन ड्राअिव
बम्बओ
२५-२-'४६

पूज्य बापू,

आपका पत्र मिला।

बारडोली जानेकी आपकी अिच्छा बहुत शिथिल होनेसे सिर्फ वचनमें बंधे होनेके कारण ही आपका जाना मुझे पसन्द नहीं।

२ श्री मंचेरशा अवारी। नागपुरके कार्यकर्ता। धारासभाके अुम्मीदवारके रूपमें कांग्रेसकी तरफसे न चुने जानेके कारण अुन्होंने अुपवास किया था।

करना हो वह कामसमिति या महासमितिको भेज दें। बनता तो है ही। मेरा सुबहका पत्र मिला होगा। सुशीलाके साथ भेजा था। मेरा तो खयाल है कि जिस वक्त मुझे बारडोली से जानेकी बात छोड़ दें। आप कहेंगे वैसा करूंगा। मगर आप बम्बई नहीं छोड़ सकते। मुझसे मिलने जैसी बात हो तो आ जाइये। मेरी जरूरत हो तो मैं आनेको तैयार हूं। यहांका काम थोड़े दिनमें पूरा हो जायगा।

कार्यसमितिमें अलग-अलग रायें होना जिस समय बहुत हानिकर है। विचार कीजिये। साफ बात करनेकी अत्यन्त आवश्यकता है। मुझसे ज्यादा मेहनत न करें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
६८ मरीन ड्राइव
बम्बई

जिसलिये यह कार्यक्रम छोड़ दिया है। और आज बारडोली तार कर दिया है। जुन लोगोंको निराशा तो बहुत होगी। वहां तैयारी कर ली गयी थी। गायें भी दस-बीस लाकर बांध दी गयी थीं। औरबरेल्ला वगैरहमें।

हरिजन में लिखिये ताकि सब निराश न हों। आखिरका कभी जाना हो गया तो जायेंगे।

आपके वहां आनेकी जरूरत नहीं। आज सब शांति हो गयी है। जवाहरलाल आज आ रहे हैं। जिसलिये वे क्या कर जाते हैं यह देखनेके बाद आना हुआ तो आ जाअूंगा।

कार्यसमिति बुलाते ही नहीं। कांग्रेस अधिवेशनका भी कुछ तय नहीं कर रहे हैं और जो बीचमें आता है करते जा रहे हैं। मैं अब घबरा गया हूं। साफ बात करनेका समय आ पहुंचा है।

सेवक
वल्लभभाईके प्रणाम

पूना
२१-२-'४६

भाओी वल्लभभाओी

आपका पत्र मिला। राजाजीका क्या करेंगे? वे छूट जाना चाहते हैं तो अुन्हें छूट जाने दीजिये।[1]

---

१ राजाजीने ता. २१-२-'४६ को पू. बापूजीको पत्र लिखा था और अुसकी नकल पू. बापूको भी भेजी थी कि "अब यह सब सहन करनेकी शक्ति मुझमें नहीं रही। जितने दिन बहुत सहा। निन्दकोंकी परवाह किये बिना मैंने काम करते रहनेकी खूब कोशिश की। परन्तु अब हद हो गयी है। मैंने अपने मनसे कअी बार पूछा कि यह सब किस लिये? मेरा खयाल है कि अिस तरह चिपटे रहनेमें कोअी सार नहीं। अपने बारेमें हो रही गलतफहमियां रोकनी हों तो मुझे अन्तःकरणकी आवाजका आदर करना ही चाहिये। मुझे सत्ताकी लेश मात्र लालसा नहीं, फिर भी लोग क्यों मानते हैं कि मैं सत्ताके लिये प्रयत्न कर रहा हूं?

मेरी जगह (युनिवर्सिटीकी अेक बैठकके लिये) राजमूर्ति लिये जा सकते हैं। युनिवर्सिटीकी तरफसे मेरी जगह वे आसानीसे जा सकते हैं।"

अुपरोक्त पत्र राजाजीने अखबारोंमें भी भेजा था। अिस बातको सुनकर पू. बापूने ता. २२-२-'४६ को राजाजीको लिखा था :

यह पत्र लिखवाते समय आपके झगड़ेके समाचार सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। आपने बापूके नाम लिखा पत्र अखबारोंमें दे दिया है। अुसमें आपने अपने सिरका भार अुतार देनेके लिये बापूकी अिजाजत मांगी है। मुझे अैसा डर था ही। आप साथियोंके प्रति कितना अन्याय कर रहे हैं, जिसका आपको खयाल नहीं। कितनी मुसीबतोंके बीच आप अुन्हें मंझधारमें छोड़ रहे हैं। आपके अब वे लोग

बारडोली जाना ही है तो मैं जानेको तैयार हूं। मैंने तो सुझाव दिया है कि ऐसे कठिन समयमें आपका स्थान बम्बईमें है। परन्तु यह सब तो आप ज्यादा जानते हैं। मेरे सुझावमें मैंने अपनी सुविधाका विचार नहीं किया। देशकी हालतका क्या तकाजा है यही सोचा था।

बरसाके बारेमें मैंने फिर कहा है सो देख ले।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
६८ मरीन ड्राइव
बम्बई

है तो फिर कोई जानता पन कैसे ल? आप हमें पूछते भी नहीं। परन्तु मसलमे आपका यही ढंग रहा है। मैं आपको समझ नहीं सकता।

राजाजीका पत्र मिलनेके बाद ता. २४-२-४६ का पू. बापूने सुन्दरम लिखा

आप साम्प्रदायिक सुझाव दे रहे हैं जिससे आश्चर्य होता है। अगर आप हट ही जाते हैं तो फिर आपके बजाय किसे लिया जाय यह आपको नहीं सुझाना चाहिये। यह सुझाव मान्यकी ओरसे आना चाहिये। हमें या बापूको आप यह सुझाव दें या शायद ही न्यायपूर्ण कहा जायगा। जिन मामलोंमें बापू तो कुछ भी नहीं कर सकते, हम भी बिना पूछेगाछे चुनाव नहीं कर सकते और मान्यकी तरफसे सुझाव आये तो भी वैधानिक बोर्डको उसे स्वीकार करनेमें कठिनाई होगी। मुझे ऐसा बोलना भी है कि वे यह नहीं होना चाहते। इसलिये मैं समझ नहीं सकता कि आप यह सुझाव क्यों दे रहे हैं।"

पूना
११-१-'४५

भाअी वल्लभभाअी

आपका फोनका सन्देश मिल गया था। यही बात मुझे थे-
री बार्तोंसे भी मालूम हुअी थी। मैंने अुस पर कोअी ध्यान नहीं
दिया। ध्यान देने लायक कुछ मालूम भी नहीं हुआ। मेरे खयालसे
हमें विश्वासके साथ नाव चलाते रहना चाहिये। जो होता है, अुसे
देखते रहें। जो हथियारबन्द हैं, अुन्हें क्या चिन्ता? और हथियारोंमें
भी रामबाण जो सब मर्जोंको मिटानेवाला है।

मांहि पड्या ते महासुख माणे
देखनारा दाझे जोने *— प्रीतमकी यह
पंक्ति कानमें गूंजती रहती है।

भंगी-निवासमें मेरे रहनेका प्रबन्ध आप कर रहे होंगे। न किया
हो तो कीजिये। प्राकृतिक चिकित्साके लिये मुझे कोअी गांव चुनना
चाहिये। यहां भी देखता रहता हूं। मनमें निश्चय यह किया है कि
फरवरीसे जुलाअी तकका समय ज्यादा ठंडे प्रदेशमें बिताया जाय।
जिसमें भी अप्रैल और मअीके दो मास पहाड़ पर। यह व्यवस्था
गुजरातमें नहीं हो सकती। वहां पहाड़ोंमें आबू माना जाता है।
लेकिन आबूमें पंचगनी और महाबलेश्वर जैसा जलवायु नहीं है। न
गुजरातमें पूना जैसी शीतलता। मैंने तो देखा नहीं। फिर भी बादमें
आप कुछ कह न सकें जिसलिये जितनी बात आपके कान पर डाल
देता हूं। क्या प्राकृतिक चिकित्साके लिये और अुपरोक्त शर्तका
पालन किया जा सके जैसा कुछ गुजरातमें हो सकता है? और

---

* जो अन्दर पहुंच गये वे तो महासुख मानते हैं, लेकिन बाहरसे
देखनेवाले अीर्ष्याकी आगसे जलते हैं।

क्या आप सचमुच वैसा पसन्द करेंगे? प्राकृतिक चिकित्सा अब मेरे लिये हॉबी (फुरसतके समयका शौक) नहीं है। अिसे आप मानना ही होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बई

२४४

पूना
२१।१'४६

भाई वल्लभभाई

मैं कल मुंबई आ रहा हूं। वहां टेलीफोनका प्रबन्ध करूंगा। तार तो आता ही है। सफलता असफलता अीश्वरके हाथ है।

खानसाहब वगैराकी बात प्रोफेसर (कृपलानी) से मुंहसे ही समझा। अिन लोगोंको जवाब यह देना है कि हम वही करेंगे जो कांग्रेस कहेगी। परन्तु यह आप कहेंगे या मौलानासे कहलवायेंगे?

गुजरातकी बात समझा। मुझे कहां मौन करने जाना है?

मंत्री-निवासकी कठिनाई समझता हूं। परन्तु दूर कीजिये।

दरबार गोपालदासजी (जागीर वापस लेनेके लिये) जल्दी न की जाय।

विनोबाके क्लिनिकका विचार हो रहा है। वर्किंग कमेटीकी मीटिंगका तय नहीं है।

मणिको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बई

२४५

अुरुळीकांचन
२२-३-'४६

भाअी वल्लभभाअी

आज दोपहरको वाअिसरॉयका १ तारीखका निमंत्रण आया। मैंने अभी जवाब नहीं दिया है। परन्तु जाना पड़ेगा।

११ तारीखकी शामको दक्षिण अफ्रीकाकी सभा है। वेस्टर्न सिटीजनशिप अेसोसियेशन बुलायेगा। मुझे अुसमें अध्यक्ष होना है। ज्यादा तो आपको वहां मालूम होगा।

यहां आरंभ तो ठीक मालूम होता है। अन्तमें पता चल जायगा। मेरे खयालसे आपकी निरोगताके लिये स्थान नहीं।

और बातें मणिलाल (गांधी)से।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

२४६

अुरुळीकांचन
२५-३-'४६

भाअी वल्लभभाअी

आपका पत्र मिला। (मुस्लिम) लीगका काम विचित्र है। जो सभामें हाजिर नहीं की जा सकतीं। लीग चाहे तो भले करे। अुन लोगोंमें भी अैसा माना जाय तो कोअी हर्ज नहीं। पुरुषोत्तमदासको पत्र लिखा है वे बतायेंगे। अगर लीगकी सभा रविवारको हो और मेरा वहां मुझे बिन जाना ठीक न समझा जाय तो तार दे दें।

---

१ पूनाके पासका अेक गांव। यहां प्राकृतिक चिकित्साका केन्द्र खोला गया है।

यहां तार किया जाता है। चाहें तो टेलीफोन भी ले सकते हैं। परन्तु क्‍यों बिलके लिये क्यों तकलीफ की जाय?

प्राकृतिक चिकित्साका मेरा धन्धा तेजीसे चल रहा है। जुसमें कोओ बाटा नहीं। मुझे तो दूसरे कामोंमें जुससे मदद ही मिलेगी। अपने पास पूंजी देख लूं और मुझे काममें न लूं, तो कैसा मूर्ख बनूं? मेहनत करते हुओ १२५ वर्ष जीनेकी आशा रखनी चाहिये। वैसे जीवन-मरणका स्वामी तो ओश्वर ही है।

भंगी-निवासमें रहना ही मुझे अपना धर्म प्रतीत होता है। कठिनाअियोंको दूर किया जाय।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बओ

२४७

(पुर्जा)

जिसमें आपको नहीं बुलायेंगे। आडम्बर तो करना ही नहीं है, परन्तु आपका मन हो जाय तो आजिये।[1]

[1] यह पुर्जा निम्नलिखित पत्रके बारेमें लिखा गया है

आय ह्म्स्यू सी अे
अशोक रोड
६-४-'४६

प्रिय सरदारजी

आपके रविवारको सुबह ११ बजे लॉनमें हमने थोड़ी देरका सम्मेलन रखा है। जुसमें आप और मणिबहन आयेंगे? आयें तो हमें बड़ी खुशी होगी।

स्नेहाधीन
अगाथा हैरिसन

पूना
१-७-'४६

भाई वल्लभभाई

मैं तो काममें फंस गया हूं। कल भी थके मौन लिया। मंत्रियोंसे मिल लिया।

जवाहरलाल यहां ४ तारीखको आयेंगे फिर भी आग्रह कर रहे हैं कि मुझे मीटिंग[1] में आना ही चाहिये। अरुणा तो कल ही गयी है। मैंने अुसे मौलानाके पास भेज दिया। अगर मेरा आना जरूरी हो तो मुझे भंगी-निवासमें ही रखना चाहिये। जिस स्थानमें ले जायें वे अुसीमें अच्छा रहेगा। मकान खाली रखनेमें जरूर संकोच रहेगा। मकानवालोंको हटाकर तकलीफमें नहीं डालना चाहिये। सब कुछ सोचकर जो ठीक लगे सो कीजिये। अगर मेरा आना जरूरी हो तो ही आप भी सोचें और लिखें।

आप जो बात कर गये वह पसन्द नहीं आयी। प्यारेलालसे पूछा। अुसने जो कहा सो आपको लिखनेको कह दिया है। मेरे किसी वचन परसे आप जो समझे वह अर्थ अुसने नहीं निकाला। प्यारेलालने जो कहा वह प्रत्यक्ष देखकर ही कहा। परंतु मेरी बात तो अधिक गंभीर थी और है। अुसमें किसीका दोष नहीं। परिस्थितिका दोष है। जिसमें मैं या आप क्या कर सकते हैं? आप अपने अनुभव पर चलते हैं मैं अपने अनुभव पर। आप जानते हैं कि आपकी की हुयी कुछ बातें मैं नहीं समझ पाया हूं। जैसे चुनावका खर्च। मैं मानता हूं कि यह पुरानी बात जिस समय बहुत आगे बढ़ गयी है। आजी बेन बे का मामला भी मुझे तो अच्छा नहीं लगा। आप कमेटीमें बहुत गरम होकर बोलते हैं, यह भी

---

[1] ता० ५-७-'४६ से कांग्रेसकी कार्यसमिति और महासमितिकी जो बैठक होनेवाली थी अुसमें।

मुझे पसन्द नहीं है। मुझमें यह स्वराज्यकी अमेंबलीका किस्सा आ गया। जिसमें कहीं शिकायत नहीं परंतु मैं देखता हूँ कि हम असत्य रिवाजोंमें जा रहे हैं। जिसका दुःख भी क्यों हो? शिकायत तो है ही नहीं। स्थितिको समझें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बअी

१ जिस पत्रके जवाबमें पू. बापूने २-७-४६ को लिखे अपने पत्रमें जिस प्रकार सफाअी दी थी —

बम्बअी आनेके बारेमें तो आप ही निर्णय कर सकते हैं। अैसा लगता है कि जवाहरलाल पूछ रहे हैं जिसलिये आना चाहिये। आपकी अनुपस्थितिके बारेमें अखबारोंमें चर्चा हो रही है। परन्तु जिसका तो क्या जिलाज?

प्यारेलालने जो पत्र लिखा वह देखा। आपने भी लिखा जिसलिये अब मैं क्या कहूँ? मेरा ही दोष होगा। लेकिन मेरी समझमें अभी तक नहीं आया यह दुःखकी बात है।

अलग रहने मैं जाना नहीं चाहता। चुनावमें आपका मन विरुद्ध था। मौलाना और कमेटीका आग्रह था। यह काम न किया होता तो शायद कांग्रेसके सिर दोष आ जाता यह समझकर किया। अब अिसमें कुछ करनेको नहीं रह जाता।

बाकी मैंने जो कमेटीमें जवाहरलालका आग्रह देखकर [illegible]के बारेमें कहा। अुसमें कोअी राजनैतिक बात नहीं था।

कमेटीमें मैं गरम होकर बोला यह तो अब स्वभावगत ग्रंथि होत ही है। जवाहरलालके साथ कभी-कभी अैसा जरूर हो जाता है। अिस दिन अुसके सिवा दूसरी कोअी बात नहीं है।

जल्दी नहीं करनी चाहिये। महाराजा (काश्मीर) पसन्द करें अुस समय नहीं जाना है। हमें सोचना चाहिये। कार्यसमितिको तो बैठकर विचार करना ही चाहिये। कार्यसमिति पसन्द करे तभी अुन्हें जाना चाहिये। यह भी हो सकता है कि काश्मीरके मामलेको बारे किये करारों पर पानी फेर देनेके लिअे जिस्तेमाल करें। मैं मानता हूं कि अैसी नौबत न आनी चाहिये। मेरी अपेक्षा होगी कि जो कुछ किया जाय वह कॉन्स्टीट्युअेण्ट असेम्बली (विधान-सभा) के मिलनेके बाद किया जाय। मैं तो यहां तक जाता हूं कि मौलाना अथवा आप पहले वहां जाकर देखें कि क्या हो सकता है। काश्मीरके लोगोंके लिये मौलानाका अेक बयान जारी करना भी जरूरी हो सकता है। हमारी तरफसे सारे कदम अुठाने पर भी सब कुछ भग्न होता हो तो भले हो जाय। मामला धीरजसे सोचनेका है। शेष बाकी मुन्शी कहेंगे।

जवाहरलालको मैंने जो पत्र लिखा है वह भी देख लें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

कोअी खतरा नहीं है जिसलिअे प्रतिबंध हटा लिया गया है। अब क्या किया जाय यह निर्णय करना है।

मुन्शी २ तारीखको दिल्ली जानेवाले हैं। जवाहरलाल भी अुस समय वहीं होंगे। अपनी सलाह भेजिये।

सेवक
वल्लभभाअीके प्रणाम

२४९

पंचगनी
१७-७-'४६

भाअी वल्लभभाअी[1]

आपका पत्र मिल गया। काश्मीरका भाषण पढ़ लिया। अच्छा नहीं लगा। अितने पर भी मुझे यकीन है कि जवाहरलालको[2]

मेरा स्वास्थ्य गिरता जा रहा है परंतु अब अिसका अुपाय नहीं दीखता। अिस बार दिल्लीका वातावरण अविश्वास और सन्देहसे भरा हुआ प्रतीत हुआ। गरमी भी खूब थी और हमारा तंत्र भी बेसुरा था। अब तो अीश्वर करे सो सही। आपके ठहरनेका अिन्तजाम कर रहा हूं।

१ यह पत्र पू. बापूके निम्नलिखित पत्रके अुत्तरमें है

६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी
१७-७-'४६

पू. बापू,

साथमें काश्मीरके महाराजाका भाषण भेज रहा हूं। अिस परसे सन्देह होता है कि अब अुस काममें कुछ करेंगे या नहीं। वाअिसरॉयका पत्र भी सन्देह अुत्पन्न करनेवाला ही था। जवाहरलालकी तरफसे कोअी समाचार नहीं आया। अुन्हें पत्र मिल गया होता तो मैं मानता हूं कि वे खबर देते। मेरे खयालसे वाअिसरॉय पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट भोपाल और काश्मीर सबने मिलकर यह निर्णय किया होगा। जिसमें यह तय किया होगा कि अभी तुरंत न आने दिया जाय। परंतु थोड़े समय बाद यह घोषणा कर दी जाय कि पूरी शान्ति हो गयी है और अब

२ पं. जवाहरलालको।

जल्दी नहीं करनी चाहिये। महाराजा (काश्मीर) पसन्द करें अुस समय नहीं जाना है। हमें सोचना चाहिये। कार्यसमितिको तो बैठकर विचार करना ही चाहिये। कार्यसमिति पसन्द करे तभी अुन्हें जाना चाहिये। यह भी हो सकता है कि काश्मीरके मामलेको सारे किये कराये पर पानी फेर देनेके लिये अिस्तेमाल करे। मैं मानता हूं कि अैसी नौबत न आनी चाहिये। मेरी अपेक्षा होगी कि जो कुछ किया जाय वह कॉन्स्टीटयुअेण्ट असेम्बली (विधान-सभा) के मिलनेके बाद किया जाय। मैं तो यहां तक जाता हूं कि मौलाना अथवा आप पहले वहां जाकर देखें कि क्या हो सकता है। काश्मीरके लोगोंके लिये मौलानाका अेक बयान जारी करना भी जरूरी हो सकता है। हमारी तरफसे सारे कदम अुठाने पर भी सब कुछ भय होता हो तो भले हो जाय। मामला धीरजसे सोचनेका है। अब बाकी मुन्शी कहेंगे।

जवाहरलालको मैंने जो पत्र लिखा है, वह भी देख लें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

कोअी खतरा नहीं है जिसके लिये प्रतिबंध हटा लिया गया है। अब क्या किया जाय यह निर्णय करना है।

मुन्शी २ तारीखको दिल्ली जानेवाले हैं। जवाहरलाल भी अुस समय वहीं होंगे। अपनी सलाह भेजिये।

सेवक
वल्लभभाअीके प्रणाम

२५०

पंचगनी
२१-७-'४६

भाभी वल्लभभाभी[1]

अभी चार बजे हैं। लालटेनके अुजालेमें लिख रहा हूं। सब सो रहे हैं। पांच बजे बिजली आयेगी तब अुठेंगे। अिसलिअे यह पुर्जी ही मेरे पास है।

---

१ पू. बापूजीने यह पत्र पू. बापूके नीचे लिखे दो पत्रोंके अुत्तरमें लिखा था

(१)

१८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी–१
१६-७-'४६

पू. बापू,

अिसके साथ भीमरावने आपको जो कतरनें भेजी हैं। अिनसे पता लगाया कि अुन्हें क्या चाहिये। जब तक वे असम्य मताधिकार मांगते हैं, तब तक अुनसे मिलनेसे क्या फायदा? आपने अुन्हें बम्बअीमें मिलनेका वचन दिया है अैसा अखबारोंमें पढ़ा। अिसलिअे यह कतरनें भेजी हैं।

काश्मीरके बारेमें कुछ पता नहीं लगा। नेहरूका जवाब तो अितना ही आया कि महाराजाने जवाहरलालको सीधा पत्र लिखा है। क्या लिखा है यह पता नहीं चला। डाकमें पत्र डाला होगा तो वह पत्र रहेगा। डाकवालोंकी हड़ताल जारी है।

पंचगनीसे पूना अच्छा हो तो वहांसे लौट क्यों नहीं आते?

अहमदाबादमें अभी तक छुटपुट पागलपनकी घटनायें होती रहती हैं। अिनकी जड़में क्या है यह समझमें नहीं आता।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

सेवक
वल्लभभाअीके प्रणाम

आपके सब पत्र मिल गये। भीमराव (आम्बेडकर) से मिले यह अच्छा हुआ। वे नहीं मानेंगे। २ फीसदी

(२)

६८ मरीन ड्राइव
बम्बई–१
१९-७-'४६

पू॰ बापू,

आपका पत्र मिला। जिस समय काश्मीर जानेका विचार छोड़ देना चाहिये। परन्तु वे मानेंगे या नहीं जिसमें शक है। महाराजाका पत्र अुन्हें मिला होगा परन्तु मुझे पता नहीं चला।

आज अेन अेम जोशी भीमरावको लेकर आये थे। आनसे पहले जोशी अकेले मिल गये थे। मैंने तो कह दिया था कि अुन्हें बुलाने या मिलनेसे कोअी फायदा नहीं। अुन्हें अलग मताधिकार चाहिये। जोशी बोले कि कोअी बीचका रास्ता निकल सकता है। मैंने कहा जिसमें बीचका रास्ता क्या हो सकता है? जोशीने सप्रू-कमेटी द्वारा की गयी सिफारिशको मध्यम मार्गके रूपमें पेश किया। मुझे यह पसन्द न आयी। फिर भी मिलनेसे अिनकार करना तो अुचित प्रतीत नहीं हुआ। दोनों आज आये। आम्बेडकरने तो दूसरी ही बात की। वे बोले कि अभी जितनी जगहें मिल रही हैं, वे सब तो अलग मताधिकारसे भर दी जायें और बाकी सबमें हरिजनोंको खड़े रहने और मत देनेका अधिकार रहे। यानी वे तो दोनों हाथमें लड्डू रखने जैसी बात करने लगे। आज मेरी तबीयत ठीक नहीं था अिसलिये दुबारा आनेको कह गये हैं। परंतु अुनकी बात अभी तक सीधी नहीं लगती। सारे निर्वाचन-मंडल संयुक्त ही रहें और पेनल न रहे फिर जो हरिजन अुम्मीदवार कमसे कम २० फी सदी हरिजनोंके मत पा लें वे ही चुने जायं। अैसा सुझाव दिया जाय तो आपकी क्या राय है यह सोचकर लिखिये। मेरे खयालसे जितना मान लें तो बहुत

क्यों है[1] जिसमें कुछ पेच है। सोचिये। रकम तो रखनी ह
चाहिये। यह समझमें आ सकता है कि अमुक संख्या हरिजनोंक
सब चुनावोंमें होनी चाहिए।

काश्मीरके बारेमें महाराजाका पत्र ठीक मालूम होता है। मै
जो सलाह दी है वह सब आपको बता चुका हूं और नकलें वि
पत्रके साथ भेज दूंगा।

मैंने यह कहा है कि भीमराव पूना या सेवाग्राम आ जायं त
मिल लूंगा। अखबारोंमें गलत छपा है।

जैसा लगता है कि कांग्रेसके हाथोंमें से बहुत कुछ निकल
जायगा। डाक्यिे[2] न मानें अहमदाबाद[3] भी न माने हरिजन न
मानें मुसलमान न मानें। यह कैसी स्थिति है?

ठीक हो जाय। उनकी दूसरी बात है हरिजनोंके लिओ बड़ी रकमें
अलग रखनेकी। जिसमें कोओ बड़ी आपत्ति न होगी।

अहमदाबादवाले अभी तक पागलपन कर रहे हैं।

सेवक

वल्लभभाओके प्रणाम

१ १९३२ में हुओ यरवदा-समझौतेके अनुसार दस वर्षके लिओ हरिजन उम्मीदवारोंके लिओ दो चुनावोंकी प्रथा रखी गयी थी। पहले चुनावमें केवल हरिजन मतदाता ही अेक जगहके लिओ चार उम्मीदवारोंको (पैनल) चुनें और दूसरे संयुक्त निर्वाचनमें वे चार ही खड़े हो सके जिनमें से अेक चुना जाय। यह दस वर्षकी मियाद पूरी हो जानेके कारण सवाल यह अुठा कि नये चुनावोंमें क्या व्यवस्था रखी जाय।

२ बम्बअीमें हो रही डाकियोंकी हड़ताल।

३ अहमदाबादके हिन्दु-मुस्लिम दंगे।

शं० देव[1] औंधके राजासाहब अप्पा वगैरा आये थे। बहुत बातें कीं। पूर्वी अफ्रीकाके राजदूतोंको लेकर   भाअी आये थे। वे आपसे मिलेंगे। अैसा मालूम होता है कि अिस विषयमें कुछ किया जा सकता है।

आप अहमदाबाद नहीं आ सकते? खुद अपना स्वास्थ्य बिगाड़ रहे हैं। यहां आ जाते तो कितना अच्छा होता?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बअी

२५१

पंचगनी
२१-७-'४६

भाअी वल्लभभाअी,

आपका पत्र मिला।   भी मिले। पोशाकके बारेमें आप अेक बयान दें तो ठीक होगा। अुसमें अिस सबब है कि कभी पक्षोंके लोग सलाह लेने आते हैं। वे जितने ज्यादा दल रखते हैं यह खतरनाक बात है। सबको मिलकर अेक ही आवाजमें बोलना चाहिये और सभाके बाहरके लोगों पर आधार नहीं रखना चाहिये। बहुतसे वक्तव्योंसे भी परेशानी पैदा होती है। अिसलिअे अगर सब सामग्री बम्बअी प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीको भेज दी जाय और अुसकी तरफसे अेक

---

१ श्री शंकरराव देव। महाराष्ट्रके नेता। अुस समय कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्य।

२ श्री अप्पा पंत। औंधके राजाके भतीजे। अिस समय पूर्वी अफ्रीकामें भारत सरकारके राजदूत।

अधिकारपूर्ण वक्तव्य प्रकाशित हो तो अच्छा है। आपकी समझसे गोआकी लड़ाई केवल नागरिक स्वतंत्रताकी है। अुसमें सफलता मिलनी ही चाहिये। सारा हिन्दुस्तान अुनकी लड़ाईसे सहानुभूति रखता है परन्तु कष्ट तो गोआके भारतीयोंको ही अुठाने पड़ेंगे। हिन्दुस्तानके आजाद होने पर गोआकी आजादी अनिवार्य हो जायगी। जिसमें गोआवालोंको आज चाहकर बहुत कुछ करना जरूरी भी न हो।

भीमरावकी बात समझा। अुनसे जरूर मिलें। अुनके भाषण खराब हैं। अुन्होंने जो बातें लिखी हैं अुनका जवाब दें तो ठीक रहे। चुनावके बारेमें और सवर्ण हिन्दुओंके बारेमें मेरे पास आंकड़े नहीं हैं। सुन रहा हूं।

आपके स्वास्थ्यके बारेमें मैं आपसे जरा भी सहमत नहीं हूं। अुसके लिये कुछ न कुछ तो करना ही चाहिये। आपको दिनशा पर जरा भी भरोसा नहीं है यह दुःखकी बात है। परंतु दूसरे भी बहुत लोग हैं। स्वास्थ्यको गिरने न दीजिये।

अहमदाबादके बारेमें समझा। लोग ही न चाहें तब तो आना हो ही नहीं सकता।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
६८ मरीन ड्राइव
बम्बई

२५२

पंचगनी
२४-७-'४५

भाओी वल्लभभाओी[1]

आपका पत्र मिला। तुरंत आसिफअली[2] को लिखने बैठ गया। जबरदस्ती कोओी कांग्रेस-भवनमें नहीं बैठ सकता और अुपवास भी कैसे कर सकता है?

---

१ यह पत्र पू. बापूके निचेके पत्रके अुत्तरमें है।

६८ मरीन ड्राअिव
बम्बओी
२२-७-'४५

पू. बापू,

आपका पत्र मिला। व्रजकृष्ण आ गये।

जवाहरलालकी यहांकी अखबारी मुलाकात जैसी थी वो हमें शोभा नहीं दे सकती। अब भी अुन्हें रोज-रोज कुछ न कुछ समाचार पत्रोंमें देना पड़ता है। अैसा लगता है कि सोशलिस्टोंको खुश करनेके लिअे शायद अुन्हें यह करना पड़ता है।

वे २४ तारीखको काश्मीर जायं तो अब कोओी हर्ज नहीं। परंतु शेखको छुड़ाये बिना कोओी रास्ता नहीं निकलेगा और अुन्हें भी चैन नहीं पड़ेगा।

शिक्षकोंकी हड़तालके लिअे थोड़ी-बहुत जिम्मेदारी सरकारकी है। यह प्रश्न सहज ही हल हो जाता। अुसे लम्बानेसे सर्वत्र धूम मची है। आज तार भी बन्द हैं। मिलें बन्द हैं। स्कूल-कालेजोंमें कोओी लड़के गये नहीं हैं। आसिफअली भी खूब हड़तालें करवा रहा है। साम्यवादी तो हैं ही। यह सब होने पर भी कांग्रेस अगर अेक स्वरसे बोल सके तो अब भी सब कुछ ठिकाने आ जाय। परंतु आज तो अुसकी बेसुरी

---

२ श्री आसिफभाओी जाफरभाओी। बम्बओीके अेक कांग्रेसी मुसलमान।

जवाहरलालकी बात समझा। जिस समय तो सब कुछ निर्विघ्न पार हो जायगा। बाकी बादमें देखेंगे।

प्यारेलाल कहता है कि बम्बईमें ८ तारीखको कार्यसमितिकी बैठक होनेकी बात अखबारोंमें आयी है।

मुन्शीकी दिल्लीकी मुलाकातका हाल सुना होगा। काम सब नाजुक होता जा रहा है।

हाकिमोंकी हड़ताल हुई और अब साथमें दूसरी हुई है। यह सारा मुझे तो बहुत सूचक प्रतीत होता है। जिस बारेमें आपको और सबको बहुत विचार करनेकी जरूरत है। कांग्रेसकी अुपरसे भले आवाज है। * अमलके लिये जयप्रकाशका अेक कार्यक्रम प्रकाशित हुआ है और कांग्रेसकी ओरसे जवाहरलालका दूसरा। पहलेमें कुछ दिन हड़ताल, जलूस वगैरा रखे गये हैं। दूसरेमें सब निकाल दिये गये हैं। अैसा चल रहा है।

मोरारजी कल अहमदाबाद गये हैं। वहां अब मुसलमान भी थक गये हैं। सुलह चाहते हैं। मुंगीगर मोरारजीके पास गया था। मैं तो अहमदाबाद नहीं गया। वहांके जिम्मेदार आदमियोंने ही कहा कि मैं न आअूं। जिसलिये नहीं गया। तबीयत बिगड़ी तो जरूर है। परन्तु वहां आमन सुधर जायगी अैसी बात नहीं है।

मीमरावके लिये चौथी आज फिर आये थे। अुनका बड़ा आग्रह है कि जिन्हें समझा लेकर प्रयत्न किया जाय। मगर मुझे कोअी आशा नहीं दीखती। फिर भी कोशिश कर देखनेमें नुकसान नहीं मालूम होता।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

मैं मानता हूं कि डाक्टरोंका मामला अेक-दो दिनमें तय हो जायगा।

वल्लभभाअीके प्रणाम

महात्मा गांधीजी
पंचगनी

ही शोभा हो परंतु लोगों परसे अुसका काबू छूट गया दीखता है। अथवा कांग्रेस ही दूसरे अिसमें शामिल हो। यह सफ़ाअी होनी चाहिये। नहीं तो हाथमें आअी हुअी बाजी चली जायगी।

तबीयत अच्छी होगी।

यहां तो आजकल चौबीसों घंटे बरसात हो रही है।

बापूके आशीर्वाद[1]

---

1 जिस पत्रके अुत्तरमें पू. बापूने अुसी दिन जिस प्रकार पत्र लिखा था

१८ मरीन ड्राअिव
बम्बअी
२४-७-४६

पू. बापू

आज रातको नौ बजे दिल्लीसे सुधीरका टेलीफोन आया। अुसकी आवाज सुनकर मैं तो चकित हो गया। मैं मानता था कि वह चला गया है और अुसका कोअी जवाब ही नहीं आया।

अुसने कहा कि यहांसे जाकर अुसने पैसेज और प्रायोरिटी मांगी तो आफ़िसरोंने नहीं देने दी और अेजन्टने अुसे खबर दी कि कांग्रेसका होनेसे अुसे जाने दें तो जिनाके आदमीको भी जाने देना पड़े। अुसने कहा कि मैं कांग्रेसकी तरफ़से नहीं जा रहा हूं। फिर भी अिनकार कर दिया। अन्तमें अुसने भारतमन्त्रीको तार दिया और आफ़िसरोंमें और क्रिप्सके बीच कभी तार आने-जानेके बाद आज अुसे प्रायोरिटी मिली। यहांसे जब यह कहा गया कि ये हमारी तरफ़से जा रहे हैं, तब मजबूर होकर दी गयी। फिर भी सुधीरसे कहा गया कि तुम्हें प्रायोरिटी दी तो जरूर गयी है मगर मि. जिनाको भी खबर दे दी गयी है कि सुधीर वहां जा रहे हैं। अिसलिअे आपको किसीको भेजना हो तो आपके आदमीको भी सुविधा दी जायगी।

डाक-विभागकी हड़तालमें भी अैसा ही हुआ है। आफ़िसरोंने जवाहरलालजीसे कहा कि कांग्रेसको अपना असर अिस्तेमाल करके

२५१

पंचगनी
२७-७-'४६

भाभी वल्लभभाभी[1]

आपका पत्र मिल गया। सुधीर अब अिनकार तो कर ही नहीं सकता। और अिस साहबका आदमी भी आय तो भले आय।

हड़तालका अंत करना चाहिये। क्योंकि थोड़े ही दिनोंमें मुझे जिम्मेदारी संभालनी है। परन्तु तुरंत ही अेक पत्र जिनाको भी अिसी आशयका रुक ही लिखा। अिस प्रकार हर मामलेमें पेरीटी (बराबरी)का खयाल रखकर काम कर रहे हैं। अिसलिये यह कहना कठिन है कि क्या होगा।

सुधीरने आपको जो लम्बा पत्र लिखा था यह संभव है आपको न मिला हो। अुसने मुझे भी सारे हालचालका लम्बा पत्र लिखनेकी बात कही। पर मुझे वह पत्र नहीं मिला। डाककी हड़तालमें ये सब रह गये होंगे।

आसिरमकी कांग्रेस भवनमें पड़ा है। यद्यपि हटता नहीं। किसीकी मानता नहीं। कांग्रेसवाले सब परेशान हो रहे हैं।

सेवक
वल्लभभाभीके प्रणाम

१ यह पत्र पू. बापूके नीचेके पत्रके अुत्तरमें लिखा गया है

६८, मरीन ड्राभिव
बम्बअी – १
२१-७-'४६

पू. बापू,

आपके पत्र मिले। गोआके बारेमें कल बयान निकाल दूंगा। डाकवालोंकी हड़ताल अभी तक जारी है। अिसमें दोष दोनों ही

२ श्री सुधीर घोष। फरीदाबादके निर्वासित केन्द्रमें सरकारी अफसर थे।

मेरा खयाल है कि मैंने जो पत्र लिखा होगा अुसमें यही कहा होगा कि आपका कोअी आदमी जाय तो मंत्रिमंडलको अच्छा लगेगा। कुछ भी हो अगर समय रहे तो सुधीरका आपसे और मुझसे मिलकर जाना अच्छा होगा। जो कुछ हो रहा है अुस पर विचार जरूर करना चाहिये। परन्तु जिसकी चिन्ता करना मैं व्यर्थ मानता हूं। सुधीरका पत्र मुझे तो नहीं मिला। मिलता तो तुरन्त आपको भेज देता।

आबिदअलीको मैंने पत्र लिखा है। वह परसों रातको या कल सवेरे पहुंच सका होगा। मेरे खयालसे आबिदअली हटें ही नहीं तो कांग्रेसके अधिकारियोंको अुनके विरुद्ध सत्याग्रह करना चाहिये। अर्थात् अुन्हें सूचना देकर जब तक वह चले न जायं तब तक सब कमरे बन्द करके कांग्रेस-भवन खाली कर देना चाहिये। अगर ऐसा सत्याग्रह न कर सकें तो अुन्हें अदालतमें जानेका नोटिस देकर खाली करनेको कहना चाहिये।

मैं ५ या ६ तारीखको पूना छोड़ूंगा। यहां जानेका विचार है। जान-बूझकर अल्पमतसे ही पार्टी पकड़नेका विचार है। फिर जम्बकी पार्टियोंका है। सरकारी तंत्र टूट गया है। प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारोंके बीच सहयोग नहीं है।

जवाहरलालका काश्मीर जानेसे पहले आसफअलीके साथ भेजा हुआ पत्र कल शामको मिला। अुसके साथ वाअिसरॉयका पत्र और अुसका जिनकी ओरसे दिया गया जवाब दो महत्त्वपूर्ण पत्र हैं। जिसलिये जिन सभीकी नकल भेज रहा हूं।

सुधीर आज करांचीसे चल देगा। जानेसे पहले आज अुसका भेजा हुआ छोटा-सा पत्र आया है। वह भी आपके देखने लायक है। अुसकी नकल भेज रहा हूं। अब तो मैं समझता हूं आप पूना आयेंगे।

सेवक

वल्लभभाअीके दंडवत् प्रणाम

तक जानेकी जरूरत नहीं। पुलिसके पहरेमें रहना और मकान-मालिक और दूसरे लोगोंको असुविधामें डालना मुझे पसन्द नहीं। मैंने यह सारी बात ओकरसिमरसे कही थी। लीलावतीसे भी कही थी और बहुत करके पाटीलसे भी।

फिर, अन्यत्र कहीं ठहरना भी मुझे अच्छा नहीं लगेगा। यह सब आप भी ठीक मानते हैं न?

बापूके आशीर्वाद

चि. मणि, तुमने तो कुछ लिखा ही नहीं।

बापू

सरदार वल्लभभाओ पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बअी

२५४

पूना
२१-७-'४६

भाओ वल्लभभाओ

आपका पत्र मिल गया। देवने बात भी की। और भी करेंगे। राजाओंसे मिला। उसका पूरा सार लिखा जा रहा है। पूरा हो जाने पर नकल भेजूंगा।

आबिदअलीका लम्बा पत्र आया है। आज जवाब भेज रहा हूं। उपवास छोड़ें, कांग्रेसका मकान खाली करें और मर्जी हो तो झगड़ा पंचको सौंपें। अब देखें क्या होता है? गाडियोंका मामला

---

१ महाराष्ट्रके देशी राज्योंके राजा।

२ मिल-मालिकोंके साथ हुआ उनका झगड़ा।

बिगड़ गया दीखता है। आपको यह ख्याल निकालना चाहिये कि मैं कांग्रेसकी बात नहीं मानते।

स्वास्थ्यके बारेमें शुरू तो कीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बओ

२५५

पूना
१२-७-'४६

भाओ वल्लभभाओ

आप अपने स्वास्थ्यकी रक्षा नहीं करते यह ठीक नहीं।

भाओ आबिदअली लिखते हैं कि अुन्होंने अुपवास छोड़ दिया है और कांग्रेस भवन खाली कर दिया है। मेरे नाम मीठा पत्र भेजा है।

आज गवर्नरसे मिलने जाना है। मैं समझता हूं यह तो केवल *परिचयके लिओ है।*

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बओ

२५६

पूना
१-८-'४६

भाओ वल्लभभाओ

आपके पत्रका जवाब पूरी तरह नहीं दे सका। मुख्य वस्तु आम्बेडकरके बारेमें है। मैं अुनके साथ थोड़ी भी समझौता करनेमें खतरा देखता हूं क्योंकि अुन्होंने मुझे साफ-साफ कह दिया है कि सच-झूठ या हिंसा-अहिंसामें अुनका विश्वास नहीं है। अुनके लिओ सब

ही न्याय है यानी जिस तरीकेसे अुनका काम बन सके वह तरीका अपनाया जाय। जो आदमी स्वेच्छासे मुसलमान हो सकता है, अीसाअी बन सकता है, सिक्ख हो सकता है और स्वेच्छासे पुनः बदल सकता है अुस आदमीके साथ समझौता करे तो अुसकी दस बार कामयाबी करनी चाहिये। और भी अैसी बहुतसी बातें लिखने लायक हैं। मेरे जवाबमें यह सब आता है। यह catch है। और *जिस समय अुसे २ फीसदी मांगनेकी कोअी जरूरत नहीं है।* मगर हिन्दुस्तानके हाथमें सचमुच सत्ता आ जायगी — प्रान्तोंकी तो अधिकतर है ही — और सवर्ण कहे जानेवाले लोग सच्चे होंगे तो सब कुछ ठीक ही होगा। न्याय करनेवाले लोगोंकी संख्या कम होगी और सत्ता धर्मान्ध लोगोंके हाथमें आ जायगी तो आज कोअी भी समझौता कर लिया जाय तो भी अन्याय ही होगा। आज कुछ भी समझौता कीजिये लेकिन हरिजनोंको मारनेवाले मार डालने-वाले पानी भरनेसे रोकनेवाले पाठशालाओंसे निकाल देनेवाले और मन्दिरोंमें न आने देनेवाले आखिर कौन हैं? कांग्रेसमैन ही है न? यह चीज जैसी है वैसी ही स्वीकार करना बड़ा जरूरी है। अिसलिये मैं कहूंगा कि आप जिस समझौतेका सुझाव दे रहे हैं अिस समय अुसके लिये प्रयत्न करना जरूरी नहीं है। परन्तु यह जाननेका प्रयत्न करना चाहिये कि कांग्रेसकी न्याय करनेकी शक्ति कितनी है। मेरा यह कथन अरण्य रोदन हो सकता है। अैसा हो तो भी वह मुझे प्रिय है। अिसलिये जीनाके डरसे आम्बेडकरके साथ समझौता करनेसे माया मिले न राम वाली गति होगी। अितना लिखना तो बहुत हो गया।

५ तारीखको पूनासे निकलना तय किया है। ६ तारीखको वर्धा पहुंचूंगा। सम्मेलनमें जान-बूझकर न आनेके बारेमें लिख चुका हूं। अुस पर कायम हूं। फिर भी आप फेरबदल कराना चाहें, तो मुझे कह सकते हैं। अिसलिये मुझे कुछ भी ध्यानमें नहीं पड़ा रहना

होगा। यहाँ मिलनेकी जरूरत हो तो आ जाइये। पर स्वास्थ्यको हानि पहुंचाकर तो हरगिज न आइये। ऐसी कोई बात नहीं जो हम चिट्ठी-पत्रीसे न कर सकें। ८ तारीखको वर्धा तो आप आयेंगे ही। अेक दिन पहले आना हो तो भी आ जाइये।

जाहिये जबरदस्ती कर रहे हों तो मुनके विरुद्ध बोलनेमें मैं पूर्ण औचित्य मानता हूं।

बापूके आशीर्वाद

---

१ पू बापूने जिस पत्रका निम्नलिखित अुत्तर दिया था

१८ मरीन ड्राअिव

बम्बअी

२-८-'४६

पू बापू,

आपका पत्र मिला।

आप बम्बअी न आकर सीधे ही वहांसे वर्धा चले जायं यही ठीक है। मैं ता १-८-'४६ को शामके मेलमें यहांसे चलकर ७ को सवेरे वहां पहुंच जाअूंगा।

पनावसे यहां सिक्ख मानवाले हैं जिसलिये ५ तारीखको तो यहां रहना ही पड़ेगा। जिसलिये जल्दी नहीं आ सकता।

भीमराबके बारेमें आपके समझनेमें फर्क है। मुसलमानोंकि तरह जिनके साथ समझौतेकी बात नहीं करता। जो यह मांगते हैं, वही अन्तमें हमारे साथ रहनेवाले दूसरे लोग भी मांगनेवाले हों तो जिन्हें लेकर अपनानेमें मैं बुद्धिमानी मानता हूं। जगजीवनराम भी वैसी ही कोअी मांग करनेवाले हैं। हार गये हैं। जिन्हें अपनामा जा सके तो अपना लेनेमें मुझे लम्बी दृष्टिसे फायदा दीखता है। जिनका भरोसा करनेका बड़ा प्रश्न नहीं। वचन देकर पालन न करें तो भी जिन्हींका नुकसान होगा। २ फीसदी हरिजनोंके मत प्राप्त कर सकने वालोंको ही लेनेमें जिन्हें साथ काम होता हो सो बात नहीं। वर्ना

चि॰ मणि

तुम्हें मिला जा सके जितना समय नहीं है। जमनाबाई की अच्छी याद दिलाओ। साथका पत्र अुन्हें पहुंचा देना।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
बिड़ला हाअुस
५, अल्बुकर्क रोड
नअी दिल्ली

परिवर्तनकी जो बात अखबारोंमें आअी है, वह जिनकी दी हुअी नहीं है। जिनकी अैसी बात बेकार है। वह जोर देने लायक बात नहीं है। आखिर संविधान-सभामें भी अैसे सुझाव तो आयेंगे ही। सब-कमेटीने भी अैसी सिफारिशें की ही हैं। मुझे जिसमें कोअी खतरा नजर नहीं आता। मैं आपकी बात समझा नहीं।

सवर्णोंका दोष तो है ही। अुसका जो अुपाय करना हो अुसे करनेमें जिससे कोअी रुकावट नहीं होगी। बम्बअी प्रान्तमें महारोंकी बड़ी आबादी तो है ही। अुनके वे प्रतिनिधि हैं और दूसरी जगह हम जिन्हें चुन दें तो भी अुसका लाभ जिन्हें नहीं मिलता। विचार कीजिये। मुझे कोअी खतरा नहीं मालूम होता।

डाक-विभागका निपटारा कर डाला।

सेवक
वल्लभभाअीके प्रणाम

बापूके साथ अुसकी भेजा।

१ अहमदाबादके सेठ मगनदास गिरधरदासके भाअी स्व॰ सेठ चिमनभाअी गिरधरदास कुछ समय सख्त बीमार थे।

२५७

मुरलीकांचन
जिला पूना
२-८-'४६

भाओ वल्लभभाओ

'राधाकृष्ण'[1] ने हड़तालके बारेमें पत्र लिखा है। अुसमें हड़तालियों द्वारा अेक आदमीके घायल किये जानेकी शिकायत है। और दूसरोंके साथ भी मारपीट की गयी है। जिस परसे मैंने आबिदअलीको पत्र लिखा है। अुसकी नकल भेज रहा हूं। अगर मारपीट जारी ही रहे, तो मिल-मालिकको मिल बन्द कर देनी चाहिये। और अैसा बन्दोबस्त करना चाहिये जिससे कोओी आग न लगा सके अथवा मालको नुकसान न पहुंचा सके।

औमके मामलेमें लिखनेका विचार हुआ करता है। कभी यह खयाल होता है कि कार्यसमिति ८ तारीखको मिल रही है जिसलिये तब तक प्रतीक्षा करूं। कभी जीमें आता है कि लिख डालूं। देखता हूं कि जिसमें से क्या होता है।

९ तारीखको सेवाग्राम पहुंचनेकी आशा रखता हूं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बओी

---

[1] श्री आबिदअलीने जिस मिलमें हड़ताल करायी थी अुस मिलके मालिक।

[मामाका पत्र]

अुरुळीकांचन
जिला पूना
ता. २-८-'४६

भाअी आबिदअली

तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी। मुझे भाअी सेठना ता. ११ को मिल गये। मैंने अुनसे सलाह की कि अगर अुनको कुछ कहना है तो वह भी किसी पंचसे तहकीकात करवानी चाहिये और भाअी मीमजी या हड़तालियोंको या भाअी आबिदअलीको शिकायत है वह भी पंचके पास जानी चाहिये। यही सभ्य न्यायका तरीका है।

सत्याग्रही हड़ताल या और किसी प्रकारका सत्याग्रह तब ही हो सकता है, जब अिन्साफ पानेके सब मामूली दरवाजे बन्द हो जाते हैं और अिन्साफके बदले आपखुदी चलती है।

आज सेठनाजीका खत मिला है। अुसमें वे लिखते हैं कल यानी ११-७-'४६ की रात्रिको हड़तालियोंने अेक हेडक्लार्कको मारा और कल सवेरे अुन्होंने कअी आदमियोंको चोट पहुँचाअी। हड़ताली अभी तक काम पर वापिस नहीं आये हैं।

अगर अैसा हुआ तो अच्छी बात नहीं बनी है और क्योंकि हड़ताली लोग तुम्हारी कब्जेमें हैं अिसलिये अैसी कोअी ज्यादतियां न करे यह देखनेका तुम्हारा फर्ज है। अगर कुछ भी कहने जैसा हो तो सरदार वल्लभभाअी पटेलसे कहनेकी मेरी सलाह है।

१ यह मूल हिन्दीमें है।

२५८

मुम्बी
१-८-'४६

भाओी वल्लभभाओी

आपका पत्र मिला। जहां आपको खतरा न दिखाओी दे वहां मुझे कहना ही क्या हो सकता है? अवश्य मीमराजसे संधि कर लीजिये। मुझे अधिक कुछ नहीं कहना है।

आपके आनके बारेमें समझ गया। ७ तारीखको प्रतीक्षा करूंगा। रामस्वरदास (बिड़ला) का पत्र पहुंचा दें।

चिमनलाल (गिरधरदास) आखिर चल बसे। सुनता हूं कि डाकवालोंका मामला फिर बिगड़ा है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
६८, मरीन ड्राअिव
बम्बओी

२५९

सेवाग्राम
११-८-'४६

भाओी वल्लभभाओी

आपका पत्र और के साथ हुअे पत्रव्यवहारकी नकलें देखी। अब अधिक समाचार आर्यंग तब जानूंगा। अपने स्वास्थ्यकी रक्षा कर सकें तो मैं मुझे सेवाका अेक मात्र ही मानूंगा। परन्तु आप सरदार ठहरे! सरदारको कौन कह सकता है?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओी पटेल
६८ मरीन ड्राअिव
बम्बओी

२६०

(पुर्जा)

वाल्मीकि मंदिर
नयी दिल्ली
सोमवार,
२ ९ '४६

प्रार्थनाके बाद आप ही लोगोंका सवाल कर रहा हूँ। समझकर निकाल दो खादी-चरखेको याद करो हिन्दू-मुस्लिमको अिकट्ठा करो अस्पृश्यता दूर करो खादी अपनाओ।[1]

२६१

(पुर्जा)

नयी दिल्ली
१ १ '४६

यह बात गलत है। असली गरीब जिस तरह रेडियोके द्वारा सुन ही नहीं पाते। अिसलिये मुझे अिस बारेमें जरा भी अुत्साह नहीं है।

---

१ जिस दिन अंतरिम सरकारमें मंत्रीपद स्वीकार करनेवाले थे अुस दिन शपथ-ग्रहणकी विधिके लिये सरकारी भवनमें जानेसे पहले पू. बापू, राजेन्द्रबाबू और जगजीवनराम पू. बापूजीको प्रणाम करने और अुनके आशीर्वाद लेने गये। अुस दिन पू. बापूजीका मौनवार था, अिसलिये हिन्दीमें यह पुर्जा लिखकर दिया।

२ पू. बापूजी दिल्ली गये हुअे थे। अुस समय अुनके सन्देश सारे देशको सुननेको मिलें अिसके लिये अेक भाअीने पू. बापूजी सुझाया कि आप अुनका रेडियो प्रवचन कराअिये। यह पत्र पू. बापूजीको बताने पर अुसके जवाबमें अुन्होंने अुपरोक्त शब्द लिखे थे।

२६२

सोदपुर
५ ११ '४६

भाअी वल्लभभाअी

जवाहरलालको लिखे पत्रकी नकल भेजता हूं। मुझे देख के। जिससे अधिक मुझे कुछ नहीं कहना है। आपको कुछ समझाना हो तो समझाअिये। मैं सुननेको तैयार हूं। आप जिन उपवासोंके साक्षी थे उनके जैसा यह नहीं है। लेकिन बहुत भेद भी नहीं है। मैं कुछ कम यातनामें से नहीं गुजरा हूं।

यह पत्र राजाजी तथा देवदास वगैरा पढ़ें।

मेरे पास कोअी न दौड़े। मदद देनेवाले तो बहुत हैं। मेरे जीनेका आधार केवल हिन्दुस्तानकी परम शांति है। उसे प्राप्त करनेको आप लोग सब कुछ करेंगे ही। मेरी मृत्युकी आगाही पर जोर न देकर कहिये कि मेरी भूल हो तो मुझे मरने देनेमें कोअी हानि नहीं। मैं आनन्दमें हूं।

बापूके आशीर्वाद

बापूजी कहते हैं कि सब पत्र मौलाना साहबको बतावें।

सुशीलाके प्रणाम

सरदार वल्लभभाअी पटेल
१ औरंगजेब रोड
नअी दिल्ली

[साथका पत्र]

कलकत्ता
५ ११ '४६

चि. जवाहरलाल

बिहारकी बातें सुनकर मैं बेचैन बना हूं। मेरा धर्म मुझे स्पष्ट मालूम होता है। बिहारके साथ मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध है। मैं भूल नहीं सकता। जो कुछ सुनता हूं उसका आधा भी सत्य हो तो वह बताता है कि बिहारने मनुष्यत्व खो दिया है। ऐसा कहना कि

जो कुछ हुआ सो गुण्डोंने किया है, सर्वथा असत्य होगा। अबतक मैंने अनशनको रोकनेका बड़ा प्रयत्न किया तो भी मैं अुसे रोक नहीं सकता हूं। आज सातवां दिन है कि मैंने दूध और अन्न छोड़ रखा है। शुरू हुआ खांसी और फुन्सियोंके कारन लेकिन साथ-साथ शरीरसे झुकता गया था। जिसमें बिहारने मामला गंभीर कर दिया। और भीतरसे आवाज निकली तू जिस हत्याकांडका साक्षी क्यों बने? अगर तेरी बात जो दियासली जैसी साफ है न झेली जाय तो तेरा काम खतम हुआ। क्यों नहीं मरता? ऐसी दलीलोंने मुझे मजबूर किया है कि मैं अनशनकी ओर जाऊं। मैं निवेदन जाहिर करना चाहता हूं कि अगर बिहारमें और अन्य सूबोंमें हत्याकांड खतम नहीं होगा तो मुझे अनशन करके देह छोड़ना होगा।

महमद युनस साहबने जो खत समसुद्दीन साहब पर लिखा है सो सरदार बलदेवसिंगजीके पास है अुसे देखो। अुसमें जो है वह सही है क्या? जो बना है अुसका पूरा बयान बना हमारा फर्ज है।

मेरा अल्पाहार चलता रहेगा। अनशनमें देर होना संभव है। दिल्लीमें तुमने मुझे अुपवासके बारेमें पूछा था। मैंने कहा था आज तो कुछ खयाल नहीं है। अब हालत वह नहीं रही है। फिर भी तुम्हें जो कहना है सो कह सकते हो। अुसका असर होगा तो अनशनका विचार छोडूंगा। मेरा अभिप्राय तो यह है कि मेरे स्वभावको देखते हुये मेरी बात तुम पसन्द करोगे। कुछ भी हो मेरी सलाह रहेगी कि आप लोग अपना काम करते रहें। मेरी मृत्युके बखानमें समय न दें। मुझे ईश्वरकी गोदमें छोड़ें और निश्चिन्त बनें।

यह पत्र बिहारके प्रधान-मंडलको बता सकते हैं। यह है राजकिशोरप्रसादका बिहार!

बा

बापू

---

१ यह पत्र हिन्दीमें है।

दत्तपाड़ा
(नोआखाली)
१४-११-'४६

चि. वल्लभभाअी

चि.[1] से कुछ किया जिसलिअे मिलाकर माफी नहीं कर रहा हूं। जो है सो है। आचार्य (कृपलानी)[2] ने सब कुछ सुनाया है। मैंने अपना विचार जवाहरलालको बता दिया है। अुसे देख ले। जितना विचार करता हूं अुतना मेरठमें कांग्रेस अधिवेशनके विरुद्ध होता जा रहा हूं। न करना पहली बुद्धिमानी होगी और करना ही हो तो अभी दिल्लीमें कीजिये। कृपलानीकी माया है तो मुझे अंतिम निर्णय करने देना आपका धर्म होगा। सब राय दें। अुनका भाषण छापा जाय और पढ़ा जाय — अगर कांग्रेस न भरी जाय तो। आपके सामने अनेक प्रश्न हैं। अुनका निपटारा करनेके लिअे शांति चाहिये, समय चाहिये। अगर अभी भूल हो जायगी तो हमें बहुत भुगतना पड़ेगा।

मैं यहांसे निकल ही नहीं सकता। मुझसे कुछ पूछना ही पड़े तो यहां आकर पूछा जाय। यही रास्ता रह गया है। सच कहा जाय तो पूछनेकी बात ही क्या हो सकती है। बहुत कहा है बहुत किया है। यहांका काम शायद मेरा आखिरी काम होगा। अिसमेंसे बचा-बचा और जीता निकल आया तो नयी जिन्दगी होगी। यहां मेरी अहिंसाकी जैसी परीक्षा हो रही है वैसी आज तक कभी नहीं हुअी।

आपका शरीर ठीक काम देता होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदारजी
नयी दिल्ली

---

१ चिरंजीव।

२ आचार्य कृपलानी कांग्रेसके मनोनीत अध्यक्ष थे।

श्रीरामपुर,
४-१२-'४६

चि॰ वल्लभभाअी

संविधान-सभाके बारेमें मेरी राय साथमें है। अिसे देखकर जो करना हो कीजिये। जवाहरलाल न हों यह आपत्तिजनक है। मेरा विचार तो दृढ़ है। रद्द करनेमें हमारी कमजोरी हरगिज नहीं है। हकीकतका तकाजा हो वह करनेमें कमजोरी कैसे? परन्तु संभव है मैं बिलकुल भूल कर रहा होअूं।

बापूके आशीर्वाद

२

[साथके कागज]

१

१ मेरे लिअे तो यह दीपककी तरह स्पष्ट है कि अगर मुस्लिम लीग संविधान-सभाका बहिष्कार करे, तो कैबिनेट-मिशनके १६ मअीके बयानके अनुसार अुसकी बैठक नहीं होनी चाहिये। दोनों मुख्य दलों अर्थात् कांग्रेस और लीगका सहयोग अुस बयानमें साफ तौर पर जरूरी माना गया है। अिसलिअे दोनोंमें से अेक दल अगर अुसका बहिष्कार करे, तो अुस बयानके अनुसार संविधान-सभाको बुलाना अनुचित है। बहिष्कारके होते हुअे भी सरकारको संविधान-सभा बुलानी ही हो तो अुसके लिअे अेक ही अुचित मार्ग खुला है। वह यह कि अुसे कांग्रेसके साथ मशविरा करके दूसरा बयान निकालना चाहिये। यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि कांग्रेस कितनी ही बलवान क्यों न हो तो भी आज जिस संविधान-सभाकी कल्पना है वह तो ब्रिटिश सरकारके अुपक्रमसे ही बुलाअी जा सकती है।

२ बहिष्कारके होते हुअे भी ब्रिटिश सरकारके स्वेच्छासे दिये गये सहयोगसे संविधान-सभा मिलनेवाली हो तो वह ब्रिटिश सेना — फिर वह हिन्दुस्तानी हो या गोरी — के पूर्ण अथवा अपूर्ण रक्षणमें ही मिल सकती है। मेरी राय यह है कि अैसी परिस्थितिमें

हमें संतोषजनक संविधान कभी प्राप्त नहीं हो सकता। हम जिस चीजको मानें या न मानें परन्तु हमारी कमजोरी सारी दुनियाके सामने प्रगट हुये बिना नहीं रह सकती।

३ यह कहा जा सकता है कि जिन परिस्थितियोंमें संविधान सभाके रूपमें न मिलना कायदे आजम या मुस्लिम लीगकी शरणमें जानेके बराबर है। जैसा आक्षेप हो तो मैं उसकी परवाह नहीं करूंगा क्योंकि संविधान-सभाको छोड़ देनेमें कांग्रेसकी दुर्बलता नहीं परन्तु कांग्रेसका बल होगा। हम हकीकतोंको ध्यानमें रखकर जैसा करेंगे। अगर हमने जितनी प्रतिष्ठा और शक्ति प्राप्त कर ली हो कि ब्रिटिश सरकारको अलग रखकर भी हम संविधान-सभा बुला सकें तो यह चीज उचित होगी। फिर हमें मुस्लिम लीगका और राजाओं सहित दूसरे दलोंका सहयोग लेना चाहिये और यदि उनमें से कोई शरीक न हो तो भी अनुकूल स्थान पर संविधान-सभा बुलानी चाहिये। यह भी हो सकता है कि उसमें कांग्रेसी प्रान्त और राजा जितने ही दल सम्मिलित हों। मेरे खयालसे जैसी स्थिति गौरवपूर्ण और वस्तुस्थितिके साथ सब प्रकारसे सुसंगत होगी।

(ह०) मो० क० गांधी

श्रीरामपुर
नोआखाली
४-१२-४६

२

सम्राट् महोदयकी सरकारके बयान¹ के परिणामस्वरूप मेरा रवैया कुछ जैसी स्थिति स्वीकार करनेके पक्षमें है

१ वह बयान नीचे दिया जाता है —
सम्राट् महोदयकी सरकारने लंदनमें कल रातको निम्नलिखित वक्तव्य प्रकाशित किया है
सम्राट् महोदयकी सरकारकी पं० नेहरू मि० जिन्ना मि० लियाकतअली खां और सरदार बलदेवसिंहके साथ जो बातचीत चल

सम्राट् महोदयकी सरकारकी स्थिति यह है कि अुसकी हमेशा यह राय रही है कि विभागोंके निर्णय अुससे भिन्न कुछ करनेका समझौता न हुआ हो वहां सारे बहुमतसे होंगे।

रही थी वह कल शामको पूरी हो गयी है। पंडित नेहरू और सरदार बलदेवसिंह कल सुबह हिन्दुस्तान लौट रहे हैं।

[—निवेदन अगले पृष्ठ पर चालू

१ कैबिनेट-मिशनने १६ मअीके वक्तव्यमें यूनियनके और साथ ही प्रान्तोंके संविधान तैयार करनेके बारेमें निम्नलिखित योजना सुझाअी गयी थी

संविधान तैयार करनेवाली सभाकी कार्रवाअी ऐसी होगी कि समस्त सभाकी अेक प्रारंभिक बैठक हो जानेके बाद प्रान्तीय प्रतिनिधि विभागों (सेक्शन्स) में बंट जायंगे। विभाग अ में मद्रास बम्बअी संयुक्त प्रान्त बिहार और अुड़ीसा होंगे। विभाग ब में पंजाब सरहद प्रान्त और सिन्ध आयेंगे। और विभाग क में बंगाल और आसाम होंगे। अिन विभागोंकी बैठकोंमें अपने-अपने विभागके प्रान्तोंके संविधान तैयार किये जायंगे। अिन विभागीय बैठकोंमें यह भी फैसला किया जायगा कि अमुक प्रान्तोंके ग्रुप (वर्ग) बनाये जायं या नहीं। अगर ग्रुप बनाये जायं तो ग्रुपोंको क्या क्या विषय सौंपे जायं यह भी विभागीय बैठकोंमें तय किया जायगा। बादमें संविधान बनानेवाली सभाके सब सदस्योंकी संयुक्त बैठकमें सारे भारतीय संघका (यूनियनका) संविधान तय किया जायगा। अिस व्यवस्थाके अनुसार अेक पर अेक अिस प्रकार तीन तरहके तंत्र अस्तित्वमें आते थे। हरअेक राज्य और प्रान्त अपना संविधान बनाये और अुसकी अपनी कार्यकारिणी और धारासभा हो। अुस पर अमुक प्रान्तोंका ग्रुप हो। अुस ग्रुपकी भी कार्यकारिणी और धारासभा हो और अुस पर भारतीय संघ हो। अुसकी भी कार्यकारिणी और धारासभा हो।

अुसका यह सुझाव है कि कांग्रेस अिस अर्थसे सहमत न हो तो वह निर्णयके लिये फेडरल कोर्टके पास जाय। पंडित नेहरूकी

अिस बातचीतका अुद्देश्य यह था कि संविधान-सभामें सभी दल शरीक हों और सहयोग दें। यह नहीं सोचा गया था कि कोओी भी अंतिम समझौता हो सकेगा। क्योंकि भारतीय प्रतिनिधियोंको किसी भी आखिरी फैसले पर पहुंचनेसे पहले अपने-अपने साथियोंसे सलाह-मशविरा करना होता था।

अिस बातचीतमें मुख्य कठिनाओी १६ तारीखके केबिनेट-मिशनके बयानके पैरा १९(५) तथा (८)के अर्थके बारेमें पैदा हुओी है। यह पैरा संविधान-सभाके विभागोंमें मिलनेके बारेमें है।

पैरा १९(५) अिस प्रकार है

ये विभाग हर विभागमें आये हुअे प्रान्तोंके प्रान्तीय संविधान तैयार करनेका काम करेंगे और अुक्त प्रान्तोंके लिये यह तय करेंगे कि किसी मंडलका संविधान (ग्रुप कान्स्टिट्यूशन) बनाया जाय या नहीं। अगर अैसा संविधान निश्चित करना होगा तो अुपरोक्त मण्डल यह तय करेगा कि कौनसे प्रान्तीय विषय लिये जायं। किसी भी प्रान्तको नीचे दी हुओी अुपधारा (८) की शर्तोंके अनुसार मंडलमें से बाहर निकल जानेका अधिकार रहेगा।

पैरा १ (८) अिस प्रकार है

नओी वैधानिक व्यवस्थाके अमलमें आते ही किसी भी प्रान्तको जिस मंडलमें रखा गया होगा अुसमें से बाहर निकल जानेकी आजादी होगी। अिस बातका निर्णय नये संविधानके अनुसार पहले साधारण चुनाव हो जानेके बाद अब अुन प्रान्तोंकी नओी विधान सभामें कर सकेगी।

मंत्रि-मिशनकी हमेशा यह राय रही है कि जहां अिसका विरुद्ध समझौता न हुआ हो वहां विभागोंके निर्णय सम्बन्धित विभागके प्रतिनिधियोंके सादे बहुमतसे किये जायंगे। यह मत मुस्लिम लीगने

मौजूदगीमें ब्रिटिश सरकारने जिन्ना साहबको यह वचन दिया है कि अुनके अपने अर्थसे फेडरल कोर्टका निर्णय भिन्न होगा तो वह सारी परिस्थिति पर फिरसे विचार करेगी।

स्वीकार कर लिया है। परन्तु कांग्रेसने दूसरी राय प्रगट की है। वह यह कहती है कि बयानको समग्र रूपमें पढ़नेसे अुसका सही अर्थ यह होता है कि प्रान्तोंको किसी खास मंडलमें रहनेके बारेमें और अपने संविधानके बारेमें निर्णय करनेका हक है।

सम्राट् महोदयकी सरकारने कानूनके पंडितोंकी सलाह ली है। वे कहते हैं कि १६ तारीखके बयानका अर्थ केबिनेट-मिशनके अुद्देश्यके अनुसार ही होता है, जो अुसने सदा जाहिर किया है। अिसलिये बयानके अिस भागका अिस प्रकारका अर्थ १६ मजीकी योजनाके आवश्यक अंगके रूपमें समझा जाना चाहिये। अिसीके अनुसार हिन्दुस्तानके लोगोंको नया संविधान तैयार करना है और सम्राट् महोदयकी सरकारको अुसे पार्लियामेन्टके सामने पेश करना है। संविधान-सभामें सभी दलोंको अुसे मंजूर करना चाहिये।

अितने पर भी यह स्पष्ट है कि १६ मजीके बयानके अर्थके बारेमें दूसरे प्रश्न अुपस्थित हो सकते हैं। अिसलिये सम्राट् महोदयकी सरकार आशा रखती है कि मुस्लिम लीगकी कौंसिल संविधान-सभामें भाग लेना मंजूर कर ले तो कांग्रेसकी तरह वह भी स्वीकार करेगी कि दोनोंमें से कोओ भी पक्ष अर्थके बारेमें निर्णय करनेका काम फेडरल कोर्टको सौंप सकेगा और अुसका निर्णय वह मान लेगा ताकि यूनियन संविधान-सभाकी और साथ ही विभागीय संविधान-सभाओंकी कार्रवाओ केबिनेट-मिशनकी योजनानुसार होती रहे। जिन्हें अन्य विवादास्पद मामले हैं अुनके बारेमें सम्राट् महोदयकी सरकार कांग्रेससे आग्रह करती है कि वह केबिनेट-मिशनकी राय मान ले जिससे मुस्लिम लीगके लिये अपने रुख पर पुनर्विचार करनेका रास्ता खुल जाय। केबिनेट-मिशनका अिरादा जिस प्रकार दुबारा स्पष्ट

सम्राट् महोदयकी सरकारने दूसरा सुझाव यह दिया है कि कांग्रेस या तो अुसका अर्थ अिस समय स्वीकार कर ले या संविधान-सभा विभागोंमें बैठना शुरू करे अुससे पहले फेडरल कोर्टके पास जाय। अिसमें जाहिरा तौर पर अिरादा यह है कि अिस प्रश्न पर कोर्टका फैसला मालूम हो जानेके बाद ही मुस्लिम लीग यह तय करे कि वह संविधान-सभाके कामकाजमें भाग लेगी या नहीं। मैं यह सुझाव नहीं मान सकता। कांग्रेसकी स्थिति यह है कि संविधान-सभाको कुश्तीका अखाड़ा न बनाया जाय। मुझे तो यथासंभव विवादास्पद मामलोंमें सर्वसंमत निर्णयों पर पहुंचनेका प्रयत्न करना है। यह बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है। किसी भी दलको अपनी बात फेडरल कोर्टके पास ले जानेका निश्चय करनेसे पहले विभागीय बैठकोंमें चर्चा करके समझौते पर आनेके तमाम रास्ते आजमा लेने चाहियें। अिसके विपरीत अिस समय तो मुस्लिम लीगकी स्थिति यह है कि अुसने १६ मअीके सरकारी वक्तव्यके प्रस्ताव नामंजूर कर दिये हैं। जब तक मुस्लिम लीग संविधान तैयार

कर देने पर भी संविधान-सभाकी अिच्छा यह हो कि अिस मूलभूत प्रश्नका निर्णय फेडरल कोर्टको सौंपा जाय तो यह सौंपनेका काम बहुत जल्दी करना चाहिये। तो फिर यह अुचित होगा कि संविधान-सभाकी विभागीय सभायें फेडरल कोर्टका फैसला आने तक मुलतवी रखी जायें।

अिस तरह काम किया जाय अिस बारेमें सर्वसम्मत हुअे बिना संविधान-सभाकी सफलताकी कोअी आशा नहीं रखी जा सकती। अगर अैसी संविधान-सभा जिसमें हिन्दुस्तानकी आबादीके बड़े भागका प्रतिनिधित्व न हो, संविधान बनाने बैठ — कांग्रेसने खुद कहा है कि अुसकी अैसी धारणा नहीं है, सम्राट्की सरकारकी भी अैसी धारणा नहीं है — तो देशके जो भाग नाराज हों अुन पर यह संविधान जबरन् लादने जैसी बात होगी।

नअी दिल्ली
७-१२-'४६

करनेके काममें सहयोग देनेका निर्णय न कर ले तब तक यह पूछ निकालना संभव नहीं कि संविधान-सभाकी कार्रवाओी संबंधी अिन महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर विचारोंमें चर्चा करके समझौता हो सकता है या नहीं। अिसलिअे मुस्लिम लीगकी कौंसिलका पहला काम यह करना है कि वह अपना निश्चय बदले और संविधान-सभामें भाग लेनेका निर्णय करे। संविधान-सभासे अैसा मालूम हो कि समझौतेकी संभावना नहीं है तो यह फैसला करनेके लिअे काफी समय रहेगा कि यह चीज फेडरल कोर्टके सामने ले जाओी जाय या नहीं। मेरा निवेदन यह है सम्राट् महोदयकी सरकारने अेक विवादास्पद मामलेके बारेमें अपना विचार अिस तरह घोषित कर दिया है कि अंतिम निर्णय पर अुसका विपरीत प्रभाव पड़े जब कि खुद अुसीने दूसरे विवादास्पद प्रश्नोंको कांग्रेसके सुझावके अनुसार निर्णयके लिअे फेडरल कोर्टके सामने ले जानेकी बात रखी है। अिसलिअे हमें कोअी बयान प्रकाशित करना हो तो अिस बातके खिलाफ साधारण रूपमें विरोध प्रगट करना चाहिये। अेक और बातके विरुद्ध भी कांग्रेस अपनी आवाज अुठा सकती है। कांग्रेस और सिक्खोंके बारेमें अन्तरिम सरकारमें शरीक होनेके लिअे १६ मअीका बयान स्वीकार करना ब्रिटिश सरकारने आवश्यक समझा था जब कि मुस्लिम लीगको वह अभी तक मनानेका प्रयत्न कर ही रही है।

परन्तु मुख्य प्रश्न तो यह है कि सम्राट् महोदयकी सरकारके १६ मअीके बयानमें जो योजना रेखांकित की गअी है अुसे मुस्लिम लीगने अभी तक मंजूर नहीं किया और अब कर लेनेकी कोअी निश्चित संभावना दिखाओी नहीं देती। अिसलिअे मतदानके ढंगके बारेमें कांग्रेस कोअी निश्चित तरीका स्वीकार करे, अिससे पहले मुस्लिम लीग कौंसिलको सरकारी प्रस्तावोंको अस्वीकार करनेवाला अपना प्रस्ताव बदलना चाहिये और संविधान-सभाकी चर्चाओंमें भाग लेना मंजूर करना चाहिये।

ब्रिटिश सरकारके बयानके आखिरी पैरेके सम्बन्धमें यह साफ कहना चाहिये कि मि. मेटलीन स्पष्ट रूपमें यह घोषणा की थी कि देशकी समग्र प्रगति पर अल्पमतोंको नामंजूरीकी मुहर नहीं लगाने दी जायगी। अिस वचनको ब्रिटिश सरकार बदल डालनेकी कोशिश कर रही है। कांग्रेसने भारतकी अेकता बनाये रखनेकी खातिर अपने बहुतसे मूलभूत सिद्धान्तोंमें रियायतें कर दी हैं। अब अगर कांग्रेसकी तरफसे तमाम अुचित आश्वासन दिये जाने पर भी ब्रिटिश सरकार भावी संविधानको समग्र भारत पर लागू करनेकी बात मंजूर करनेको तैयार नहीं होती तो अिसका अर्थ यही होता है कि वह अलग राज्य स्थापित करनेका मुस्लिम लीगका दावा मंजूर करती है। क्योंकि मुस्लिम बहुमतवाले प्रान्त भावी संविधानके बारेमें अपना असन्तोष प्रकट करके अुससे बाहर निकल सकते हैं। १६ मओ और २५ मओके सम्राट् महोदयकी सरकारके वक्तव्यमें जो आश्वासन दिये गये थे वे सब अिससे अुड जाते हैं। और अुल्टे मुस्लिम लीगको स्पष्ट आश्वासन दिया जा रहा है कि अगर वह अलग हो जायगी तो अुसे पाकिस्तान मिल जायगा। यह सिद्धान्त जाहिरा तौर पर अुन प्रान्तों पर लागू नहीं होता जिन्हें विभागीय बैठकोंके बहुमतने जबरदस्ती किसी खास मंडल (ग्रुप)में शामिल कर लिया गया हो।

२६५

मीरामपुर,
२५-१२-'४६

चि. वल्लभभाओ,

आपका प्यारेलालके नामका पत्र सीधा मेरे पास आ गया। प्यारेलाल वगैरा सब अपने-अपने काममें लगे हुओ हैं। मीलके साथ अेक रहे हैं। अिसलिये जब हम सब अेक स्थान पर थे तब जैसा कर सकते और भेज सकते थे। अब वैसा नहीं कर सकते। आपका

पत्र कृपलानीजीका[2] पहुंचा अिसलिअे सतीशबाबूने यहां मेरे पास भेज दिया। अिस पत्रका प्यारेलालको पता नहीं है। वे मेरे पास आते-जाते रहते हैं। बादमें सब पढ लेंगे।

यह पत्र मैं सुबह ३ बजे लिखवा रहा हूं। दातुन-पानी तो ४ बजे होगा। फिर प्रार्थना। अिस तरह चलता है। अीश्वर टिकायेगा तो टिके रहेंगे। अितने पर भी मेरे स्वास्थ्यके बारेमें कुछ भी फिक्र करनेकी जरूरत नहीं। शरीर काम दे रहा है। फिर भी मेरी परीक्षा तो है ही। मोती तोलनेका जैसा तराजू होता है अुससे भी ज्यादा नाजुक तराजूमें मेरा सत्य और अहिंसा दोनों रखे गये हैं। यह तराजू अैसा है जिसमें बालके सौवें हिस्सेको भी तोला जा सकता है। सत्य और अहिंसा तो अपूर्ण हो ही नहीं सकते। हां अुनके प्रतिनिधिके रूपमें मेरी अपूर्णता साबित होनी होगी तो हो जायगी। तो भी अितनी आशा तो रखता ही हूं कि अैसा हुआ तो अीश्वर मुझे अुठा लेगा और किसी दूसरे शरीरके द्वारा काम लेगा। मुझे खेद है कि जो काम प्यारेलाल करते थे वह मैं पूरा नहीं कर सकता और मेरे पास जो दो आदमी हैं अुनसे करा नहीं सकता। परन्तु दोनों होशियार हैं अिसलिअे मुझे अुम्मीद है कि मैं करा लूंगा। अिसमें आपका यह पत्र प्रोत्साहन देगा। १४ दिन हुअे जयसुखलाल कि मनुको अुसकी अिच्छासे यहां छोड गये हैं। मेरे साथ रहकर मरने तककी अुसकी तैयारी और अिच्छा थी अिसलिअे अिन शर्तों पर मुझे आने दिया। और अब पढा-पढा आने क्रम लिये अुससे लिखवा रहा हूं ताकि मुझे कोअी तकलीफ न हो। अिसी कोठरीमें सुशीला पडी है। वह तो अभी सो रही है और मैं अपने तख्ते पर मनुसे धीमी आवाजमें लिखवा रहा हूं। यहांका ठण्डा अैसा

१ श्री घनश्यामदास बिड़लाने अपने आदमीके मार्फत नोआखाली डाक पहुंचानेकी व्यवस्था की थी। यह दे जाया था।

२ श्रीमती सुचेता कृपलानी। आचार्य कृपलानीकी पत्नी।

होता है जिस पर तीन आदमी आरामसे सो सकते हैं। मैं अपना सारा काम तख्ते पर ही करता हूं। आपने जो तार भिजवाया अुसे बेकार समझिये। यहां अतिशयोक्तिका पार नहीं। यह बात भी नहीं कि लोग जान-बूझकर अतिशयोक्ति करते हैं। वे यही नहीं जानते कि अतिशयोक्ति किसे कहते हैं। यहां जैसे हरियाली घास अुगती है वैसे ही मनुष्यकी कल्पना अूंची अुड़ती है। चारों तरफ नारियल और सुपारीके हरे-भरे अूंचे-अूंचे पेड़ खड़े हैं। जिन्हीं पेड़ोंकी छायामें अनेक हरी झाड़ियां अुगती हैं। नदियां सब समुद्र जैसी — गंगा जमुना और ब्रह्मपुत्रा। ये अपना पानी बंगालकी खाड़ीमें अुंडेलती हैं। मेरी सलाह है कि आपने अभी तक जवाब न दिया हो तो तार भेजनेवालेको यह जवाब दें आप सब बातोंका सबूत भेजें तो शायद केन्द्रीय सरकार कुछ कर सके यद्यपि मुझे अधिकार तो नहीं है। आपके पास गांधी मौजूद है वह आपकी न सुने जैसा नहीं हो सकता। परन्तु वह सत्य और अहिंसाका पुजारी कहलाता है। जिसलिओ संभव है अुससे आपको निराशा हो। परन्तु वह यदि आपको निराश कर देगा तो हम, जो अुसकी तरबियतमें तैयार हुओ हैं, कैसे आपको सन्तोष देंगे? फिर भी हमसे जो हो सकेगा करेंगे। किसीसे यह न कहिये कि गांधी यहां है जिसलिओ हमें लिखनेकी जरूरत नहीं बल्कि कहिये कि गांधीके होते हुओ भी हमसे पूछ सकते हो। हमारा धर्म है कि अुनके विरुद्ध जाकर भी हो सके तो लोगोंको न्याय दें। यह शिक्षा भी तो अुन्हींकी है न?

यहां भी मामला कठिन है। खोजने पर भी सत्यका पता नहीं चलता। अहिंसाके नाम पर हिंसा होती है। धर्मके नाम पर अधर्म होता है। लेकिन सत्य और अहिंसाकी परीक्षा भी तो जिन्हींके बीच हो सकती है न? यह समझता हूं जानता हूं, जिसीलिओ यहां पड़ा हूं। यहांसे मुझे न बुलाअिये। शायद जलकर नाश पाअूं तो मेरी तकदीर। लेकिन अभी तक मैं हिन्दुस्तानके अैसे कदम नहीं देखता। मुझे तो

पत्र कालीरविला[1] पहुंचा अिसलिअे सतीशबाबूने यहां मेरे पास भेज दिया। अिस पत्रका प्यारेलालको पता नहीं है। वे मेरे पास आते-जाते रहते हैं। आप अुसमेंसे सब पढ़ लेंगे।

यह पत्र मैं सुबह ३ बजे लिखवा रहा हूं। दातुन-पानी तो ४ बजे होगा। फिर प्रार्थना। अिस तरह चलता है। अीश्वर टिकायेगा तो टिके रहूंगे। अितने पर भी मेरे स्वास्थ्यके बारेमें जरा भी फिक्र करनेकी जरूरत नहीं। शरीर काम दे रहा है। फिर भी मेरी परीक्षा तो हो ही। मोती तौलनेका जैसा तराजू होता है अुससे भी नाजुक तराजूमें मेरा सत्य और अहिंसा दोनों रखे गये हैं। यह तराजू अैसा है जिसमें बालके सौवें हिस्सेको भी तोला जा सकता है। सत्य और अहिंसा तो अपूर्ण हो ही नहीं सकते। हां अुनके प्रतिनिधिके रूपमें मेरी अपूर्णता साबित होनी होगी तो हो जायगी। तो भी अितनी आशा तो रखता ही हूं कि अैसा हुआ तो अीश्वर मुझे अुठा लेगा और किसी दूसरे शरीरके द्वारा काम लेगा। मुझे खेद है कि जो काम प्यारेलाल करते थे वह मैं खुद नहीं कर सकता और मेरे पास जो दो आदमी हैं अुनसे करा नहीं सकता। परन्तु दोनों होशियार हैं अिसलिअे मुझे अुम्मीद है कि मैं करा लूंगा। अिसमें आपका यह पत्र प्रोत्साहन देगा। १८ दिन हुअे जयसुखलाल भि मनुको अुसकी अिच्छासे यहां छोड़ गये हैं। मेरे साथ रहकर मरने तककी अुसकी तैयारी और अिच्छा थी अिसलिअे अिन शर्तों पर अुसे आने दिया। और अब पड़ा-पड़ा आंखें बन्द किये अुससे लिखवा रहा हूं, ताकि मुझे कोअी तकलीफ न हो। अिसी कोठरीमें सुचेता[2] पड़ी है। वह तो अभी सो रही है और मैं अपनी तकिये पर मनुसे धीमी आवाजमें लिखवा रहा हूं। यहांका तकिया अैसा

---

१ श्री घनश्यामदास बिड़लाने अपने आदमीके साथ नोआखाली डाक पहुंचानेकी व्यवस्था की थी। यह वे आया था।

२ श्रीमती सुचेता कृपलानी। आचार्य कृपलानीकी पत्नी।

होता है, जिस पर तीन आदमी आरामसे सो सकते हैं। मैं अपना सारा काम उसके पर ही करता हूँ। आपने जो तार भिजवाया, मुझे बेकार समझिये। यहां अतिशयोक्तिका पार नहीं। यह बात भी नहीं कि लोग जान-बूझकर अतिशयोक्ति करते हैं। वे यही नहीं जानते कि अतिशयोक्ति किसे कहते हैं। यहां जैसे हरियाली घास झुकती है वैसे ही मनुष्यकी कल्पना झूकी झुकती है। चारों तरफ नारियल और सुपारीके हरे-भरे झूमे-झूमे पेड़ खड़े हैं। जिन्हीं पेड़ोंकी छायामें अनेक हरी भाजियां झुकती हैं। नदियां सब समुद्र जैसी — गंगा जमुना और ब्रह्मपुत्रा। ये अपना पानी बंगालकी खाड़ीमें उंडेलती हैं। मेरी सलाह है कि आपने अभी तक जवाब न दिया हो तो तार भेजनेवालेको यह जवाब दें आप सब बातोंका सबूत भेजें तो शायद केन्द्रीय सरकार कुछ कर सके यद्यपि मुझे अधिकार तो नहीं है। आपके पास कॉपी मौजूद है यह आपको न मुझे भेजा नहीं हो सकता। परन्तु यह सत्य और अहिंसाका पुजारी कहलाता है। इसलिये संभव है उससे आपको निराशा हो। परन्तु यह यदि आपको निराश कर देगा तो हम जो उनकी देखरेखमें तैयार हुए हैं कैसे आपको सन्तोष देंगे? फिर भी हमसे जो हो सकेगा करेंगे। लिहाज यह न कहिये कि गांधी यहां है इसलिए हमें लिखनेकी जरूरत नहीं, बल्कि कहिए कि गांधीके होते हुए भी हमसे कुछ सकते हो। हमारा धर्म है कि उनके विरुद्ध जाकर भी हो सके तो लोगोंको न्याय दें। यह शिक्षा भी तो उन्हींकी है न?

यहां भी मामला कठिन है। खोजने पर भी सच्चा पता नहीं चलता। अहिंसाके नाम पर हिंसा होती है। धर्मके नाम पर अधर्म होता है। लेकिन सत्य और अहिंसाकी परीक्षा भी तो ऐसी ही जगह हो सकती है न? यह समझता हूँ जानता हूँ इसीलिये यहां पड़ा हूँ। यहांसे मुझे न बुलाइये। शायद दफ्तर भाग जाऊं तो मेरी तकदीर। लेकिन अभी तक मैं हिन्दुस्तानके ऐसे स्वभाव नहीं देखता। मुझे तो

यहां करना है या मरना है। कल रेडियोकी खबर आअी कि जवाहरलाल कृपलानी और देव मेरे साथ सलाह-मशविरा करने आ रहे हैं। यह अच्छा है। अुन्हींसे मिल कर क्या करना है? आप लोगोंमें से जिन्हें कुछ पूछना हो पूछ सकते हैं। आसामके बारेमें मैंने जो लिखा है, वह अभी ही प्रकाशित हो जाय यह मैं नहीं चाहता था। परंतु जो हुआ वह कैसे हुआ यह जानते हों तो लिखिये। अुसमें दी गअी राय ही सही है। अिस विषयमें जरा भी शंका न कीजिये। मैं तो भट्टीमें पड़ा हुआ हूं, अिसलिअे अिस बातका ठीक सबूत दे सकता हूं कि अुसमें क्या हो रहा है और क्या सत्य है।   मेरे पास आया करते हैं, हिदायतें लेते रहते हैं और मुझसे कहते हैं कि अुनका अक्षरशः पालन करेंगे। और मुझे अुनके कहने पर विश्वास होता है।   का मुझे तार मिला है कि वे आपको समझा नहीं सके। परंतु क्या नहीं समझा सके यह मैं नहीं समझा। वे वहां हों और आपसे मिलें तो मिलना अुनसे कह दीजिये। और वे क्या पूछना चाहते हैं यह समझ सके हों तो बताअिये।

बिहार लीगकी रिपोर्ट आपने देखी होगी। अुसके बारेमें मैंने राजेन्द्रबाबूको लिखा है और आप सबको मेरी राय बता देनेके लिअे कहा है। प्रधानमंत्री (बिहार) को भी लिखा है। अुसका असर आधा भी सच हो तो भयंकर है। मुझे जरा भी शंका नहीं कि जिसके खिलाफ कोअी अंगुली तक न अुठा सके अैसी निष्पक्ष जांच बहुत जल्दी होनी चाहिये। अेक दिनकी भी देर न होनी चाहिये। अुसमें जो सच हो अुसे मंजूर करना चाहिये और शेष जो मंजूर न किया जा सके वह जांच करनेवाले न्यायाधीशके पास जाय। मुस्लिम लीगके जो मेम्बर आपके साथ हैं अुनसे भी यह बात कीजिये। सुहरावर्दीसे[1] पत्रव्यवहार चल रहा है। अभी पूरा नहीं हुआ। पूरा होने पर भेजूंगा। जो हुआ है वह जवाहर वगैरा देखेंगे। प्रार्थनाके बाद मैं जो

१ अुस समयके बंगालके प्रधानमंत्री।

मापका देता हूं अुसका सलिप्त विवरण अखबारोंमें आता है। अुसे न देखते हों तो देखिये या मणि आपको जो कतरन दे अुसे देखते रहिये। आपके कामके बोझको मैं यहां बैठे-बैठे जानता हूं समझता हूं लेकिन अधिक बोझ होते हुअे भी कुछ काम तो करने ही पड़ते हैं। अुनमें जो मैं कहता हूं अुसे आप लेनेकी बात भी आ जाती है।

आपकी तबीयत ठीक होगी यह तो कैसे कहूं? यह मान लेता हूं कि काम चलाने लायक है। यह भी मानता हूं कि अच्छी हो सकती है। मैं तो अब भी कहता हूं कि दिनशाको बुलवाकर जिलाज कीजिये। वह शुद्ध आदमी है भला है और पारमार्थिक दृष्टिवाला है। जिस विषयमें मुझे शंका नहीं है। कुशलता कम हो तो जिससे क्या? सुशीलाके बारेमें आपने सवाल किया है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि अुसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। वह भी कठिनाअियोंसे भरे हुअे कामनें पड़ी है। वहां अच्छा काम कर रही है। अब वहां नीम हकीमकी अच्छी गिनती हो सकती है, तो फिर सुशीला जैसीका तो पूछना ही क्या? जिसलिअे यहांके किसी भी व्यक्तिके बारेमें चिन्ता न करें। और यहां सभी कोअी मरनेके लिअे आये हैं यहां वे बीमार हो जायं तो क्या चिन्ता! मरने पर तो अमरता है ही और मरें तो शुद्ध रीतिसे मरें और अमरता प्राप्त करें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
१ औरंगजेब रोड
नअी दिल्ली

तलवारका जवाब तलवारसे देनेका न्याय आप लोगोंको सिखाते हैं। जब मौका मिलता है मुस्लिम लीगका अपमान करनेसे नहीं चूकते। यह सब सच हो तो बहुत हानिकारक है। पत्रोंसे चिपटे रहनेकी

परिणाम ठीक हुआ। मुझे यहां चिपके रहनेसे क्या काम? मैं रोग शय्या पर पड़ा हूं। मुक्त हो सकूं तो खुशीसे हो जाऊं। इसलिये आपने यह शिकायत कैसे सुनी यह समझमें नहीं आता।

यह तो किसी लीगवालेने भी नहीं कहा कि मैं लीगका बार-बार अपमान करता हूं।

मेरा भाषण लोगोंको खुश करनेके लिये होता है यह मेरे लिये नयी बात है। लोगोंको अत्यन्त कड़वी बातें सुनानेकी मेरी आदत है। बम्बईमें जलसेनाका जब विद्रोह हुआ था उस समय बहुतोंको बुरी लगने पर भी मैंने खूब कड़वी बातें सुनाईं और मेरे मना करने पर भी जवाहरलाल समाजवादियोंको खुश करनेके लिये वहां आये।

तलवारका जवाब तलवारसे देनेके विषयमें लम्बे वाक्योंमें से एक ही टुकड़ा चुनकर शिकायत की गयी है।

कमेटीमें दलबन्दीका होना कोई आजकी बात नहीं बहुत पुरानी है। आजकल तो ज्यादातर सभी मिलजुलकर काम कर रहे हैं।

मेरे साथियोंमें से किसीने शिकायत की हो, तो मैं जरूर समझना चाहूंगा। मुझसे न किसीने मुझसे कुछ भी शिकायत नहीं की।

आप वहां रहते हैं इस बारेमें बंगाल सरकार और गवर्नरके यहां नामी पत्र आते हैं। वे बहुत खराब होते हैं। वे आपको वहांसे हटाना चाहते हैं। मगर इसमें तो मेरे लिये कुछ कहनेकी बात ही नहीं हो सकती।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

१ पू. बापूजी छाती दर्द और सरदीसे भर गयी थी। सख्त खांसी और बुखारसे बिस्तर पर पड़े थे।

बात यदि आप कहते हों तो वह चुभनेवाली है। जो सूझा वह विचार करनेके लिये आपके सामने रखा है। यह समय बहुत नाजुक है। हम जरा भी पटरीसे उतरें कि नाश ही समझिये। कार्यकारिणीमें जो एक-रूपता होनी चाहिये वह नहीं है। गंदगी निकालना आपको आता है उसे निकालिये। मुझे और मेरा काम समझनेके लिये किसी विश्वसनीय समझदार आदमीको भजना चाहें तो भेज दें। आपको दौड़कर आनेकी बिलकुल जरूरत नहीं। आपका शरीर भागदौड़के लायक नहीं रहा। आप शरीरके प्रति लापरवाह रहते हैं, यह बिलकुल ठीक नहीं।

अब अधिक नहीं लिखूंगा। इस समय ५ १५ (कलकत्तेके) हो गये हैं और काम ढेरों बाकी पड़ा है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
१ औरंगजेब रोड
नयी दिल्ली

२६८

चंडीपुर,
६ १ ४७

चि. वल्लभभाई

आपके स्वास्थ्यकी चिन्ता होती है। आपको स्वस्थ हो ही जाना चाहिये। बहुत काम करना है।

मामला नाजुक है। यहां क्या होगा है अभी देखते रहिये। मैं तो घोर अन्धकारमें भटक रहा हूं। परन्तु जरा भी निराशा नहीं मालूम होती।

जो पत्र लिखा है। साथमें है। अगर दे दें। वैसे परमेश्वरको देखना परमेश्वरका भूलने जैसा है।

आखिरी वक्त पर लिखने बैठनेसे बहुतसी बातें भूल जाता हूं और जिससे जल्दी तैयार नहीं हो पाता।

अिसलिये शेष सुधीर कहेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
१ औरंगजेब रोड
नयी दिल्ली

[बापूका हिन्दी पत्र]

भाओ

अब तक नहीं आये। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यहांका काम पैसोंका नहीं है। कांग्रेसकी तो अेक कौड़ी नहीं चाहिये। जोहरसे[1] जो पैसा मिले अुससे काम करना है। न दे तो भी करना है। सच्ची खिदमत यहां दूसरी तरह नहीं होनेवाली है।

बापूके आशीर्वाद

२६८

शाहपुर,
१४-१-'४७

चि. वल्लभभाओ

* * *

अब बिहारके कमीशनके बारेमें। मुझसे कहनेवाले तो बिहारके ही कोओ सज्जन थे। अुनका नाम मैंने लिखकर नहीं रखा।

यदि आप खुद कमीशनके विरुद्ध हैं, गवर्नर हैं, आफिसरोंमें भी हैं तो क्या यह मुख्य (मंत्री) को रोकनेके लिये काफी नहीं? यह सब होते हुअे भी मेरा तो दृढ़ मत है कि कमीशन मुकर्रर न किया गया तो वह फौजकी रिपोर्ट स्वीकार करने जैसा ही माना जायगा। मुझ पर जो दबाव पड़ रहा है अुसे तो मैं ही जानता हूं।

१ पूर्वी बंगालके अेक गांवका नाम।

दिया। यहाँका काम मेरा सारा वक्त ले लेता है। रोज नया नया कोअी आसान बात नहीं है। ज्यों-त्यों करके अब तक तो अीश्वरने निभाया है। देखना है कि आगे वह क्या करता है? ध्येय तो प्रसिद्ध ही है। अुसमें से अहिंसाका मार्ग निकालना है। तभी अुसकी परीक्षा होगी। भोपालके (नवाबके) पत्रमें कोअी नयी बात नहीं है। मेरे सवालका अुसमें जवाब नहीं है। मैं दिल्लीमें था तब मेरे साथ जो बातें हुअी थीं अुनका वर्णन था। अुसकी नकल मैंने नहीं रखी अिसलिये यह नकल भेजता हूँ। मैंने पढ़ी नहीं है, परन्तु ठीक ही होगी। मैंने जो सवाल पूछा था वह जवाब सामने आयेगा।

यह जानकर प्रसन्न हुआ कि आपकी तबीयत कुछ अच्छी है। दिनशाको आपने न बुलाया न सही। परन्तु प्राकृतिक चिकित्सावालेको

हमारा जिलेमें ९ लाख मुसलमान और ११ हजार हिन्दू और सिक्ख हैं। २ हजार मारे गये हैं। ४-५ मार डाले गये होंगे। काफी लूट-खसोट की गयी और मकान जला दिये गये। बिहारका बदला लिया जा रहा है। पहले २-३ जगह तो सरहदकी टोलियाँ आयीं। लूटकर चली गयीं। मकान जलाये गये और आदमी मार डाले गये। परन्तु बादमें स्थानीय मुसलमान ही दंगा कर रहे हैं। लीगकी तरफसे बिहारका बदला लेनेका प्रचार किया गया। अुसीका यह परिणाम है। बादशाहखान यहाँ जैसी हालत होते हुअे भी बिहार चले गये यहाँ कुछ भी नहीं है। परन्तु अुन्हें तो जो सूझता है, वही करते हैं।

अंग्रेज अफसर आग बुझानेके लिये कुछ भी नहीं करते। जैसा होता है चलने देते हैं। कोअी कोअी तो पूर्ति भी करते हैं। डॉ खानसाहब भले हैं। अुनकी स्थिति विषम है। लीगका जहरीला प्रचार जारी है। यहाँ क्या कदम अुठानेमें डरता हूँ। फिलहाल तो यह स्थिति है।

बुलाया यह मुझे तो अच्छा ही लगा। मेरी दृष्टिसे आपकी तबीयतका मिलाज कुदरती उपचारमें ही है।

परसराम (टाअिपिस्ट) चला गया। फिर भी काम चल रहा है। अुसका मन अस्थिर हो गया है। अुसके बदले दूसरे किसीकी जरूरत नहीं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाभी पटेल
१ औरंगजेब रोड
नभी दिल्ली

२७१

१-२-'४७

चि॰ वल्लभभाभी

जिन दोनों भाअियोंने अपने दुःखोंकी कहानी मुझे सुनायी है। मैं क्या कह सकता हूं? क्या कर सकता हूं? ये कहते हैं सो सही हो तो बड़े दुःखकी बात है। ये भाभी आपके नाम पत्र चाहते हैं, अिसलिअे दे रहा हूं।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाभी पटेल
१ औरंगजेब रोड
नभी दिल्ली

२७२

आमिषापाड़ा
४-२-'४७

चि वल्लभभाओ

यह पत्र देख लें।

फ्रीडमैन अर्थात् भारतानन्द। हो सके तो जिन्हें भारतवासी[1] बना लीजिये।

मैं चाहता हूं आप दुखी न हों। मुझे भगवानकी गोदमें छोड़ दीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
१ औरंगजेब रोड
नयी दिल्ली

२७३

श्रीनगर बंगाल
५-२-'४७

चि वल्लभभाओ

आपका पत्र मिला। लीगके बारेमें मैंने लम्बा भाषण दिया है। वह अखबारोंको भेज दिया गया है। आपने पढ़ा होगा। अपने बारे विचार मैंने उसमें संक्षेपमें दिये हैं।

राजा लोग भी न आवें तो मुझे कोओ डर नहीं लगता। केबिनेट-मिशनके वक्तव्यका मैं जिस तरह अर्थ करता हूं। वैसा अर्थ वे न करें तो भी हमें कुछ नुकसान नहीं और करें तो मुफ्तकी शोभा होगी। हम सीधा काम कर सकेंगे। मेरे सामने यह दिनकी तरह साफ है कि अनाज और कपड़ेकी तंगी भुगतनेकी कोओ जरूरत नहीं। जिसे मैं समझा न सकूं तो दूसरी बात है। औसी स्थितिमें मैं यहां रहूं तो

१ जिन्होंने भारतके नागरिक बननेके लिये अर्जी दी थी।

मालूम होता है कि कमीशन नियुक्त नहीं हुआ तो मुझे बिहार जाना ही पड़ेगा।

अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
होम मिनिस्टर,
नयी दिल्ली

२७४

चांदपुरसे
जाते हुए स्टीमरमें
१ १ '४७

चि० वल्लभभाई

आपका पत्र कल चांदपुरमें मिला। आपकी बढ़ती हुई बीमारी अच्छी नहीं लगती। यह बापूमें आने जैसी थी और शायद अब भी है। भले दिलासा न सही। मेरी नजरमें और भी कुदरती उपचार करनेवाले हैं। परंतु आपको कौन समझा सकता है? जैसा जंचे वैसा कीजिये। आप पर कितने अधिक लोगोंका आधार है!

सुशीलाका मामला समझा। उसका तार आया था।

*   *

यहांके अपने कामकी आवश्यकता मैं भले ही साबित न कर सकूं परन्तु मुझे विश्वास है कि यह बहुत आवश्यक है।

आज बिहारकी ओर प्रयाण कर रहा हूं।   का तार आया था और अब डॉक्टर महमूदका आया है। दोनों बोलानेवाले हैं सिलसिले जा रहा हूं। यहां तो आप सब बहारसे मौजूद हैं। काम चला रहे हैं। यहां मैं भेरुगोपाल बनाने जैसा हूं। सिलसिले

मुझे पढ़ा रहने दीजिये। कुछ हो जायगा तो देशका लाभ ही होगा। नहीं होगा तो कोअी नुकसान भी न होगा।

हाँ कानूनगाका प्रकरण[1] दुःखद है। अीश्वर जैसे रखे वैसे रहें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
१ औरंगजेब रोड
नअी दिल्ली

२७५

पटना
१७-३-'४७

चि॰ वल्लभभाअी

आपके भाषणों सम्बन्धी कागजात पढ़ें और योग्य कार्रवाअी करें। अितना पत्रोंका भार लादते मुझे दुःख होता है। परंतु और कोअी अुपाय नहीं दीखता। फिर भी यह न पढ़े जा सकें तो भूल जाय। कागजात वापस कर दें। अिस बारेमें कुछ करें तो मुझे भेजनेकी जरूरत नहीं।

माधवी और स्वामी आ गये। जी भरकर बातें कीं। वे ही लिखेंगे।

सुशीला लिखती है कि आपकी तबीयत अच्छी नहीं रहती। सावधान रहिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार श्री पटेल
होम मिनिस्टर,
नअी दिल्ली

१ अुन्हें विमान पर लकवा मार गया था।

पटना
२२ । '४७

चि॰ वल्लभभाभी

पंजाबका आपका प्रस्ताव[1] समझा सकें तो समझाअिये। मुझे समझमें नहीं आता।

आपकी तबीयत अच्छी होगी।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाभी पटेल
१ औरंगजेब रोड
नभी दिल्ली

---

१ यह प्रस्ताव नीचे दिया जाता है

पिछले सात महीनोंमें भारतने बड़ी क्रूर, भीषण और करुण घटनायें देखी हैं। पाशविक हिंसा रक्तपात और दबाव द्वारा राजनैतिक अुद्देश्य पूरे करनेके लिये यह सब किया गया है। ये सारे प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हुये हैं क्योंकि अैसे तमाम प्रयत्न खास तौर पर असफल होते ही हैं। परंतु अिनके परिणामस्वरूप अविरत हिंसा और खून-खराबी हुअी है।

पंजाब अब तक अिस रोगसे बचा हुआ था। छः सप्ताहसे वहांके लोकप्रिय मंत्रिमंडलको जबरदस्ती तोड डालनेके लिये अेक आन्दोलन हो रहा है और सत्ताके मुख्य स्थानों पर बैठे हुये कुछ लोगोंका मूक समर्थन है। वैधानिक तौर पर अिस मंत्रिमंडलको हटानेका प्रयत्न नहीं हो सकता था। अिस आन्दोलनको अेक हद तक सफलता मिली। और अिस आन्दोलनमें प्रमुख भाग लेनेवाले समूहके अल्पमतवाला मंत्रिमंडल बनानेका प्रयत्न किया गया। अिसके विरुद्ध सख्त विरोध प्रगट किया गया। परिणामस्वरूप हिंसा बढ़ी और व्यापक बनी। हत्या और

नेकबारीमें
१३-४-'४७

चि वल्लभभाओी

अेक बात आपसे खानगी रह गयी। वक्त ही न मिला। मैं देखता हूं कि अब मुझे 'हरिजन' में कुछ न कुछ लिखना चाहिये। मैं यह भी देखता हूं कि हमारे बीच विचार करनेमें भेद होता ही रहता है। अैसी स्थितिमें क्या मेरा व्यक्तिगत रूपमें भी वाअिसरॉयसे मिलना ठीक होगा?

आगजनीकी अनेक घटनायें हुयीं। और अमृतसर तथा मुल्तानमें भीषण हत्याकांड हुये।

अिन करुण घटनाओंने दिखा दिया है कि पंजाबके सवालका निपटारा हिंसा और जबरदस्तीसे नहीं हो सकता। जबरदस्तीसे की हुयी कोअी व्यवस्था टिक नहीं सकती। अिसलिअे कोअी अैसा रास्ता ढूंढनेकी जरूरत है, जिसमें कमसे कम बलप्रयोग करनेकी गुंजािअश हो। अिसके लिअे पंजाबको दो प्रान्तोंमें बांट देनेकी जरूरत है। ये भाग अिस तरह किये जायं कि मुसलमानोंकी ज्यादा आबादीवाले भागको हिन्दुओंकी ज्यादा आबादीवाले भागसे अलग कर दिया जाय।

कांग्रेसकी कार्यसमिति प्रश्नके अिस हलकी सिफारिश करती है। अिससे सभी संबंधित जातियोंको लाभ होगा, आपसका संघर्ष घटेगा और अेक-दूसरेकी तरफका डर तथा शंका कम हो जायगी। कार्यसमिति पंजाबके लोगोंसे कत्लआम रक्तपात और हैवानियतको बंद करने और अैसा हल ढूंढनेके लिअे जिसमें किसी भी बड़े समूह पर जबरदस्ती करनेकी गुंजािअश न रहे और जो संघर्षके कारणोंको कारगर तरीकेसे दूर कर दे दृढ़निश्चयी बनकर अिस विषम परिस्थितिका सामना करनेकी अपील करती है।

(२९ मार्च १९४७ के कांग्रेस बुलेटीन से)

देशहितको ही ध्यानमें रखकर तटस्थ भावसे अिस पर विचार करें। और किसीसे चर्चा करनी हो तो कीजिये। अिसमें कहीं भी मेरी शिकायतकी गंध तक न होनी चाहिये। मैं तो देशहितको ध्यानमें रखकर अपना धर्म सोच रहा हूं। यह बिलकुल संभव है कि करोड़ों पर हुकूमत करते हुये आप जो देख सकते हों वह मैं देख ही न सकूं। आप सबकी जगह मैं होऊं तो शायद मैं भी वही करूं और कहूं जो आप करते और कहते हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
१, औरंगजेब रोड
नअी दिल्ली

२७८

पटना
२४-४-'४७

चि. वल्लभभाई

जवाहरलालका तार है कि मुझे [illegible] बारेमें वहां आ जाना चाहिये। अिसलिये यहांसे ३० तारीखको चलकर १ तारीखको सुबह वहां पहुंचनेकी आशा रखता हूं। आदमी तो नहीं होंगे। रहना भी भंगी-निवासमें ही होगा। घनश्यामदास बिड़ला वगैराको खबर दे दें।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

'हरिजन' के बारेमें आपका तार मिला था। अब लिखनेकी तैयारी कर रहा हूं। जीवणजी और किशोरलालको लिखा है। अभी तो चरखा-संघ तथा तालीमी संघकी बैठकें हो रही हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
होम मिनिस्टर,
१ औरंगजेब रोड
नअी दिल्ली

२८०

वाल्मीकि मंदिर,
न दि
२१ १ '४७

चि वल्लभभाई

आजके अखबारोंने तो हद कर दी। स्टेट्समैनका तार तो देखिये। अिसमें तो राष्ट्र हमें ! ! ! तो यहां जो बड़ी-बड़ी बातें हो रही हैं अुनकी क्या कीमत है? अगर अिसमें हमारी स्वीकृति न हो, तो आप लोग अिस अफवाहको रोक सकते हैं।

अिस बन जाने पर आपकी बात कोअी नहीं सुनेगा।

मेरी दृष्टिसे तो ___ का भाषण गलत ही था। अुनके बचाव करनेसे बातकी गंभीरता मिट नहीं जाती। मेरा तो खयाल है कि अुनका दूसरा दोष हो तो अुन्हें हटाया जा सकता है। सिर्फ अिसी बात पर बरखास्त करना कठिन होगा।

जवाहरलालको भी अिस बारेमें लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
१ औरंगजेब रोड
नयी दिल्ली

२८१

वाल्मीकि मंदिर,
नअी दिल्ली
१८-७-'४७

चि॰ वल्लभभाअी

अक्बर'[1] का पत्र साथ है। मुझे तो यह बिलकुल ठीक मालूम होता है। आपके नाम अलग पत्र होगा। क्या सोचते हैं बताअियें। समय ही न हो तो भूल जाअिये। मैं निपट लूंगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
१ औरंगजेब रोड
नअी दिल्ली

२८२

वाल्मीकि मंदिर,
नअी दिल्ली,
२४-७-'४७

चि॰ वल्लभभाअी

मैं ज्यों-ज्यों विचार करता हूं त्यों-त्यों मुझे लगता है कि काश्मीरका मामला खत्म हो जाने पर मुझे यहांसे चल देना चाहिये। जो हो रहा है वह ज्यादातर मुझे पसन्द नहीं आता। जिससे मैं यह नहीं कहता कि मुझे अलग किया जाय, परन्तु यह कहता हूं कि मेरे यहां रहनेके कारण लोगोंको यह कहनेका मौका न मिले कि मैं भी अुनमें शामिल हूं। फिर मुझे १५ तारीखसे पहले बिहार और वहांसे नोआखाली पहुंचना चाहिये। यह भी महत्वका काम है।

---

१ नोआखालीमें रहनेवाले सेवाग्राम आश्रमवासी भाअी। आजकल लोकसभाके सदस्य। पत्र वहांकी जमींदारी प्रथाके बारेमें लिखा था।

अिसलिये मैं अितना ही चाहता हूं कि आप मुझे न रोकें। ५-७ दिन तो वैसे भी हैं ही।

मेरा यह भी खयाल है कि 'हरिजन' अब बन्द कर दिया जाय। मुझे देशको अुल्टे रास्ते ले जाना ठीक नहीं मालूम होता। यह सब फुरसतसे सोच लीजिये।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
१ औरंगजेब रोड
नअी दिल्ली

२८३

वाल्मीकि मंदिर,
नअी दिल्ली
२१-७-४७

चि॰ वल्लभभाअी

मेरे पास कल दो खाकसार[1] आये थे। अेक तो बहुत रोया। दूसरा बोला कि अधिकारीने कहा चूंकि वे जाने ही वाले हैं अिसलिये अब कुछ नहीं होगा। फिर भी अुसी दिन रातको मस्जिदमें लोगों पर गोली चलायी गयी। बहुतोंकी हत्या हुअी। अेक ७ वर्षके बूढ़ेको ७ गोलियां लगीं। कौन मरे और कौन जिये अिसका कोअी पता नहीं चला। मस्जिदके चारों तरफ घेरा डाल दिया गया। ३ दिन तक खाकसार भूखे-प्यासे पड़े रहे। पाखाना-पेशाब करने भी न जा सके।

यह सब सुनकर मैं तो हक्का-बक्का रह गया। मैंने अुन्हें डांटा और कहा "अैसा हो ही नहीं सकता। सरदारने आज ही मुझे

---

१ मुसलमानोंके अेक दलका नाम।

२. जिसकी सफाअी पू॰ बापूने स्वयं दे दी थी। अधिक स्पष्टीकरणके लिये देखिये १-८-'४७ के पत्रके नीचेकी पादटिप्पणी।

पकड़ना है। यह ठीक हो तो पास कीजिये ताकि मैं अिंतजाम कर लूं। कुछ प्रबंध तो आपको भी करना पड़ेगा न?

वाअिसरॉयके पास मेरी चिट्ठी किसी वक्त जा रही है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
१ औरंगजेब रोड
नयी दिल्ली

२८५

(पुर्जा)

वाल्मीकि मंदिर
नयी दिल्ली,
२८-७-४७

मैंने तो लिखा ही है कि मुझे काश्मीर नहीं जाना है। जवाहरलाल जायेंगे। अभी वाअिसरॉयका पत्र आया है। मैं जाऊं परन्तु जवाहरलाल नहीं। अिसलिअे मुझे तो कुछ पता ही नहीं चलता। क्या किया जाय?[1]

[1] यह पुर्जा लेकर मैं वहां पू. बापू कमेटीकी मीटिंगमें बैठे थे वहां गयी। और उन्होंने पढ़कर जो जवाब दिया वह लाकर पू. बापूजीको दिया। वह जवाब नीचे दिया जाता है

२८-७-४७

पू. बापू

अभी तो कमेटीमें बैठा हूं। बादमें सोचनेका समय चाहिये। अिसलिअे कल तो जाना हो ही नहीं सकता। कल विचार करके निर्णय कर लेंगे।

वल्लभभाईके प्रणाम

लाहोर
६-८-'४७

चि वल्लभभाअी

जवाहरलालको नोट भेज रहा हूं। वह आपको पढ़नेके लिये देंगे।

लालने अेक पत्र महाराजाको लिखा है। अुसकी नकल आपको भेजेंगे। मुझे पढ़नेको दी थी। अुनके बोलनेमें तो बड़ी मिठास है।

मारकाट मचानेका अिरादा कर रहे थे। अिसलिये पुलिस कमिश्नरने मस्जिदमें जाकर टीयर गैस छोड़कर सबको पकड़ लिया था। अिसके सिवाय कुछ भी नहीं हुआ था। आज खाकसार लाहोरसे लिखा हुआ आपका पत्र लेकर आये। अुनकी बात भी बिलकुल झूठ है। अुन्हें कमिश्नरके पास भेजा है। खाकसारोंको पाकिस्तानमें दिल्ली और आगरा चाहिये अजमेर भी चाहिये। अिसके लिये वे दिल्लीमें केन्द्र बनाकर दंगा करना चाहते हैं। कमिश्नर अिन लोगोंको दिल्लीमें नहीं रहने देना चाहता। अतः वे मस्जिदोंमें छिप जाते हैं। यहां कोअी मुसलमान अिनका साथ नहीं देता।

पंजाब और सरहद प्रान्तकी छावनियोंमें जो लोग पड़े हैं अुनका बन्दोबस्त कर रहा हूं। हमारी पार्टिशन कौंसिलके प्रस्तावकी नकल भेज रहा हूं। अिससे आपको यकीन हो जायगा कि अिस सम्बन्धमें जो कुछ करना चाहिये अुसे पाकिस्तान सरकारने स्वीकार किया है। अिसके सिवाय मैं स्वतंत्र अिन्तजाम भी कर रहा हूं। लोग भयभीत होकर भाग जायं तो अिसका अुपाय नहीं। पश्चिमी पंजाब और सरहद प्रान्तसे हिन्दू-सिक्ख भाग रहे हैं। अिससे बहुत घबराहट फैल रही है।

कृपलानी सिन्धमें जो भाषण कर रहे हैं अुनका असर अच्छा नहीं हो रहा है। अिस बारेमें लियाकतअली[1] का बयान निकला है। अुसकी कतरन भेजता हूं।

१ स्व॰ लियाकतअलीखां। अुस समय पाकिस्तानके प्रधानमंत्री।

महाराजा और महारानीके साथ अेक घंटे तक बातें हुआीं। अुन्होंने स्वीकार किया कि प्रजा कहे सो ही करना चाहिये। मूल बात नहीं की। अिसलिअे अपने निजी मंत्रीको मेरे पास अपना अफसोस जाहिर करनेके लिअे भेजा। वह यह कि वे काकको हटाना चाहते हैं। यही सोच रहे हैं कि किस तरह हटाया जाय। सर जयलाल'[1] का लगभग तय हो गया था। आपको अिस मामलेमें कुछ करना चाहिये। मेरी दृष्टिसे काश्मीरका मामला सुधर सकता है।

शाहकी छावनीमें ठीक काम हुआ। लोगोंको वहांसे नहीं हटाया जा सकता। अिस बारेमें आपको पाकिस्तानकी सरकारके साथ विचार करना चाहिये। रावलपिंडीमें हिन्दू-सिक्ख फिरसे आबाद होने चाहियें। पंजा साहब और शाहमें मैंने जो भाषण दिये अुन्हें पढ़िये। अुनमें मैंने सुझाव दिये हैं।

शरदबाबूने राजाजीके विरुद्ध अेक बयान अखबारोंमें दिया है। अुस बारेमें मैंने अुन्हें अेक पत्र लिखा था। अुसकी नकल भेजता हूं। अिसके सिवाय राजाजीके विवाह होने और अुनकी विधवा तथा बच्चोंके बारेमें जो खबर मिली है वह भी आपकी जानकारीके लिअे भेजता हूं।

अब तो हम सब मिलेंगे यह कहा नहीं जा सकता।

काश्मीरके बारेमें जो टिप्पणी भेजी वह देखी।

यहां राजाओंसे काम पड़ने पर पिछले पंद्रह दिनसे बड़ी परेशानी भुगत रहा हूं। आपसकी चालोंका पार नहीं। रात दिन मेहनत करके राजाओंको फोड़ने और हिन्दुस्तानके शासनसे बाहर खींच ले जानेका प्रयत्न कर रहे हैं। राजाओंकी कमजोरीकी हद नहीं। सब स्वार्थ गुट और दमन पर है।

सेवक
वल्लभभाईके प्रणाम

महात्मा गांधीजी
कलकत्ता

---

[1] पंजाबके अेक न्यायाधीश।

यहां रामेश्वरी नेहरू[1] के घर ठहरा हूं। शामको कलकत्ता मेलसे जा रहा हूं। अेक दिन पटना ठहरूंगा। फिर कलकत्ता और नोआखाली जाअूंगा।

खबरी मालूम होनेके कारण सुशीला (नय्यर) को छावनीमें रख दिया है। जिससे लोग खुश हुअे। वे बहुत भयभीत हैं। मुझे तो भयका कोअी कारण नहीं दीखता।

अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखें।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
१ औरंगजेब रोड
नअी दिल्ली

२८८

कलकत्ता
११-८-'४७

चि वल्लभभाअी

मैं तो यहां फंस गया हूं। और अब भारी खतरेका काम सिर पर ले रहा हूं। सुहरावर्दी और मैं साथ साथ बंगेवाले मुहल्लेमें

---

१ पंजाबकी अेक रचनात्मक कार्यकर्त्री। हरिजन सेवक संघकी अुपाध्यक्षा। कस्तूरबा निधिकी पंजाबकी अेजन्ट।

२ पू बापूजीके पत्रका पू बापूने जिस प्रकार अुत्तर दिया था —

१ औरंगजेब रोड
नअी दिल्ली
११-८-'४७

पू बापू

आपका पत्र मिला।

आप कलकत्तेमें ठहर गये और वह भी कसाअीखाने जैसी जगहमें जहां गुंडोंकी गुफा है, जा पहुंचे। और तबीयत भी कैसी? भारी खतरा तो है ही। परंतु आपका स्वास्थ्य यह बोझ सह लेगा? वहां गंदगी तो बेहद होगी।

पहुंचने जा रहे हैं। अब जो हो सो सही। देखते रहिये। लिखता रहूंगा।

मालूम होता है काकने (काश्मीर) छोड़ दिया।

बरसात खिंच गयी और चारों तरफ पानीकी पुकार मच रही है। क्या होगा यह तो ईश्वर जाने। बहुत कठिन समय आनेवाला दीखता है।

जयप्रकाश पूरी तरह उल्टे रास्ते लग गया है। नमूनेके तौर पर उसका अहमदाबादका भाषण भेजता हूं। वैसे भाषण रोज देता है। आनेवाले चुनावोंमें दल खड़ा करके लड़नेकी तैयारी कर रहा है।

राजाजी आ रहे हैं। वे तो नये वातावरणमें आ रहे हैं। कलकत्ता शान्त हो जाय तो अब पंजाबके सिवाय और सब जगह शान्ति हो गयी है।

लाहोर-अमृतसरमें अभी तक शान्ति नहीं हुयी। बाउंड्री कमीशनके फैसलेसे स्थितिमें और भी बिगाड़ होनेकी संभावना है।

सुभाषके विवाहकी बात सच है। यह भी सच है कि उसका चार सालका बच्चा है।

अपने समाचार लिखते रहिये।

हिन्दू राजा सब शामिल हो गये हैं। मुसलमान राजाओंमें रामपुर, पालनपुर और दूसरे छोटे राजा आ गये हैं। अब भोपाल निजाम तथा काश्मीर बाकी रहे हैं।

भोपालको आना ही पड़ेगा। हैदराबादको थोड़ा समय लगेगा। परंतु काश्मीरका अब क्या होता है, यह देखना है।

काठियावाड़में अभी जूनागढ़ रह गया है। और सब आ गये।

अब कुछ आखिरी दिन हैं। नये कानूनोंका अमल होगा। ईश्वरकी दया होगी तो अन्तमें सब ठीक हो जायगा।

सेवक

राजाजीके साथ कलकत्ता भेजा। घनश्यामदासके प्रणाम

सुभाष बोसका हाल मुझे तो आपके पत्रसे मालूम हुआ। मुझे अिन सब बातों पर भरोसा नहीं हो रहा है।

आपने राजाजीके बारेमें शरदबाबूको जैसा लिखा वैसा ही मैं भी लिख चुका था।[1] अुसका कोअी अुत्तर नहीं मिला। अिस बार तो वे खुद मेरे पास आये भी नहीं थे।

मैं नहीं मानता कि कृपलानीजीके बारेमें अखबारोंमें जैसा आया है वैसा अुन्होंने कहा होगा। लियाकतअलीका बयान मुझे पसन्द नहीं आया। वातावरण जहरसे भरा है। कौन किसका है यह अभी पता नहीं चलता।

तालुकदारोंका मामला समझा। मैं यह धर्म समझकर चला हूं कि अुन्हें अैसी स्थितिमें रख दिया जाय कि वे कुछ भी न कह सकें। दूसरोंके बारेमें भी यही समझ कर चलता हूं।

---

१ पू. बापूजीने शरद बाबूको जो पत्र लिखा था वह नीचे दिया जाता है

सोदपुर,
११-८-'४७

प्रिय भाअी शरद

राजाजीके विरुद्ध काले झंडे दिखाना वगैरा सब क्या है? मुझे जरूर यह लगता है कि अैसा करनेमें भूल हो रही है। अुनका दोष होने पर भी (और हममें से कौन दोषमुक्त होनेका दावा कर सकता है?) वे अुतने ही देशको चाहनेवाले हैं जितना कि मैं और आप हैं। मुझ पर पड़ा हुआ असर आपको बता रहा हूं। बंगालकी स्थिति आप जरूर मुझसे ज्यादा समझते हैं।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

आपका
बापू

साथमें लाहोरके बारेमें तार[1] है। मैंने जवाब नहीं दिया। यह सच हो तो बहुत भयंकर बात है। सच क्या है बताअिये। अभी तो यहां फंसा हुआ हूं। दूसरा पत्र हरिस अलेक्जैण्डर[2] का है। जिसका कहना मुझे अच्छा लगा। सब कुछ जांचकर सिफारिश करें, तो यहां भी हो रहा अन्याय रुक सकता है।

चंदननगरमें कुछ दंगाअियोंने अेडमिनिस्ट्रेटरके घर पर घेरा डाल रखा है जिसलिये प्रफुल्लबाबू वहां गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
नयी दिल्ली

---

१ यह तार नीचे दिया जाता है

नयी दिल्ली
ता. १५-८-'४७

महात्मा गांधी
सोदपुर आश्रम
कलकत्ता

सोमवारसे लाहोर शहरमें भयंकर हत्याकाण्ड हो रहा है। रावलपिंडीसे भी ज्यादा। रास्तों पर सैकड़ों लाशें पड़ी हैं। अनारकली और दूसरे व्यापारी मुहल्लोंको जला दिया गया है। अधिकांश शहर बुरी तरह जल रहा है। हिन्दू मुहल्लोंके पानीके नलोंको काट दिया गया है। अिससे हुये हिन्दू बाहर निकलनेका प्रयत्न करने लगे तो पुलिस और फौजवालोंने गोलियोंसे भून डाला। तीन सौसे अधिक हिन्दुओंको जिन्दा जला दिया गया। हिन्दुओंको खाने-पीनेको नहीं मिल रहा है। वे सम्पूर्ण विनाशके खतरेमें हैं। तुरंत कुछ कीजिये। लाहोरमें आपकी उपस्थितिकी आवश्यकता है।

तार पहुंचा ता. १७-८-'४७ को (हस्ताक्षर)
साहीलाल और लाहोरके अन्य निर्वासित

२ अेक शान्तिप्रेमी अंग्रेज।

२९०

कलकत्ता
२९-८-'४७

चि वल्लभभाअी

आपका पत्र[1] मिला। दुःखद है। आप सब कुछ कर चुके। सुशीलाको मृदुके पंजेमें तो जरूर रख दिया था। आहके आखिर निश्चिन्त हो जायें तो वह भले छूट जाय या भले अुन्हींकि

---

१ ता० २४-८-'४७ को पू० बापूका लिखा हुआ यह पत्र नीचे दिया जाता है

औरंगजेब रोड
नअी दिल्ली
२४-८-'४७

सुशीलाको यहां छोड़ जाने यह चिन्ताका कारण बन गया। आज अुसका पत्र ओक विशेष सैनिक लेकर आया। वह पत्र आपको भेज रहा हूं।

अिस परसे मैंने दो तार किये। अुनकी नकलें भेज रहा हूं। पंजाबका मामला बहुत बिगड़ गया है। वहां कौम बिलकुल पागल हो गये हैं। वे शहरों और गांवोंको जला देते हैं और मनुष्योंको ककड़ीकी तरह काट डालते हैं। अिसमें सैनिकों और पुलिसवालोंके शामिल हो जानेके समाचार आ रहे हैं। कौम हजारोंकी संख्यामें भाग रहे हैं और जहां जाते हैं, वहां भयभीत वातावरण पैदा कर देते हैं।

८५ फी सदी पुलिस मुसलमान है। अब पुलिस तूफानमें शरीक हो गयी है। पाकिस्तानी पंजाबमें क्या हो रहा है, अिसके समाचार प्राप्त करना कठिन हो गया है। लाखों मनुष्य वतन छोड़कर भाग रहे हैं।

आज जवाहरलाल अमृतसर और जालंधर गये हैं। लीगी मंत्री भी वहां जानेवाले हैं। मगर मामला अिन नेताओंके काबूसे बाहर हो गया है।

साफ खतम हो जाय। आपका पत्र आनेके बाद ही जाना कि वह कहां है। वाहसे मुझने तुरन्त अेक पत्र लिखा था। बादमें कोअी खबर ही नहीं मिली जिसलिये सोचमें पड़ गया था।

सुशीलाका पत्र आनेके बाद मैंने आज यहांसे दो तार किये हैं। अेक करांची लियाकतअलीको और दूसरा त्रिवेदीको[१]। करांचीवाला तो मिल जायगा परंतु पंजाबमें तार नहीं मिलते। रेलगाड़ियोंकी व्यवस्था भी टूट गयी है। कल जवाहरलालके आने पर नया खबर आती है, सो आपको भेजूंगा। पंजाबका मामला विकट है। पंजाबका असर दूसरी जगह न हो, जिसके लिये बहुत मेहनत करनी पड़ रही है। दिल्लीमें पंजाबसे भागकर आनेवाले दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे हैं। वे रात-दिन चैन नहीं लेने देते। दुःख और डरके मारे वे आते हैं। अुन्हें समझाना बहुत मुश्किल होता है।

अनाजका काम भी वैसा ही कठिन है। जिनके पास अधिक है वे निकालते नहीं। आंध्रमें फालतू अनाज बहुत है पर कोअी देते नहीं। प्रकाशम्[२] और रंगा[३] लोगोंको न देनेके लिये भड़का रहे हैं। कांग्रेसके कार्यकर्ता स्वार्थी और पद हथियानेकी खींचातानीमें पड़े हुअे हैं और काममें कोअी न कोअी विघ्न डालते रहते हैं।

समाजवादियोंका आपको पता ही है।

देशी राज्योंका तो अब हैदराबादके सिवाय सब मामला हल हो गया समझिये। यही अेक बाकी रहा है। अुसके लिये मेहनत करनी होगी।

काश्मीरका मामला ज्योंका त्यों है। पंजाबकी जैसी हालतमें अुसे छेड़ना बुद्धिमत्ता नहीं होगी। और सरहद प्रान्तमें खानसाहबके मंत्रिमंडलको पदच्युत करके अब्दुलकय्यूमको सत्ता सौंपनेकी चाल चली गयी है। आप कलकत्ता कब तक रहेंगे?

---

१ सर चंदूलाल त्रिवेदी। पंजाबके गवर्नर।

२ श्री टी. प्रकाशम्। आंध्रके नेता।

३ प्रो. रंगा। आंध्रके नेता।

पंजाबका क्या होगा? आपका पत्र आज ही आया। क्या यह सच होगा? पंजाब जानेके बारेमें मुझ पर खूब दबाव[1] पड़ रहा है। पता

---

१ अिसके जवाबमें ता० २७-८-'४७ को पू० बापूने नीचेका पत्र लिखा

२७-८-'४७

आपका पत्र मिला। आप अिस समय पंजाब जाकर क्या करेंगे? वहाँकी आग आप बुझा नहीं सकते। हिन्दू-सिक्ख-मुसलमान वहाँ साथ नहीं रह सकते। हिन्दू भविष्यमें कभी शायद रह भी सकें लेकिन अभी तो नहीं। अिसके लिये बहुत समय लगेगा। परंतु सिक्ख तो भविष्यमें भी कभी मुसलमानोंके साथ रह सकेंगे यह कल्पना नहीं की जा सकती। सेनामें पूरी तरह द्वेष भर गया है। दोनों तरफसे लाखोंकी संख्यामें लोग भाग रहे हैं और कामिनियाँ भयभीत दशामें पड़ी हुई हैं। भागनेवालोंकी भी हत्यायें होती हैं। सही सलामत पहुँचाया जा सके अैसा बन्दोबस्त नहीं है।

कल जिन्ना जवाहरलाल लियाकत बलदेव[1] और दोनों गवर्नर (पूर्व और पश्चिम पंजाबके) तथा गवर्नर जनरल (माअुण्टबेटन) लाहोरमें मिलेंगे। वहाँ वे सब मिलकर तय करेंगे कि क्या किया जाय।

राजकुमारी लेडी माअुण्टबेटनके साथ पंजाबमें तीन दिनका दौरा करके आज ही अभी आठ बजे आयी हैं। भयंकर वर्णन दे रही हैं। सुशीलासे मिल आयी। अुसे ले आनेको कहा था। वह तैयार भी हो गयी। परंतु कैम्पमें लोग रोने लगे अिसलिये रह गयी। अिन छावनीमें खतरा नहीं है। अब तो कुछ भोजनकी सुविधा भी कर दी गयी है। अुसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। अिसलिये कोअी चिन्ताकी बात नहीं। अैसे तो अीश्वरकी जो मरजी होगी सो होगा।

आपकी तबीयत अच्छी होगी।

अुधरके समाचार लिखिये।

---

१ पंजाबके सरदार बलदेवसिंह। अिस समय भारत सरकारके रक्षामंत्री।

नहीं चलता क्या करना चाहिये। जवाहर भी लिखते हैं कि मुझे जाना चाहिये लेकिन तुरंत नहीं। यहांका कार्यक्रम अितवार तकका है। बादमें नोआखालीमें जाना है। वहांसे बिहार। अिसमें पंद्रह दिन तो कम ही जायेंगे। दिल्ली आकर मैं क्या कर सकता हूं यह समझमें नहीं आता। अैसा लगता है कि आप सब जो काम कर रहे हैं अुसमें बाधक ही होअूंगा।

कृपलानी पूछते हैं कि अब त्यागपत्र दे दूं? मैं तो आप सबसे बात करने पर समझा था कि १५ तारीखके बाद भले ही दे दें। अुनके बारेमें आप सबकी राय बहुत अच्छी तो नहीं है। अगर अुन्हें अूपरवालोंका विश्वास प्राप्त न हो तो अुन्हें जाने देनेमें ही भला दीखता है। अुनकी जगह दूसरा कौन हो यह विचारनेकी बात है। मुझे तो आपकी स्थिति भयानक लगती है। यहां बैठे हुअे मुझे जो खतरा दीखता है, वह आप लोगोंको जो अुसमें पड़े हुअे हैं, दिखाअी न दे यह मैं समझ सकता हूं। मेरी स्थिति यह है। अिन मामलोंमें तो मुझे अपना स्थान दिखाअी देता है। पंजाबका हाल भी मैं जाकर समझ लूंगा। वहां कोअी मेरी अुपस्थिति चाहेगा अिस बारेमें मुझे शंका जरूर है।

आपका स्वास्थ्य कैसा रहता है?

हैदराबादकी समस्या कठिन तो है परंतु अुससे आप निपट लेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
१ औरंगजेब रोड
नअी दिल्ली

आप सबको बीश्वर आकस्मक शक्ति और समझ दे। क्या यह सोचा था कि मैंने कठिन काममें आप तुरंत ही पड़ जायेंगे? मीश्वरेच्छा बलीयसी।

हॉरिस (अलेक्जेण्डर) मेरे पास ही है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाबी पटेल
१ औरंगजेब रोड
नबी दिल्ली

जूनागढ़ भी रहा है। पर अुससे निपटनेमें देर नहीं लगेगी।

भिन्वीरको निपटा दिया। वहांसे अंग्रेजोंको निकाल कर अपना आदमी रख दिया है। अभी तो भेज दी मेहताको मुकर्रर किया है। आदमी बहुत थोड़े हैं। अच्छे आदमी मिलने मुश्किल हैं।

काश्मीरमें कोबी अच्छा आदमी चाहिये। तलाश कर रहा हूं।

आपके कार्यक्रमका पता नहीं चलता।

तबीयत अच्छी होगी।

सेवक
वल्लभभाबीके प्रणाम

यह पत्र लिख चुकनेके बाद हॉरिस आये। अुनके साथ दो आदमी हैं। अुन्हें सारी परिस्थिति समझा दी है। कल अनुसार भेज दूंगा।

अभी अभी आपका पत्र मिला। जवाहरलालके नामका पत्र अुन्हें पहुंचा भेज दूंगा। कल मैं जालंधर जानेवाला हूं। वहां कष्ट-निवारण कामका बड़े पैमाने पर बिन्तजाम करना है। शामको लौटूंगा।

सेवक
वल्लभभाबीके प्रणाम

महात्मा गांधीजी
भागीरथी द्वारा

मुसलमान भी मेरे पास थे। मैंने हमला करनेकी सबको मनाही कर दी। अिसलिअे सब आसपास खड़े ही रहे। दो दल थे। अेक गुस्सेको ठंडा करनेवाला दूसरा भड़कानेवाला। दो आदमी पुलिसके थे। अुन्होंने भी हाथ नहीं अुठाया। हाथ जोड़कर आवाज लगाअी। मुझे रोका। कल्याणम् (टायिपिस्ट) बोला कि मैं अब अन्दर बैठूं। मिसेन[1] बीचमें था। अुसने केवल पायजामा पहन रखा था। अिसलिअे मुसलमान समझा था। अीटें फेंकी गयीं। अेक मुसलमानको लगीं। कोअी घायल न हुआ। ये अीटें मुझ पर पड़ती। अितनेमें पुलिसका मुख्य अधिकारी आ गया। मकानको अच्छी तरह नुकसान पहुंचानेके बाद युवक लोग बिखर गये। प्रफुल्लबाबू और अन्नदा[2] आये। प्रफुल्लने जरूरतसे ज्यादा बन्दोबस्त रखनेका विचार किया। मैंने अिनकार कर दिया। सबका शक हिन्दू महासभा पर है। मैंने कहा है कि बंगालियोंको पकड़नेसे पहले श्यामाप्रसाद और चटर्जी[3] से मिलें। जल्दीमें कुछ न करें। यहां ऐसी हालत है। रातके १२॥ बजे सो पाया। अुठना तो समय पर ही होता है।

जवाहरसे मिलें तो यह कह दें।

अब सामका तार पढ़िये। कुछ समझमें नहीं आता। आज शोलोंसे लिपटा हुआ हूं। मेरे जवाबकी नकल अिसके पीछे है।

अुपरोक्त स्थितिमें यह समझिये कि मैं यहीं हूं। कलकी कौन जाने?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
१ औरंगजेब रोड
नअी दिल्ली

---

१ बापूजीकी मंडलीके अेक साथी।
२ बंगालके अेक रचनात्मक कार्यकर्ता।
३ अेक हिन्दू महासभावादी।

और अुपवास छूट जायगा। अगर दंगा होता ही रहा तो जीकर क्या करना है? मुझमें लोगोंको शान्त रखनेकी शक्ति भी न हो तो जीना बेकार है। अीश्वरको शरीरसे काम लेना होगा तो लोगोंके मनमें बसकर वह मुझे शान्त करेगा और मेरे शरीरको कायम रखेगा। केवल अुसीके नाम पर अुपवास शुरू किया है।

आप सबको अीश्वर कायम रखे। अिस मुलाकातमें दूसरे कुछ नहीं कर सकते।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
१ औरंगजेब रोड
नअी दिल्ली

२६४

बिड़ला भवन
नअी दिल्ली
१-१०-'४७

चि० वल्लभभाअी,

कल शामको मौलाना साहब आये थे। थोड़ी देर बैठकर चले गये। वे कहते हैं हम तीनोंको साथ बैठना है। समय आप तय कीजिये। कल मंगलवारको वे कोअी भी समय चाहते हैं। समयकी सूचना मुझे भी भेज दीजिये और अुन्हें भी।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाअी पटेल
१ औरंगजेब रोड
नअी दिल्ली

वह रद्द समझा जायगा। और अैसे मकान अुनके मालिकोंके लिये सुरक्षित रखे जायंगे।

अैसा बयान निकालनेकी जरूरत मैं तो समझता हूं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार श्री वल्लभभाओ पटेल
१, औरंगजेब रोड
नभी दिल्ली

२९६

बिड़ला भवन
२१-१२-'४७

चि. वल्लभभाओ

कल ही मिले थे। अुन्होंने कहा कि आप जम्मू जानेवाले हैं यह अुन्हें मालूम नहीं था। अिसका पता भी नहीं था कि जामसाहब[1] साथमें गये। यह कहा कि अुन्हें पता होता तो शायद कोओ सुझाव देते कोओ पत्र भेजते। क्या यह सही है?

रणधावा[2] से मिलनेके बाद मुझे खयाल हुआ कि मैं अुन्हें सीधा लिखूं तो आपका समय बच सकता है। क्या मैं अिस तरह लिख सकता हूं?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाओ पटेल
१ औरंगजेब रोड
नभी दिल्ली

---

१ सौराष्ट्रके राजप्रमुख।
२ दिल्लीके डिप्टी डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट।